महान्

अग्र-विभूतियाँ

(अग्रवाल महापुरुष जीवनी वृहद् ग्रन्थ)

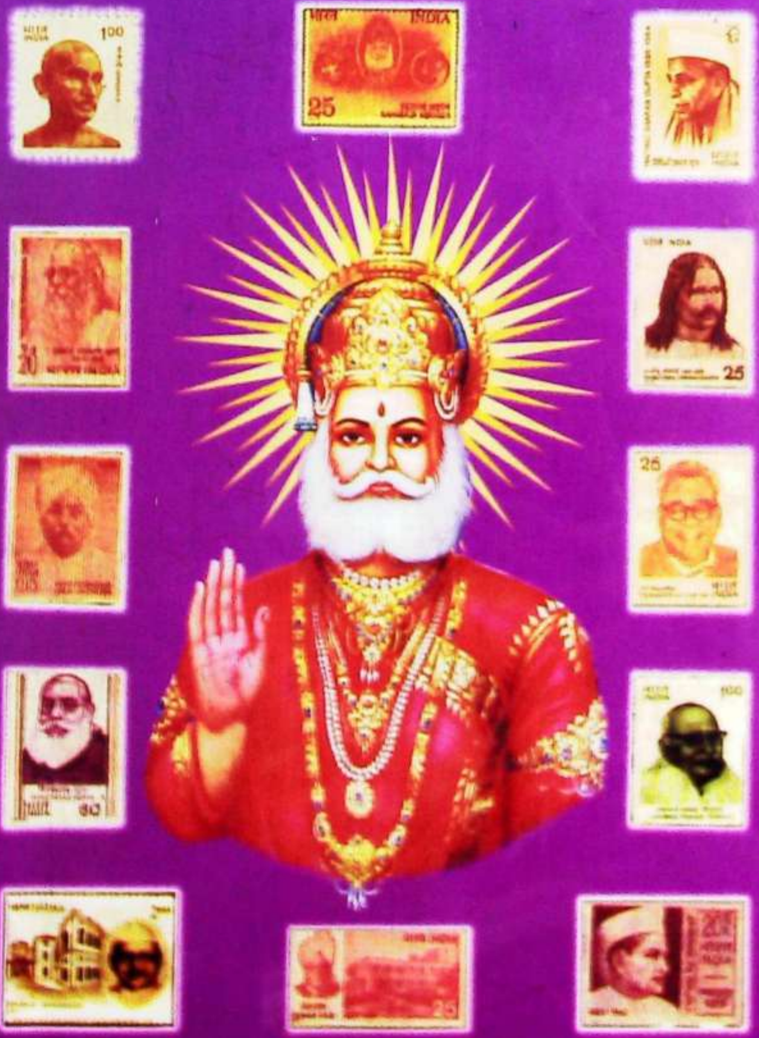

अग्रवाल सेवा योजना राजस्थान

जयपुर

महान्

अग्र-विभूतियाँ

(अग्रवाल महापुरुष जीवनी वृहद् ग्रन्थ)

संकलनकर्ता :

श्री चाँदबिहारी लाल गोयल 'साहित्य रत्न'

* प्रकाशक *

अग्रवाल सेवा योजना राजस्थान

प्रकाशक : **अग्रवाल सेवा योजना राजस्थान**

जयपुर कार्यालय :
ए-64, 'सज्जन निकेतन',
लक्ष्मीनारायणपुरी, जयपुर।
फोन : 2661244

प्रदेश कार्यालय :
ज्योति इलेक्ट्रीकल्स, खाई रोड़,
नयापुरा, कोटा-1
फोन : 0744-2322374, 2323299

संस्करण : 2005 (प्रथम)

मूल्य : 50/-

साज सज्जा : आइडियल कम्प्यूटर सेन्टर,
3580, जौहरी बाजार, जयपुर।
फोन : 2567005

मुद्रक : शीतल ऑफसेट, जयपुर

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

॥ श्री अग्रसेन देवाय नमः ॥

महान्

अग्र-विभूतियाँ

(अग्रवाल महापुरुष जीवनी वृहद् ग्रन्थ)

सम्पादक मण्डल

संरक्षक	:	जस्टिस श्री नवरंगलाल टिबरेवाल श्री आर.पी. अग्रवाल, डॉ. सुमनकान्त सिंघल
प्रधान सम्पादक	:	श्री कन्हैयालाल मित्तल (पदेन महामंत्री)
व्यवस्थापक व संकलनकर्ता	:	श्री चाँदबिहारी लाल गोयल 'साहित्य रत्न'' (संरक्षक)
संयोजक	:	श्री राजेश गोयल (उपाध्यक्ष)
प्रबन्ध सम्पादक	:	श्री अशोक आमेरिया (संयुक्त मंत्री)
उप सम्पादक	:	श्री कमल किशोर नानूवाला (संगठन मंत्री)

प्रकाशन समिति सदस्य

सर्वश्री राजमल टाटीवाला, रामबिलास जैन, आर.बी. गुप्ता (बयाना), उमेश अग्रवाल, राजेन्द्र गर्ग (झालावाड), बालमुकुन्द गुप्ता (बांरां), पवन अग्रवाल (बूंदी) प्रभूदयाल बंसल, रामअवतार गोयल, रामचन्द्र अग्रवाल, परमेश्वर देव अग्रवाल।

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

॥ श्री अग्रसेन देवाय नमः ॥

अग्रवाल सेवा योजना राजस्थान

(अखिल भारतीय अग्रवाल सम्मेलन, नई दिल्ली से सम्बद्ध)

प्रधान कार्यालय :– ज्योति इलेक्ट्रीकल्स, खाई रोड़, नयापुरा, कोटा-1 फोन : 0744-2322374, 2323299

जयपुर कार्यालयः– ✲ 7/331, मालवीय नगर । फोन : 2553828

✲ ए-64, 'सज्जन निकेतन', लक्ष्मीनारायणपुरी फोन : 2661244

✲ 944, 'राम कुटीर', मोती डूंगरी रोड़, जयपुर

✲ कार्यकारिणी समिति ✲

संरक्षक : ✲ श्री चांदबिहारी लाल गोयल, साहित्य-रत्न

✲ श्री हुकमचन्द जैन

अध्यक्ष : श्री राजमल गर्ग टाटीवाला

वरिष्ठ उपाध्यक्ष : श्री रामभरोसे गुप्ता

उपाध्यक्ष : श्री राजेश गोयल व रामविलास जैन

महामंत्री : श्री कन्हैयालाल मित्तल

कोषाध्यक्ष : श्री विष्णु गर्ग (कोटा) व श्री प्रभुदयाल बंसल, जयपुर

संगठन मंत्री : श्री कमल किशोर गोयल, नानूवाला

श्री उमेश अग्रवाल एवं श्री महेश मित्तल

संयुक्त मंत्री : श्री अशोक आमेरिया

श्री जुगल किशोर अग्रवाल

कार्यालय सचिव : श्री सत्यनारायण अग्रवाल

प्रवक्ता : श्री केशव मित्तल (सम्पादक-अग्रवाल ज्योति पत्रिका)

युवा अध्यक्ष : श्री अरूण जैन

महिला संयोजिका : श्रीमती सज्जन मित्तल

परामर्श-दाता : सर्वश्री केसरीचन्द मंगल, रामलाल गर्ग (बूंदी), राजेन्द्र गर्ग (झालावाड़), पवन अग्रवाल (बूंदी), बालमुकन्द गुप्ता (बारां)

❊ अनुक्रमणिका ❊

संदेश (i)
संपादकीय (vii)
अध्यक्षीय संदेश (ix)
भूमिका (xi)

1. भगवान श्रीगणपति 1
2. अग्र-अग्रसेन-अग्रोहा की कुलदेवी–माँ महालक्ष्मी 5
3. अग्रवाल ध्वज गान 12
4. महाराजा श्री अग्रसेन 13
5. श्री हरभज शाह 31
6. श्री भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र 35
7. सर श्री गंगाराम 47
8. श्री लाला लाजपत राय 53
9. डॉ. भगवानदास "केला" 63
10. राष्ट्रपिता महात्मा गांधी 69
11. श्री शिवप्रसाद गुप्त 81
12. राष्ट्रकवि श्री मैथिलीशरण गुप्त 87
13. सेठ श्री जमना लाल बजाज 95
14. श्री श्रीप्रकाश 107
15. भाई श्री हनुमान प्रसाद पोद्दार 115
16. डॉ. राममनोहर लोहिया 135
17. लाला श्री हुकुमचन्द अग्रवाल 145
18. श्री ललित किशोरी एवं श्री ललित माधुरी 150
19. लाला श्री मटोलचन्द अग्रवाल 155
20. लाला श्री झनकूमल सिंहल 156
21. श्री रामजी दास एवं श्री नारायण दास गुड़वाले 157
22. सेठ श्री नथमल जी, श्री रामनिवास जी व श्री निवास जी 159
23. श्री राधा मोहन गोकुलजी 162
24. श्री जगन्नाथ दास "रत्नाकर" 166
25. सर श्री शादीलाल 167
26. लाला श्री हरदेवसहाय 169
27. दादी माँ महारानी माधवी 170
28. माता कस्तूरबा गांधी 176
29. माता जानकी देवी बजाज 179
30. श्रीमती मदालसा नारायण 182
31. श्री जयदयाल गोयन्दका 184
32. डॉ. सर सीताराम अग्रवाल 189
33. बाबू श्री गुलाबराय एम.ए. 190
34. श्री जयशंकर प्रसाद 191
35. जस्टिस मेहरचंद्र महाजन 197
36. श्री राम कृष्णदास अग्रवाल 198
37. सेठ श्री रामकृष्ण डालमियाँ 198
38. सेठ श्री सूरजमल जी 200
39. डॉ. कँवर सेन 207
40. प्रो. रामसिंह 211
41. अवतारी बाबा गंगाराम 216
42. श्री प्रभुदयाल हिम्मत सिंहका 219
43. श्री सियाराम शरण गुप्त 219

44. श्री विश्वंभरसहाय प्रेमी 220
45. श्री लक्ष्मी नारायण अग्रवाल 226
46. श्री रघुकुल तिलक 232
47. लाला श्री देशबन्धु गुप्ता 234
48. डॉ. रघुवीर 242
49. रायबहादुर सेठ श्री गूजरमल मोदी 246
50. डॉ. वासुदेवशरण अग्रवाल 252
51. लाला खूबराज सर्राफ और श्री सत्यनारायण सर्राफ 258
52. श्री विश्वम्भर सहाय विनोद 265
53. श्री काका हाथरसी 270
54. मास्टर श्री आदित्येन्द्र 271
55. श्री राधाकृष्ण अग्रवाल 277
56. श्री मदन गोपाल सिंहल 281
57. डॉ. आत्माराम 288
58. लाला देसराज चौधरी 290
59. श्री केदारनाथ अग्रवाल 295
60. कप्तान श्री दुर्गाप्रसाद चौधरी 297
61. श्री सीताराम खेमका 299
62. डॉ. श्रीमन् नारायण अग्रवाल 303
63. बाबू श्री बनारसी दास 304
64. डॉ. लाडलीनाथ रेणु 305
65. श्री रामशरणदास "भक्त" 307
66. सेठ श्री धौंकल जी लड़ीवाला 313
67. बाबू श्री बनारसी दास गुप्त 315
68. कैप्टन श्री कमल किशोर बंसल 318
69. श्री शिवशरण अग्रवाल 322
70. श्री नन्दकिशोर गोयन्का 327
71. श्री विरेन्द्र प्रसाद अग्रवाल 330
72. श्री अशोक सिंहल 332
73. श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल 334
74. श्री गोवर्धनदास मित्तल 336
75. डॉ. विष्णुचंद्र गुप्त 337
76. न्यायमूर्ति श्री के.सी. अग्रवाल 338
77. श्री चाँदबिहारी लाल गोयल 339
78. श्री वेद अग्रवाल 345
79. डॉ. एस.पी. सुद्रानियां 347
80. श्री नवरंग लाल टिबरेवाल 349
81. श्री रमेशचन्द्र अग्रवाल 354
82. श्री रामदास अग्रवाल 356
83. डॉ. गिरिराज प्रसाद मित्तल 359
84. श्री चमन लाल सिंगला 360
85. श्री अनिल अग्रवाल 362
86. डॉ. रामनारायण अग्रवाल 367
87. डॉ. चम्पालाल गुप्त 372
88. सुधा गोयल 376
89. श्री सुभाषचन्द्र गोयल 378
90. श्री प्रदीप मित्तल 381
91. श्री राधेश्याम गोयल 383
92. श्री मोहनदास अग्रवाल 385
93. शृंगारी बाबा श्री राधेश्याम फाटक 388
94. अग्रोहा की ऐतिहासिकता 390
95. पांचवा तीर्थ धाम 409
96. महाराजा अग्रसेन उद्यान एवं अग्रसेन प्रतिमा 411
97. स्मारक-महाराजा अग्रसेन चौराहा 412
98. अग्रवाल विभूतियाँ जिनके सम्मान में भारत सरकार ने डाक टिकट जारी किए 413
99. सहयोगी 415
100. अग्रोहा चित्रावली 431

भारत के उप-राष्ट्रपति के विशेष कार्य अधिकारी
नई दिल्ली - 110011
OFFICER ON SPECIAL DUTY
TO THE VICE-PRESIDENT OF INDIA
NEW DELHI - 110011

संदेश

महामहिम उपराष्ट्रपति श्री भैरोंसिंह शेखावत को यह जानकर प्रसन्नता हुई है कि अग्रवाल सेवा योजना राजस्थान द्वारा प्रमुख अग्रवाल वैश्य महापुरूषों की जीवनी पर आधारित ग्रंथ का प्रकाशन किया जा रहा है,जो सराहनीय प्रयास है।

उपराष्ट्रपतिजी अग्रवाल समाज की निरंतर प्रगति की कामना करते हुए इस अवसर पर प्रकाशित ग्रंथ के प्रकाशन के लिए अपनी हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित करते हैं।

(के.बी.ठाकुर)

नई दिल्ली
12 मार्च, 2004

मुख्य मंत्री
राजस्थान

1 1 MAR 2004

सन्देश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता है कि अग्रवाल सेवा योजना,राजस्थान द्वारा अग्रवाल वैश्य महापुरूषों की जीवनी ग्रन्थ का प्रकाशन किया जा रहा है।

महापुरुषों द्वारा किये गये त्याग और उनके द्वारा बताये गये मार्ग का अनुसरण कर समाज और राष्ट्र प्रगति के पथ पर अग्रसर होता है। आवश्यकता इस बात की है कि इन महापुरूषों की जीवनी से प्रेरणा लेकर नौजवान देश के नवनिर्माण में अपना महत्वपूर्ण योगदान करें।

मुझे विश्वास है कि यह प्रकाशन समस्त संस्थाओं एवं पुस्तकालयों में अध्ययन करने के लिए उपलब्ध होने से समाज एवं देश में एकजुटता होने में सहायक सिद्ध होगा।

मेरी ओर से प्रकाशन की सफलता के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

(वसुन्धरा राजे)

घनश्याम तिवाड़ी
मंत्री
शिक्षा एवं संसदीय कार्य
राजस्थान सरकार

फोन : (नि.) 0141-2293666
0141-2293777
(का.) 0141-2227418

अ.शा.पत्रांक : मं.शि. / 04/934
जयपुर, दिनांक : 17/3/04

:: संदेश ::

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि अग्रवाल सेवा योजना, राजस्थान द्वारा अग्रवाल वैश्य महापुरूषों का जीवनी ग्रन्थ प्रकाशित किया जा रहा है।

महापुरूषों का मान–सम्मान करना स्वजातीय समाज का ही दायित्व नहीं है, बल्कि अखिल समाज का है। उनके जीवन चरित्र से सभी वर्गों को प्रेरणा मिलती है।

मेरी ओर से महापुरुष जीवनी ग्रन्थ के प्रकाशन पर हार्दिक शुभकामनाएं। जीवनी ग्रन्थ को अन्य समाज व वर्गों में भी प्रसारित किया जाये ताकि वे भी प्रेरणा ले सकें।

(घनश्याम तिवाड़ी)

श्री कन्हैयालाल मित्तल,
मानद सम्पादक व महामंत्री,
अग्रवाल सेवा योजना, राजस्थान,
517, मित्तल भवन, नयापुरा,
कोटा।

बनारसीदास गुप्त
पूर्व सांसद (*राज्य सभा*)
पूर्व मुख्यमंत्री, *हरियाणा*

सत्यमेव जयते

दूरभाष : 24603442, 24654686
29, लोदी एस्टेट,
नई दिल्ली-110003

दिनांक 16.03.2004

प्रिय श्री मित्तल जी,

पत्र आपका दिनांक 25 फरवरी, 2004 का प्राप्त हुआ। यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हुई कि अग्रवाल सेवा योजना राजस्थान, अग्रवाल एवं वैश्य समाज के महापुरूषों के जीवन पर एक ग्रन्थ का प्रकाशन करने जा रहा है। जिन महापुरूषों ने अपने समाज एवं राष्ट्र के हित में अपना जीवन अर्पित किया है। उनकी वीरता की गाथाओं को जन-जन तक पहुंचाना समाज सेवियों एवं सामाजिक संस्थाओं का उत्तरदायित्व है। मुझे यह जानकर अत्यन्त ही हर्ष हुआ कि आपका संगठन अग्रवाल सेवा योजना "राजस्थान" यह ग्रन्थ प्रकाशित कर अपने उत्तरदायित्व का निर्वहन करने जा रहा है।

आपका यह प्रयास पूर्णतया सफल हो, ऐसी मेरी कामना है।

आपका

(बनारसी दास गुप्त)

श्री कन्हैयालाल मित्तल
मानद सम्पादक व महामंत्री
514, मित्तल भवन, नयापुरा, कोटा।

भिवानी : विजय निवास, विजय नगर, भिवानी - 127 021 हरियाणा, दूरभाष : 01664 - 243117

अखिल भारतीय अग्रवाल सम्मेलन

(सोसायटी रजिस्ट्रेशन एक्ट XXI 1860 के अन्तर्गत पंजीकृत क्रमांक 7953 दि. 28.01.1976)

83, मॉडल बस्ती, ईस्ट पार्क रोड, करोल बाग, नई दिल्ली-110005
फोन : 23633333, 23550630 फैक्स : 23550630

आदरणीय श्री कन्हैया लाल जी

नमस्कार ।

आपका पत्र प्राप्त हुआ। यह जानकार हार्दिक प्रसन्नता हुई कि "अग्रवाल सेवा योजना राजस्थान" द्वारा अग्रवाल महापुरुष जीवनी ग्रंथ का प्रकाशन किया जा रहा है। मैं इस ग्रंथ के प्रकाशन के लिए आपको हार्दिक बधाई देता हूँ और ईश्वर से कामना करता हूँ कि इस ग्रंथ का प्रकाशन बड़ी सफलता के साथ संपन्न हो।

इस तरह के महापुरुषों के जीवनी ग्रंथ के प्रकाशन से समाज में जागृति एवं चेतना आएगी।

मैं आपके इस जीवनी ग्रंथ के माध्यम से समाज के सभी लोगों से एक निवेदन करना चाहता हैं कि जब तक हम व्यापार से हटकर कुछ समय समाज के लिए नहीं देंगे और एक नेतृत्व को स्वीकार कर समाज को महबूत करने के बारे में नहीं सोचेंगे, तब तक हम समाज में सम्मानजनक स्थान नहीं प्राप्त कर सकेंगे।

पुनः शुभकामनाओं सहित।

दिनांक : 03-03-2004

आपका

(प्रदीप मित्तल)
राष्ट्रीय अध्यक्ष

श्री कन्हैयालाल मित्तल
517, मित्तल भवन, नयापुरा,
कोटा (राज.) 321001

अग्रोहा विकास ट्रस्ट द्वारा प्रकाशित अग्र-साहित्य

अग्रोहा–एक ऐतिहासिक धरोहर – (डॉ. चम्पालाल गुप्त) अग्रसेन, अग्रोहा, अग्रवाल के बारे में अद्यतन नवीनतम जानकारी प्रदान करने वाली अग्रवाल इतिहास की सर्वाधिक लोकप्रिय कृति।

अग्रसेन, अग्रोहा, अग्रवाल (डॉ. स्वराजमणि अग्रवाल) अग्रसेन, अग्रोहा, अग्रवालों के इतिहास के संबंध में जानकारी प्रदान करने वाला विभिन्न दुर्लभ चित्रों एवं ऐतिहासिक सामग्री से युक्त प्रमाणिक ग्रंथ। पृ.सं. 388 मूल्य-50/-

वीरता की विरासत - (कैप्टन कमल किशोर बंसल) राष्ट्र रक्षा के क्षेत्र में अनुपम शोर्य एवं त्याग प्रदर्शित कर उच्च सैनिक सम्मान प्राप्त करने वाले अग्रवीरों का शोधपूर्ण प्रामाणिक विवेचन करने वाली एकमात्र कृति। मूल्य - 25/- मात्र

अग्रोहा-दर्शन – (हरपतराय टांटिया) अग्रोहा की स्थापना से लेकर उसके निर्माण, दर्शनीय स्थलों तथा अग्रवाल समाज के महत्वपूर्ण बिंदूओं की जानकारी प्रदान करने वाली श्रेष्ठ पुस्तिका। अनेक रंगीन चित्रों से युक्त द्वितीय संशोधित संस्करण। मूल्य-10/- मात्र।

अग्रोहा की कहानी-चित्रों की जुबानी (श्री रामेश्वरदास गुप्त) अग्रोहा के निर्माण तथा अद्यतन विकास की चित्रमयी झांकी। द्वितीय संशोधित, परिवर्द्धित संस्करण। मूल्य-20/- मात्र

एक ईंट-एक रुपया (श्री ओमप्रकाश गर्ग 'मधुप') – अग्रोहा तथा महाराजा अग्रसेन से संबंधित 18 रोचक एवं शिक्षाप्रद कहानियों का संकलन। मूल्य-10/- मात्र।

अग्रोहाधाम-गीतों में (सं. डॉ. कमलकिशोर गोयनका) – अग्रसेन, अग्रोहा, अग्रवालों एवं सामाजिक विषयों से संबंधित विभिन्न समारोहों के अवसर पर गाई जाने वाली कविताओं एवं गीतों का संकलन। मूल्य-20/- मात्र।

महाराजा अग्रसेन-चित्रकथा (डॉ. स्वराजमणि अग्रवाल) बच्चों व किशोरों के लिए महाराजा अग्रसेन की चित्रमयी गाथा मूल्य - 5/- मात्र।

महाराजा अंग्रसेन (डॉ. स्वराजमणि अग्रवाल) महाराजा अग्रसेन के इतिहास के संबंध में संक्षिप्त जानकारी प्रदान करने वाली पुस्तक। मूल्य-10/- मात्र।

शेरे पंजाब लाला लाजपत राय (डॉ. चम्पाला गुप्त) महान स्वाधीनता सेनानी एवं अग्र गौरव लाला लाजपत राय की जीवन गाथा। मूल्य - 10/- मात्र।

धार्मिक जगत की विभूति-श्री हनुमान प्रसाद पौद्दार (श्री शिवकुमार गोयल) गीता प्रेस एवं कल्याण विभूति श्री हनुमान प्रसाद पौद्दार की प्रेरक जीवन गाथा। मूल्य-10/- मात्र।

डॉ. राम मनोहर लोहिया (श्री सत्यवीर अग्रवाल) महान स्वाधीनता सेनानी समाजवादी नेता डॉ. राम मनोहर लोहिया की जीवन। मूल्य - 10/- मात्र।

लाला देशबन्धु गुप्ता (प्रो. पी.पी. सिंघला) स्वतंत्रता संग्राम के देशभक्त सेनानी एवं सुप्रसिद्ध पत्रकार लाला देशबन्धु गुप्ता की जीवनी। मूल्य 10/- मात्र।

सेठ जमनालाल बजाज (डॉ. स्वराजमणि अग्रवाल) गांधीजी के पांचवें पुत्र तथा स्वतंत्रता संग्राम के अप्रतिमेय नेता श्री जमनालाल बजाज के जीवन प्रसंगों का विवरण। मूल्य -10/- मात्र

नोट– सभी पुस्तकों पर डाक व्यय अतिरिक्त।

सम्पादकीय

हर्ष का विषय है कि अग्रवाल सेवा योजना राजस्थान वर्ष 1992 से समाज सेवा कार्यों में संलग्न है। अग्रवाल समाज में फैली कुरीतियों, दहेज, असमानता इत्यादि को कम करने, समाज में चेतना जाग्रत करने, शोषित, पीड़ित अग्रवाल की यथा सम्भव मदद करने हेतु सेवा-योजना का गठन श्री राजमल गर्ग टाटीवाला की अध्यक्षता में किया गया। सेवा कार्य निरंतन जारी है। संस्था द्वारा दिसम्बर 1992 से ही अग्रवाल ज्योति 'मैरिज ब्यूरो पत्रिका' त्रैमासिक प्रकाशित की जा रही है जिससे अग्रवाल समाज के विवाह योग्य बेटे-बेटियों के संबंध बनाने में आसानी होती है। इस प्रकार की पत्रिका का निरंतर प्रकाशन का देश में पहला प्रयास है। संस्था द्वारा विधवा-विधुर, विकलांग परिचय सम्मेलन सहित तीन परिचय सम्मेलन किये गये हैं।

अग्रवाल सेवा योजना द्वारा जयपुर व कोटा में विगत 9 वर्षो से अग्रवाल समाज के महापुरुषों की जयंतियों के आयोजन किये जा रहे हैं जिससे सम्पूर्ण वर्ष समाज में सक्रियता बनी रहती है तथा समाज के बच्चों व व्यक्तियों को महापुरुषों के जीवन से प्रेरणा मिलती है। इन महापुरुषों के जयंति समारोहों में अनेक बार श्री रमेशचन्द्र अग्रवाल चेयरमैन भास्कर, राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री प्रदीप मित्तल व जस्टिश श्री नवरंगलाल टिबरेवाल पूर्व राज्यपाल, वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी श्री आनंदी लाल रूगटा इत्यादि महानुभावों ने भाग लिया है तथा इनके सफल आयोजन में प्रदेश वैश्य अध्यक्ष श्री मोहनदास अग्रवाल, डॉ. एस.पी. सुद्रानिया, श्री चांदबिहारी गोयल, श्री रामावतार सिंघल, डॉ. गिरिराजप्रसाद मित्तल ने सहयोग दिया। जयंती आयोजनों के दौरान यह बात सामने आई कि सम्पूर्ण देश की सभी अग्रवाल संस्थाओं द्वारा अग्रवाल महापुरुषों की जयंतियाँ मनाई जावे तथा इस हेतु महापुरुषों की जीवनी पर रंगीन चित्रों सहित एक पुस्तक का प्रकाशन किया जाय।

इसी भावना से प्रेरित होकर संस्था ने भारत सरकार द्वारा डाक टिकिट प्रकाशन से सम्मानित महापुरुषों यथा– महाराजा अग्रसेन, लाला

लाजपतराय, जमनालाल बजाज, हनुमान प्रसाद पोद्दार, भारतरत्न भगवान दास, राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी, राष्ट्ररत्न शिवप्रसाद गुप्त, भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, श्री श्रीप्रकाश, राममनोहर लोहिया, इन्जीनियर सर गंगाराम, मैथिलीशरण गुप्त इत्यादि अन्य अनेक महापुरुषों की जीवनी, सचित्र प्रकाशित करने का निर्णय लेकर प्रकाशन किया है।

मैं अग्रवाल सेवा योजना की कार्यकारिणी के समस्त पदाधिकारियों, सदस्यों तथा सम्पादक-मण्डल के अधिकारियों, परामर्श-दाताओं एवं अन्य सभी सहयोगियों का हृदय से आभारी हूँ कि जिन्होंने इस ग्रन्थ के प्रकाशन में मेरा उत्साह-वर्धन किया है। विशेष रूप से इस ग्रन्थ के लिए उपयोगी सामग्री के संकलन, लेखन तथा प्रकाशन आदि समस्त विधाओं के व्यवस्थापक तथा लेखक साहित्य मनीषी श्री चांदबिहारी लाल गोयल "साहित्य-रत्न" के प्रति धन्यवाद अर्पित करता हूँ कि जिन्होंने अपूर्व विद्वता और अथक परिश्रम से इस वृहत् कार्य को अंजाम देकर समाज की सेवा में एक अध्याय जोड़ा है।

यद्यपि इस ग्रन्थ में अग्रवाल समाज के अधिक से अधिक महान-विभूतियों के जीवन-परिचय संकलन करने का प्रयास किया गया है, तथापि प्रकाश्य-अप्रकाश्य अनेक महापुरुष अभी शेष है जिनके संबंध में सामग्री प्राप्त न होने के कारण समावेश नहीं किया जा सका है। यह अभाव तो खलना स्वाभाविक है। सेवा योजना अगले ग्रन्थ के प्रकाशन में यह भी प्रयास करेगी। हमारे द्वारा समाज की विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं व जीवनियों से सामग्री संकलित की गई है। जिनके हम आभारी हैं।

इस वृहद् ग्रन्थ के प्रकाशन में जाने अनजाने में कुछ कमियाँ रह जाना सम्भव है उसके लिए पाठक-वृन्द कृपया सदाशयता से क्षमा कर देंगे।

यह प्रकाश्य अग्रवाल महापुरुष जीवनी वृहद् ग्रन्थ "महान अग्र विभूतियाँ" आपके कर-कमलों में निष्ठा-भाव से सादर समर्पित है। हमें आशा और पूर्ण विश्वास है कि यह ग्रन्थ समाज की एक सामाजिक अमूल्य धरोहर के रूप में प्रतिष्ठित होगा एवं समाज व संगठन को चिरकाल तक दृढ़ बनाये रखने के लिए प्रेरणा-स्रोत व लोकोपयोगी सिद्ध होगा।

– कन्हैयालाल मित्तल
प्रधान सम्पादक व महामंत्री

अध्यक्षीय-सन्देश

परम स्नेहिल अग्रबन्धुओं,

सादर जय अग्रसेन।

अग्रवाल सेवा योजना राजस्थान द्वारा अग्रवाल महापुरुषों की जयन्तियाँ एवं पुण्य तिथियाँ पिछले 8 वर्षों से मनाई जाती रही है, परन्तु अब यह महसूस किया जा रहा है कि इस तरह वर्ष भर जयन्ती मनाते हुए भी अभी तक हम अनेक अग्र-महापुरुषों के जीवन-परिचय संबंधी पूरी-पूरी जानकारी समस्त अग्रवाल समाज को नहीं दे पा रहे हैं। अतः हमने यह फैसला लिया है कि सभी अग्र महापुरुषों की अधिक से अधिक जानकारी, उनके जीवन-चरित्र एक अग्र-ग्रंथ के रूप में प्रकाशित करें कि जिससे सम्पूर्ण अग्रवाल समाज एवं अग्रवाल नवयुवक व बच्चे इस ग्रन्थ से जानकारी व प्रेरणा लेकर संस्कारित हों तथा देश और समाज हित के अच्छे कार्यों में अपने आपको प्रवृत्त कर सकें। इससे सारा देश एवं समाज लाभान्वित होगा।

अतः आपके ही सहयोग से यह अग्रवाल महापुरुष जीवनी वृहद्-ग्रन्थ ''महान अग्र-विभूतियाँ'' प्रकाशित किया जा रहा है इसमें प्रातः स्मरणीय महाराजा अग्रसेन, अग्र-विभूती लाला लाजपतराय, जमनालाल बजाज, हनुमान प्रसाद पोद्दार, भारतरत्न भगवान दास, राष्ट्ररत्न शिवप्रसाद गुप्त, भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, श्री श्रीप्रकाश, राममनोहर लोहिया, सर गंगाराम इत्यादि महापुरुषों के सम्पूर्ण जीवन-चरित्र हैं।

अतः सेवक की हार्दिक शुभ कामना के साथ सम्पूर्ण अग्रवाल समाज के श्री हाथों में यह 'महान अग्र-विभूतियाँ' ग्रन्थ सादर समर्पित है।

राजमल गर्ग (टाटीवाला)
खाई रोड, नयापुरा-कोटा।

राष्ट्रगान

जन-गण-मन अधिनायक जय हे,
भारत भाग्य विधाता।
पंजाब - सिन्धु - गुजरात - मराठा,
द्राविड उत्कल बंगा।
विंध्य हिमाचल यमुना-गंगा,
उच्छल जलधि तरंगा॥
तव शुभ नामे जागे,
तव शुभ आशिष माँगे।
गाये तव जय गाथा।
जन-गण-मंगलदायक जय हे,
भारत भाग्य विधाता।
जय हे, जय हे, जय हे।
जय जय जय जय हे॥

राष्ट्रीय गीत

वन्दे मातरम्
सुजलाम्, सुफलाम्, मलयज शीतलाम्।
शस्य श्यामलाम् मातरम्॥ वन्दे मातरम्॥
शुभ्र ज्योत्सनाम् पुलकित यामिनीम्।
फुल्ल कुसुमित द्रुम-दल शोभिनीम्॥
सुहासिनीम् सुमधुर भाषिणीम्।
सुखदाम् वरदाम् मातरम्॥
वन्दे मातरम्॥

भारत माता की जय – हिन्दु धर्म की जय

"श्री अग्रसेन जयते"

भूमिका

अग्रवाल महापुरुष जीवनी वृहद् ग्रन्थ "महान-अग्र-विभूतियाँ" अग्रवाल वैश्य समाज की महान् अग्रविभूतियों की परिचय पुस्तिका है। इस ग्रन्थ में उन महान् अग्रवाल महापुरुषों के विषय में जानकारी दी गई है, जिनकी स्मृति व सम्मान में भारत सरकार ने समय-समय पर डाक टिकट जारी किए हैं। इनमें महाराजा अग्रसेन, महात्मा गाँधी, लाला लाजपतराय, सेठ जमनालाल बजाज, भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, डॉ. राममनोहर लोहिया, सर गंगाराम, डॉ. भगवानदास, हनुमानप्रसाद पौद्दार, शिव प्रसाद गुप्त, श्री प्रकाश, मैथिलीशरण गुप्त इत्यादि विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।

इस ग्रन्थ में महाराजा अग्रसेन, उनकी वंशावली तथा अग्रवाल समाज की उत्पत्ति, अग्रोहा-धाम के पौराणिक महत्त्व के बारे में जानकारी समाहित की गई है। जिसमें अग्रवाल समाज की विशिष्टताओं के अन्तर्गत अग्रवाल कुल में उत्पन्न व्यक्तियों में उपलब्ध उद्यम-प्रवृत्ति, श्रम-साधना, धार्मिक मनोवृत्ति, मर्यादाओं के प्रति प्रतिबद्धता, लोकोपकार, दानशीलता, राष्ट्र व समाज सेवा, स्वाभिमानिता जैसे गुणों पर प्रकाश डाला गया है।

राष्ट्र-सेवा एवं राष्ट्र-निर्माण में अपने आपको तन-मन-धन से समर्पित करने वाले बलिदानियों, स्वाधीनता-संग्राम के सेनानियों के जीवन-वृत्त भी इस ग्रन्थ में लिये गये हैं। राष्ट्र को जिन पर सदैव गौरव रहेगा, ऐसे पत्रकारिता के क्षेत्र में अग्रणीय रहे अग्रवाल व्यक्ति जिनमें सर्वश्री हनुमानप्रसाद पोद्दार, मैथिलीशरण गुप्त, जयदयाल गोयन्दका, जयशंकर प्रसाद आदि का विशेष योगदान रहा है, भी इस ग्रन्थ की शोभा बढ़ाते हैं। भारत राष्ट्र को समूचे विश्व में विज्ञान व अणुशक्ति में सर्वोच्च स्थान दिलाने वाले अग्रगौरव डॉ. रामनारायण अग्रवाल जैसे अनेक वैज्ञानिकों को

भी इस ग्रन्थ में याद किया गया है। इसके अतिरिक्त अन्य अनेक विधियों व विधाओं से अग्रवाल समाज को गौरवान्वित करने वाले मनीषियों जैसे डॉ. कंवरसेन, सूरजमल बम्बई वाले, मास्टर लक्ष्मीनारायण, अशोक सिंघल, बाबू बनारसीदास गुप्त, कैप्टेन कमल किशोर इत्यादि भी स्तुतनीय हैं जिन्हें इस ग्रन्थ में स्मृति-स्वरूप लिया गया है।

आकर्षक साज-सज्जा, मुद्रण, व खूबसूरत रंगीन छाया-चित्रों के साथ प्रकाशित यह अग्र महापुरुष जीवन वृहद् ग्रन्थ "महान अग्र-विभूतियाँ" भारतीय समाज को प्रस्तुत है। यह ग्रन्थ अग्रवाल समाज के अतिरिक्त इतिहास और समाज शास्त्र में रुचि रखने वाले विद्यार्थियों एवं शोधकर्ताओं के लिए भी उपयोगी सिद्ध होगा।

मैं, राजस्थान प्रदेश में विभिन्न सामाजिक गतिविधियों के संचालन में कार्यरत "श्री अग्रवाल सेवा योजना" तथा "अग्रोहा विकास ट्रस्ट, राजस्थान" के सरंक्षक पूर्व राज्यपाल व मुख्य न्यायाधिपति श्री नवरंग लाल टिबड़ेवाल, अध्यक्ष श्री राजमल टाटीवाला, महामंत्री श्री कन्हैयालाल मित्तल आदि अनेक पदाधिकारियों, कार्यकर्त्ता सहयोगियों को साधूवाद अर्पित करता हूँ कि जिन्होंने देश की अग्र महान् विभूतियों की जयन्तियों और पुण्यतिथियों को मनाने के अनेक कार्यक्रम विभिन्न संस्थाओं व विद्यालयों में किये और इनके जीवन-वृत्त की जानकारी कराने का प्रयास किया। परिणामों से प्रभावित होकर "अग्रवाल सेवा योजना" ने निश्चय किया कि "अग्रवाल महापुरुष जीवनी वृहद् ग्रन्थ" का प्रकाशन कर इसे सहज सुलभ करवाया जाये।

मुझे अत्यन्त हार्दिक प्रसन्नता है कि इस ग्रन्थ के लिए सामग्री संकलित करने व लेखन तथा प्रकाशन का कार्य करने के लिए मुझे उपयुक्त समझा गया। मेरी शुरू से ही इस प्रकार के संकलन, लेखन और वक्तव्य में रुचि रही है। अतः सहर्ष कार्य में जुट गया। देश की विभिन्न महान् विभूतियों के जीवन-वृत्त, उनकी उपलब्धियों, प्रेरणा-दायक प्रसंगों के विस्तृत विवरण विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं, अग्रोहा-धाम से प्रसारित पुस्तकों, स्वाधीनता आन्दोलन से संबंधित ग्रन्थों में जो समय-समय पर प्रकाशित

होते रहे हैं, संकलन किया। इस प्रकाश्य ग्रन्थ रचना के लिए एक शोध-कर्ता की तरह साहस और परिश्रम से विभिन्न स्थानों यथा– दिल्ली, अग्रोहा, जयपुर के पुस्तकालयों से सम्पर्क किया। विभिन्न संस्थाओं तथा महानुभावों से सामग्री बटोरी। उनका अध्ययन संकलन कर लेखन कार्य किया। पाण्डुलिपि को विद्वत्तजनों से अनुमति प्राप्त कर जयपुर पब्लिशिंग हाउस के सहयोग से प्रकाशित कराया है और यह "अग्रवाल सेवा योजना" संस्थान को समर्पित है। इस "महान अग्र विभूतियाँ ग्रन्थ" की सफलता के लिए अनेक विद्वत्तजनों व मनीषियों के शुभकामना संदेश, अग्रवाल सेवा योजना के पदाधिकारियों व अन्य समाज सेवी सहयोगियों के परिचय भी सम्मिलित करना उपयुक्त समझा गया है। मैं, उनसे जो सहयोग प्राप्त हुआ है, उनका आभारी हूँ।

इस वृहद् ग्रन्थ में समाहित सामग्री यद्यपि पूर्ण सापेक्ष और विश्वस्तरीय विवरणों पर आधारित है व विभिन्न पुस्तकों व पत्र-पत्रिकाओं से संकलित की गई है। फिर भी इसमें अनेक कमियाँ और भूलवश त्रुटियाँ रह सकती हैं। मुझे आशा है कि बुद्धिजीवी पाठक-वृन्द व शोध-कर्ता इसके लिए मुझे अकिंचन जानकर क्षमा कर देंगे।

मेरा सादर अनुरोध है कि आप इस वृहद् अग्रवाल जीवनी ग्रन्थ को समय निकालकर अवश्य पढ़ें तथा पढ़ायें तथा इसका प्रचार-प्रसार कर सहयोग करें। इन महापुरुषों के जीवन वृत्त, संघर्ष की घटनाओं व गुणों से प्रेरणा प्राप्त कर समाज और राष्ट्र की उन्नति में उत्तरोत्तर सुरुचि से सहयोगी बने और यश के भागीदार रहें। जय भारत। जय अग्रसेन।

❊ अग्रसेन, अग्रोहा का यह संदेश। एक रहेगा भारत देश॥ ❊

A-64 "सज्जन निकेतन"
लक्ष्मीनारायणपुरी, जयपुर

चांदबिहारी लाल गोयल, 'साहित्य-रत्न'
व्यवस्थापक-संकलनकर्ता-ग्रन्थ
एवं संरक्षक, अग्रवाल सेवा योजना

"वही धन्य है जगत में, जन्म उसी का सार।
हो कुल, देश, समाज का, जिससे कुछ उपकार॥"

✽ अग्रोहा-धाम (हिसार) पहुंचने के लिए मुख्य रेल व सब मार्ग ✽

अग्रोहा/हिसार से सड़क मार्गों की अनुमानित दूरी

हिसार से अग्रोहा 22 कि.मी.
दिल्ली से हिसार 167 कि.मी.
हरिद्वार से दिल्ली 200 कि.मी.
हरिद्वार से हिसार 275 कि.मी.
झुंझुनू से हिसार 120 कि.मी.
अलवर से हिसार 195 कि.मी.
भटिंडा से हिसार 110 कि.मी.
कुरुक्षेत्र से हिसार 140 कि.मी.

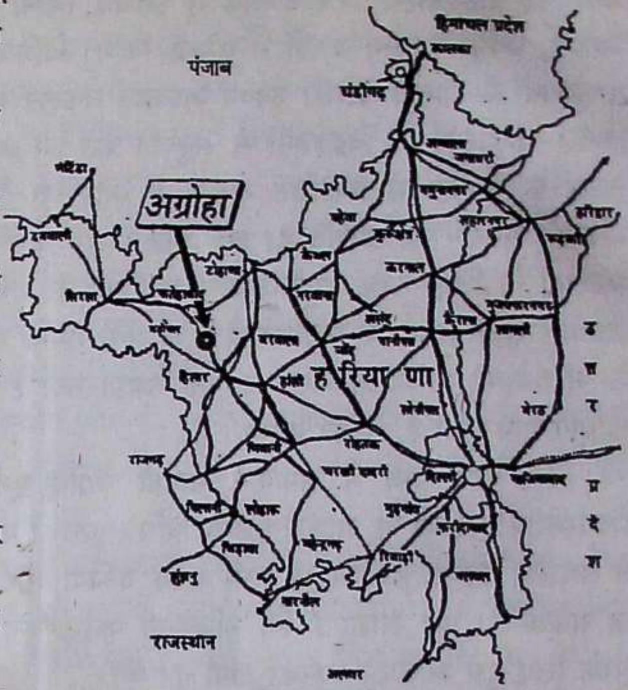

महाराजा अग्रसेन राष्ट्रीय राज मार्ग संख्या-10
(दिल्ली से फाजिल्का तक)

✽ अग्रोहा राष्ट्रीय राजमार्ग नंबर 10 पर दिल्ली से 190 कि.मी. की दूरी पर स्थित है। दिल्ली के अंतरराज्यीय बस अड्डे से हिसार या सिरसा के लिए जो बसें चलती हैं, वे वाया बहादुरगढ़, रोहतक, हांसी, हिसार होते हुए अग्रोहा मोड़ जाती हैं।

✽ अग्रोहा रेलवे स्टेशन नहीं है, किंतु बस मार्ग से दिल्ली तथा देश के सभी प्रमुख स्थानों से जुड़ा है। रेल से आने वालों को हिसार स्टेशन आना चाहिए। यहां से अग्रोहा मात्र 22 कि.मी. है। यहां से फतेहाबाद सिरसा मार्ग से अग्रोहा लिए बसें हर समय चलती हैं।

✽ अग्रोहाधाम आने वाले तीर्थ यात्रियों को महाराजा अग्रसेन मेडिकल कॉलेज स्टाप पर उतरना चाहिए, जो धाम के ठीक सामने हैं। इसके लिए कंडक्टर से अनुरोध करें अथवा अग्रोहा मोड़ पर उतरें। इसके अतिरिक्त हिसार बस स्टैंड से निजी वाहन जैसे मैटाडोर, जीपें हर समय मेडिकल कॉलेज के लिए चलती रहती हैं।

भगवान श्रीगणपति

भगवान श्रीगणपति

सनातन वैदिक हिन्दूधर्म के उपास्य देवताओं में भगवान् श्रीगणेश का असाधारण महत्त्व है। किसी भी धार्मिक या माङ्गलिक कार्य का आरम्भ बिना उनकी पूजा के प्रारम्भ नहीं होता। इतना ही नहीं, किसी भी देवता के पूजन और उत्सव-महोत्सव का प्रारम्भ करते ही महागणपति का स्मरण और उनका पूजन करना अनिवार्य है। इतना महत्त्व अन्य किसी देवता को नहीं प्राप्त होता।

गणेश शब्द का अर्थ है– गणों का स्वामी। हमारे शरीर में पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ, पाँच कर्मेन्द्रियाँ और चार अन्तः करण हैं, इनके पीछे जो शक्तियाँ हैं, उन्हीं को चौदह देवता कहते हैं। इन देवताओं का मूल प्रेरक है भगवान श्रीगणेश। वस्तुतः भगवान गणपति शब्दब्रह्म अर्थात ओंकारके प्रतीक हैं, इनकी महत्ता का यह मुख्य कारण है। "श्रीगणपत्यथर्वशीर्ष" में कहा गया है कि ओंकार का ही व्यक्त स्वरूप गणपति देवता हैं। इसी कारण सभी प्रकार के मङ्गल-कार्यों और देवता-प्रतिष्ठापनाओं के आरम्भ में श्रीगणपति की पूजा की जाती है। जिस प्रकार प्रत्येक मन्त्र के आरम्भ

में ओंकार का उच्चारण आवश्यक है, उसी प्रकार प्रत्येक शुभ अवसर पर भगवान् गणपति की पूजा एवं स्मरण अनिवार्य है। यह परम्परा शास्त्रीय है। वैदिक धर्मान्तर्गत समस्त उपासना-सम्प्रदायों ने इस प्राचीन परम्परा को स्वीकार कर इसका अनुसरण किया है।

कुछ लोग शंका करते हैं– गणेश तो शिवजी के पुत्र हैं, भगवान शंकर के विवाह में वे पैदा भी नहीं हुए थे, फिर उनका पूजन कैसे हुआ?

वास्तव में भगवान् श्रीगणेश किसी के पुत्र नहीं, वे अज, अनादि एवं अनन्त हैं। ये जो शिवजी के पुत्र गणेश हुए, वे तो उन गणपति के अवतार हैं। जैसे विष्णु अनादि हैं, परंतु राम, कृष्ण, नृसिंह, वामन, हयग्रीव– ये सब उनके अवतार हैं। मनु, प्रजापति, रघु, अज– ये सब राम की उपासना करते थे। दशरथनन्दन श्री राम उन अनादि राम के अवतार हैं। इसी प्रकार शिवतनय गणपति उन अनादि अनन्त भगवान् गणेश जी के अवतार हैं।

भगवान् गणपति का स्वरूप अत्यन्त मनोहर एवं मङ्गलदायक है। वे एकदन्त और चतुर्बाहु हैं। वे अपने चारों हाथों में पाश, अंकुश, दन्त और वरमुद्रा धारण करते हैं। उनके ध्वज में मूषक का चिह्न है। वे रक्तवर्ण, लम्बोदर, शूर्पकर्ण तथा रक्त वस्त्रधारी हैं। रक्तचंदन के द्वारा उनके अङ्ग अनुलिप्त रहते हैं। वे रक्तवर्ण के पुष्पों द्वारा सुपूजित होते हैं। अपने स्वजनों, उपासकों पर कृपा करने के लिए वे साकार हो जाते हैं। भक्तों की कामना पूर्ण करने वाले, ज्योतिर्मय, जगत् के कारण, अच्युत तथा प्रकृति और पुरुष से परे हैं। वे पुरुषोत्तम सृष्टि के आदि में आविर्भूत हुए।

वस्तुतः गणेश-पूजन एक साकार, परिमित, परिच्छिन्न शक्ति का प्रतीक न होकर निर्गुण परब्रह्म उपासना का प्रतीक है। वे अपने उपासक भक्तों के लिये कल्पवृक्ष हैं, अभयानन्दसंदोह हैं। मानव-जीवन में उनकी उपासना सर्वोपरि है।

भगवान् श्रीगणेश उमा-महेश्वर के पुत्र हैं। वे अग्रपूज्य हैं, गणों के ईश हैं, स्वस्तिक-रूप हैं तथा प्रणवरूप हैं। उनके अनन्त नामों में –सुमुख, एकदन्त, कपिल (जिनके श्री विग्रह से नीले और पीले वर्ण की आभा का प्रसार होता रहता है), गजकर्णक, लम्बोदर, विकट, विघ्नाशन, विनायक, धूम्रकेतु, गणाध्यक्ष, भालचन्द्र तथा गजानन– ये बारह नाम अत्यन्त प्रसिद्ध हैं। इन नामों का पाठ अथवा श्रवण करने से विद्यारम्भ, विवाह, गृह-नगरों में प्रवेश, गृह-नगर से निर्गम तथा किसी भी संकट के समय कोई विघ्न नहीं होता।

मोदक-प्रिय गणेश विद्या-बुद्धि और समस्त सिद्धियों के दाता कहे जाते हैं। वे अपने भक्त को विद्या और अविद्या– इन दोनों से दूर करके निजस्वरूप का बोध करा देते हैं।

भगवान् श्रीगणेश को प्रसन्न करने का साधन बड़ा ही सरल और सुगम है, उसे प्रत्येक अमीर-गरीब व्यक्ति कर सकता है। उसमें न विशेष खर्च की, न दान-पुण्य की, न विशेष योग्यता की और न विशेष समय की ही आवश्यकता है, आवश्यकता है केवल शुद्ध भाव की।

पीली मिट्टी की डली ले लो, उस पर लाल कलावा (मोली) लपेट दो, बस, भगवान् गणेश साकार-रूप में उपस्थित हो गये। रोली का छींटा लगा दो और चार बतासे चढ़ा दो, यह भोग लग गया और–

गजाननं भूत गणादिसेवितं, कपित्थजम्बूफलचारुभक्षणम्।
उमासुतं शोकविनाशकारकं, नमामि विघ्नेश्वरपादपङ्कजम्॥

यह छोटा-सा श्लोक बोल दो, मन्त्र हो गया। बस, इतने मात्र से ही भगवान् गणेश आप पर प्रसन्न हो जायेंगे। क्योंकि दयालुता की मूर्ति हैं वे। कुछ भी न बने तो दूब ही चढ़ा दो और अपने सारे कर्म सिद्ध कर लो। व्यय कुछ भी नहीं और लाभ सबसे अधिक, यही तो उनकी विलक्षण महिमा है।

—*—

कुलदेवी महालक्ष्मीजी की आरती

ओम जय लक्ष्मी माता, मैया जय लक्ष्मी माता।
अग्रवंश कुलदेवी, अग्रसेन ध्याता॥ओम...
अग्रोहा के धाम विराजी, यात्री जन आता।
आकर दर्शन पावे, ऋद्धि सिद्धि पाता॥ओम...
ब्रह्माणी, रूद्राणी, कमला, तू ही जग-माता।
सूर्य-चंद्र नित ध्यावें, नारद ऋषि गाता॥ओम...
तू पाताल वसन्ती, तू ही शुभ दाता।
दुर्गा रूप निरंजन, सुख-सम्पत्ति दाता॥ओम...
कर्म-प्रभाव प्रकासिनी, जगनिधि की ज्ञाता।
जहां वास है तेरा, वहां पुण्य आता॥ओम...
तुम बिन यज्ञ न होवे, मुक्ति न कोई पाता।
मोक्ष और धन वैभव, तुम बिन को दाता॥ओम...
आरती लक्ष्मी जी की, जो कोई नर गाता।
जीवन सुफल बनाकर, पार उतर जाता॥ओम...
जय लक्ष्मी मां जय अग्रोहा, जन-जन है गाता।
शक्ति सरोवर नहाकर तव दर्शन पाता॥ओम...
ओम जय लक्ष्मी माता, मैया जय लक्ष्मी माता।
अग्रवंश कुलदेवी, अग्रसेन ध्याता॥ओम...

卐 कुल देवी महालक्ष्मी जी की जय-जय-जय 卐

अग्रोहा की कुलदेवी–माँ महालक्ष्मी

अग्र-अग्रसेन-अग्रोहा की कुलदेवी-माँ महालक्ष्मी

आदिकाल से ही मानव जीवन में धन का महत्वपूर्ण स्थान रहा है। धन जीवन का सर्वस्व नहीं तो बहुत कुछ अवश्य है। एक संस्कृत श्लोक के अनुसार जिसके पास धन है, वही कुलीन है, वही सम्पन्न और गुणवान है, क्योंकि सब गुण कंचन के आश्रित हैं। इसलिए सभी देवताओं में धन की अधिष्ठात्री देवी-महालक्ष्मी का प्रमुख स्थान है।

लक्ष्मी सृष्टि नियंता भगवान विष्णु की पत्नी है। वह क्षीरसागर शायिनी है। समुद्र से उत्पन्न इस सृष्टि का सबसे श्रेष्ठ रत्न है। जब-जब इस पृथ्वी पर भगवान का अवतार होता है, वे उनके साथ अवतरित होती हैं। वे जगादाधार शक्ति का साक्षात् रूप हैं। उनके रूप-ऐश्वर्य एवं स्वरूप का वर्णन करते हुए कहा गया है–

जिनकी कान्ति सुवर्ण वर्ण के समान प्रभायुक्त है और जिनका हिमालय के समान अत्यंत उज्ज्वल वर्ण के चार गजराज अपनी सूंड से अमृत कलश द्वारा अभिषेक कर रहे हैं, जो अपने चारों हाथों में क्रमशः वरमुद्रा, अभयमुद्रा और दो कमल धारण किये हुए हैं, जिनके मस्तक पर उज्ज्वल वर्ण का किरीट सुशोभित है, जिनके कटि प्रदेश पर कौशेय (रेशमी) वस्त्र सुशोभित हैं। कमल पर स्थित ऐसी भगवती लक्ष्मी की मैं वंदना करता हूँ।

उनकी उपासना से ऐश्वर्य, सौभाग्य, धन, पुत्रादि की प्राप्ति तथा धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष की सिद्धि होती है। वे ऋद्धि-सिद्धि प्रदायिनी है। उनके अवलोकन मात्र से सब प्रकार की सुख-शान्ति प्राप्त होती है। श्रीसूक्त में उनकी महिमा का गान करते हुए कहा गया है–

लक्ष्मी के दृष्टिमात्र से निर्गुण मनुष्यों में भी शील, विद्या, विनय, औदार्य, गांभीर्य, कान्ति आदि ऐसे समस्त गुण प्राप्त हो जाते हैं, जिससे

मनुष्य सम्पूर्ण विश्व का प्रेम तथा उसकी समृद्धि प्राप्त कर लेता है। इस प्रकार का व्यक्ति सम्पूर्ण विश्व के आदर तथा श्रद्धा का पात्र बन जाता है–

त्वया विलोकिता सद्यः शीलाधैर खिलैर्गुणैः।
कुलैश्वर्यैश्च युज्यते पुरुषा निगुर्णा अपि॥

आर्य ग्रंथ उनकी दिव्य महिमा से परिपूर्ण है। उनके अनुसार वे सर्वाभरण भूषित कमल के आसन पर स्थित हो अपने कृपा कटाक्ष से भक्तों की सर्वविध मनोकामनाओं को पूर्ण करती है। उनकी उपासना अत्यन्त श्रेयस्वरूपा है तथा वे सम्पूर्ण ऐश्वर्य की अधिष्ठात्री तथा फल रूप में सम्पूर्ण सम्पत्तियों को प्रदान करने वाली हैं–

सर्वेश्वर्याधिदेवी सा सर्वसम्पत्फलप्रदा।
स्वर्गे च स्वर्गलक्ष्मीश्च राजलक्ष्मीश्च राजसु॥

इस प्रकार की सर्वगुणसम्पन्ना धन की अधिष्ठात्री देवी लक्ष्मी अग्रवालों की कुलदेवी हैं। महाराजा अग्रसेन को अपने राज्य में जब-जब कठिनाई और विपदाओं का सामना करना पड़ा, उन्होंने महालक्ष्मी की उपासना की और उन्हें अपने इष्ट में सफलता प्राप्त हुई। एक बार जब उन्होंने अपने राज्य में अकाल पड़ने पर विजय प्राप्त करने हेतु हरिद्वार में गंगा के तट पर माँ महालक्ष्मी की आराधना की तो लक्ष्मी जी ने साक्षात् अवतरित होकर महाराजा अग्रसेन को आशीर्वाद प्रदान किया–

हुई प्रसन्न मैं तुमसे, होंगे सफल सभी अरमान।
अग्रवंश के हो संस्थापक, देती मैं तुझको वरदान॥
अखिल भूमि यह तेरे कुल में, वैभव से पूरित होगी।
तेरे कुल में जाति-वर्ण के, नेता की सृष्टि होगी॥
कुल के आदि स्वरूप मूल में, तेरा नाम विश्व जानेगा।
तेरे अग्रवंशी प्रजा का, तीन लोक में आदर होगा॥
तेरे भुजबल का प्रसार, सम्पूर्ण जगत् में व्याप्त होगा।
युगों-युगों तक पूर्ण सिद्धि का, अग्रसेन अधिकारी होगा॥
मेरी पूजा तेरे कुल में, जब तक मन से बनी रहेगी।
तब तक तेरे अग्रवंश में, मेरी कृपा सर्वदा बनी रहेगी॥

महालक्ष्मी व्रत कथा के अनुसार कुल देवी महालक्ष्मी ने कहा कि हे अग्र! भविष्य में यह अग्रकुल तेरे नाम से प्रतिष्ठित होगा और जब तक सूर्य-चन्द्रमा हैं, तब तक तुम्हारे कुल का अस्तित्व बना रहेगा। मैं तुम्हारे कुल की देवी के रूप में प्रतिष्ठित होऊँगी और जब तक तुम्हारे कुल में मेरी पूजा होती रहेगी, तुम्हारा कुल सब प्रकार के धनधान्य से सम्पन्न रहेगा।

कहते हैं, महालक्ष्मी की इस कृपा के कारण ही अग्र कुल धन-धान्य से सम्पन्न हैं और अग्रवाल लक्ष्मी को अपनी आराध्य कुलदेवी मानते हुए दीपावली को उसका पूजन करते हैं। महाराजा अग्रसेन ने भी इसलिए नगर के मध्य मार्ग में महालक्ष्मी का विशाल मन्दिर बनवाया था, जहाँ अहर्निश लक्ष्मीपूजन होता और यज्ञादि पवित्र कार्य चलते रहते थे।

इसलिए जब अग्रोहा का पाँचवे तीर्थधाम के रूप में विकसित करने का निर्णय लिया गया तो अग्रोहा विकास ट्रस्ट ने महाराजा अग्रसेन के साथ कुलदेवी महालक्ष्मी का भव्य मन्दिर बनाने का संकल्प लिया और उच्च कोटि के वास्तुविदों से उसके नक्शे तैयार करा उसके निर्माण की नींव रखी गईं। 1 अक्टूबर, 1983, वह शुभ तिथि थी, जब द्वितीय महाकुंभ के अवसर पर शरद पूर्णिमा के दिन हजारों लोगों की उपस्थिति के मध्य महालक्ष्मी जी के मंदिर की नींव रखी गई। उस पुनीत कार्य का श्रेय प्राप्त हुआ, मुम्बई के श्रेष्ठि किशोरी लाल जी अग्रवाल को, जिन्होंने यज्ञ एवं वेदमंत्रों की आहूति के मध्य इसकी नींव रखी। इस अवसर पर उनके अनुज श्री फूलचन्द जी अग्रवाल ने मंदिर निर्माण हेतु 5 लाख 11 हजार रुपये की राशि तथा श्री किशोरीलाल जी ने महालक्ष्मी जी की भव्य प्रतिमा देने की घोषणा की। पूज्य स्वामी गणेशानन्द जी महाराज ने इस अवसर पर आशीर्वचन प्रदान किया।

1985 में माननीय नंद किशोर जी गोईन्का ने अग्रोहा विकास ट्रस्ट की निर्माण समिति के अध्यक्ष पद का दायित्व संभाला और श्री सुभाष गोयल ट्रस्ट के अध्यक्ष बने। पिता-पुत्र की इस जोड़ी के अग्रोहा से जुड़ने के बाद अग्रोहा में मन्दिर निर्माण के कार्य ने विशेष गति पकड़ी, युद्ध-स्तर पर महालक्ष्मी मंदिर के निर्माण कार्य को हाथ में लिया गया। अन्ततः वह 28 अक्टूबर, 1985 की शुभ तिथि आई, जब चतुर्थ अग्रोहा

महाकुम्भ के अवसर पर मन्दिर में महालक्ष्मी जी की प्रतिमा की प्राण प्रतिष्ठा और मन्दिर का उद्घाटन सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर हरियाणा के पूर्व मुख्यमंत्री श्री बनारसी दास गुप्ता सहित भारी संख्या में गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। हरियाणा के तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री भजनलाल ने भी मन्दिर के दर्शन किये।

अग्रोहा के मंदिर में स्थापित कमलासन पर स्थित चतुर्भुजी माँ महालक्ष्मी की यह प्रतिमा बड़ी ही भव्य है। उसके दोनों हाथों में कमल इस बात का परिचायक हैं कि व्यक्ति के पास चाहे कितना भी धन हो जाए, उसे कमलवत् अपने आपको असम्पृक्त रखना चाहिए। जो व्यक्ति उसमें लिप्त हो भोग विलास में रत हो जाता है उसकी समृद्धि का क्षय होने लगता है।

शेष दोनों हाथों में जो अभय और वर देने की मुद्रा में हैं, इस बात को प्रकट करते हैं कि व्यक्ति के सद्कार्यों के लिए अपने धनका सदुपयोग मुक्त हस्त से करना चाहिए और दोनों हाथों से दान देना चाहिए, क्योंकि लक्ष्मी उन्हीं से प्रसन्न होती है, जो अपनी समृद्धि का उपयोग दूसरों को अभय बनाने के लिए करते हैं। उसी से व्यक्ति के यश, पुण्य की वृद्धि होती है।

लक्ष्मी कमल के पुष्प पर स्थित है। उसके पृथ्वी की ओर फैले नाल इस ओर अंगित करते हैं कि संसार की सम्पूर्ण सम्पदा धरती के गर्भ में छिपी है और लक्ष्मी मैया उसे ही धन प्रदान करती है, जो धरती से विविध प्रकार के खनिजों, रत्नों, कृषि जन्य पदार्थों का दोहन करते हैं। ऐसे उद्यमी पुरुष ही लक्ष्मी को प्रिय लगते हैं और लक्ष्मी वहीं निवास करती है। इसलिए लक्ष्मी के उपासक होने के नाते अग्रवाल वैश्य अत्यन्त उद्यमी, लग्नशील एवं परिश्रमी होते हैं।

इस प्रकार लक्ष्मी जी की प्रतिमा अत्यन्त ही भव्यता लिये है। उससे अग्रवाल समाज की कर्मठता, उद्योगशीलता, दान देने की प्रवृत्ति, लोकहित की भावना का प्रकटीकरण होता है, इसलिए तो उनके यहाँ लक्ष्मी का वास माना गया है।

लक्ष्मी चंचला है, वह किसी स्थान पर स्थिर होकर नहीं रहती। उसका वास एकमात्र विष्णु जी के हृदय में है। इसलिए लक्ष्मी जी के साथ

विष्णु जी का होना अत्यन्त आवश्यक है। इसे अनुभव करते हुए ही सेठ मुरलीधर जी बुड़ाक वालों ने शेषमयी भगवान विष्णु व गजेन्द्र मोक्ष की दो भव्य झांकियों का निर्माण लक्ष्मी जी के मन्दिर के आगे कराया, जिनका उद्घाटन 30 अक्टूबर, 1993 को 12वें कुम्भ के अवसर पर अत्यन्त भव्यता से सम्पन्न हुआ।

लक्ष्मी जी रिद्धि-सिद्धि की दात्री हैं, इसलिए उनके मंदिर के बाहर दोनों ओर रिद्धि-सिद्धि तथा गणपति जी की प्रतिमाएँ स्थापित की गई हैं। महालक्ष्मी के मंदिर के साथ उनके भव्य गुम्बद का निर्माण भी अपेक्षित था, इसलिए श्री गोईन्का जी ने 1993 में इसके 180 फीट ऊँचे भव्य गुम्बद के निर्माण कार्य को अपने हाथ में लिया। यह गुम्बद अत्यन्त ही विशाल 65 गुणा 65 फुट में फैला है। इसके निर्माण पर लगभग एक करोड़ दस लाख रुपये व्यय हुए और बीसों कुशल शिल्पियों एवं कारीगरों ने मिलकर इसे सात वर्ष की अवधि में 1999 में पूरा किया। मंदिर के गुम्बद पर अत्यन्त ही सुन्दर स्वर्ण कलश स्थापित है, जो चांदी से निर्मित है और स्वर्ण की आभा से युक्त है। इस कलश को निर्माण करने में लगभग बीस किलो चाँदी और बारह किलो स्वर्ण का प्रयोग हुआ/अपनी अद्भुत एवं अनुपम आभा से यह मन्दिर और कलश दूर से ही यात्रियों को आमन्त्रित करते प्रतीत होते हैं। अब इस विशाल गुम्बद में माँ वैष्णो देवी की भव्य गुफाओं और मन्दिर का निर्माणा करा दिया गया है, जहाँ हजारों दर्शनार्थी एवं श्रद्धालुजन माता के चरणों में अपना मत्था टेक मनोकामना पूर्ण करते हैं। गुम्बद के निर्माण हेतु श्री गोपीराम चुरू वाला ने एक लाख रुपये की राशि भेंट की और इसके निर्माण में श्री नन्दकिशोर गोईन्का एवं श्री सुभाष गोयल की विशेष भूमिका रही। महालक्ष्मी जी का यह मन्दिर अत्यन्त ही भव्य है। मंदिर के दोनों ओर की दीवारों पर महाराजा अग्रसेन द्वारा लक्ष्मी जी की पूजा और वरदान, अग्रसेन के राजदरबार, शेषशायी भगवान विष्णु-लक्ष्मी, राधा-कृष्ण आदि के नयनाभिराम चित्र बने हैं। प्रतिमा के चारों ओर फाईबर ग्लास एवं रंग-बिरंगे कांच का बहुत ही सुन्दर काम किया हुआ है और उसकी नक्काशी को देखकर दाँतों तले अंगुली

दबानी पड़ती है। प्रतिमा पर स्वर्णछत्र सुशोभित तथा कोशैय वस्त्र धारण क्रिये हैं। मूर्ति के आगे ही दवात-कलम रखे हैं, जो इस बात की ओर संकेत करते हैं कि लक्ष्मी जी वैश्यों के बही-बसनों में निवास करती है।

मंदिर में महालक्ष्मी की पूजा, अर्चना-प्रसाद वितरण का कार्य निरन्तर चलता रहता है और अखण्ड ज्योति प्रज्ज्वलित रहती है। मन्दिर में दर्शनार्थियों का तांता लगा रहता है। अग्रवालों की कुलदेवी होने के कारण इस मंदिर की मान्यता सिद्ध पीठ के रूप में है, जहाँ असंख्य भक्त एवं श्रद्धालुजन आकर मनौती मानते और अपनी मनोकामना को पूर्ण करते हैं। माँ महालक्ष्मी की उपासना करने से धन चाहने वालों को धन और रिद्धि-सिद्धि की प्राप्ति तथा संतति की कामना करने वालों को पुत्र आदि की प्राप्ति होती है। श्रद्धापूर्वक भक्ति भाव से पूजन करने पर सब प्रकार के रोग, कष्ट आदि-व्याधियों का अंत हो, व्यक्ति को सुख-शान्ति की प्राप्ति होती है।

पूरे भारत में जब लक्ष्मीजी के मन्दिरों की संख्या नगण्य है, अग्रवालों के पाँचवे धाम अग्रोहा में स्थित इस महालक्ष्मी जी के मन्दिर का अत्यन्त महत्त्व है। आइए, हम भी माँ महालक्ष्मी जी की भक्ति एवं श्रद्धाभावना से वन्दना करते हुए इच्छित फल को प्राप्त करें।

नमस्ते सर्व देवानां वरदासि हरिप्रिये।
या गतिस्त्वत्प्रपन्नाना सा मे भूयात्वदर्चनात्॥

"सम्पूर्ण लोकों की जननी, विकसित कमल के सदृश नेत्रों वाली, भगवान विष्णु के वक्षस्थल में विराजमान कमलोद्भवा श्री लक्ष्मी जी को मैं नमस्कार करता हूँ।"

देवी! जिस पर तुम्हारी कृपा-दृष्टि है, वही प्रशंसनीय है, वही गुणी है, वही धन्यधान्य है, वही कुलीन और बुद्धिमान है तथा वही शूरवीर तथा पराक्रमी है।

अतः हे कमलनयने! अब मुझ पर आप प्रसन्न होवें और मेरा कभी परित्याग न करें!

बोलो अग्रोहा वाली कुलदेवी महालक्ष्मी की जय!

—*—

आरती महाराजा अग्रसेन जी

जय अग्रसेन हरे, स्वामी जय अग्रसेन हरे।
कोटि-कोटि नत मस्तक, सादर नमन करें।
ओ3म् जय श्री अग्रसेन हरे।
आश्विन शुक्ला एकम् नृप वल्लभ घर जाए।
स्वामी नृप वल्लभ घर जाए।
अग्रवंश संस्थापक, नागवंश ब्याहे।
ओ3म् जय श्री अग्रसेन हरे।
केसरिया ध्वज फहरे, छत्र चंवर धारे,
स्वामी छत्र चंवर धारे।
झांझ, नफीरी, नौबत, बाजे तव द्वारे,
ओ3म् जय श्री अग्रसेन हरे।
अग्रोहा रजधानी, इंद्र शरण आये।
स्वामी इंद्र शरण आये।
गौत्र अठारह अनुपम, तेरे गुण गायें,
ओ3म् जय श्री अग्रसेन हरे।
सत्य, अहिंसा, पालक, न्याय नीति समता,
प्रभु न्याय नीति समता।
ईंट रुपया की रीति, प्रकट करे ममता।
ओ3म् जय श्री अग्रसेन हरे।
ब्रह्मा, विष्णु, शंकर, वर सिंहनी दीन्हा,
स्वामी वर सिंहनी दीन्हा।
कुलदेवी महामाया, वैश्य कर्म कीन्हा।
ओ3म् जय श्री अग्रसेन हरे।
अग्रसेन जी की आरती, जो कोई नर गावे,
स्वामी जो कोई नर गावे।
कहत 'त्रिलोक' विनय से सुख सम्पत्ति पाये।
ओम जय श्री अग्रसेन हरे॥
''पितामह अग्रसेन महाराज की जय''

अग्रवाल ध्वज गान

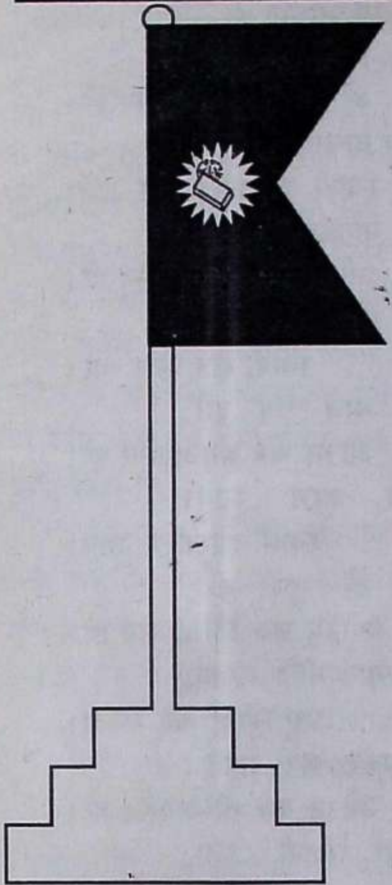

झण्डा लहर लहर लहराए।
अग्रवंश की कीर्ति सुनाए॥
केसरिया रंग् बहुत सुहाए,
त्याग भाव का पाठ पढ़ाए।
सहानुभूति व प्रेम त्याग को,
हम सब जीवन में अपनाएं॥1॥
झण्डा..............

अठारह किरणों का यह गोला,
गोत्रों की बोली है बोला।
राज्य व्यवस्था को बतलाकर
अग्रसेन की याद दिलाए॥2॥
झण्डा..............

एक रुपया संग ईंट जड़ी है,
इसमें समता बहुत बड़ी है।
समाजवाद की यही कड़ी है,
अग्रोहा की याद दिलाए॥3॥
झण्डा..............

ऊपर नीचे कूल बने हैं,
मिले बीच अनुकूल घने हैं।
ऊंच-नीच का भेद मिटा कर,
समता हम जीवन में लाएं॥4॥
झण्डा..............

अखिल भारतीय अग्रवाल सम्मेलन द्वारा प्रमाणित इस ध्वज का विवरण इस प्रकार है– सूर्य की 18 किरणें 18 गोत्रों की सूचक हैं। रुपया और ईंट महाराजा अग्रसेन के समाजवाद के प्रतीक हैं। ध्वज का रंग केसरिया है। सूर्य 1 रुपया तथा ईंट का रंग सिल्वर है। ध्वज की चौड़ाई 18 इंच व लम्बाई 27 इंच है तथा अंग्रेजी के अक्षर 'वी' के समान कटाव 9 इंच में है। नेफे का भाग 27 इंच के अतिरिक्त है। इसी अनुपात से बड़ा तथा छोटा ध्वज बनाया जा सकता है। जैसे 1 मीटर चौड़ाई, डेढ़ मीटर लम्बाई, इसमें से आधे मीटर का 'वी' काटना आदि-आदि।

''अग्रोहा का यह संदेश – एक रहेगा – भारत देश''

अग्रकुल प्रवर्तक – समाजवाद के प्रथम प्रणेता

महाराजा श्री अग्रसेन

अग्रकुल प्रवर्तक – समाजवाद के प्रथम प्रणेता

महाराजा श्री अग्रसेन

दिव्य ज्ञान का प्रकाश सारे विश्व में सर्वप्रथम धर्म-भूमि भारत से ही विस्तारित हुआ। भारत-भूमि सदैव ही अवतारों और महापुरुषों की जन्म और उनकी क्रीड़ा-स्थली के रूप में विख्यात रही है। इस पवित्र भूमि पर भगवान मर्यादा पुरुषोत्तम राम, श्रीकृष्ण, महात्मा गौतम बुद्ध, भगवान महावीर, संत कबीर जैसे महान पुरुषों ने जन्म लिया। राष्ट्रगौरव, आर्यकुल दिवाकर, ऋषियों की वैदिक परम्पराओं और समाजवाद के संस्थापक महाराजा अग्रसेन ने महाभारत के पश्चात् लुप्त होती संस्कृति, जर्जरित होती सामाजिक एवं आर्थिक व्यवस्थाओं के पुनर्निर्माण का संकल्प लिया। उन्होंने वेदों में वर्णित धर्माचरणों व राज-धर्मों का निर्वाह करते हुए "ब्रम्ह, अग्निस्टोम, राष्ट्र-भृति इत्यादि 18 महायज्ञों का सम्पादन कर अनेक लोकोपकारक सिद्धियों को अर्जित किया और अपने राज्य को सर्व-सुख-समृद्धियों से परिपूर्ण बनाया। महाराजा अग्रसेन ने अपने राज्य में "सर्वे भवन्तु सुखिनः" साकार कर धर्म के आचरण, समृद्धियों और सु-राज्य की गंगा बहाई थी।

वेदानुयायी आदर्श पुरुष महाराज अग्रसेन ने अथर्व-वेद के मंत्र "शत-हस्त समाहरः, सहस्त्र-हस्त संकिरः" अर्थात् "हे दो हाथों वाले, तू सौ हाथों वाला बनकर कृषि-व्यापार-उद्योगों, पशु-पालन इत्यादि से प्रचुर धन-ऐश्वर्यों को प्राप्त कर और हजारों हाथों वाला होकर समाज और

राष्ट्र-उत्थान के लिए अभाव-ग्रसित एवं पीड़ितों की सहायता कर।" महाराजा ने इस भावना को आधार बनाकर समृद्ध और सुखी समाज की संरचना का बीड़ा-उठाया। इस हेतु "एक ईंट और एक रुपया" के सिद्धान्त का प्रतिपादन कर अभाव ग्रसितों को सुखद जीवन जीने की सरल व सर्व हितकारी योजना से लाभान्वित किया। महाराजा का यह मूल मंत्र "एक ईंट एक रुपया" पूर्णरूप से स्नेह, सद्भाव, समता, सम्मान, समकक्षता, संगठन और पुर्नवास का अनूठा परिचायक है जो अध्यावधि ऐतिहासिक उदाहरण एवं चिर-भविष्य के लिए प्रेरणा-स्त्रोत बना रहेगा।

ऐसे युग-सृष्टा, वैश्य समाज के आदि पुरुष और अग्रवाल जाति के परम पितामह प्रातः स्मरणीय महाराजा अग्रसेन का जन्म मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्रीराम की चौंतीसवीं पीढ़ी में सूर्यवंशी-क्षत्रीय कुल के महाराजा बल्लभसेन के घर में द्वापर के अन्तिम चरण में महाकलियुग के प्रारंभ होने के लगभग 85 वर्ष पूर्व हुआ था।

काल गणना के अनुसार विक्रम संवत् आरम्भ होने से 3130 वर्ष पूर्व (अर्थात् 3130 + संवत् 2061) यानी आज से 5191 वर्ष पूर्व आश्विन शुक्ला एकम् को महाराजा अग्रसेन का प्रादुर्भाव हुआ। विश्व-विख्यात महाभारत युद्ध से पूर्व पांडवों को 12 वर्ष का वनवास हुआ। इससे पूर्व पांडव खाण्डीव राज्य के राजा रहे। साम्राज्य वृद्धि के लिए कौरवों ने कर्ण की सहायता से आस-पास के राजाओं पर आक्रमण किये, उसमें महाराजा अग्रसेन का नव-स्थापित अग्रोहा नगर भी था। महाराजा ने दूर-दर्शिता से कौरवों से संधि कर ली। नव स्थापित अग्रोहा के निर्माण और बसाने में करीब 10 वर्ष लगे। नयी राजधानी अग्रोहा-नगर की स्थापना का निर्णय महाराजा ने 25 वर्ष की आयु में अपने पिता श्री बल्लभसेन के राज्याधिकारी बनने के समय लिया था। महाभारत युद्ध की समाप्ति के पश्चात् धर्मराज युधिष्ठिर ने करीब 38 वर्ष राज्य किया। तत्पश्चात् कलियुग आरम्भ के प्रथम दिन युधिष्ठिर ने अपना राज्य अपने पौत्र परीक्षित को सौंप कर वन-गमन किया। इस प्रकार समय-काल की गणना 85 वर्ष अनुमानित है।

महाराजा अग्रसेन के पिता महाराजा बल्लभसेन अग्रोदक-राज्य (अगाच्च जनपद) के नृप थे। यह राज्य उस वक्त में वर्तमान राजस्थान प्रान्त के मारवाड़ क्षेत्र से लेकर उत्तर में हिमालय की तलहटी में स्थित गंगा-यमुना के पश्चिमी मैदान तथा व्यास नदी के तट से लेकर दिल्ली व आगरा तक विस्तृत था। इस विशाल जनपद की तत्कालीन राजधानी वर्तमान राजस्थान प्रान्त के जोधपुर जिले के अन्तर्गत प्रतापनगर नामक स्थान थी जो कि राज्य के एक छोर पर स्थित थी। इस स्थान पर महाराजा श्री बल्लभसेन तथा उनके पूर्वज महाराज श्री धनपाल (कुबेर) तथा पितामह राव महीधर ने अनेकों वर्षों तक रहते हुए इस जनपद की शासन व्यवस्था का संचालन किया था। इनका राज्य शासन काल त्रेता-युग से लेकर द्वापर युग तक था।

महाराजा श्री अग्रसेन जी के एक अनुज श्री शूरसेन जी एवं एक बहिन कुमुद कंवर का जन्म भी द्वापर के अन्तिम चरण में ही हुआ था। इनकी माता का नाम मेद कुवेरी था जो मदसौर राज्य के राजा की पुत्री थी।

महाराजा अग्रसेन का बाल्यकाल विविध अनूठी बाल-क्रीड़ाओं, शिक्षा-दीक्षा, अस्त्र-शस्त्र विद्या, मानव मात्र की सेवा जैसे कार्यों में बीता। आपने वेद-पुराण, राजनीति, अर्थ-शास्त्र इत्यादि अनेक विद्याओं का समग्र ज्ञान अर्जित किया। गुरु-कुल में सभी सहपाठी राजकुमारों में आप हर क्षेत्र में अग्रणी रहे तथा अपने गुणों और योग्यता से अग्रसेन नाम को सार्थक किया। आप रण-कौशल में अद्वितीय योद्धा और राजनीति में कुशल प्रशासक बने।

महाराज अग्रसेन अपने वंशानुगत कुलदेवी नाग-कन्या (मन्शादेवी), इष्टदेवी महालक्ष्मी जी तथा इष्टदेव भगवान विष्णुनारायण के परम भक्त थे।

महाराज बल्लभसेन ने जब अपने ज्येष्ठ पुत्र अग्रसेन जी को राज्य-भार संभालने में सभी प्रकार से सुयोग्य पाया तो उन्होंने अग्रसेन जी को

उनकी 25 वर्ष की आयु में अग्रजनपद का राज्य-भार सौंपकर राजा बनाया और स्वयं वान-प्रस्थ ग्रहण कर तप करने चले गए।

महाराजा अग्रसेन का प्राकट्य महाभारत युद्ध के समकालीन हुआ था। देश-देश के राजा महाराजा अपने पौरुष और वैभव के कारण अपना शौर्य बढ़ा रहे थे। आपस में युद्धों में तल्लीन थे। महाभारत युद्ध की विभीषिका का प्रभाव सर्वत्र फैला हुआ था। राष्ट्र की सामाजिक, राजनैतिक और आर्थिक दशा दिशा-हीन व डांवाडोल हो गई थी। अपार जन-धन की हानि की त्रासदी का दुष्प्रभाव स्पष्ट परिलक्षित था। भुख-मरी, गरीबी, लूट-खसौट और अराजकता चारों ओर अपना प्रभाव दिखा रही थी। अतः उस काल में ऐसे युगावतार की आवश्यकता भी थी जो राष्ट्रीय क्षति को रोककर राष्ट्र का पुर्ननिर्माण भी कर सके। महाराजा अग्रसेन ने समय की परिस्थितियों और सामाजिक आवश्यकताओं को समझा और सन्नतन वैदिक व्यवस्था के अनुसार समाज में एक ऐसा संगठन स्थापित किया जो राष्ट्र सुरक्षा ही नहीं बल्कि कृषि, उद्योग, वाणिज्य के विकास के साथ लोकतांत्रित व समाजवादी व्यवस्था का निर्वाह करते हुए नैतिक मूल्यों व शान्ति स्थापना की पुर्नप्रतिष्ठा कर सके।

महाराजा अग्रसेन ने शासन की बागडोर संभालते ही न्याय व समानता व समय की आवश्यकता को देखते हुए निर्णय लिया कि अपने अनुज भ्राता शूरसेन जी को पृथक राज्य का शासक बनाते हुए अग्रजनपद में एक पृथक राज्य स्थापित किया जाय। इस प्रकार शासन व्यवस्था के सुसंचालन एवं आपसी संबंधों को सुदृढ़ और मधुरतम बनाने के लिए राज्य को दो भागों में विभक्त कर श्रीशूरसेन को समान अधिकार प्रदान करते हुए राजा के पद से सुशोभित किया गया तथा उनकी राजधानी वर्तमान आगरा (अग्रनगर) शहर को बनाया। इसके फलस्वरूप दोनों ही राज्यों की सीमाओं पर सुरक्षा व्यवस्था कायम होकर बाहर के खतरों से निश्चिंत हो गए।

महाराजा ऐसे महान व उदार हृदय के थे कि वे अपनी प्रजा को

कभी युद्ध तथा अराजकता की शिकार बनते देखना नहीं चाहते थे। अतः आपने शासन व्यवस्था के सुदृढ़ सुसंचालन हेतु अपनी राजधानी को प्रतापनगर से कहीं अन्यत्र स्थानान्तरित कर, स्थापित करने का विचार किया। नई राजधानी के लिए अत्यन्त ही सुरक्षित एवं समुचित स्थान की खोज करने लगे।

इन्हीं दिनों महाराजा अग्रसेन जब अपने पिता बल्लभसेन के ब्रह्मलीन हो जाने के बाद उनकी आत्मिक शान्ति के लिए लोहागढ़ (पंजाब) तीर्थ से पिण्ड दान कर लौटते हुए एक जंगल में से गुजर रहे थे, उस दौरान उस जंगल में एक सिंहनी प्रसवावस्था में थी। महाराज अग्रसेन के लाव-लश्कर के आवागमन और भारी कोलाहल से सिंहनी को भय हुआ और प्रसव में बाधा पड़ी। इससे सिंहनी के अकाल प्रसव हो गया। सिंहनी के गर्भस्थ शिशु ने जन्म लेते ही अपने क्रुद्ध और वीर स्वभाव का प्रदर्शन करते हुए महाराजा के हाथी पर प्रहार किया। वह नवजात-कोमल शावक टक्कर खाकर स्वयं धराशायी हो गया। सिंहनी ने नवजात शिशु की इस आकस्मिक मृत्यु से दुःखी होकर राजा अग्रसेन जी को शापित कर दिया कि मेरे पुत्र-विहीन हो जाने का कारण राजा है। अतः वह भी वंश-विहीन होगा।

इस प्रकार की विलक्षण घटना देखकर महाराज अत्यन्त विस्मित हुए और धर्माचार्यों व अन्वेषक विशेषज्ञों से परामर्श किया और उस स्थल को वीर-प्रसूता माना। जिस धरा पर जन्म लेते ही प्राणी अपने विपक्षी (शत्रु) को पहचानने तथा उससे प्रतिशोध लेने की उत्कंण्ठा और क्षमता रखता हो उस धरती पर निवास करने वाला मनुष्य साहसी, वीर-पराक्रमी और उद्यमी अवश्य होगा और यही विचार कर अग्रसेन जी ने अपने राज्य की राजधानी उसी भूमि पर स्थापित करने का निश्चय कर लिया तथा मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष की पंचमी को नये नगर की नींव रख दी। जिसका नाम अग्रोदक नगर (वर्तमान नाम अग्रोहा) रखा। यह स्थान हरियाणा प्रदेश में हिसार से 20 कि.मी. की दूरी पर स्थित है।

इस नगर का विस्तार 12 योजन था। नगर चार मुख्य सड़कों द्वारा विभक्त था। प्रत्येक सड़क के दोनों ओर राजमहल और अनेक राज-प्रासाद व ऊँचे-ऊँचे भवन थे। इस नगर में अग्रवालों की कुल देवी महालक्ष्मी एवं शिव-पार्वती का बड़ा विशालकाय भव्य मंदिर बनवाया। सवा लाख भवनों की सुव्यवस्थित बस्ती बसाई। बाहर से इस नगर में आबाद होने के लिए आने वाले प्रत्येक परिवार को बिना किसी अमीर-गरीब के भेद-भाव के प्रत्येक घर से "एक रुपया एक ईंट" का उपहार दिया जाता था ताकि नवागन्तुक अपना घर बसाकर उदर-पूर्ति हेतु व्यवस्था कर उपार्जन कर सके। इस प्रकार का साम्यवाद व विश्व-बन्धुत्व का सही तथा प्रत्यक्ष उदाहरण सर्वप्रथम महाराज श्री अग्रसेन जी ने ही प्रतिपादित किया। यह निर्विवाद रूप से कहा जा सकता है कि महाराज अग्रसेन विश्व में सहकारिता एवं समाजवाद के प्रथम प्रणेता एवं जनक थे।

महाराज अग्रसेन बड़े दूरदर्शी राजनीतिज्ञ थे, वे यह भली-भांति जानते थे कि ज्यों ज्यों किसी की प्रसिद्धि व समृद्धी बढ़ती है, त्यों त्यों उसके शत्रु भी बढ़ने लगते हैं। इस बात को ध्यान में रखते हुए उन्होंने नीति से कार्य करते हुए बड़े-बड़े शक्तिशाली राजाओं से मित्रता स्थापित की तथा उनके राज्यों से व्यापार-व्यवसाय संबंध स्थापित किये। प्रबल एवं अधिक बलशाली राजाओं से वैवाहिक गठबन्धन जोड़े। उन्हें महाभारत कालीन राष्ट्र की परिस्थितियों व विभिषिकाओं का पूर्ण ज्ञान था। राज्यों में आपसी मनमुटाव, वैर-भाव पनप रहे थे।

महाराजा अग्रसेन तत्कालीन परिस्थितियों को भली प्रकार समझते थे। अतः अपना विवाह 40 वर्ष की अवस्था तक नहीं किया। उस समय दक्षिण में नागवंश के राजा सबसे शक्तिशाली माने जाते थे। नागलोक के वैभवशाली नगर कोल्हापुर के प्रतापी शासक राजा कुमद ने अपनी सुलक्षणा, विदूषी कन्या माधवी के विवाह के लिए स्वयंवर रचाया। भू-लोक-देवलोक से भी अनेक राजा और इन्द्रलोक के देवराज इन्द्र तथा महाराजा अग्रसेन स्वयंवर में आये। नागकन्या सुन्दरी माधवी ने महाराज

अग्रसेन को वरण कर लिया और महाराज अग्रसेन का विवाह माधवी से हो गया। यह विवाह दो संस्कृतियों का मिलन था। अग्रसेन सूर्यवंशी थे और राजा कुमुद नागवंशी।

देवराज इन्द्र माधवी की सुन्दरता पर मोहित था और माधवी के साथ विवाह रचाकर नागवंश के साथ मैत्री करना चाहता था, जिसमें उसे सफलता नहीं मिली। इससे राजा इन्द्र के मन में अग्रसेन के प्रति द्वेष उत्पन्न हो गया और ईर्ष्याभाव के वशीभूत होकर बदला लेने की भावना के कारण इन्द्र ने महाराज अग्रसेन के राज्य में वर्षा बरसाना बन्द कर दिया, फलस्वरूप खेती-बाड़ी नष्ट हो गई, भयंकर अकाल पड़ गया। चारों ओर त्राहि-त्राहि मच गयी। महाराजा अग्रसेन इससे विचलित नहीं हुए और अपने इष्ट भगवान शिव की आराधना करने लगे और इस कष्ट से मुक्ति हेतु शक्ति और उपाय की प्रार्थना की। भगवान शिव ने इस कष्ट के निवारण के लिए कुलदेवी महालक्ष्मी को प्रसन्न करने का निर्देश दिया।

महाराज अग्रसेन ने शिवजी की आज्ञानुसार कुलदेवी महालक्ष्मी की तपस्या कर उसे प्रसन्न किया और राज्य में धन-धान्य का वरदान प्राप्त किया। उन्होंने अपने राज्य में नदियों से नहरे निकाली, कूओं-बावड़ियों का निर्माण करवाया। सूखी धरती की प्यास बुझाई। अन्न-जल की समस्या दूर की। पशु-धन की रक्षा की। अकाल और अनावृष्टि पर विजय पाई। इस प्रकार से महाराज ने इन्द्र के द्वारा दी गई यातना का मुकाबला कर मुक्ति पाई। महाराज के नैतिक बल और महालक्ष्मी जी की कृपा के फलस्वरूप राजा इन्द्र महाराजा की शक्ति के समक्ष टिक नहीं सका और उसे पराजय माननी पड़ी। वह पराजय से घबराकर ब्रह्माजी के पास गया। ब्रह्माजी ने उसे युगपुरुष अग्रसेन से वैर-भाव छोड़कर मित्रता करने का परामर्श दिया। इन्द्र ने देवर्षि नारद के सहयोग से महाराज से संधि कर मित्रता कर ली। फलतः महाराजा का राज्य व प्रजा पूर्ण सुखी और समृद्धिशाली होने लगा।

महाराज अग्रसेन जी ने दूसरा विवाह केत-मालखंड क्षेत्र के नृपति

सुन्दर सेन की पुत्री सुन्द्रावती से और तीसरा विवाह दक्षिण में ही चम्पावती नगर के राजा धनपाल की पुत्री धनपाला से किया। तथा अन्य विवाह नागराज के अवतारधारी कोलपुर के राजा महीधर की कन्याओं से करके महाराज अग्रसेन जी ने अपने राज्य को सुदृढ़ और वैभवशाली बनाया।

महाराजा अग्रसेन अग्रोहा नगर का निर्माण कर अपना विवाह आदि कर चुके थे। प्रजा पूर्ण समृद्धशाली व सुखी थी। परन्तु महाराजा के संतान का अभाव बना रहा। क्योंकि नगर बसाने के पूर्व जिस गर्भिणी सिंहनी का गर्भस्थ शिशु गिरकर मर गया था उसने महाराजा को संतान-हीन होने का श्राप दिया था। महाराज इस श्राप से अत्यंत विचलित थे और श्राप से मुक्ति चाहते थे। उन्होंने क्षात्र-धर्म के अतिरिक्त वैष्णव धर्म को राज-धर्म घोषित किया और वैष्णव धर्माचरण से रहने लगे। फलस्वरूप महाराज का वंश अग्रवाल समाज वैष्णव अर्थात वैश्य कहलाने लगा।

महाराजा के समय तथा सतयुग, त्रेता व द्वापर युग में पशु-पक्षी आदि मानवीय भाषा बोलने की क्षमता रखते थे। मनुष्य भी उनकी वाणी को भली-भांति समझते थे। महाराजा को सिंहनी का श्राप स्पष्ट स्मरण था। अपनी वंशवृद्धि एवं शासन संचालन हेतु सिंहनी के श्राप का प्रायश्चित करने की दृष्टि से सभासदों, ऋषियों व विशेषज्ञों से परामर्श किया तथा परामर्श के अनुसार श्राप-मुक्ति हेतु कुलदेवी महालक्ष्मी की शरण में पुनःतपस्या करने का निश्चय किया।

महाराज ने यमुना तट पर अपनी नव-विवाहिता रानियों के साथ महालक्ष्मी जी की पूजा-अर्चना आरम्भ कर दी। महालक्ष्मी ने प्रसन्न होकर महाराज को तपस्या बंद कर गृहस्थाश्रम का पालन करने की आज्ञा दी क्योंकि यही चारों आश्रमों का आधार और भूलवश हुए पाप कर्मों का प्रायश्चित करने का सुगम साधन है। महालक्ष्मी जी ने वरदान दिया कि तुम्हारी वंशवृद्धी का समय आ गया है, तुम्हारा कुल तुम्हारे नाम से प्रसिद्ध होकर अग्रवंशी कहलायेगा। तुम्हारे कुल में मेरी सदैव पूजा होती रहेगी और यह कुल वैभवशाली रहेगा। कुलदेवी वरदान देकर अन्तर्धान हो गई। महाराज अग्रसेन अपनी रानियों सहित राजधानी पुनः लौट आये।

महाराज की 18 रानियों के नाम इस प्रकार थे– मित्रा, चित्रा, शुभा, शीला, शिखा, शांता, रजा, परा, शिरा, शशी, शची, रम्भा, भवानी, समा, सखी, धनपाला, सुंदरावती तथा माधवी (यह सबसे बड़ी एवं पटरानी थी)।

महाराज अग्रसेन महालक्ष्मी से अभय वर प्राप्त कर अपने राज्य को सुदृढ़ व संगठित करने में लग गये। राज्य का विस्तार किया। महाराजा ने आग्रेय गण राज्य की नींव डाली। अपने चातुर्य एवं वीरता से तत्कालीन राजनीति पर भारी प्रभाव डाला। अपने आग्रेय गणराज्य को जो कौरव कुल गणराज्य के अति निकट था स्थाई सुरक्षा बनाये रखने के लिए अपने राज्य की वैश्य कन्या से राजा धृतराष्ट्र का विवाह कराया। और सम्बन्ध स्थापित कर लिया। महाराज ने अनेक छोटे-छोटे राज्यों को मिलाकर एक बड़े गणराज्य की स्थापना की। उस समय के नागवंशी, यदुवंशी, सूर्यवंशी, चन्द्रवंशी इत्यादि राजाओं तथा मत्स्य, योद्धेय, शिव, त्रिगर्त, कैकय, मगध, मालव आदि गणराज्यों से पारस्परिक घनिष्ठ संबंध स्थापित किये। महाराज के राज्य के अन्तर्गत गौड़ (गुड़गांव), महाराष्ट्र (मेरठ), रोहिताश्व (रोहतक), हांसी, हिसार, पुण्यपतन (पानीपत), करनाल, नगरकोट (कोटकांगड़ा), लवकोट (लाहौर), मण्डी, विलासपुर, गढ़वाल, जींद, सपीदम, नाभा, नारिनवल (नारनौल) आदि नगर सम्मिलित थे।

जिस स्थल पर महाराज की इन्द्र से संधि हुई थी वह स्थान गंगा-यमुना के बीच हरिद्वार के पश्चिम में 14 कोस पर था जहाँ महाराजा ने एक विशाल स्मारक बनवाया था।

महाराजा के कनिष्ठ भ्राता शूरसेन जी की दो रानियाँ थीं। एक का नाम सुपात्रा था उसके तीन पुत्र हुए। दूसरी का नाम माद्री था उसके सात पुत्र हुए। सभी संताने प्रतापी, तेजस्वी और पिता व कुल को सुख-समृद्धि देने वाली थी।

महाराजा अग्रसेन की रानी धनपाला से नौ पुत्र हुए, जिनके नाम क्रमशः तम्बोल कर्ण, ताराचन्द, वीरभान, वासुदेव, नारसेन, अमृत सेन,

इन्दरमल, माधव सेन व गौधर थे। इसी प्रकार रानी सुन्दरावती के भी नौ पुत्र हुए, जिनके नाम क्रमशः पुष्पदेव, गेंदूमल, करणचन्द्र, मणिपाल, वृंददेव, ढावणदेव, सिंधुपति, जैत्रसंघ व मंत्रमति थे।

रानी माधवी के पुत्र का नाम विभू था। इस प्रकार अन्य रानियों से भी अनेक पुत्र और पुत्रियों ने जन्म लिया।

जब राजा अग्रसेन के पुत्रादि विध्याध्ययन कर चुके और सभी शास्त्रों में निपुण हो गये और युवावस्था में आये, तब देश-देशान्तरों के राजाओं की ओर से उनके विवाह के लिए संदेश और निमंत्रण आने लगे। महाराजा अग्रसेन ने अपने प्रमुख मंत्रियों सैनी रख, सैलकरन, कोपलऋषि और रंगराज आदि के परामर्श से अपने पुत्रों का विवाह अपने अधीन राजाओं की कन्याओं से धूमधाम से कर दिये।

महाराज को अभी इन विवाह-समारोहों से अवकाश भी नहीं मिला था कि अहिनगर राज्य (यानि अनरवर्त या पाताल राज्य जिसे अब अमेरिका देश कहते हैं) के राजा जामवन्त के पुत्र राजा वासुकि (विसानन) ने अपनी 18 पुत्रियों के विवाह का आगृहपूर्ण प्रस्ताव महाराज के 18 पुत्रों के साथ करने के लिए प्रस्तुत किया। उन्होंने बताया कि मेरा प्रण है कि जिस राजा के 18 पुत्र होंगे उनके यहाँ ही अपनी पुत्रियों का विवाह करूँगा। अन्यथा नहीं। महाराजा अग्रसेन ने विवश होकर अपने 18 पुत्रों का दूसरा विवाह राजा विशानन की 18 पुत्रियों से कर दिया।

राजा वासुकि (विशानन) के पूर्वजों में एक बड़ा प्रसिद्ध राजा नागवाल हुआ था, उसके नाम से राजा वासुकि का वंश नागवंश के नाम से प्रसिद्ध था और उनकी पुत्रियाँ नागकन्याओं के नाम से जानी जाती थी। ये कन्यायें नाग-चोलों को धारण रखती थी। विवाह के उपरान्त राजाओं की कन्याऐं गर्भवती हो गई, किन्तु राजा वासुकि की कन्याऐं गर्भवती नहीं हुई। महाराज को इससे बड़ी चिंता हुई। महाराज अग्रसेन जी का भानजा जसराज बड़ा गुणी और तपस्वी था। उसने अपने मामा अग्रसेन जी की चिंता के कारण का पता लगाया। उसने राजा वासुकि से इस रहस्य से

मुक्ति का मार्ग प्राप्त किया और नाग-पंचमी के पर्व पर जैसे ही कन्याओं ने स्नान हेतु अपने चोले उतारे, जसराज ने युक्ती से उन चोलों को लेकर अग्नि में प्रवेश ले लिया। चौले जलकर नष्ट हो गये, साथ में जसराज ने अपने आपको न्योछावर कर दिया। चोले नष्ट हो जाने से नागकन्यायें अत्यन्त विचलित हुईं, लेकिन महाराज अग्रसेन ने प्रेमपूर्वक सांत्वना देकर समझाया कि तुम्हारे द्वारा "चोलें" धारण किये रहने से तुम संतान-विहीन रहती। अब तुम वंशवृद्धि लायक हो। तुम्हें संतान प्राप्ति हो सकेगी। तुम्हारे चोलों को सदैव स्मृति-स्वरूप याद किया जाता रहेगा। विवाह के अवसर पर वर-कन्या "मुहरी" (चूंड़ी) तथा "चुनरी" तुम्हारी स्मृति स्वरूप धारण करेंगे। "मुहरी" नाग का तथा "चुनरी" चोलों (काँचली) का चिन्ह-स्वरूप है।

महाराज अग्रसेन ने अपने परमभक्त प्रिय भानजे जसराज को पुनः प्राप्त करने हेतु भगवान शिव की प्रार्थना की। भगवान शिव ने उसे पुनर्जन्म दिया तथा वह "भूभूतिया भट्ट" के नाम से जाना जाने लगा।

अब महाराजा अग्रसेन के वंश में वृद्धि होने लगी। अपनी संतानों और पौत्रों आदि की पहचान के लिए उन्होंने दो पृथक नाम रखे। जो सन्तानें राजाओं की पुत्रियों से पैदा हुई उनका नाम राजवंशी या देशवंशी दिया और जो पुत्र राजा वासुकि की पुत्रियों (नाग-कन्याओं) से पैदा हुए उनके नाम बिसवंशी या नागवंशी दिया गया। राज कन्याओं से 33 पुत्र हुए और राजवंशी कहलाए। नागकन्याओं से 50 पुत्र उत्पन्न हुए और बिसवंशी यानी नागवंशी कहलाये।

महाराजा के 54 पुत्र और 18 पुत्रियाँ तथा 52 पौत्र और 52 पौत्रियाँ हुईं। महाराज अग्रसेन ने जब अपने वंशवृद्धि का इतना विस्तार देखा तो अपने समूचे साम्राज्य को गणराज्यों के रूप में अपने पुत्रों में बांटने का निर्णय लिया। महाराज की धर्म और न्याय के प्रति अगाध श्रद्धा थी। धर्माचार द्वारा वे प्रजा में नैतिक अभ्युदय और आदर्श स्थापित करना चाहते थे। उस समय धर्म सिद्धी, सुख-समृद्धि और कार्य-सिद्धि के लिए

विशाल यज्ञों और अश्वमेघ यज्ञों के आयोजन करने की परम्परा थी। ये यज्ञ राजा-महाराजाओं की प्रतिष्ठा के मापदण्डों के साथ-साथ राष्ट्र की भावनात्मक एकता एवं जन-जन के विश्वास से जुड़ने के लिए सशक्त माध्यम भी थे। सम्पूर्ण राज्य उसमें भाग लेता था और पवित्र द्रव्यों की आहूति द्वारा अपने तथा मानव मात्र के कल्याण की कामना करता था। इससे राजा और प्रजा दोनों की चित्तवृत्तियाँ शुद्ध और सात्विक होकर समाज में सदाचार की वृद्धि होती थीं।

अतः महाराजा अग्रसेन ने अपने गणराज्य को 18 विभिन्न गणराज्यों में विभक्त कर 18 गणाधिपति नियुक्त क़रने के उद्देश्य से 18 अश्वमेघ यज्ञ करने का निर्णय किया। यज्ञों की व्यवस्थाओं का सम्पूर्ण प्रबन्ध अपने कनिष्ठ भ्राता श्री शूरसेन जी को सौंपा। यज्ञ के बृम्हा का आसन महर्षि गर्ग मुनि को दिया। दूर-दूरस्थ स्थानों एवं राज्यों को यज्ञ में सम्मिलित होने का निमंत्रण भेजा। यज्ञ में बड़े-बड़े मुनि, विद्वान, राजा-महाराजा सम्मिलित हुए। आत्रिथ्य सत्कार का कार्य राजा शूरसेन जी ने सम्हाला।

18 यज्ञों कें अधिष्ठिता-कर्ता मुख्य ऋषिवर सर्वश्री गर्ग, गोभिल, गौत्तम, मैत्रेय, जैमिनी, शेगल (शाण्डिल्य), वत्स, उरु (ओर्व), कौशिक, वशिष्ठ, कश्यप, ताण्डप, माण्य मांडव्य, धौम्य, मुद्गल, अंगिरा, भृगु, तैतरिय, नागेन्द्र, आस्तिक, भंदल आदि ऋषि मुनि बने।

महाराजा अग्रसेन ने प्रत्येक यज्ञ में गण के एक-एक प्रतिनिधि यजमान के रूप में अपने अठारह पुत्रों को नियुक्त किया और एक-एक ऋषि को उसका पुरोहित बनाया। उन्हीं ऋषियों के नाम पर अठारह कुलों यानी गौत्रों की संज्ञा दी गई, जिससे वंश परम्परा पृथक जानी जा सके। जैसे गर्ग मुनि के नाम पर गर्ग, भंदल ऋषि के नाम पर भंदल गौत्र आदि निर्धारित किये गये। यह निश्चय किया गया कि भविष्य में वैवाहिक संबंध इन्हीं गौत्र-कुलों में एक गौत्र को छोड़कर किये जा सकेंगे। इस प्रकार महाराजा अग्रसेन जी ने 18 कुलों की संरचना कर उन्हें एक झण्डे के नीचे एकत्र कर उसे वैश्य वंशी समाज संगठन की एक स्वतंत्र जाति आग्रेय जो अब अग्रवाल नाम से जानी जाती है दिया गया।

अग्रवाल समाज के गोत्राधिपतियों और ऋषियों (पुरोहितों) के आधार पर गौत्रों का निर्धारण निम्न प्रकार किया गया :-

क्रम संख्या	नाम गोत्राधिपति	नाम ऋृषि (पुरोहित)	नाम गोत्र
1.	पुष्पदेव	गर्ग	गर्ग
2.	गेंदूमल	गोभिल	गोयल
3.	करणचन्द्र	कश्यप	कुच्छल
4.	मणिपाल	कौशिक	कंसल
5.	वृंददेव	वशिष्ठ	बिंदल
6.	ढावणदेव	धौम्य	धारण
7.	सिंधुपति	शान्डिल्य	सिंहल
8.	जैत्रसंध	जैमिनी	जिंदल
9.	मंत्रपति	मैत्रेय	मित्तल
10.	तम्बोलकर्ण	तांडप	तिंगल
11.	ताराचन्द्र	तैतिरेय	तायल
12.	वीरभान	वत्स	बंसल
13.	वासुदेव	धन्यास (भंदल)	भंदल
14.	नारसेन	नागेन्द्र	नांगल
15.	अमृतसेन	मांडव्य	मंगल
16.	इन्दरमल	और्व	ऐरण
17.	माधवसेन	मुद्‌गल	मधुकुल
18.	गौधर	गौत्तम	गोयन

महाराजा अग्रसेनजी ने गौत्रों की व्यवस्था ऋषियों के नाम से इसलिए बनाई कि उनके पुत्रादि जो एक ही पिता की सन्तान होने से आपस में भाई-बहिन थे, उन में परस्पर विवाह संबंध नहीं हो सकते थे अतः इस प्रकार की अलग गौत्र व्यवस्था प्रचलित कर उनमें विभाजन कर विवाह व्यवस्था का मार्ग प्रशस्त किया और भविष्य में किसी विवाद के होने को समाप्त कर दिया।

अनादिकाल से भारत में गौत्र परम्परा रक्त-शुद्धि पर आधारित और विज्ञान सम्मत पद्धति है। एक ही रक्त संबंध में शादी-विवाह करने से वंश-वृद्धि को आघात मिलता है और समाज में नई प्रतिभा का विकास अवरुद्ध हो जाना माना गया है। व्यक्ति में नये गुणों की वृद्धि के लिए भिन्न-भिन्न रक्तांशों (जींस) अपेक्षित होते हैं। एक ही गौत्र परिवार में शादी-विवाह होने से वे ही रक्तांश पीढ़ी-दर-पीढ़ी घूमते रहते हैं और प्रतिभा-विकास की सम्भावनाऐं क्षीण हो जाती है। अतः भारतीय शास्त्रों में स्वगौत्र विवाह का निषेध करते हुए कहा गया है कि "दुहिता-दूर-हिता अर्थात कन्या का विवाह दूर यानी दूसरे गौत्र में होना हितकर है। उसका विवाह समगोत्र में नहीं करना चाहिए।

महाराजा श्री अग्रसेन के द्वारा आयोजित सत्रह यज्ञ निर्विघ्न पूरे हो गये। जब 18 वें यज्ञ का समय आया तो यज्ञ से पूर्व महाराजा को ज्ञान-बोध हो गया। उन्हें यज्ञ में दी जाने वाली पशु (घोड़े) बली में हिंसा रूपी पाप का बोध हुआ, उन्हें ऐसे कृत्य से गम्भीर घृणा हुई। उन्होंने अनुभव किया कि वैश्यों-क्षत्रियों का परमधर्म तो पशु-पालना, उनकी रक्षा करना है, वध करना नहीं। उन मूक प्राणियों के वध करने से कोई धर्म नहीं बल्कि पाप ही लगेगा। पशुवध तो महापाप कर्म है यदि धर्म सम्मत यज्ञ में पशु-वध किया जाता है तो कतई युक्ति-संगत नहीं है अपितु पाप के भागीदारी बनकर नर्क यातना के अधिकारी है। ऐसी हिंसा से किसी यज्ञ द्वारा, किसी लक्ष्य की प्राप्ति कतई सम्भव नहीं है। जीवों पर दया करनी चाहिए, उनकी रक्षाकर पालना करनी चाहिए। यह विचार कर महाराज ने अपने भ्राता राजा शूरसेनजी को और अपने पुत्रादिक वंशजों को इस प्रकार के हिंसामय यज्ञ को करने से मना कर दिया। आदेश दिया कि इस शेष अठारवें यज्ञ को बिना पशुबलि दिये पूर्ण किया जाय और यज्ञ को पूर्ण कराया तथा अपने वंशजों को यज्ञादि कार्यों में हिंसा जैसे कार्यों से दूर रहने की प्रतिज्ञा कराई। क्षत्रीय महाराजा अग्रसेन जी के इस महत्वपूर्ण विचार परिवर्तन का उनके द्वारा प्रतिपादित वैश्य जाति के जीवन पर भारी प्रभाव पड़ा और वैश्य समाज के लोग अहिंसा, निरामिष भोजन, दया,

धर्म और सदाचार का सदैव पालन करते आ रहे हैं और यह परम्परागत धरोहर बन गयी है।

महाराजा अग्रसेन ने अपनी प्रजा को युद्धों के अवसर पर अस्त्र-शस्त्र धारण कर अपनी रक्षा स्वयं करने के लिए तैयार किया था लेकिन साथ ही युद्धोत्तर समय में राष्ट्र को सुखी-समृद्धशाली और आत्म-निर्भर बनाये रखने के लिए वैश्य कर्म– कृषि, गौरक्षा, व्यापार, व्यवसाय करने के लिए प्रोत्साहित किया। उन्होंने इस दृष्टि से सारी प्रजा को वैश्य-वंशी-अग्रवाल घोषित कर दिया। लेकिन अपने पूर्व-स्वरूप क्षत्रियोचित आचारण-व्यवहार को कायम रखा। इसके लिए सामाजिक व्यवस्था का अधिकार प्रदान किया कि प्रत्येक वैश्वंशी-अग्रवाल एक दिन के लिए अवश्य राजा होगा और राज्योचित छत्र-चंवर धारण कर, घोड़ी पर पगड़ी, कलंगी व कटार बांध कर बैठेगा। यह गौरव उसे उसके विवाह के अवसर पर प्राप्त रहेगा। यह क्षत्रियोचित अधिकार अग्रवालों को आज भी प्राप्त है। विवाह के समय वर को कटार, छत्र-चंवर धारण कर घोड़े पर सवार कराया जाता है।

महाराजा अग्रसेन ने 108 वर्षों तक निर्विघ्न शासन किया। इनके राज्य में सिंह और गाय एक घाट पर पानी पीते थे। उन्होंने जनहित एवं जन कल्याण के लिए अत्यन्त दूरदर्शिता, प्रजावत्सल, समाजसेवी व कूटनीतिज्ञ शासक के रूप में शासन किया। जन, जाति या धन के आधार पर ऊँच-नीच के भेद को मिटाकर सभी नागरिकों के साथ समानता का व्यवहार किया। सब को समान अधिकार दिये। राज्य में सुख-शान्ति और समृद्धि की स्थापना के लिए अपने पड़ौसी राजाओं से संधि और मित्रता स्थापित की और युद्धों से होने वाले विनाश के भय को समाप्त किया। युद्धों से मुक्ति पाकर, क्षात्र-धर्म को छोड़कर, समाज को सुखी और समृद्धशाली बनाये रखने के लिए वैश्य कर्म को बढ़ावा दिया। कृषि उत्पादन, व्यापार, देशाटन, पशुपालन आदि को प्रोत्साहित कर वैश्य वर्ण को प्रतिष्ठित कर प्रसिद्धि दिलाई।

महाराजा अग्रसेन 133 वर्ष की आयु होने पर, अपनी वृद्धावस्था समीप जानकर परम आराध्या कुल देवी महालक्ष्मीजी के आदेश से धर्म का अनुसरण करते हुए अपने राज्य की बागडोर अपने ज्येष्ठ पुत्र विभु को सौंपकर उसे राजगद्दी पर बिठाया और अपनी रानियों और भ्राता श्री शूरसेन के साथ वन में तपस्या करने प्रस्थान कर गये। दक्षिण में गोदावरी के तट पर ब्रम्हसर नामक तीर्थ पर तप करते हुए 193 वर्ष की आयु में बृम्हलीन हो गये।

महाराजा अग्रसेन एक पौराणिक महापुरुष थे और अपने द्वारा प्रतिस्थापित ऐतिहासिक कार्यों से समूचे विश्व के लिए प्रेरणा के स्त्रोत हैं। उन्होंने सभी प्रकार से एक महत्वपूर्ण समाजवादी साम्राज्य की स्थापना करके विश्व के समक्ष अनूठे आदर्श और पद्धतियाँ प्रस्तुत किये हैं। ऐसे महान अवतारी पुरुष को शतशः प्रणाम और कोटिशः अभिनन्दन।

महाराजा अग्रसेन का महत्व राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय जगत में विस्तार से फैला हुआ प्रसिद्धि को प्राप्त है। भारत सरकार ने उनकी स्मृति, यश और सम्मान में दिनांक 24 सितम्बर 1976 को विशेष समारोह आयोजित कर 25 पैसे मूल्य का एक विशेष डाक-टिकिट प्रसारित किया, जिसकी संख्या 80 लाख थी। उनके जीवन परिचय एंवं उनके द्वारा स्थापित समाजवादी सिद्धान्तों के फोल्डर और अग्रोहा के खण्डहरों के चित्र से अंकित लिफाफे भी जारी किये।

दिल्ली से फाजिल्का तक के राष्ट्रीय राजमार्ग नं. 10 का नाम महाराजा अग्रसेन राष्ट्रीय राजमार्ग किया गया है।

भारत सरकार के परिवहन मंत्रालय ने 350 करोड़ की लागत से 1,40,000 टन क्षमता वाले जहाज का नाम "महाराजा अग्रसेन जलपोत" रखा है, इस विशाल जहाज का जलावतरण मुंबई में अप्रेल 1995 को किया गया।

महाराजा अग्रसेन की राजधानी अग्रोहा का पुनर्निर्माण करते हुए, उसे हिन्दुओं के पांचवे धर्म-धाम के रूप में विकसित किया जा चुका है।

महाराजा अग्रसेन के नाम से भारत ही नहीं, भारत से बाहर विदेशों में भी अनेक विद्यालय, धर्मशालाऐं, अस्पताल, मार्ग और नगर स्थापित हो चुके हैं। हजारों की संख्या में उनकी मूर्तियाँ प्रतिष्ठापित की गई हैं। हजारों संस्थाऐं समाज के विकास और समृद्धि के लिए बन चुकी है। महाराजा की प्रतिवर्ष जयंतियाँ बड़ी धूम-धाम से मनाई जा रही है। आप प्रेरणा के स्त्रोत और धर्म व एकता के प्रतीक है। आप के ध्वज के नीचे सम्पूर्ण राष्ट्र का वैश्य समाज यश और समृद्धि से परिपूर्ण है। आपका आशीर्वाद पुष्पित-पल्लवित हो रहा है।

जय अग्रसेन - जय भारत।

हे वंश प्रवर्तक अग्रदूत, ओ पूज्य पितामह अग्रसेन।
स्वीकार करो मेरा प्रणाम, तुमको प्रणाम शत शत प्रणाम॥

—*—

श्री अग्रसेन महाराज वन्दनम्

श्री अग्रसेन महाराज वन्दनम्, मनुज राजन् राजनम्।
हे चक्रवर्ती दृढ़ प्रतिज्ञं, अतुल रूपम् शोभितम्॥
अखिल विश्वं सुखकरं तुम, प्रजा जीवन जीवनम्।
हे विराट राज विराजनं, महाधीषम् गौरवम्॥
करूणा निधानं विवेकशीलम्, निश्चछल प्रतीत हे शुभम्।
हे अग्र वंश जन्मदानं, वीर पुरुष महानतम्॥
राष्ट्रनायकं चरित्र नायकं, नायक प्रजापालकम्।
हे युग पुरुष लक्ष्मी वरं, अमर अग्रकुल भूषणम्॥
जन प्राणधारम् मानवम्, कल्याणकारक कारणम्।
हे अभिनन्दीयं वन्दनीयं, श्रेष्ठ भूषण भूषणम्॥
शरद् अगणित दिव्य दीपक तुम अलौकिक पौरूषिम्।
हे प्रकाश पुंजम गुण निधानं पूज्य देवम् देवनम्॥

अग्रोहा में श्री अग्रसेन फाउंडेशन द्वारा

"अग्र विभूति स्मारक"

का निर्माण

महाराजा श्री अग्रसेन जी के सिद्धान्तों से प्रेरित होकर उनकी कर्मभूमि अग्रोहा में अखिल भारतीय अग्रवाल सम्मेलन के द्वारा स्थापित "श्री अग्रसेन फाउंडेशन" के माध्यम से "**अग्र विभूति स्मारक**" बनाया जा रहा है। इस स्मारक में राष्ट्रीय स्तर का विशाल संग्रहालय, जिसमें देश की आजादी व देश के निर्माण में योगदान देने वाली अग्र वैश्य विभूतियाँ जिन्होंने समाज का नाम रोशन किया हो जैसे महान स्वतंत्रता सेनानी, उद्योगपति, राज नेतागण, डॉक्टर, इंजीनियर, साहित्यकार, खिलाड़ी व अन्य क्षेत्रों में योगदान देने वालों के सचित्र जीवन परिचय, जन उपयोगी कार्यों का चित्रण, विशाल सभागार, भव्य पुस्तकालय एवं शोध केन्द्र स्थापित किया जा रहा है। इन कार्यों को मूर्त रूप देने के लिए समाज के बंधुओं का तन-मन व धन से सहयोग सदैव अपेक्षणीय है। सहयोग हेतु अपनी क्षमतानुसार दान देकर संरक्षक, ट्रस्टी व सदस्य बन सकते हैं।

जय श्री अग्रसेन-जय अग्रोहा

* * *

अग्रोहा पुनर्निर्माण का साक्षी अग्रोहा का सेठ

हरभज शाह (बावन क्रोड़ी श्रेष्ठी)

अग्रोहा नगर पर आक्रान्ताओं ने अनेक बार आक्रमण कर नगर को जन-शून्य कर दिया। आक्रमणकारियों का मुकाबला करते हुए अनेक वीरों ने अपने प्राण न्यौछावर कर दिये। बचे हुए लोग इधर-उधर रहने चले गये। हरियाणा के महम नगर में अग्रोहा से आया एक परिवार जिसके मुखिया श्री हरभज शाह थे। हरभज शाह विपुल सम्पत्ति के स्वामी थे। देश-विदेश में दूर-दूर तक उनका व्यापार था। वह "बावन क्रोड़ी श्रेष्ठी" कहलाते थे। इनकी गौरव गाथा बहुत प्रसिद्ध थी।

अग्रोहा का पुनर्निर्माण : सेठ 'श्री चन्द्र' नामक एक प्रसिद्ध व्यापारी ने ग्यारह सौ ऊँटों पर केसर लादकर अपने कारिन्दों के साथ बेचने के लिए भेजी। उनको निर्देश था कि सारी केसर एक ही व्यापारी को थोक में बेची जाये। कारिन्दे 'महम' की मण्डी में आये। इतनी अधिक मात्रा में असली केसर कोई खरीदने को तैयार नहीं था। कारिन्दे सेठ हरभज शाह के पास आये और केसर खरीदने का आग्रह किया। सेठ उन दिनों विशाल हवेली बना रहे थे। हवेली की लिपाई चल रही थी। सेठ हरभज शाह ने सारी केसर खरीदकर हवेली की लिपाई के लिए तैयार किये गए चूने में डलवा दी।

मूल्य लेकर कारिन्दे सेठ श्री चन्द्र के पास पहुँचे। उन्होंने हरभज शाह की संपन्नता का वर्णन सुनाया। सारी कहानी सुनकर सेठ श्री चन्द्र ने हरभज शाह को एक व्यंग्यपूर्वक पत्र लिखा कि "आपके पूर्वजों का नगर उजाड़ पड़ा है और आप अपनी सम्पत्ति को व्यर्थ खोकर झूठी प्रशंसा प्राप्त करने में लगे हो। धिक्कार है ऐसी समझ पर।"

पत्र मिलते ही सेठ हरभज शाह ने अग्रोहा को फिर से बसाने का संकल्प ले लिया। अग्रोहा में हजारों भवन बनवाये। बाग-बगीचों, सड़कों और अन्य सुविधाओं का प्रबन्ध किया। अग्रोहा छोड़कर गए परिवारों को अग्रोहा में वापस बसने के लिए कहा। व्यापार-व्यवसाय के लिए महाराजा अग्रसेन के समाजवाद व रीति के अनुसार पर्याप्त ऋण एवं सुविधाएँ दीं। कुछ ही समय में अग्रोहा को पुनः निर्माण कर सुन्दर नगर बना दिया।

लक्खी तालाब का पुनः निर्माण : अग्रोहा का सेठ हरभज शाह हर व्यक्ति को उसकी आवश्यकता के अनुसार ऋण देता था। उसी नगर के एक बनजारे जिसका नाम लक्खीं सिंह था सेठ हरभज शाह को मूर्ख समझा और उसने सेठ से एक लाख रुपया इस शर्त पर ऋण लिया कि वह इसका भुगतान परलोक में करेगा। बनजारे ने सेठ की मूर्खता की चर्चा सम्बन्धियों व साथियों में की। सभी ने इस कृत्य को समझा और सेठ की प्रशंसा की तथा बनजारे के कार्य की तीव्र निन्दा की। बनजारे को अपने किये के प्रति ग्लानि होने लगी। विचार आया कि यह रुपया अभी नहीं चुकाया तो अगले जन्म में भी कैसे चुकाऊँगा? उसने निर्णय किया कि यह रुपये अभी ज्यों का त्यों वापस कर दे।

लक्खी बनजारा ऋण लौटाने के लिए सेठ हरभज शाह के पास गया, पर सेठ ने समय से पूर्व ऋण वापस लेने से मना कर दिया। अब लक्खी बनजारा बेबस हो गया। उसने एक सन्यासी महात्मा से इस ऋण-मुक्ति का उपाय पूछा। महात्मा जी ने कहा कि अग्रोहा में पानी की कमी है। महाराजा अग्रसेन के समय का बना हुआ तालाब है, जो अब नष्ट हो चुका है। तुम उस तालाब को इस धन से पुनर्निर्माण करवा दो। तुम्हारा ऋण चूकता हो जायेगा। बनजारे को यह व्यवस्था पसन्द आ गई और उसने उसी राशि से 80 एकड़ भूमि पर एक विशाल तालाब का निर्माण कर उसमें स्वच्छ जल भरवा दिया। उसके चारों ओर सुन्दर-घाट, बाग-बगीचे लगवा दिये और स्वयं उसकी देख-रेख करने लगा। कोई नगर-वासी यदि उस जल का उपयोग करना चाहता तो वह उसे मना कर देता।

पूछने पर बताता कि यह तालाब तो सेठ हरभज शाह का निजी तालाब है, जिसका पानी उनकी आज्ञा के बिना कोई काम में नहीं ले सकता।

यह बात सेठ हरभज शाह तक पहुँची। वे लक्खीसिंह के पास आये और तालाब बनवाने तथा पानी का उपयोग न करने देने का रहस्य पूछा। बनजारे ने कहा कि मैंने आपसे परलोक में भुगतान करने की शर्त पर एक लाख रुपये ऋण लिया था। मैं उन्हें वापस करना चाहता था। लेकिन आपने समय से पूर्व जमा करने से मना कर दिया। मैंने उन्हीं रुपयों से यह तालाब बनवाया है। अतः यह आपका है जब तक आप मेरा ऋण जमा नहीं करते, कोई कैसे इस तालाब का पानी काम में ले सकता है? सेठ हरभज शाह इस व्यवस्था को समझ गये और उसने बनजारे का ऋण अपनी बही में जमा कर ऋण से मुक्त कर दिया तथा तालाब को जन-सामान्य के उपयोग के लिए खोल दिया। तब से उस तालाब का नाम "लक्खी सागर" पड़ गया। आज अग्रोहा विकास ट्रस्ट ने भी उसी स्थान पर "शक्ति सरोवर" नाम से तालाब बनवाया है।

शील-मेहता की प्रेम-गाथा :

अग्रोहा के प्रसिद्ध सेठ हरभज शाह की पुत्री का नाम शीलादेवी था। उसका विवाह सियालकोट के राजा रिसालू के दीवान मेहता शाह के साथ हुआ था। शीला अपने समय की सर्वाधिक रूपवती युवती थी। उसके रूप और पति-प्रेम की चर्चा दूर-दूर तक फैली हुई थी। राजा रिसालू ने जब शीला के रूप की प्रशंसा सुनी तो उसके मन में शीला को प्राप्त करने की इच्छा बलवती हो गई। रिसालू ने शीला को प्राप्त करने के लिए एक षड्यन्त्र रचा। राजकीय कार्य के बहाने मेहता को बाहर भेज दिया। उनकी अनुपस्थिति में राजा रिसालू एक रात मेहता का रूप बनाकर शीला के शयन कक्ष में जा पहुँचा। शीला राजा को पहचान गई और उसे गिराकर अपने हाथ में कटार लेकर राजा की छाती पर बैठ गई। कामान्ध राजा कुछ न कर सका। उसने प्राणों की भीख मांगी। दया कर शीला ने राजा को मुक्त कर दिया।

राजा रिसालू ने अपने इस अपमान का बदला लेने का निश्चय किया। उसने शीला की दासी को लोभ देकर अपने नाम की सोने की अंगूठी शीला के बिस्तर में छुपवा दी। मेहता को जब अंगूठी मिली उसके बारे में पूछने पर शीला कोई उत्तर नहीं दे पाई। मेहता ने शीला को चरित्रहीन मान लिया। सेठ हरभज शाह ने पुत्री को अग्रोहा बुला लिया।

अनेक वर्ष बीत गये। षड्यन्त्र में शामिल शीला की दासी को असाध्य रोग हो गया। उसने अपना अपराध मेहता को बताया। दासी से सच्ची घटना जानते ही मेहता पागल जैसे हो गये और अग्रोहा पैदल ही चल पड़े। भूख-प्यास-थकान से अग्रोहा के पास पहुँचते-पहुँचते मेहता का देहान्त हो गया। लोगों ने शव को पहचान कर शीला को खबर दी। वह भी शव देखकर मूर्छित होकर मृत्यु को प्राप्त हो गयी। दोनों का एक ही चिता में दाह संस्कार किया गया। राजा रिसालू को भी इससे आत्म-ग्लानि हुई और राज्य त्यागकर सन्यासी बन गया। अग्रोहा में उस स्थान पर उनकी स्मृति में "शीला की मैडी" बनी हुई थी। मुम्बई के सेठ तिलक राज जी अग्रवाल ने मैडी के स्थान पर एक भव्य मंदिर "शील माता" बनवा दिया। जहाँ हजारों लोग शील माता के दर्शन करने और मनौती पूरी करने तथा बच्चों का मुण्डन करवाने हेतु आते हैं। यह तीर्थ स्थल बन चुका है।

इस प्रकार अग्रवंशज सेठ हरभज शाह के जीवन के कुछ मुख्य अंश समाज सेवा के प्रतीक स्मरणीय है। समाज के पुनर्गठन के प्रणेता को शत-शत नमन्।

—*—

कर्म करना बहुत अच्छा है, पर वह विचारों से आता है। इसलिए अपने मस्तिष्क को उच्च विचारों और आदर्शों से भर लो, उन्हीं से महान कार्यों का जन्म होगा।

— स्वामी विवेकानन्द

अग्रकुल गौरव भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र
(एक राष्ट्रवादी समाज सुधारक)

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र उन तेजस्वी-ओजस्वी कवियों और साहित्य-कारों में अग्रणी थे जिन्होंने ब्रिटिश शासन काल में सबसे पहले स्वदेशी, स्वभाषा तथा स्वतंत्रता का उद्घोष कर अपनी निर्भीकता का परिचय दिया था। वे जहाँ महान् श्रीकृष्ण भक्त कवि थे वहीं उनकी साहित्यिक रचनाओं में देश की जनता को स्वदेश के प्रति जाग्रत करने की हुंकार सुनाई देती है।

भाद्रपद शुक्ला 7 सम्वत् 1907 (दिनांक 9 सितम्बर 1850) को काशी नगरी के प्रतिष्ठित व्यवसायी बाबू गोपाल चन्द्र अग्रवाल के घर जन्में बाबू हरिश्चन्द्र अग्रवाल की साहित्यिक प्रतिभा तथा साहित्य में उनके अपूर्व योगदान को देखते हुए "भारतेन्दु" की उपाधि से अलंकृत किया गया था। ये बाल्यावस्था से ही कुशाग्र बुद्धि और विशेष प्रतिभावों से युक्त थे। भारतेन्दु का अध्ययन इतना व्यापक था कि दो-चार भाषाएँ सीखने पर ही वह संतोष न कर सके। बल्कि 22 भाषाओं का ज्ञान प्राप्त किया। जिस आदमी ने ज्ञान का इतना उपार्जन किया हो उसमें विचारों की संकीर्णता कैसे रह सकती थी। भारतेन्दु जिस युग में पैदा हुए, वह आधुनिक होते हुए भी भारत के लिए मध्यकालीन था। देश पुराने रीति-रिवाजों और रूढ़ियों के जाल में फंसा हुआ था। पुरातन संस्कारों के होते हुए भी समाज सुधार के सम्बन्ध में हरिश्चन्द्र का उत्साह आश्चर्यजनक था।

हिन्दी के विकास के लिए और साहित्य के विभिन्न अंगों को समर्थ

बनाने के लिए अग्रवाल वंशी भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने जो कुछ किया उसके बारे में हिन्दी साहित्य जगत के विद्वान बहुत कुछ जानते हैं। भारतेन्दु ने हिन्दी गद्य और पद्य शैलियों को मार्जित किया और साहित्य को नया मोड़ दिया, इसीलिए उन्हें आधुनिक हिन्दी का प्रवर्तक माना जाता है। अंग्रेजी भाषा के अध्ययन से उन्होंने अंग्रेजी में लिखित बंगला साहित्य और बंगला के पत्र-पत्रिकाओं में उल्लेखित पाश्चात्य नवीन विचारों और आधुनिकता को समझा। इससे प्राच्य और नवीनता की विभिन्नता से दो धारायें प्रस्फुटित हुईं। प्रथम देशभक्ति और दूसरी समाज सुधार की भावना। भारतेन्दु में निज देश और भारतीय परम्परा के साथ जातीय गौरव और निजी भाषा के प्रति रुझान बाढ़ के समान उमड़ा। संकीर्ण व रूढ़िवादी विचारों से ऊपर उठकर उनकी आस्था मानवता में जा लगी। उनकी रचनाओं और उनके कार्य-कलापों में मानवता पूरी तरह से अभिव्यक्त हुई।

प्रथम उत्थान के रूप में भारतेन्दु ने हिन्दी भाषा का स्वाभाविक विकास किया। उन्होंने भाषा को अत्यधिक सरल, सहज एवं सुबोध बनाने का प्रयत्न किया। इस संबंध में आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने लिखा है–

भारतीय संस्कृति व प्राचीन साहित्य के इस संधिकाल में नवीन सृजन, आधुनिक हिन्दी काव्य, निबन्ध साहित्य और नाटक पद्धति को नवीनता प्रदान करने वाले युग कवि, स्वाधीनता आन्दोलन के प्रथम मंत्रदाता भारतेन्दु बाबू थे। अतः इस काल को "भारतेन्दु युग" से संबोधित किया गया जिसका कालांश सन् 1867 से 1885 तक माना गया है।

"भाषा का निखरा हुआ शिष्ट सामान्य रूप भारतेन्दु की कला-लेखनी के साथ ही प्रकट हुआ। इससे भी बड़ा काम उन्होंने यह किया कि साहित्य को नवीन मार्ग दिखाया और उसे वे शिक्षित जनता के साहचर्य में लाये। नई शिक्षा के प्रभाव से लोगों की विचारधारा बदली। उनके मन में देश-हित, समाज-हित आदि की नई उमंगें उत्पन्न हुईं। काल की गति के साथ-साथ उनके भाव और विचार तो बहुत बढ़ गये थे, पर साहित्य पीछे रह गया था। भक्ति, शृंगार आदि पुराने ढंग की कविताएँ

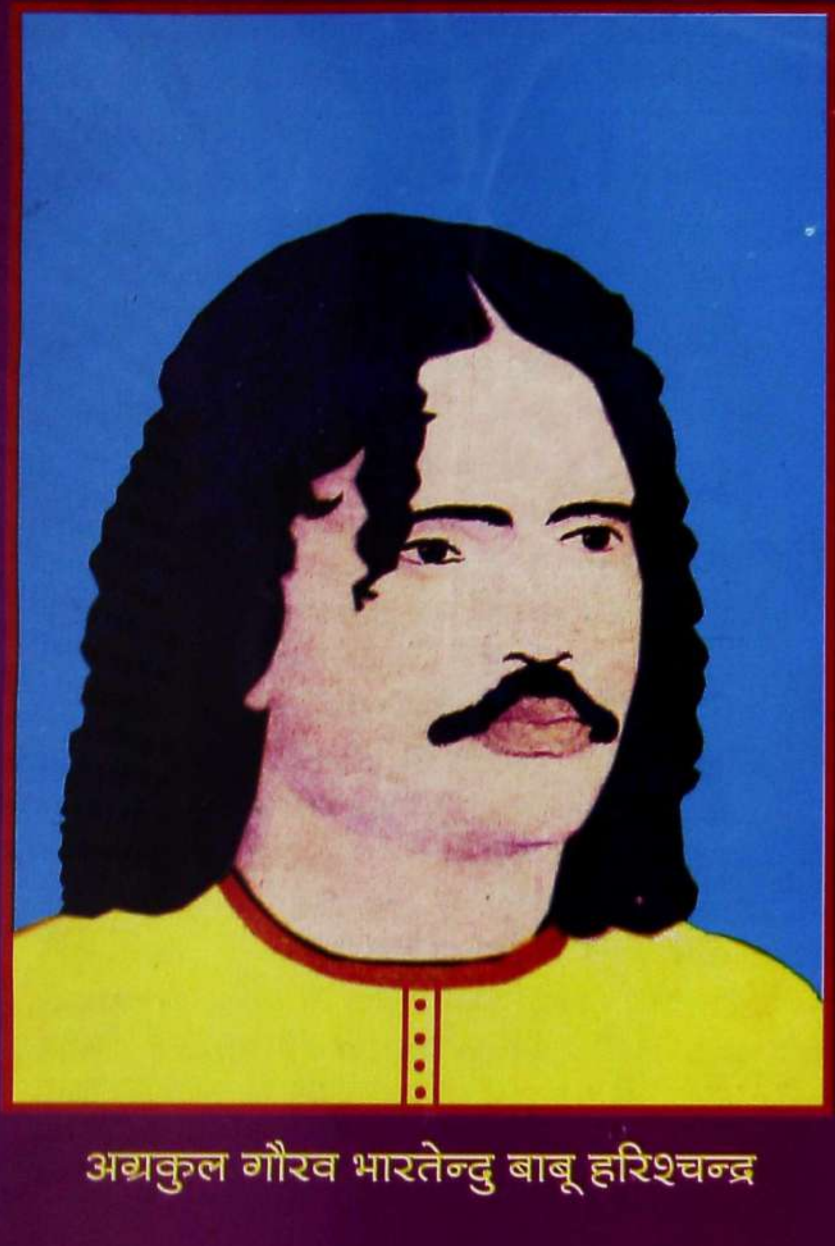

अग्रकुल गौरव भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र

ही होती चली आ रही थीं पर देश-काल के अनुकूल साहित्य-निर्माण का विस्तृत प्रयत्न तब तक नहीं हुआ था। बंग देश में नए ढंग के नाटकों और उपन्यासों का सूत्रपात हो चुका था, जिसमें देश और समाज को नई रुचि और भावना का प्रतिबिम्ब आने लगा था, पर हिन्दी साहित्य अपने पुराने रास्ते पर ही पड़ा था। भारतेन्दु ने उस साहित्य को दूसरी ओर मोड़कर हमारे जीवन के साथ फिर से लगा दिया। इस प्रकार हमारे जीवन और साहित्य के बीच जो विच्छेद पड़ रहा था, उसे उन्होंने दूर किया। हमारे साहित्य को नए-नए विषयों की ओर प्रवृत्त करने वाले हरिश्चन्द्र ही हुए।''

संक्षेप में, भारतेन्दु जी की जो विशेषताएँ हैं वही भारतेन्दु-काल की प्रवृत्तियाँ हैं। भारतेन्दु का व्यक्तित्व इतना व्यापक है कि भारतेन्दु-काल की साहित्यिक चेतना-वृत्त के वे केन्द्र हैं। साहित्य या समाज में सुधार की प्रवृत्ति भारतेन्दु-काल की सर्वप्रधान प्रवृत्ति है।

युग कवि भारतेन्दु जी अग्रवाल कुल की अमूल्य निधि है, जिन्होंने गद्य, पद्य और नाटक तथा निबंध तथा पत्र-पत्रिकारिता आदि साहित्य की सभी विधाओं को न केवल क्रान्तिकारी दिशा ही दी, अपितु हिन्दी में उच्च कोटि के सम्पादकों, लेखकों, कवियों और साहित्यकारों की एक लम्बी शृंखला बनाने का भी श्रेय प्राप्त किया। उन्हीं के प्रयासों का परिणाम था कि हिन्दी समग्रता, सार्वदेशिकता और आधुनिकता को प्राप्त कर सकी।

भारतेन्दु जी के पिताश्री स्वयं उच्चकोटि के भक्त हृदय कवि और साहित्यकार थे। वे ''गिरधर दास'' के उपनाम से कविताऐं लिखते थे। उनकी लिखी ''विदुरनीति'' साहित्य क्षेत्र की दुर्लभ धरोहर है। श्री गोपालचन्द्र ने चालीस से अधिक पुस्तकें लिखकर हिन्दी साहित्य की अभिवृद्धि में योगदान किया था। इन्होंने ब्रजभाषा में ''नहुष'' नामक नाटक लिखा, जो हिन्दी का सर्वप्रथम मौलिक नाटक था। पिता श्री के कृतित्व की प्रेरणा से भारतेन्दु बाबू में हिन्दी नाटक साहित्य में सुधार की नई-चेतना का प्रादुर्भाव हुआ। भारतेन्दुजी ने नाटकों को नई दिशा दी, जिनमें

न तो प्राचीनता का अन्धानुकरण रहा और न ही आधुनिक पाश्चात्य शैली का अनुकरण। इन्होंने विविध विषयों पर लेख और नाटकों की रचना की है, जिनमें सामाजिक दशा का अच्छा, सजीव चित्रण मिलता है। इनके लेख प्रमुख व प्रसिद्ध नाटक "भारत-दुर्दशा, भारत-जननी, वैदिक हिंसा-हिंसा न भवति, चन्द्रावली, नीलदेवी, रत्नावली, पाखण्ड, विडम्बन, धनंजय-विजय, कर्पूर मंजरी, सती-प्रताप, विषस्य-विषमोषधम, प्रेम-जोगिनी, विद्या-सुन्दर, अन्धेर नगरी, सत्यवादी हरिश्चन्द्र, मुद्रा-राक्षस आदि हैं। भारतेन्दुजी प्रथम नाटककार भी थे। स्वयं कलाकार थे। अतः अपने नाटकों को कला की दृष्टि से अभिनय बनाने में पूर्ण सफलता प्राप्त की।

भारतेन्दु जी ने हिन्दी में निबन्ध-साहित्य के जन्मदाता के रूप में अनेक विषयों पर निबन्ध लिखे हैं। शैली, भाषा और विषय की दृष्टि से उनमें यथेष्ट प्रोढ़ता है। उस समय के लेखकों में हिन्दी की भाषा शैली के प्रति अनिश्चितता थी। इसको भारतेन्दुजी ने दूर किया और हिन्दी अशुद्ध भाषा शैलीं को "खड़ी बोली" में सर्वप्रथम गद्य का माध्यम बनाया। पद्य की भाषा बृज-भाषा को ही परिमार्जित सरल रूप में आगे बढ़ाया।

आपने राष्ट्र-प्रेम तथा राज-भक्ति तथा ईश्वर-भक्ति के साथ श्रृंगार को भी अपनी पद्य शैली में कविता के रूप में संजोया है। इनकी रचनाएं बहुत बड़ी संख्या में हैं। उनमें महत्त्वपूर्ण प्रमुख काव्य है– "प्रेम-माधुरी, प्रेम-फुलवारी, प्रबोधिनी, प्रेम-प्रलाप" आदि।

भारतेन्दु जी की मानवता के प्रति भावना उनकी साहित्यिक कृतियों में नहीं समा सकी। इसे पूरी तरह अभिव्यक्त करने के लिए उन्होंने सामाजिक कार्य-कलापों का सहारा लिया। जीवन के इस पक्ष को आगे बढ़ाने के लिए ही उन्होंने अनेक पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन करना आरम्भ किया। अपनी लेखनी के माध्यम से राष्ट्रीय चेतना के प्रसार में भारी योगदान किया। भारत दुर्दशा पर उनके विचार आज भी लोक मानस को झकझोर देने की क्षमता रखते हैं। भारतेन्दु जी ने लिखाः–

''जागो-जागो रे भाई, निसिकी कौन कहे,
दिन बीत्यो-काल रात्रि चलि आई।
दुर्दिनता की दुर्दशा, कहि न जाय, का कहिए,
रोबहु सब मिलिके आबहु, भारत भाई–
हा-हा-भारत दुर्दशा न देखी जाई।।

यह तो देश की दुर्दशा पर उनका रुदन। उस दुर्दशा का स्वरूप कितने स्पष्ट शब्दों में बयान किया गया है, अब यह भी देखिए–

अंग्रेज राज सुख साज, सजे सब भारी,
पै धन विदेश चलि जात इहै अति ख्वारी।
ताहू पै महंगी काल रोग बिस्तारी,
दिन-दिन दुःख देत, ईस हा-हारी।।
सबके ऊपर टिक्कस की आफत आई,
हा-हा भारत दुर्दशा न देखी जाई।।

दुर्दशा पर आँसू बहाने और उसके स्वरूप को देख लेने के बाद उसंके कारणों पर दृष्टि जाती है, उसका प्रमुख कारण विदेशियों की स्वार्थ-परता नीति है जो भारत का सब माल हड़प कर जाते हैं। विदेशी कपड़े तथा अन्य विदेशी वस्तुओं के एवज भारत की धन-सम्पदा इंग्लैण्ड ढोते जा रहे हैं :–

भीतर-भीतर सब रस चूसे, हंसि-हंसि के तन-मन-धन भूसे।
जाहिर बातन में अति तेज, क्यों सखी साजन, नहीं अंगरेज।।

भारतेन्दु जी की दूसरी प्रमुख प्रवृत्ति देशभक्ति की थी या विदेशी सत्ता की उपस्थिति से उत्पन्न विषमताओं पर कटाक्ष की। इस प्रकार उन्होंने राष्ट्रीय आन्दोलन को अत्यधिक जागृत करने में बल प्रदान किया। अब से लगभग 125 वर्ष पूर्व जब पूरे भारत में अंग्रेजी शासन का दबदबा था, विदेशी वस्त्रों से बाजार पटे होते थे, उस समय स्वदेशी व खादी की प्रेरणा देना कम साहस का काम नहीं था। उन्होंने विदेशी ''मलमल'' तथा मारकीन कपड़े पर व्यंग्य करते हुए लिखा था–

"मारकीन मलमलहु बिना चलत नहीं कछु काम,
परदेशी जुलहान के मतहुँ भये गुलाम।"

इसमें उन्होंने स्पष्ट कहा था हम विदेशी जुलाहों के गुलाम होते जा रहे हैं। भारतेन्दु जी ने सन् 1867 में "कवि-वचन-सुधा" नामक मासिक पत्र का प्रकाशन आरम्भ किया। यह हिन्दी का सर्वप्रथम महत्त्वपूर्ण पत्र था। इसका सिद्धान्त-वाक्य उन्होंने यह रक्खा था :-

खल जनन सों सज्जन दुःखी मति होहि, हरि पद रति रहैं,
अपधर्म छूटे, स्वत्व निज, भारत गहै, कर दुःख बहै।
बुध तजहिं मत्सर नारि नर सम होंहि, जग आनन्द लहैं,
तजि ग्राम्य कविता, सुकवि-जन की अमृत बानी सब गहै।

इस पत्र में वे निर्भीकता पूर्वक समाज में व्याप्त कुरीतियों पर चोट करने में नहीं हिचकिचाए। समाज सुधार, सामाजिक जागृति तथा भगवान की भक्ति की धारा प्रवाहित करना ही उनका मुख्य उद्देश्य रहा।

भारतेन्दु जी ने कुछ अन्य पत्रिकाएँ सन् 1873 में "हरिश्चन्द्र मैगजीन" और "बाला-बोधनी" तथा वर्ष 1874 में "श्री हरिश्चन्द्र चन्द्रिका" एवं "स्त्रीजन की प्यारी" का प्रकाशन कराया। भारतेन्दु काल में लगभग 28 पत्रिकाओं का प्रकाशन हिन्दी गद्य साहित्य में हुआ। इनकी एक पत्रिका "भारतेन्दु" भी थी जिसके सम्पादक श्री राधाचरण गोस्वामी थे। इन पत्र-पत्रिकाओं में सरकार के विरुद्ध जन-चेतना के समाचारों के प्रकाशन से भारतेन्दु जी को सरकार का कोप-भाजन भी बनना पड़ा।

भारतेन्दु जी ने भगवान श्री राम, श्री कृष्ण तथा महाभारत के अर्जुन-भीम जैसे पराक्रमियों का पावन स्मरण करते हुए लिखा है :-

जहँ शक्य भये हरिश्चन्द्र, नहुस ययाती,
जहँ राम युधिष्ठिर, वासुदेव सर्याती।
जहँ भीम, करण अर्जुन की छटा दिखाती,
तहँ रही मूढ़ता कलह अविद्या राती।
अब जहँ देखहुँ तहँ दुखहि दुःख दिखाई,
हा-हा भारत दुर्दशा न देखी जाई।

बाबू भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने प्राचीन इतिहास और पुराणों का भी गहन अध्ययन किया था। भारतेन्दु जी ने अपनी नवीन खोज में सर्वप्रथम अपने पूर्वज अग्रकुल प्रवर्तक महाराजा अग्रसेन का जीवन चरित्र लिखते हुए "अग्रवालों की उत्पत्ति नामक" एक लघु पुस्तिका लिखी। जिसका आधार उन्होंने भविष्य पुराणोक्त "महालक्ष्मी व्रत कथा" को बनाया। इनके मतानुसार अग्रवालों में प्रमुख चार शाखाएँ बताई गई। (1) मारवाड़ी– जो राजस्थान में बसे। (2) देशवाली– जो हिसार, हांसी, रोहतक व करनाल आदि में बसे (3) पूरबिये– जो पंजाब-बिहार, उत्तर प्रदेश में बसे (4) पछंहिये– जो सिंध-पंजाब के पश्चिम क्षेत्र में जाकर बसे।

भारतेन्दु जी के अनुसार अग्रवाल शब्द अग्र+वाल दो शब्दों से मिलकर बना है, जिसका अर्थ है "अग्र" की संतान अर्थात् महाराजा अग्रसेन के वंशज और "वाल" का मतलब है "पालक"। अर्थात् जो "अग्रगण्य" स्थितियों में रहकर उसका पालन करने में रत हैं वे अग्रवाल होते हैं। अग्रवाल सेना के अग्र भाग में रहकर रक्षा करते थे इसलिए भी उनका नाम "अग्रपाल" अर्थात् अग्रवाल पड़ा है।

समाज सुधार के संबंध में तो भारतेन्दु के विचार और भी अधिक उग्र हैं। कुरीतियों को सहन करना मानो उनके लिए असंभव ही था। व्यंग्य रूप में उन कुरीतियों की खिल्ली उड़ाकर भारतेन्दु जी ने उनकी खुलकर भर्त्सना की। हिन्दी भाषा में इस तरह का यह प्रयास सब से पहला था। पहले तो उन्होंने 'इंदर' सभा की कल्पना की। सभा में 'इंदर' आता है और इस प्रकार अपना परिचय देता है :–

राजा हूँ मैं कौन का, और इंदर मेरा नाम,
बिना परियों के दीद के, मुझे नहीं आराम।

फिर इसी के वचन पर उन्होंने बन्दर सभा जमाई। इस सभा में बंदर आया तो उसने भी अपना परिचय दिया :–

पाजी हौ मैं काम का, और बंदर मेरा नाम।
बिन फजूल कूदे फिरे मुझे नहीं आराम।।

यह तो रही हंसी विनोद की बात व समाज की कुरीतियों और व्यर्थ के कर्मकाण्ड का खंडन करने में उन्होंने गंभीरता से भी काम लिया। धर्म के नाम पर पाखंड और पूजा के नाम पर पशुबली की उन्होंने इसी तरह खुल कर निंदा की जिस तरह कोई भी निडर और निर्भीक सुधारक कर सकता था। "वैदिक हिंसा, हिंसा न भवतिः" खंडन के इसी कार्यक्रम की देन है। इसमें कर्मकांड की कड़े शब्दों में निंदा की गयी है और अच्छी तथा बुरी परंपराओं में क्या भेद है यह बताया गया है।

भारतेन्दु जी की आधुनिकता का सब से बड़ा प्रमाण स्त्री जाति में शिक्षा प्रसार का उनका प्रयत्न था। इसकी दीक्षा संभवतः उन्हें ईश्वरचन्द्र विद्यासागर के संपर्क से मिली थी। कलकत्ता में एक बार भारतेन्दु महीना भर विद्यासागर के यहाँ ठहरे थे।

सन् 1873 में उन्होंने बाल बोधिनी नामक पत्रिका निकाली। इस पत्रिका का एक मात्र उद्देश्य स्त्री शिक्षा था।

निर्गुण संत की तरह भारतेन्दु ने सरल शब्दों में सच्चे धर्म की व्याख्या करने का यत्न किया। वे राम और कृष्ण दोनों के भक्त थे। उन्होंने सब तरह की स्थिति में सीधे-साधे प्रेम को ही महत्त्व दिया। उनका प्रेम बंधनों और शास्त्र की मर्यादाओं की परवाह न करते हुए प्रकट हुआ है, जैसे–

पियारो पैय कोयल प्रेम में, नाहि ज्ञान में नाहिं ध्यान में
नाहिं करम कुल नेम में, नाहिं मंदिर में, नाहिं पूजा में
नाहिं घंटों की घोर में,
'हरिश्चंद्र' वह बाध्यों डोलत एक प्रीति की डोर में।

इस प्रकार यह बात जानने योग्य है कि कविता और साहित्य के क्षेत्र में ही भारतेन्दु ने पताका नहीं फहरायी, समाजोद्धार द्वारा जनसाधारण के जीवन को व्यर्थ की कुरीतियों और पाखंड से ऊपर उठाने की दिशा में भी उन्होंने पहल की थी।

अयोध्या, काशी, मथुरा और चित्तौड़ पर गर्व

मुगलों तथा अंग्रेज जैसे विदेशियों ने हमारे भारत के पावन-स्थलों को आक्रमणों के द्वारा कई बार अपवित्र किया था। चित्तौड़ में हिन्दू वीरांगनाओं ने जौहर का, अपने पतिव्रत धर्म की रक्षा का आदर्श उपस्थित किया था। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र अयोध्या, काशी, प्रयाग, मथुरा, चित्तौड़ आदि ऐतिहासिक स्थलों का पावन स्मरण कर कह उठते हैं :–

'हा काशी प्राग, अयोध्या नगरी, दीन रूप सम ठाढ़ी सगरी,
हा पंचनद, हा पानीपत; अजहुँ रहे तुम धरनि विराजत।
हाय चित्तौर निलज तू भारी; अजहुँ खरो भरतहिं मझारी,
जा दिन तू अधिकार नसायो, ता दिन क्यों नहिं धरानि समायो।
तुम में जल नहीं जमुना गंगा, बढहु बेगि करि तरल तरंगा।
धोबहु यह कलंक की रासी; बोरहु किन झट मथुरा कासी।'

पानीपत, चित्तौड़, मथुरा, काशी, अयोध्या को विदेशी-विधर्मी पददलित करें– यह भारतेन्दु जी के हृदय को कितनी पीड़ा देता रहा। यह उनके उपरोक्त शब्दों से स्पष्ट हो जाता है।

अब से सवा सौ वर्ष पूर्व ही भारतेन्दु जी ने अयोध्या, काशी, मथुरा के धर्मस्थलों के उद्धार की प्रेरणा किसी न किसी रूप में दे डाली थी।

इसी प्रकार उन्होंने गो-हत्या को घोर पाप बताते हुए गोहत्या पर पूर्ण प्रतिबन्ध लगाये जाने की भी मांग की थी। भारत के लोगों की दुर्दशा के बावजूद उन्हें गहरी निद्रामग्न हुए देखकर वे भगवान से प्रार्थना कर उठे थे–

सब विधि नाशी भारत प्रजा कहुं न रहयो अवलम्ब अब।
जागो-जागो करुना यतन फेरि जागिहै नाथ कब।।

हे प्रभु– चारों ओर से भारत प्रजा की हानि हो रही है, अब कोई सहारा नहीं दिखाई दे रहा है– अतः अब आप ही जाग कर हमारी रक्षा करो। यदि आप नहीं जागे तो फिर कब जागोगे।' इसी प्रकार वे, घोर निराशा में भगवान केशव (श्रीकृष्ण) को अपना अवलम्बन मानते हुए कहते हैं :–

'कहाँ करुनानिधि केसव सोये,
जागत नाहिं यद्यपि बहु विधि-भारतवासी रोये।'

भारतेन्दु जी जब अंग्रेज परस्त भारतीयों को राष्ट्र के साथ गद्दारी कर अंग्रेजों का साथ देते देखते थे तो वह एक 'ग्राम्य-गीत' में कह उठते हैं :-

'भारत को गारद काहे कैले से जयचन्दवा'

अर्थात् 'जयचन्द' बनकर भारत को गारद क्यों करने पर तुले हुए हो।

भारतेन्दु जी अत्यन्त दानी तथा परोपकारी प्रवृत्ति के व्यक्ति थे। अपनी अपार सम्पत्ति उन्होंने दान में देकर अग्रवाल समाज की परोपकार की परम्परा का निर्वाह किया था।

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र जी ने 'भारत दुर्दशा; चन्द्रावली', 'अन्धेर नगरी', प्रेमयोगिनी जैसी लोकप्रिय पुस्तकें लिखकर हिन्दी साहित्य की अभिवृद्धि की। वे भगवान श्रीकृष्ण, राधाजी तथा ब्रजभूमि के अनन्य भक्त थे। ब्रजभाषा में उन्होंने भक्ति गीतों तथा पदों की रचना कर ब्रजभाषा के साहित्य को समृद्धि प्रदान की। उन्होंने अपने बारे में बेबाक ढंग से लिखा :-

'सेवक गुनी जन के चाकर चतुर के हैं,
कविन के मीत, चित हित गुनी ज्ञानी के।
सीधेन सों सीधे, महा बाँके हम बाँकेन सों,
'हरिचन्द' नगद दामाद अभिमानी के।
चाहिवे की चाह, काहू की न परवाह,
नेह-नेह के दिवाने सदा सूरत निवानी के।
सबरस रसिक के, सुदास दास प्रेमिन के,
सरबस प्यारे कृष्ण के, गुलाम राधा रानी के।'

इस प्रकार भारतेन्दु जी अपने को राधारानी का गुलाम तथा श्रीकृष्ण का सखा माननें में गर्व का अनुभव करते थे। अग्रकुल दीपक भारतेन्दु जी की 'गंगा-वर्णन' नामक रचना का रसास्वादन कुछ इस प्रकार है:-

नव-उज्वल जलधार, हार-हीरक सी सोहति।
बिच-बिच छहरति बूंद, मध्य मुक्ता मनि पोहति॥
लोल लहर लहि पवन एक पै इक इमि आवत।
जिमि नर-गन मन विविध मनोरथ करत मिटावत॥
सुभग-स्वर्ग सोपान-सरिस सबके मन भावत।
दरशन मज्जन पान त्रिविध भय दूर मिटावत॥
दीठि जही जहँ जात रहत तितही ठहराई।
गंगा छबि हरचन्द्र कछु बरनी नहिं जाई॥

आज भी बाबू हरिश्चन्द्र की साहित्य रचनाओं को हिन्दी साहित्य की विविध-परीक्षाओं पाठ्यक्रमों यथा उत्तमा (साहित्य-रत्न) आदि में यथेष्ट स्थान दिया गया है। इनके पाठ्य ग्रन्थों के नाम इस प्रकार हैं :-

(1) भारतेन्दु ग्रन्थावली- भाग 1 तथा 2 (नागरी प्रचारिणी सभा-काशी)
(2) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र- डॉ. लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय (साहित्य भवन- इलाहाबाद)
(3) भारतेन्दु युग- डॉ. रामविलाश शर्मा (विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा)
(4) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र- एक अध्ययन- डॉ. रामरतन भटनागर (किताब-महल- इलाहाबाद)
(5) भारतेन्दुकालीन नाटक साहित्य- डॉ. गोपीनाथ तिवारी (हिन्दी भवन- इलाहाबाद)
(6) भारतेन्दु कलाः बंगीय परिषद- कलकत्ता
(7) हिन्दी नाटकः उद्भव और विकास- डॉ. दशरथ ओझा (राजपाल एण्ड सन्स- दिल्ली)
(8) भारतेन्दु की नाट्य कला- डॉ. प्रेमनारायण शुक्ल (ग्रन्थम्- कानपुर)

महामना बाबू हरिश्चन्द्र को आज भी सभी क्षेत्र में याद किया जाता है। उनके सम्मान में भारत सरकार द्वारा इनके जन्म दिन के उपलक्ष में 9 सितम्बर 1976 को 25 पैसे का डाक टिकट जारी किया गया। मुद्रित टिकटों की संख्या 30 लाख थी।

भारतेन्दु जी ने अपनी 35 वर्ष की अल्पायु में ही हिन्दी साहित्य

में अपना शीर्ष स्थान बना लिया था। वे अल्पायु में ही माघ कृष्ण 6 संवत् 1941 तदनुसार दिनांक 5.1.1885 को काशी में भगवान विश्वनाथ के चरणों में लीन हो गये। हिन्दी साहित्य क्षेत्र को इनके इस असामयिक निधन से अपूर्णनीय क्षति हुई। इस छोटे से जीवन काल में, उन्होंने साहित्य के क्षेत्र में वैसे ही महत्त्व के कार्य किए, जैसे आदि शंकराचार्य ने धार्मिक और स्वामी विवेकानन्द ने आध्यात्मिक क्षेत्र में अपने अल्प जीवन काल में किये थे।

भारतेन्दु जी के जीवन और उनके कृतित्व को चिरस्थायी बनाये रखने के उद्देश्य से केन्द्रीय और राज्य सरकारों तथा अन्य संस्थाओं द्वारा अग्र-विभूतियों की स्मृति में दिये जाने वाले पुरस्कारों में "भारतेन्दु पुरस्कार" भी संचालित है। यह पुरस्कार सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय के प्रकाशन विभाग द्वारा जन-संचार पर हिन्दी में मौलिक एवं सृजनात्मक लेखन हेतु दिये जाते हैं। इन पुरस्कारों में पत्रकारिता प्रचार, विज्ञापन, प्रसारण-फिल्म, मुद्रण, दूरदर्शन, प्रकाशन जैसे विषयों के लिए अलग से पुरस्कारों की व्यवस्था की गई है। पुरस्कार योजना के अन्तर्गत प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय पुरस्कार के रूप में क्रमशः 35 हजार, 25 हजार तथा 20 हजार रुपये प्रदान किये जाते हैं। इसके अतिरिक्त वर्तमान सामयिक विषयों, महिलाओं की समस्याओं से संबंधित विषयों पर उच्चकोटि की पुस्तकों के लिए 10-10 हजार रुपये के पुरस्कार दिये जाते हैं। बाल-साहित्य के श्रेष्ठ लेखकों को भी प्रथम, द्वितीय व तृतीय पुरस्कार के रूप में क्रमशः 15 हजार, 7 हजार तथा 3 हजार रुपये दिये जाते हैं।

यद्यपि अग्रकुल गौरव भारतेन्दु जी शरीर से हमारे मध्य नहीं हैं लेकिन सूक्ष्म रूप से हमारे बीच जीवन्त हैं। इन्हें हमारा शत-शत प्रणाम्। पूरे संसार का अग्रवाल समाज ऐसी दिव्य विभूति पर हमेशा गर्व करता रहेगा और इनका स्मरण चिन्तन करते हुए समाज की सेवा व उत्थान के कार्यों में अपने आप को समर्पित करने का सौभाग्य प्राप्त करेगा। भारतेन्दु जी अमर हैं, अमर रहेंगे।

जय भारत, जय अग्रसेन।

—*—

भारत में हरित क्रांति के जनक

अग्र-विभूति सर गंगाराम

आज पंजाब प्रान्त अन्न के उत्पादन के मामले में अग्रणी है और हरित क्रान्ति के क्षेत्र में उसका नाम विशेष रूप से लिया जाता है। इसका प्रमुख श्रेय यदि किसी को दिया जा सकता है तो अग्रवाल समाज के महान इंजीनियर सर गंगाराम को है।

सर गंगाराम के माता-पिता मुजफ्फरनगर के रहने वाले थे, परन्तु परिस्थितियों के वशीभूत वे लाहौर के समीप मंगतवाला में आकर बस गये। आपका जन्म 13 अप्रैल 1851 को लाला दौलत राम अग्रवाल के घर हुआ। दौलत राम जी बड़े सात्विक वृत्ति के साधारण गृहस्थ थे, इन्हें सन्तों की सेवा और सत्संग में विशेष प्रेम और श्रृद्धा थी। प्रारम्भ में आप अमृतसर में कोर्ट इन्सपैक्टरी के पद पर नियुक्त थे।

एक महात्मा ने दौलत रामजी को भविष्यवाणी कर बताया था कि तेरा पुत्र गंगाराम अपने समय का विक्रमादित्य होगा। "पूत के पैर पालने में छिपे नहीं रहते"। आप अल्पावस्था में एक ही साथ दो-दो कक्षा से उत्तीर्ण करने लगे तथा साथ ही कक्षा में सदैव प्रथम स्थान पर रहते। पिताजी की आर्थिक स्थिति बहुत कमजोर थी। अतः पढ़ाई के साथ उनके काम में भी हाथ बंटाते थे। पिताजी कार्यालय से कागजों का पुलिन्दा घर ले आते और दोनों मिलकर उसे पूरा करते।

मैट्रिक पास करके आपने लाहौर के राजकीय महाविद्यालय में प्रवेश लिया। यहाँ उनका खर्च छात्रवृत्ति से चलता था। 1868 में आपने एन्ट्रैस

की परीक्षा उत्तीर्ण कर ली और नौकरी की खोज में लाहौर में अपने परिचित पुरोहित जी के कार्यालय में मिलने पहुँचे। परन्तु उस समय पुरोहित जी कहीं गए हुए थे। अतः वे प्रतीक्षा करने के लिए आफिस में रखी एक आरामदायक कुर्सी पर बैठ गये। थोड़ी देर में एक कर्मचारी ने आकर और यह कह कर कि यह इन्जीनियर साहब की कुर्सी है, आपको उठा दिया। इस अपमानजनक व्यवहार का आपके हृदय पर बहुत प्रभाव पड़ा। इतने में पुरोहित जी भी आ गये और पूछा कि तुमने एन्ट्रैंस तो पास कर ही लिया है, अब आगे क्या इच्छा है। अपमान से प्रभावित उन्होंने अपना प्रण बताया कि मैं तो इन्जीनियर बनना चाहता हूँ और जिस कुर्सी पर से उठाया गया हूँ, पुनः उसी कुर्सी पर अधिकार से बैठूँगा।

दृढ़ निश्चय लेकर गंगाराम जी रुड़की के थामसन इंजीनियरिंग कॉलेज में प्रविष्ट हुए और 22 वर्ष की आयु में ही सम्पूर्ण कॉलेज में तृतीय स्थान प्राप्त कर परीक्षा उत्तीर्ण कर ली। इन्हें स्वर्ण-पदक मिला। चारों तरफ उनकी प्रतिभा की ख्याति प्रसारित होने लगी और सरकार ने उनकी योग्यता से प्रभावित होकर लाहौर में पब्लिक वर्क्स डिपार्टमेंट में असिस्टेंट इंजीनियर के पद पर नियुक्त किया। इसके बाद उन्हीं इंजीनियर महोदय के आफिस का चार्ज लिया जहाँ आपको कुर्सी पर से उठाया गया था।

सन् 1875 में प्रिंस आफ वेल्स (सम्राट एडवर्ड सप्तम) के भारत आगमन पर पंजाब गवर्नमैंट की ओर से आपने लाहौर में आतिथ्य सत्कार का प्रबन्ध बड़ी उत्तमता से किया। सन् 1877 में दिल्ली में शाही दरबार की रंगशाला (इम्पीरियल थियेटर) का ऐसा सुन्दर, दर्शनीय और व्यवस्थित निर्माण कराया कि उनकी योग्यता से लार्ड रिपन बहुत प्रभावित हुए और श्री गंगाराम को ब्रेडफोर्ड भेजा। वहाँ उन्होंने गंदे पानी के निष्क्रमण हेतु नालियों के प्रबन्ध का प्रशिक्षण प्राप्त किया। इससे इनकी प्रतिष्ठा और बढ़ी।

सन् 1903 में शाही दरबार में रंगभूमि को आने वाले मार्ग के नाले का पुल आपने अपनी सूझबूझ से एक ही रात्रि में बनवा दिया था। लार्ड महोदय ने इस अवसर पर आपको सी.आई.ई. की उपाधि से विभूषित किया और दरबार में आपको ए.बी.ओ. के सम्मान से सम्मानित किया

गया। आपको रायबहादुर की भी उपाधि प्रदान की गई। आपकी पदोन्नति चीफ इंजीनियर के पद पर कर दी गई। आप ही पहले भारतीय हैं जिनको यह पद प्राप्त हुआ था। आपकी कर्मठता, अदम्य उत्साह व दृढ़ निश्चय ने यह सफलता दिलायी।

आपने अनेक बड़े-बड़े शहरों की जल-योजनाओं को मूर्त रूप दिया। उत्तरी-पश्चिमी रेलवे की अमृतसर-पठानकोट रेलवे लाइन निर्माण की सम्पूर्ण योजना के सूत्रधार आप थे। लाहौर में आपने एक से एक बढ़कर शानदार भवनों की शृंखला खड़ी कर दी। जिनमें लाहौर का अजायबघर, गिरजाघर, एचिंगसन चीफ्स कॉलेज, मेयो कालेज ऑफ आर्ट, मेयो अस्पताल आदि प्रमुख हैं। उस समय लाहौर में गंदगी का साम्राज्य था। आपने सुव्यवस्थित नालियाँ व सड़कों का निर्माण करवाया और लाहौर को पेरिस के समान सुन्दर और स्वच्छ नगर के रूप में परिवर्तित कर दिया।

इंजीनियरिंग से सम्बन्ध रखने वाले कितने ही उपयोगी आविष्कार आपने किये थे। आपने इंजिनियरिंग के एक ऐसे मौलिक ग्रन्थ "लैण्ड बुक आफ इंजीनियरिंग" की रचना की थी जैसी आज पर्यन्त किसी भारतीय ने नहीं की। सन् 1922 में गवर्नमैन्ट ने आपको 'सर' की उपाधि प्रदान कर अपनी गुण ग्राहकता का परिचय दिया।

काशी विश्वविद्यालय के संस्थापक श्री मदनमोहन मालवीय जी ने आपकी योग्यता से प्रभावित होकर आपको काशी विश्वविद्यालय के निर्माण हेतु आमंत्रित किया। आपने निर्माणार्थ अपनी अवैतनिक सेवाओं के साथ-साथ एक लाख रुपये की राशि निर्माणार्थ मालवीय जी को भेंट की। मालवीय जी उनके सेवाकार्यों से बड़े प्रभावित हुए और उन्होंने लिखा कि "विद्यालय की इमारत का कोना-कोना लाला गंगाराम जी का ऋणी रहेगा।"

सन् 1902 में 52 वर्ष की अवस्था में आपने नेकनामी के साथ गवर्नमैन्ट सर्विस से सेवा-निवृत्ति ले ली और पटियाला राज्य में चीफ इंजीनियर के रूप में 7 वर्ष तक अनेक उद्धृत कार्य सम्पादित किये।

सेवा निवृत्ति पर आपको गवर्नमैन्ट द्वारा चेनाव क्षेत्र में 20 वर्ग

एकड़ भूमिं उपहार स्वरूप मिली। यह बंजर भूमि थी। आपने सर्वप्रथम लिफ्ट योजना का सूत्रपात किया और नहर में भाप और विद्युत शक्ति से संचालित मशीन लगाकर सारी बंजरभूमि को पानी से सिंचित कर आशातीत सफलता प्राप्त की तथा 1924 में उसमें 12 लाख रुपये की फसल प्राप्त कर ली। इन्हीं विशेष व्यवस्थाओं के कारण उन्हें देश में हरित-क्रांति का जनक कहा जाने लगा।

पंजाब के लेफ्टिनेंट गवर्नर सर माईकेल औडायर ने महायुद्ध के लिये भरती होने वाले रंगरूटों को रण क्षेत्र से लौटने पर कृषि के लिए भूमि देने का आश्वासन दिया था। सन् 1917 ई. में लाट महोदय को विदित हुआ कि कृषि के योग्य पंजाब में सरकार के पास उतनी भूमि नहीं है जो पर्याप्त हो सके। उन्होंने सर जान मेनार्ड द्वारा सर गंगाराम से परामर्श किया। आपने दो दिन का अवकाश (समय) उसकी आवश्यक खोज और आय व्यय का अनुमान लगाने के लिए मांगा। तत्पश्चात् आपने गवर्नमेंट से 23 हजार एकड़ भूमि किसी ऐसे स्थान पर मांगी जिसकी सिंचाई लिफ्ट द्वारा हो सके। तीन वर्ष के पश्चात् वापस लौटाने का वादा कर गवर्नमेन्ट से आपने भूमि ले ली और बम्बई से 50 हजार रुपये आवश्यक यंत्र सामग्री क्रय कर तत्काल आप अपने उद्देश्य की पूर्ति में लग गये। थोड़े ही समय में वैज्ञानिक रीति से इस भूखण्ड की उत्पादन शक्ति बढ़ाकर आपने उसे कृषि योग्य बना दिया और उससे स्वयं भी खासा आर्थिक लाभ उठाया और अवधि पूरी होने पर प्रतिज्ञानुसार सिंचाई की। मशीनों सहित भूमि को युद्ध से लौटे हुए सैनिकों को देने के लिये गवर्नमेन्ट को लौटा दी। फिर आपने 7 वर्ष के लिए एक बहुत बड़ा भूभाग ठेके पर लिया और उसकी सिंचाई के लिये एक बड़ी बिजली की मशीन लगाई। आपकी यह योजना राना लाइहैड्रो इलेक्ट्रिक स्कीम के नाम से प्रसिद्ध है।

उपरोक्त कार्यक्रम 80 हजार एकड़ (125 वर्ग मील) भूमि को सींचने का था, व्यय का अनुमान 30 लाख किया। कार्य प्रणाली के अन्तर्गत 72 मील लम्बी नहर, 626 मील लम्बी पानी की नालियाँ और 45 पुल बने, 565 मील लम्बी देहाती सड़कें और 121 मील लम्बी

सरहदी सड़कें बनीं। इस विशाल योजना को कार्य रूप देकर आपने भारत में वैज्ञानिक रीति से कृषि करने का उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत कर दिया और इससे आपका नाम सदा के लिये अमर हो गया।

धन संग्रह करने से कठिन उसका सदुपयोग है। जिस कठिन परिश्रम और योग्यता से सर गंगाराम ने अर्थ संचय किया उसके अनुसार ही उसको सद् व्यय कर आपने अपनी स्मृति और कीर्ति को स्थायी कर दिया। अप्रैल सन् 1923 ई. में आपने अपनी दान प्रणाली को निरन्तर संचालित रहने के लिए सर गंगाराम ट्रस्ट सोसाइटी स्थापित करके 1860 ई. एक्ट के अनुसार गवर्नमेन्ट में रजिस्टर्ड करा दिया, उस समय से उनकी दान प्रणाली का चिरस्थायी प्रबन्ध हो गया है। ट्रस्ट के अधिकार में आपकी प्रदान की हुई 30 लाख की स्थावर सम्पत्ति है। जिसकी वार्षिक आय सवा चार लाख रुपये है। इसी आय से आपकी स्थापित निम्नलिखित संस्थाओं का ट्रस्ट द्वारा प्रबन्ध होता है। प्रत्येक संस्था का कार्य-सूचारु रूप से चलाने के लिये पृथक्-पृथक् उप समितियों की व्यवस्था की गयी है।

"सर गंगाराम विधवा विवाह सहायक सभा" विधवाओं के करुणक्रन्दन और आर्तनाद से द्रवित हो सबसे पहले सन् 1914 ई. को लाहौर में उक्त संस्था की स्थापना की गई। भारत के विविध स्थानों में इसकी 891 शाखायें तथा विधवाश्रम हैं, योग्य कार्यकत्ताओं द्वारा उन संस्थाओं का संचालन होता है। इन संस्थाओं द्वारा प्रतिवर्ष हजारों विधवाओं के विवाह होते हैं। "विधवा-बन्धु" नामक पत्रिका का भी सम्पादन किया गया।

"सर गंगाराम खैराती अस्पताल"– दीन दुखियों के लिये सन् 1921 में एक लाख साढ़े इक्कतीस हजार रुपये लगाकर इस अस्पताल के भवन का निर्माण कराया गया। अनुभव डाक्टरों द्वारा सहस्रों असहाय रोगी इसके द्वारा रोग मुक्त होते हैं– रोगियों के विश्राम की व्यवस्था है।

हिन्दू छात्रों के लिए "शिक्षावृत्ति समिति" द्वारा उच्च अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों को छात्रवृत्ति दी जाती है। 10-12 हजार रुपया वार्षिक सहयोग दिया जाता है।

भारत सरकार के डाक-तार विभाग ने इनकी स्मृति में 10 जुलाई 1977 को डाक टिकट निकाल कर इन्हें सम्मान प्रदान किया है। पुनः 4 सितम्बर 1977 को 25 पैसे का डाक टिकट जारी किया।

सर गंगाराम का जन्म अग्रवाल परिवार में हुआ था इसलिए वैश्य जाति के स्वाभाविक गुणों का आपमें होना अनिवार्य था। "कृषि, गौरक्षा, वाणिज्य वैश्य कर्म स्वभावजम्" इस आदर्श वाक्य की सार्थकता के प्रमाण में यदि आपके जीवन की समस्त कृतियों का अध्ययन किया जावे तो स्पष्ट है कि आप वास्तव में एक उच्च कोटि के आदर्श वैश्य थे।

आबाल, वृद्ध सभी आपके गुणों और वात्सल्य से परिचित थे प्रचुर धन और सम्पत्ति के स्वामी होने पर भी आपका जीवन सरल और साधारण था। इसका उत्तर तो आपके गंगानिवास आश्रम की सादगी ही दे सकती है। आपने मृत्यु के पश्चात् अपनी समाधि के लिये "अपाहिज आश्रम" की भूमि को चुना था। आपके जीवन का पूर्वार्द्ध गवर्नमेन्ट सर्विस और उत्तरार्द्ध कृषि की विराट आयोजना है। जिस प्रकार आपने कला कौशल और चातुर्य से प्रतिष्ठा पाई उससे कहीं अधिक वैज्ञानिक ढंग से की गई कृषि में बंजर भूमि को जल, कलों द्वारा उर्वरा और कृषि योग्य बनाकर एवं बीहड़ स्थलों को जल पूरित करके ऐसा सुयोग्य कर दिया कि उस जनशून्य भूमि पर बहुत से गांव आबाद हो गये और प्रत्येक कृषक के झोंपड़े में बिजली का प्रकाश पहुँच गया। यथार्थ में "उत्तम खेती मध्यम वणिज" वाली जन श्रुति को चरितार्थ कर आप विपुल धनशाली बन गये।

दिल्ली का वर्तमान "सर गंगाराम अस्पताल" आज भी आपकी कीर्ति का चिर-स्मारक है। 10 जुलाई 1927 को सर गंगाराम की इंग्लैण्ड में मृत्यु हो गई। वास्तव में सर गंगाराम गरीबों के सच्चे बंधु, देश की प्रगति के लिए महान सेवक, आदर्श समाज सुधारक और उच्च मानवीय महत्त्वपूर्ण आकांक्षाओं के गुणों से सम्पन्न अग्रवाल समाज के देदीप्यमान नक्षत्र अनुकरणीय व्यक्तित्व के धनी थे। आप से अग्रवाल समाज अत्यन्त गौरवान्वित हुआ है।

आपको शत् शत् नमन्।

—*—

अग्र-विभूति सर गंगाराम

अग्रवंशज "पंजाब केसरी"

लाला लाजपतराय

अग्रवंशज "पंजाब केसरी"

लाला लाजपत राय

समृद्धशाली भारतवर्ष जो अपनी प्राचीन संस्कृति, सभ्यता एवं धर्म के मंच पर, अखण्ड राष्ट्रीय एकता हेतु, शताब्दियों से स्थापित था, वह विदेशी लुटेरों के आक्रमणों से आर्थिक रूप से जर्जर होकर सामाजिक एवं राजनीतिक संबलता से टूट चुका था। फलतः सोलहवीं शताब्दी से मुगल शासकों की गुलामी में रहकर तदोपरान्त औपनिवेशिक साम्राज्यवादी अंग्रेज शासकों के अधीन हो गया था।

किन्तु वसुन्धरा मातृभूमि की स्वतंत्रता के चहेते दीवानों की कमी नहीं थी। महाराणा प्रताप, छत्रपति शिवाजी ने देश की आजादी हेतु, मुगल सम्राटों को नाकों चने चबवा दिये थे। उनके बाद अनेकानेक स्वातंत्र्य-वीरों नाना साहब, तांत्या टोपे, रानी लक्ष्मीबाई आदि-आदि की श्रृंखला बलिदानों की कड़ियाँ बनती गई।

इसी श्रृंखला की एक महत्त्वपूर्ण कड़ी थे, पंजाब प्रान्त के लाला लाजपत राय, जिनका नाम उनके समकालीन सहयोगी महाराष्ट्र प्रान्त के बाल गंगाधर तिलक एवं बंगाल प्रदेश के विपिन चन्द्र पाल जैसी महान् विभूतियों के साथ 'लाल-बाल-पाल' के नाम से लिया जाता है। ये तीनों नेता देश के तीन कोनों का प्रतिनिधित्व करते थे। इनके नाम मात्र के स्मरण से लोगों में देश-भक्ति की लहर दौड़ पड़ती और सिर श्रृद्धा से झुक जाते थे। उन्होंने स्वाधीनता के बीज का भारत-भूमि पर बीजारोपण कर उसे पल्लवित-पुष्पित किया, देशभक्ति की मशाल जलाई और लेखनी एवं

वाणी तथा अदम्य साहस, महान् निर्भीकता द्वारा कोटि-कोटि हृदयों को उत्साहित कर अंग्रेजों के शासन की जड़ें सदैव के लिए समाप्त कर दीं। लाला लाजपत राय पंजाब की जनता के शौर्य के सच्चे प्रतीक थे। यही कारण था जो उन्हें "पंजाब केसरी" की उपाधि सें विभूषित किया गया।

लाला लाजपत राय का जन्म सामान्य अग्रवाल परिवार में पंजाब प्रांत के फिरोजपुर जिले के ग्राम जगरांव (धूधिके) में 28 जनवरी, 1865 को हुआ था। उनके पिता श्री राधाकृष्ण राय एक सामान्य अध्यापक थे, माता श्रीमती बसन्ती कौर अत्यन्त ही दयालु और धार्मिक प्रवृत्ति की थीं। परोपकार और लोक सेवा के प्रति समर्पित थीं। लाला जी का परिवार मिली-जुली संस्कृति का प्रतीक था। इनके पिता ने कुरान तथा अन्य मुस्लिम ग्रंथों का स्वाध्याय किया था। पितामह श्री राधाराम अग्रवाल जैन धर्म के उपासक थे। मातामही सिक्ख धर्म की अनुयायिनी थी। परिणामतः उनका जीवन पंजाब की महान् परम्पराओं, सांस्कृतिक सामंजस्य और विभिन्न वर्गों के बीच प्रेम का अमृत बन गया।

लाला जी को जन्म से ही अच्छे संस्कार मिले। इनमें अच्छे लक्षण देखकर आर्थिक अभावों के बावजूद पिता ने अच्छी शिक्षा प्रदान कराई। पंजाब विश्वविद्यालय से 1880 में मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण की। 1881 में (16 वर्ष की आयु में) लाहौर युनिवर्सिटी कालेज में प्रवेश लिया तथा इण्टरमीडिएट की परीक्षा के साथ ही मुख्तारी की परीक्षा भी उर्त्तीण कर ली। वकालत परीक्षा 1885 में उत्तीर्ण कर हिसार आ गये और वकालत करने लगे और उसमें उन्हें पूर्ण सफलता मिली।

उन्होंने अपने बाल्यकाल से ही भारतीय सामाजिक जीवन को सूक्ष्म दृष्टि से देखा था। भारत में गरीबी और दलित वर्ग की प्रताड़ना एवं गरीबी से त्रस्त दलित वर्ग विशेषतया हरिजनों आदि का ईसाई मिशनरियों द्वारा धर्म-परिवर्तन होते हुए देखना उन्हें तनिक भी सहन नहीं था। उन्होंने आर्य-समाज तथा हिन्दू महासभा के मंच से हिन्दुओं के धर्म-परिवर्तन के षड़यन्त्र का डटकर विरोध किया।

लालाजी का अध्ययन के दौरान 13 वर्ष की आयु में ही विवाह कर दिया गया था। इन्हीं दिनों इनके सिर से पिता का साया उठ गया। लेकिन विषम परिस्थितियों में भी आप आगे बढ़ते गये।

आर्य समाज के नेता गुरुदास जी से प्रभावित होकर उनके सानिध्य में आर्य समाज की गतिविधियों में भाग लेते रहे और आपने हिसार में एक संस्कृत-विद्यालय की स्थापना की। हिसार के म्युनिसिपल बोर्ड के सदस्य चुने गए और तीन वर्ष तक अवैतनिक मंत्री के रूप में सेवाएं प्रदान कीं। लाला जी ने अपने व्यक्तित्व के समुचित विकास के लिए लाहौर को मुख्य स्थान चुना और वे 1892 में लाहौर चले गये। वहाँ उनकी वकालत खूब चमकी।

लाला लाजपतराय आर्य समाज को अपनी माँ, महर्षि दयानन्द को अपना गुरु तथा वैदिक धर्म को अपना पिता कहते थे। 1883 से 1900 तक आप समाज सेवा के कार्यों में तथा डी.ए.वी. कालेज की स्थापना व व्यवस्था में लगे रहे। अपनी सारी कमाई कालेज को अर्पित कर दी। लालाजी ने आर्य समाज के प्रमुख चारों बिन्दुओं– स्वधर्म, स्वराज्य और स्वदेशी के प्रचार-प्रसार के लिए अपने आपको समर्पित कर दिया। राष्ट्रीय एकता के पक्षधर होते हुए भी आप मुस्लिम तुष्टीकरण नीति के प्रबल विरोधी थे। हिसार का आर्यसमाज आप ही की देन है। आप 'दयानन्द ऐंग्लोवैदिक' समाचार पत्रिका के संस्थापक सम्पादक थे। लालाजी दयानन्द जी के स्वराज्य मंत्र से अत्यधिक प्रभावित थे। 1883 में स्वामी दयानंद की मृत्यु के बाद आपने आर्य समाज के कार्यों को धर्म और आत्म विश्वास के साथ नवप्राण संचार के साथ आरम्भ किया। लाला जी ने देशवासियों में राष्ट्रीयता की भावना जागृत करने का जबरदस्त प्रयास किया। बाल-विवाहों का विरोध किया, विधवा-विवाह का समर्थन किया और हिन्दू-समाज में आई कुरीतियों के उन्मूलन का सशक्त प्रयास किया।

लालाजी की रुचि राजनीति की ओर बढ़ती गई। वह सन् 1888 में कांग्रेस के इलाहाबाद अधिवेशन में सम्मिलित हुए। अगला अधिवेशन

1889 में लाहौर में लालाजी के प्रयासों से सफलता पूर्वक हुआ। इनके ओजस्वी भाषण से ये कांग्रेस के प्रभावशाली कार्यकर्त्ता बन गए। 1897 में महारानी विक्टोरिया की हीरक-जयंती पर लाहौर में विक्टोरिया की मूर्ति लगाने का विरोध किया। इसी प्रकार प्रिंस आफ वेल्स के भारत आगमन पर स्वागत-समारोह का भी विरोध किया। उन्होंने कहा देश में दुर्भिक्ष के कारण त्राहि-त्राहि मची हो, लाखों लोग भूख से मर रहे हों, ऐसे अवसर पर फिजूल खर्च रोककर, इस धन से गरीबों और अछूतों की सहायता की जानी चाहिए।

1905 में लार्ड कर्जन ने बंगाल को दो भागों में बांट दिया। इससे बंगाल ही क्यों, सारे भारत में विद्रोह की आग भड़क उठी और बंग-भंग आन्दोलन छिड़ गया। लाला जी दमन चक्र के विरोध में स्वदेशी आंदोलन तथा विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार में जी जान से जुट गये। और लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक तथा विपिनचन्द्र पाल के साथ कंधे से कंधा मिलाकर संघर्ष किया। इन तीनों के अतुल प्रभाव से प्रभावित होकर जनता ने "लाल-बाल-पाल" के समन्वित मुहावरे का निर्माण किया।

पंजाब में सरकार ने सिंचाई और मालगुजारी की दरें बढ़ा दीं, जो दीन-हीन कृषकों के रक्त चूसने जैसा था। लाला जी ने प्रबल विरोध कर सम्पूर्ण पंजाब में क्रांति पैदा कर दी। चूंकि लाला जी स्वयं वकील थे, कानून की सीमाओं में रहकर कार्य करते थे लेकिन अंग्रेजों को लाला जी से भय होने लगा और नया कानून 'रेगुलेटिंग एक्ट" के अंतर्गत दिनांक 9.05.1907 को गिरफ्तार कर उन्हें गुपचुप माण्डले जेल (वर्मा) भेज दिया और उन पर आरोप लगाया कि वे पचास हजार आर्य समाजियों की सेना तैयार कर देश में सशक्त क्रान्ति लाना चाहते हैं। ये आर्यसमाजी राजद्रोही हैं, जहाँ साधारण कैदी के रूप में कैद काटकर 6 मास 9 दिन के बाद रिहा किये गये। लालाजी का भव्य स्वागत किया गया और 'पंजाब-केसरी' के यशस्वी सम्बोधन से नवाजा (संबोधित) गया। जेल से छूटते ही लाला जी ने गोखले के साथ इंग्लैण्ड की यात्रा की। उसके

बाद भी 1906 और 1910 में पुनः इंग्लैण्ड गये और वहाँ के लोगों को ब्रिटिश शाही के अत्याचारों एवं दमन चक्र से परिचित कराया और कहा–

"भारत की जनता जाग्रत हो चुकी है और वह साम्राज्यवाद के आवरण को फाड़ फेंकना चाहती है। उन्हें निश्चय हो गया है कि स्वावलम्बन और स्वराज्य के बिना स्वतंत्रता का कोई मार्ग नहीं। अंग्रेज भीख मांगने से अधिक और किसी बात को पसंद नहीं करता। मैं समझता हूँ कि भिक्षुक इसी योग्य है कि उससे घृणा की जाये। अतः हमें अंग्रेजों को दिखा देना चाहिए कि हम भिक्षुक नहीं हैं।" लाला जी के भाषणों की इंग्लैण्ड में भूरि-भूरि प्रशंसा हुई और समर्थन मिला। लाला जी ने भारत भ्रमण किया और स्वतंत्रता का संदेश देने लगे। उनके भाषणों से देश में क्रान्ति और एकता की लहर चल पड़ी। क्रांतिकारियों को बल मिला और सरकार से बदला लेने के लिए बम-पिस्तौलों और गुरिल्ला-युद्ध का सहारा लेना आरम्भ हो गया।

सूरत में कांग्रेस अधिवेशन में गरम और नरम दल के रूप में दो गुट हो गये। इन्हीं दिनों 1911 में लाला जी के पुत्र का देहावसान इंग्लैण्ड में हो गया। उनके जामाता का भी निधन होने से उन्हें गहरा हृदयाघात लगा किन्तु अविचलित भाव से देश सेवा में जुटे रहे।

उन्होंने "मेजिनी", "गैरी वाल्डी" व "शिवाजी" की आत्म कथाएं लिखीं। "मेरा देश निष्कासन' (दी स्टोरी आफ माई डिपोरटेशन) एवं "बर्मा की कहानी" पुस्तकें लिखीं, जो लोकप्रिय रहीं।

हिन्दू समाज के पिछड़े वर्ग हरिजनों के लिए लाला जी ने 1912 में गुरुकुल कांगड़ी में सम्मेलन आयोजित किया और शिक्षा व उन्नति के लिए प्रबन्ध किया और एक लाख रुपया दान दिया। लाला जी देश को आजाद देखना चाहते थे। 1914-1918 में प्रथम विश्वयुद्ध के समय लालाजी विदेश में रहे। उन्होंने 1914 में एक प्रतिनिधि मण्डल के साथ इंग्लैण्ड की यात्रा की और भारत की स्वतत्रंता के पक्ष में एक वातावरण

तैयार किया। वे 14 नवम्बर 1914 को अमेरिका गए और वहाँ 'इण्डियन होम रूल लीग ऑफ अमेरिका' नामक संस्था की स्थापना की। जनवरी 1918 में उन्होंने 'यंग इण्डिया' नाम से पत्रिका का प्रकाशन किया और 1919 में न्यूयार्क में 'इण्डियन इन्फोरमेशन ब्यूरो' एक सूचना केन्द्र की स्थापना की जो भारत में होने वाली घटनाओं की जानकारी देता था। उन्होंने इस दौरान 'भारत का राजनीतिक भविष्य' (पालिटिकल फ्यूचर आफ इण्डिया) एवं "इंग्लैण्ड्स हैड टू इण्डिया" आदि तथा "तरुण भारत" नाम पुस्तक भी लिखी और ऐसे तथ्यों का जोरदार प्रतिपादन किया कि ब्रिटिश साम्राज्य भारत के लिए अभिशाप है। इन सब गतिविधियों से बोखला कर जब वे जापान यात्रा से स्वदेश लौटना चाहते थे अंग्रेजों ने उनके भारत लौटने पर पाबंदी लगा दी। फलतः लाला जी 1914 से 1919 तक अमेरिका-जापान-सैन-फ्रांसिसको में रहे।

इसी दौरान 13 अप्रेल 1919 को जलियांवाला बाग बर्बर हत्याकांड घटित हो गया। ब्रिटिश शासन ने हजारों निहत्थे देशभक्तों पर गोली चलाकर महान् बर्बरता का परिचय दिया। लाला जी की आत्मा बिलख उठी। गांधी जी ने विरोध स्वरूप असहयोग आंदोलन चालू कर दिया और एक समझौते पर शाही घोषणा के फलस्वरूप लाला जी को भारत-प्रवेश मिला। 20 फरवरी 1920 को लाला जी बम्बई आये। इन्हीं दिनो 1.8.1920 को लोकनायक बालगंगाधर तिलक का निधन हो गया। लाला जी ने लाहौर में "तिलक स्कूल" दिसम्बर 21 में स्थापित किया। विद्यालय के लिए निजी भवन राष्ट्रसेवा के लिए अर्पित कर दिया और स्वयं एक पुराने मकान में रहने चले गये। 1920 में कांग्रेस का कलकत्ता में विशेष अधिवेशन आयोजित हुआ। लाला जी ने जोशीला अध्यक्षीय भाषण दिया तथा गांधीजी के असहयोग आंदोलन और बहिष्कार के प्रस्ताव को पारित कर उनकी क्रियान्विति में तन-मन-धन के साथ लग गये। अंग्रेज सरकार का दमन चक्र तेज हो चला। लाला जी को राजद्रोह के भाषण के आरोप में गिरफ्तार कर दि. 3.12.1921 को दो वर्ष की

कैद की सजा दी। जेल में उन्हें असह्य यातानायें दी गईं, इससे वे बीमार पड़ गये। उन्हें क्षय रोग हो गया। अंत में दि. 16.8.1923 को बिना शर्त रिहा कर दिया गया। जेल यात्रा में उन्होंने "महाराज अशोक" एवं "भारत का इतिहास" दो प्रसिद्ध पुस्तकें लिखीं। जुलाई 1925 से एक साप्ताहिक पत्रिका "दी प्यूपल" का प्रकाशन करने लगे।

आपने स्वाधीनता-आन्दोलन की आवश्यकता को अनुभव करते हुए "लोक सेवक -संघ" नामक संस्था की स्थापना की। इसके लिए लाला जी ने अपनी कोठी, अपना पुस्तकालय तथा पचास हजार रुपये दान दिया। इस संस्था का कार्य ऐसे राष्ट्रीय कार्यकर्त्ताओं को तैयार करना था जो जीवन निर्वाह मात्र के लिए अपेक्षित साधन लेकर पूर्ण समर्पण-भावना से देश के लिए कार्य करते रहें। आपके प्रयत्नों से संघ ने कार्यकर्ताओं की लम्बी फौज खड़ी कर दी। सरदार भगतसिंह और राजगुरु जैसे देशभक्त तथा लालबहादुर शास्त्री जैसे सेवक इसी संस्था की देन थी।

1925 में लाला जी 40 सदस्यों की केन्द्रीय व्यवस्थापिका (सैन्ट्रल लैजेस्लेटिव एसेम्बली) के सदस्य चुने गए। वहाँ भी इन्होंने स्वतंत्रता प्राप्ति हेतु अपने भाषणों से क्रान्ति जगाते रहे।

शासन व्यवस्था में सुधार की जांच के लिए जो भारत को उत्तरदायी शासन देने पर भी विचार करेगा, एक कमीशन की नियुक्ति 1927 में सर साईमन की अध्यक्षता में कर दी गई। इसमें सभी सदस्य अंग्रेज थे। इस कमीशन में भारतीय प्रतिनिधियों की नियुक्ति की मांग रखी गई लेकिन ध्यान नहीं दिया गया।

30 अक्टूबर 1928 को यह "साईमन कमीशन" लाहौर आने वाला था। लाहौर में लाला जी के नेतृत्व में इसका विरोध किया गया। धारा 144 लगाकर जलसा-जुलूस पर पाबंदी लगा दी गई। लेकिन जनता में भारी जोश था। जुलूस में लाखों लोगों ने 'साईमन वापस जाओ, भारत भारतीयों का है' के नारों से विरोध किया। अमानुषिक अंग्रेज शासकों के "काले गुलाम सेवकों" की पुलिस ने निर्दोष निहत्थे लोगों पर गोलियाँ

चला दीं। लाठियों से प्रहार किये गये। लाला लाजपतराय गंभीर रूप से घायल हो गये। उनका शरीर लहू-लुहान हो गया। उन्होंने कहा– "ये चोटें विदेशी सरकार का अत्याचार नहीं, हमारी गुलामी की मानसिकता का दाग है। इस घटना का हमें बदला लेना होगा। बदला खून-खराबा नहीं स्वतंत्रता प्राप्त करना है।" उन्होंने संध्या को आयोजित विशाल जलसे में कहा– "उनके शरीर पर किया गया प्रत्येक प्रहार और लाठी की चोटें ब्रिटिश साम्राज्य के कफन पर अंतिम कीलें सिद्ध होंगी।"

चोटें इतनी घातक थीं कि उपचार के बावजूद भी ठीक नहीं हुईं और वे 17 नवम्बर 1928 को प्रातः 7 बजे भारत माता के लिए शहीद हो गए। पूरे देश ने शोक मनाया। महात्मा गांधी ने उनकी मृत्यु परं कहा– "लाला जी एक व्यक्ति नहीं, संस्था थे। उन्हें विश्व के मानव मात्र से प्यार था। इस महान अग्रवीर का नाम स्वाधीनता गगन में सदैव रहेगा जब तक गगन में चांद सितारे रहेंगे।"

सरदार भगत सिंह ने उनके बलिदान का बदला लेने के लिए ही लाहौर में 17.12.1928 को हत्यारे साण्डर्स की हत्या कराई।

लाला लाजपत राय सम्पूर्ण देश के नेता थे किंतु अग्रवाल मुकुटमणि थे, जाति के गौरव थे। अग्रवाल वैश्य समाज की दानशीलता, कर्मठता, योग्यता के प्रतीक थे। दिल्ली के अष्टम अखिल भारतीय अग्रवाल महासभा के अधिवेशन में आपने प्रेरकपूर्ण उद्बोधन देशवासियों को दिया था। अग्रवाल समाज को ऐसी महान् विभूति पर हमेशा गर्व रहेगा। वास्तव में उनके जीवन के अनूठे कृतित्व पूरे समाज के लिए अनुकरणीय हैं। देश की आजादी में लाला जी द्वारा प्रदत्त आत्माहुति, त्याग, तपस्या हर भारतीय को प्रकाश स्तम्भ के समान नई स्फूर्ति, नई चेतना, नवीन उत्साह प्रदान करती रहेगी। "महाजनो येन गतः सः पंथः।"

लाला लाजपत राय ने अपनी सेवाओं से देश की लाज और पत दोनों रखी। कहा भी है–

जननी जनै तो वीरजन, या दाता या शूर।
नहिं तो जननी बांझ रहे, मत खोवे तू नूर।।

लाला जी की स्मृति में लाहौर में एक विशाल स्मारक बनाया गया है, जिसे शिमला में स्थानान्तरित कर दिया गया है। शिमला में उनकी भव्य प्रतिमा भी मालरोड़ के सामने लगाई गई है। दिल्ली में मार्केट और कालोनी आपके नाम पर है। संसद के केन्द्रीय हॉल में आदमकद प्रतिमा लगाई है। देश के विभिन्न स्थानों पर उनकी मूर्तियाँ स्थापित हैं। अनगिनत पार्कों, सार्वजनिक स्थानों, मार्गों, संस्थाओं को आपका नामकरण दिया गया है। लाला जी का स्मृति-मंदिर ग्राम जगरांव में बना है।

भारत सरकार ने भी आपकी पुण्य स्मृति में 28 जनवरी 1965 को 15 पैसे का डाक टिकट जारी किया।

पावन चरित्र महापुरुषों के हमें कराते ध्यान
हम भी अपने चरित्र को बना सकते दिव्य महान्॥
महा विदा के समय जगत से, जा सकते साह्लाद।
क्षण भंगुर जग में अंकित कर, स्मृतियों के अमर निसान।
जय भारत! जय लाला लाजपतराय महान्।

लाला लाजपतराय की शिक्षा

हिन्दू-धर्म उठा फिर जाग, खुलें तभी भारत के भाग॥
परम पुनीत सभ्यता वैदिक, श्रेष्ठ पूज्य शिक्षा है वैदिक॥
वह फिर से भारत अपनाये, विश्व ज्योति उससे ही पाये॥
तब समझो भारत स्वाधीन, होवे उज्ज्वल संस्कृति प्राचीन॥
अतः हिन्दुओं! अब भी जागो, तुम अपना यह आलस त्यागो॥
करें संगठन हम सब मिलकर, आपस की दुर्बलता तजकर॥
अपनायें ऋषियों का शुभ-पथ, बढ़ें समुन्नति-पथ-भारत रथ॥
मिले विश्व को पावन ज्ञान, सच्ची शिक्षा त्याग महान्॥
आज संगठन परम प्रबल है, आज संगठन में ही बल है॥
हों संगठित सभी हिंदूजन, उन्नत होगा तब जग जीवन॥

—*—

दिन में फेरे शुरु करो

अग्र बन्धुओ उठो जरा, और रुढ़िवादिता दूर करो।
सौ मर्जों की एक दवा है, दिन में फेरे शुरु करो॥
बुरे कर्म जितने भी हैं, वो अंधियारे में होते हैं।
आतिशबाजी शराब भंगड़ा, कुकर्म की जड़ होते हैं॥
लड़के लड़कियाँ संग संग नाचें, होश हवास सब खोते हैं।
चरित्र हीनता फैलाकर वो, कुल का नाम डुबोते हैं॥
अपने हित की बात जरा, कुछ हृदय में मंजूर करो।
अग्र बन्धुओं उठो जरा, और रुढ़िवादिता दूर करो॥

समय दिया है आठ बजे का, कर इन्तजाम सब थकते हैं।
नौ, दस, ग्यारह बजे देख कर, लोग निराश लौटते हैं॥
भंगड़ा करते आधी रात में, खाना ठण्डा खाते हैं।
बदहजमी हो जाती और, वे बीमार पड़ जाते हैं॥
अब तो यह गन्दे रिवाज, जड़ से चकनाचूर करो।
अग्रबन्धुओं उठो जरा, और रुढ़िवादिता दूर करो॥

दिन के फेरे करने से, एक नया हर्ष छा जाता है।
आतिशबाजी और लाईट का, धन अपव्यय बच जाता है॥
रात ठहरने के झंझट से, हर एक छुट्टी पाता है।
बिस्तर कपड़ों की तैयारी का, बोझ दूर हो जाता है॥
ऐसी अच्छी बातों का तो, खूब प्रचार जरूर करो।
अग्रबन्धुओं उठो जरा, और रुढ़िवादिता दूर करो॥

सुबह को जाना, शाम को आना, दिन का विवाह रचाने में।
दिन में फेरे स्वयंवर से, होते थे पूर्व जमाने में॥
सौ झंझट और खर्चा होता, बारात को रात ठहराने में।
वर और कंन्या पक्ष सुखी हैं, कार्य शीघ्र निपटाने में॥
शुभ काम में देरी क्या बस, सबको ही मजबूर करो।
दिन के फेरे अपनायें सब, आनंद से भरपूर करो॥
अग्रबन्धुओं उठो जरा और रुढ़िवादिता दूर करो।
सौ मर्जों की एक दवा है, दिन में फेरे शुरु करो॥

स्वाधीनता की चेतना के अग्रदूत-दार्शनिक, भारत रत्न से विभूषित अग्र-गौरव

डॉ. भगवानदास "केला"

भारत जहाँ वीरों की जन्मभूमि है, वहाँ एक से एक बढ़कर मनीषी विद्वानों की भी। इसी श्रेणी के महान् भारतीय मनीषियों में डॉ. भगवानदास का नाम अग्रणी है, जिन्हें सार्वजनिक क्षेत्र में पूरे राष्ट्र में सबसे पहले गौरव मिला और इस महान् विभूति ने यह सम्मान प्राप्त कर प्रमाणित कर दिया कि अग्रवाल समाज उद्योग व्यवसाय के क्षेत्र में ही नहीं, ज्ञान, विज्ञान, दर्शन एवं अध्यात्म क्षेत्र में भी अग्रणी है और वह जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में नेतृत्व करने की पूर्ण क्षमता रखता है।

भारत के इस महान संत एवं दार्शनिक का जन्म माघ कृष्ण 15 संवत् 1925 (तदनुसार दि. 12 जनवरी सन् 1869) को काशी में बाबू माधवदास अग्रवाल के घर हुआ था। बाल्यावस्था में ही धर्म, संस्कृति तथा संस्कृत भाषा के प्रति उनकी रुचि जागृत हो गई। 5-6 वर्ष की अवस्था में ही अपनी दादी पार्वती देवी को गीता के मूल श्लोक एवं उनका अनुवाद सुनाने लगे। अपनी प्रतिभा के बल पर 12 वर्ष की अवस्था में ही क्वींस कालेज से एंट्रेन्स की परीक्षा उत्तीर्ण कर ली तथा 17 वर्ष की अवस्था में ही 1886 में कलकत्ता विश्वविद्यालय से दर्शन-शास्त्र में एम.ए.परीक्षा आनर्स के साथ उत्तीर्ण कर महान् प्रतिभा का परिचय दिया। इसके अलावा आपने संस्कृत, फारसी, उर्दू तथा अन्य

विषयों का ज्ञान भी अध्ययन के साथ प्राप्त किया। संस्कृत के अध्ययन से उन्हें वेदों, उपनिषदों तथा अन्य भारतीय वाङ्मय की ओर आकृष्ट हुए।

आपकी अगाध विद्वता से प्रभावित होकर 1929 में बनारस हिन्दू विश्व विद्यालय ने आपको "डी लिट" की उपाधि से सम्मानित किया। 1937 में इलाहाबाद विश्व विद्यालय की ओर से भी सर्वोच्च मानद उपाधि "डी लिट' से आप अलंकृत किए गए। उन्होंने "साइंस आफ पीस" तथा "साइंस आफ इमोशंस" नामक ग्रन्थों की रचना की तो बुद्धिजीवी वर्ग में वे चर्चित हो उठे।

अध्यंयन के उपरांत आपने डिप्टी कलैक्टर के रूप में सरकारी सेवा में प्रवेश किया और उत्तर प्रदेश के विभिन्न जिलों में आठ वर्ष तक मजिस्ट्रेट के रूप में कार्य करने के उपरान्त सरकारी सेवा से त्याग-पत्र दे दिया और सामाजिक एवं राष्ट्रीय कार्यों में लग गए तथा सन् 1908 में "थियो सौफिकल सोसायटी" के सदस्य बने। सन् 1898 में डॉ. एनीबेसेंट के प्रभाव से बनारस में सेंट्रल हिन्दू कॉलेज की स्थापना की, जिसका कालांतर में हिन्दू-विश्वविद्यालय के रूप में विकास हुआ। आप उसके संस्थापकों में से एक थे। आपकी कार्यकुशलता एवं दूर दृष्टि से सैन्ट्रल हिन्दू कालेज आर्थिक दृष्टि से सदैव आत्म निर्भर रहा। आपने कभी अंग्रेजी सरकार से अनुदान सहायता नहीं लिया। आप 1888 से 1898 तक लगातार उसके मानद मंत्री बने रहे।

आपने दानवीर श्री शिवप्रसाद जी गुप्ता के आर्थिक अनुदान से सन् 1881 में महात्मा गांधी के अंग्रेजी पठन-पाठन व्यवस्था के विरुद्ध नई राष्ट्रीय शिक्षा देने के लिए काशी विद्यापीठ की स्थापना की और आप उसके कुलपति बनाये गये। इनके कार्यकाल में संस्था ने सरकारी विरोध चक्रों का साहसपूर्वक सामना करते हुए अपने विकास की नई मंजिलें पार कीं।

डॉ. साहब अंग्रेजी की जगह हिन्दी भाषा को उपयुक्त स्थान दिये जाने के प्रबल समर्थक थे। उन्होंने कहा था– "जब तक देश में अंग्रेजों द्वारा प्रचलित शिक्षा प्रणाली जारी रहेगी हमारे देश का शिक्षित युवक

अंग्रेजों की नौकरी के पीछे ही दौड़ता रहेगा तथा यह विदेशी शासन का पुर्जा बनकर गुलामी का कवच बना रहेगा। अतः आज सबसे पहले अंग्रेजी शिक्षा प्रणाली की जगह भारतीय शिक्षा प्रणाली लागू किया जाना जरूरी है। इसी से हम युवा पीढ़ी को अपने देश, संस्कृति तथा उसकी महान् परम्पराओं के प्रति जागृत करवाने में सफल हो सकते हैं।"

डॉ. भगवान दास जी ने सन् 1919 में सहारनपुर में उत्तर प्रदेशीय सामाजिक सम्मेलन के और 1920 में मुरादाबाद में राजनीतिक सम्मेलन के सभापति के रूप में अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा था– "हमारे देश की संस्कृति, सभ्यता तथा धर्म अत्यधिक महान् और समृद्ध है। विदेशी मुगलों तथा अंग्रेजी की गुलामी में रहने के कारण हमारे मन में यह हीन भावना भरी गई कि आर्य (हिन्दू) या हिन्दुस्तानी, बाहर से आये। हमारे पूर्वज जंगली थे/ कच्चा माँस खाते थें/नंगे रहते थे/ जब कि वास्तविकता यह है कि हिन्दू (आर्य) संसार में सबसे अधिक सुसभ्य, सुसंस्कृत, ज्ञानवान, मानवतावादी तथा संवेदनशील रहे हैं। हमारे वेद ज्ञान-विज्ञान के भण्डार हैं। हमारे पुराण-उपनिषद प्रेरक कथानकों के सागर हैं। रामचरित मानस तथा बाल्मीकि रामायण पग-पग पर प्रेरणा देने वाले महान् साहित्य शिरोमणि ग्रन्थ हैं।"

सन् 1921 में डॉ. साहब जब हिन्दी साहित्य सम्मेलन के अध्यक्ष थे तब उन्होंने उर्दू भाषा को नागरी विधि में लिखे जाने का सुझाव देते हुए कहा था–

"उर्दू की लिपि विदेशी भाषा अरबी में होने के कारण समझने में बहुत कठिनाई होती है। यदि उसे नागरी लिपि में लिखना स्वीकार कर लिया जाये तो उसका बहुत सा अच्छा साहित्य लोकप्रिय हो सकता है। देवनागरी लिपि सबसे वैज्ञानिक, सक्षम व सरल है। उर्दू के अलावा अन्य भारतीय भाषाओं की लिपि भी देवनागरी ही होनी चाहिए।" उन्होंने हमेशा संस्कृत, हिन्दी तथा भारतीय भाषाओं को महत्त्व देने का आगृह किया।

सन् 1921 में आप महात्मा गांधी के असहयोग आन्दोलन में शामिल हो गये तथा एक वर्ष के कारावास का दण्ड मिला।

सन् 1923 से 1925 तक आप बनारस नगर पालिका के चैयरमैन रहे। इसके पश्चात् सन् 1926 से 1936 तक चुनार में गंगा तट पर रहते हुए प्राचीन ऋषियों जैसा जीवन व्यतीत किया।

सन् 1931 में जब काशी और कानपुर में भीषण हिन्दू-मुस्लिम दंगे हुए थे, उनकी जाँच के लिए कांग्रेस की तरफ से एक समिति गठित हुई, आप उसके अध्यक्ष बनाये गये। आपने बड़े परिश्रमपूर्वक समस्या की जांच की और छः माह पश्चात् अपनी वृहत रिपोर्ट प्रस्तुत की, जिसमें न केवल दंगों के कारणों पर प्रकाश डाला गया था, अपितु उनके सम्यक् समाधान के लिए भी सुझाव रखे गये थे। जिसमें विशेष रूप से यह परामर्श दिया गया कि मुसलमानों को हिन्दुओं के साथ सहयोग और मित्रता रखनी चाहिए। आपसी बेबुनियादी झगड़ों द्वारा हिन्दुस्तान पर अंग्रेजों का अधिकार अधिक प्रबल न बनाएँ।

सन् 1935 में डॉ. भगवानदास केन्द्रीय विधानसभा के निर्विरोध सदस्य चुने गये।

गांधी जी की हत्या के बाद जब राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ पर प्रतिबन्ध लगाया गया तो डॉ. भगवानदास जी ने डटकर उसका विरोध किया। उन्होंने उन्हीं दिनों "आज" तथा दैनिक 'सन्मार्ग' में स्वतंत्रता का वातावरण और राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ शीर्षक लेख प्रकाशित कराकर अनेक प्रमाण देकर सिद्ध किया कि संघ के स्वयं सेवक राष्ट्रभक्ति से ओत-प्रोत हैं। संघ के स्वयं सेवकों ने ही मजहबी उन्माद में अन्धे हुए मुस्लिम लीगियों को महात्मा गांधी, सरदार पटेल तथा अन्य नेताओं की हत्या के षड़यंत्र को जान हथेली पर रखकर असफल किया था। राजधानी दिल्ली को आग की लपेटों से बचाया था। नोआखाली पंजाब तथा सिन्ध में लाखों हिन्दुओं के प्राणों की रक्षा की थी। ऐसे राष्ट्रभक्त संगठन पर गांधी जी की हत्या का झूठाँ आरोप लगाकर प्रतिबन्ध लगाया जाना शर्मनाक है।

डॉ. भगवान दास जी का पूरा परिवार ही राष्ट्रभक्ति से ओत-प्रोत विचारों का था। उनके ज्येष्ठ पुत्र श्री श्रीप्रकाश जी पाकिस्तान में उच्चायुक्त

रहे तथा बाद में अनेक प्रांतों में राज्यपाल रहे। दूसरे पुत्र चन्द्रभान जी उत्तर-प्रदेश विधान सभा के अध्यक्ष रहे।

डॉ. भगवान दास जी को सन् 1955 में "भारत रत्न" की सर्वोच्च उपाधि से विभूषित किया गया। डॉ. भगवानदास जी ने भारत के अध्यात्म तथा दर्शन को संसार के लिए अत्यन्त उपयोगी बताते हुए लिखा था– "भौतिकवाद की चकाचौंध में फंसे तथा अत्याधुनिकता के कारण दिग्भ्रमित पश्चिम को सच्ची सुखशांति का संदेश और मार्गदर्शन केवल भारत के दर्शन तथा यहाँ के ऋषि-महर्षियों के चिन्तन से ही प्राप्त हो सकता है। भारत से उठी अध्यात्म की लहर ही पश्चिम देशों की तपन को शान्त कर उसे शीतलता प्रदान कर सकती है।"

आपने हिन्दी संस्कृत के विद्वान होने के नाते विपुल संख्या में हिन्दी शब्दों का निर्माण किया। आपने दर्शन एवं साहित्य पर लगभग 30 पुस्तकें लिखीं, जो अत्यन्त उच्चकोटि की हैं। आपने भारतीय धर्म एवं साहित्य मं उच्च कोटि का समन्वय प्रस्तुत किया।

उन्होंने भारत के पुरातन ज्ञान को नवीन के संदर्भ में बुद्धिगम्य बना दर्शन के क्षेत्र में महान् कार्य किया। उन्होंने लिखा है– "नये सम्पन्न जीवन के लिए मानव समुदायों के भिन्न-भिन्न विचारों, आदर्शों और मार्गों में समन्वय की आवश्यकता है। आध्यात्मिक और भौतिक दोनों प्रकार की वस्तुओं का इमानदारी से किया गया आदान-प्रदान दोनों ही पक्षों के लिए लाभदायक है और हमारा मार्गदर्शक सिद्धान्त होना चाहिए– मूलभूत तत्वों, सिद्धान्तों और महान् बातों में एकता और हर हालत में उदारता।"

डॉ. श्री भगवान दास जी अपने देश, धर्म, संस्कृति, भाषा, शिक्षा तथा समाज की सेवा तथा विश्वकल्याण का चिन्तन करते हुए 18 सितम्बर 1958 को गोलोकवासी हो गए। उनकी जन्म शताब्दी पर भारतीय डाक तार विभाग ने 12 जनवरी 1969 को 20 पैसे का डाक टिकट जारी किया। मुद्रित डाक टिकटों की संख्या 30 लाख थी।

समस्त अग्रवाल समाज को इस महान् विभूति पर गौरव करने का पूरा अधिकार है। ऐसे महापुरुष सदैव स्मरणीय रहेंगे। इनको शत-शत नमन्।

—*—

अग्रसेन के वंशज हैं
हम अग्रवाल कहलाते हैं

अग्रसेन के वंशज हैं हम, अग्रवाल कहलाते हैं
संघ एकता में है शक्ति, यह बात सभी बतलाते हैं।
नहीं पूछता कोई जग में जिसके पीछे शक्ति नहीं
संगठन से ही बल मिलता है, इससे बढ़कर कोई युक्ति नहीं॥

अपनी शक्ति को पहचानो, धन, यश, विद्या पास है,
ह्रास हुआ है नैतिकता का, खोया निज विश्वास है।
जाति धर्म और छुआछूत में, अलग-थलग सब पड़े हुए,
ईर्ष्या, द्वेष और घृणा की, दीवार बनाकर खड़े हुए।

सोई हुई है चेतना सबकी, आया समय जगाने का।
छोटी छोटी बातों में अब, वक्त नहीं है गंवाने का।
वही समाज आगे बढ़ता है, नारी को जो दे सम्मान,
नारी शक्ति खो देने से, नहीं होते फिर पूरे काम॥

मानवता का पाठ सीख लो, गर तुम मानव कहलाते,
पूजे जाते वही जगत में, सब के घाव जो सहलाते।
अलग-थलग वर्गों में बंट कर, वैश्य समाज का हुआ हनन,
संगठित होकर एक मंच पर, समस्याओं पर करो मनन॥

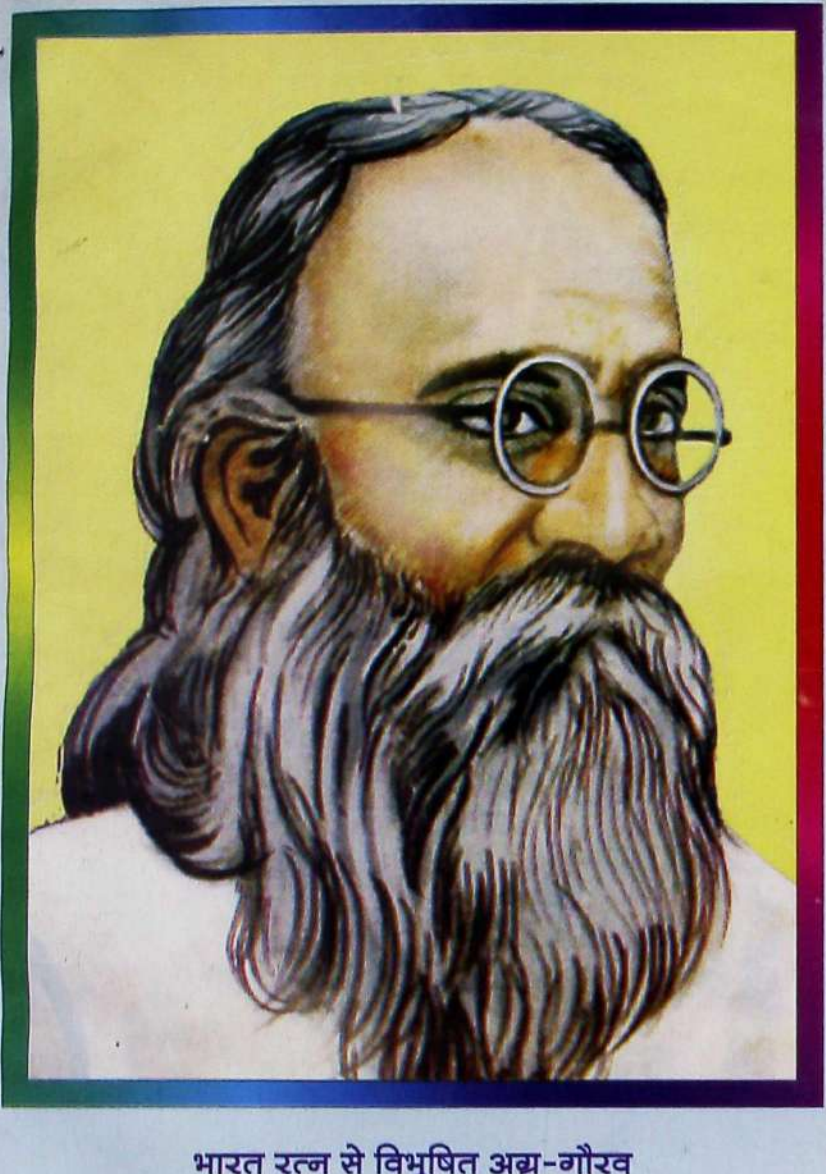

भारत रत्न से विभूषित अग्र-गौरव
डॉ. भगवानदास ''केला''

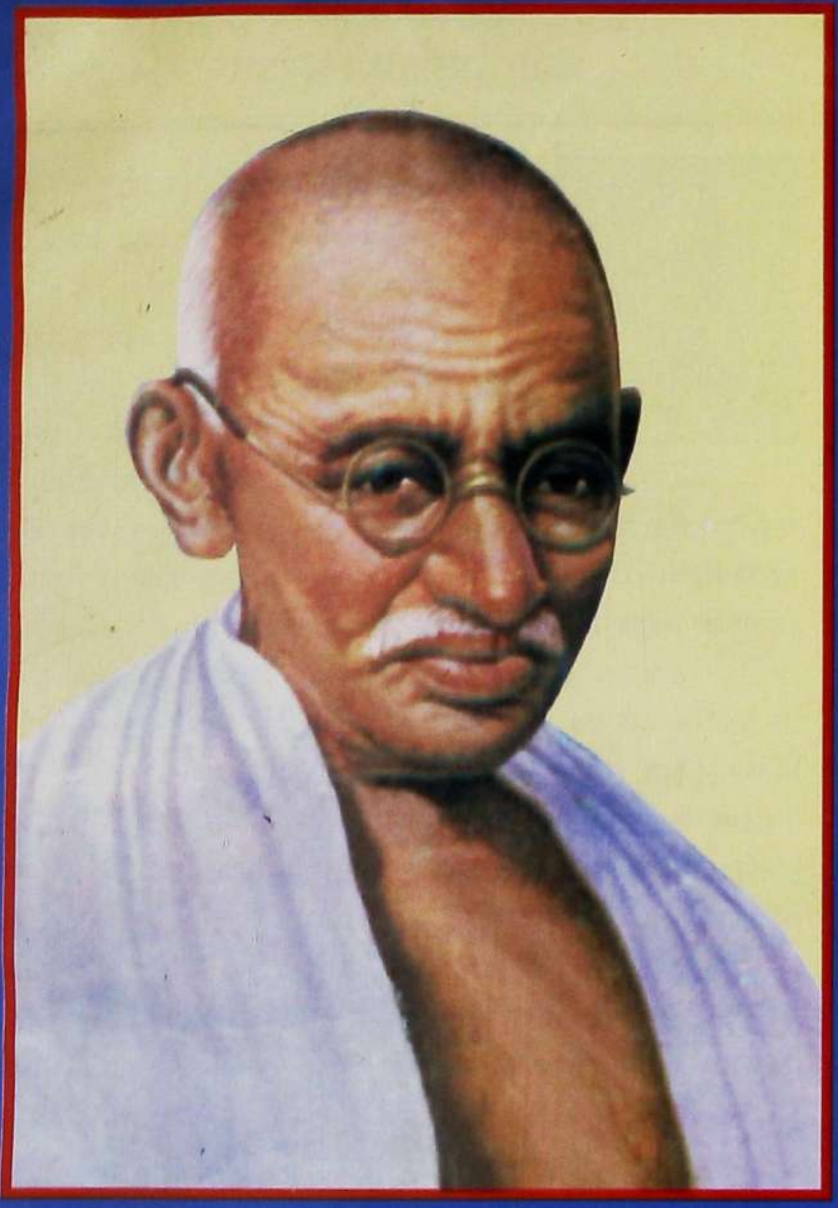

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी

महान अग्र-विभूति

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी

भारतवर्ष की पवित्र भूमि पर समय-समय पर अनेक महापुरुषों, सन्तों एवं महात्माओं ने जन्म लिया है। सत्य और अहिंसा के अवतार जिनकी विश्व ने वंदना की है तथा राष्ट्रपिता की संज्ञा प्राप्त हुई है वे हैं वास्तव में महान् सन्त महात्मा गांधी। भारत के स्वतंत्रता आंदोलन के महान् नेता जिनके नेतृत्व में सम्पूर्ण देश ने आजादी की लड़ाई लड़ी और अहिंसात्मक सत्याग्रह द्वारा भारत से ब्रिटिश साम्राज्यवाद का उन्मूलन करने में सफलता प्राप्त की। जिन्होंने अपने देश की सेवा में सम्पूर्ण जीवन अर्पण कर दिया। वे गुणों के खान थे। बैरिष्टर होकर भी महात्मा कहलाये। सारा संसार इस महापुरुष को देवता के रूप में स्मरण करता है।

महात्माजी का नाम मोहनदास, उनके पिता का नाम कर्मचन्द था और गाँधी उनकी जातीय उपाधि है इसलिए इनका पूरा नाम मोहनदास कर्मचन्द गाँधी है। गाँधी जी मोढ़ वैश्य गुजराती हैं। ये मोढ़ वैश्य अग्रवालों का ही एक बैंक है। मथुरा, आगरा के वणिज प्रधान बनिये उत्तर गुजरात में मेहसाणा से 12 मील दूर मोढ़ेरा ग्राम में आकर बस गये थे, इस मोढेरा गाँव के कारण ही वैश्य अग्रवालों का पृथक गौत्र मोढ़ वैश्य ख्यात हो गया था। इस प्रकार महात्मा गाँधी मूलतः अग्रवाल हैं (इसकी पुष्टी गाँधीजी की पौत्री श्रीमती सुमित्रा कुलकर्णी ने करते हुए पूज्य बापू को अग्रवाल बताया है।)

महात्मा गांधीजी का जन्म दि. 2 अक्तूबर, सन् 1869 को काठियावाड़ (गुजरात) के पोरबन्दर नगर में एक कुलीन वैश्य परिवार में

हुआ था। इनके पिता श्री करमचन्द गाँधी राजकोट के दीवान थे। इनकी माता श्रीमती पुतलीबाई बहुत ही धार्मिक और ईश्वर भक्त थी। माता-पिता का खान-पान और रहन-सहन बहुत ही सादा था। गाँधी जी का बचपन सादगी में ही बीता। उनके जीवन पर इन सब संस्कारों का बहुत असर पड़ा। जन्मजात सत्यनिष्ठा के कारण वे सदा बुराइयों से बचते रहे। कोई गलत काम कर भी बैठते तो आत्म ग्लानि के कारण फौरन उसे स्वीकार भी कर लेते और सुधार का प्रयत्न करते। बाल्यकाल में गाँधी जी बड़े संकोची और झेंपू स्वभाव के थे। खेलों के प्रति उनका कोई रुझान नहीं था। स्कूल से सीधे घर आते और अध्ययन करते और पिता की सेवा में लग जाते थे। अपने विद्यार्थी काल में न तो इन्होंने कोई विशेष कार्य किया और न कोई प्रतिभा ही दिखलाई। उनकी धाय ने उन्हें बताया कि "अंधेरे में राम-नाम लेने से डर नहीं लगता" इसी से राम-नाम महात्मा जी के जीवन का आधार बन गया।

"रघुपति-राघव राजा राम। पतित पावन सीता राम।।

यह भगवत्नाम-जाप माता से उन्हें मिला और जीवन भर इसका वे कीर्तन करते रहे। "रामायण", "गीता" और "नरसी" के पदों का उन्हें पूर्ण ज्ञान था। आपकी प्रारम्भिक शिक्षा पोरबन्दर में ही हुई। भारत की पुरानी प्रथा के अनुसार सन् 1883 में 13 वर्ष की उम्र में ही इनका विवाह कस्तूरबा के साथ हो गया और दो वर्ष बाद उनकी प्रथम संतान का जन्म हुआ। हाई स्कूल पास करने के बाद 17 वर्ष की अवस्था में 4 सितम्बर 1888 को बैरिस्टरी पढ़ने लंदन चले गए और बीस वर्ष की अवस्था में ही वकालत की पूरी पढ़ाई करके भारत लौटे। भारत आने पर बम्बई और बाद में राजकोट में वकालत चलाने के प्रयत्न किए। विलायत से लौटने के पूर्व ही इनके माता-पिता का स्वर्गवास हो चुका था। अतः इनका मन किसी काम में नहीं लगता था, साथ ही संकोची और सत्यवादी होने के कारण इनको वकालत में भी वांछित सफलता नहीं मिली।

इन्हीं दिनों उन्हें सन् 1893 में पोरबन्दर की एक फर्म "अब्दुल्ला

एण्ड कम्पनी'' की तरफ से मुकदमा लड़ने दक्षिणी अफ्रीका जाना पड़ा। वहाँ जाकर उन्होंने देखा कि वहाँ की गोरी सरकार अश्वेत लोगों से बहुत अत्याचार और अपमानजनक व्यवहार करती है। वहाँ भारतीयों के साथ भी गोरों का व्यवहार अच्छा नहीं था। कोई भी काला आदमी गोरों के साथ सफर नहीं कर सकता था, न किसी भूमि का मालिक हो सकता था और न बिना आज्ञा प्राप्त किये रात्रि 9 बजे के बाद घर से बाहर निकल सकता था। खान-पान, रहन-सहन, पारस्परिक व्यवहारों में भी काले व्यक्तियों को बहुत हीन और अपमानित जीवन व्यतीत करना पड़ता था। एक दिन कचहरी में पगड़ी पहन कर जाने के कारण गाँधीजी को बहुत अपमानित किया गया। इस घटना ने गोरों के विरुद्ध गाँधीजी को उकसा दिया और आन्दोलन छेड़ दिया। उन्हें स्वयं अनेक स्थानों पर अंग्रेजों के जुल्मों का शिकार होना पड़ा। गाँधी जी को दुःख हुआ। अब्दुल्ला एण्ड कम्पनी के मुकदमें के बाद गोरी सरकार के जुल्मों के विरुद्ध संघर्ष में जुट गये और भारतीयों की दशा सुधारने का बीड़ा उठाया। वहाँ उन्होंने अहिंसात्मक सत्याग्रह आन्दोलन चलाया और संसार का ध्यान अपनी ओर खींचा। वहीं पर उन्होंने वकालत छोड़कर अपने आप को पूर्णतः सार्वजनिक जीवन के अर्पण कर दिया। उन्होंने फिनिक्स (अफ्रीका) में एक आश्रम की स्थापना की।

महात्मा गाँधी ने कहा– ''अन्याय का विरोध करना चाहिए, किन्तु अन्यायी के प्रति मन में दुर्भाव नहीं आने देना चाहिए, उससे सच्ची सहानुभूति रखनी चाहिए'' यह सिद्धान्त अपनाकर सत्य और अहिंसा का महान संदेश विश्व को दिया। उन्होंने अत्याचार सहते हुए भी शान्त रहकर दिखा दिया कि अहिंसा दुर्बलों का नहीं, बलवानों, धैर्यवानों का अमोघ अस्त्र है। अफ्रीका में गोरों ने एक बार तो उन्हें अधमरा ही कर दिया था। एक गोरे की मार से तो उनके अगले दो दाँत ही टूट गये थे किन्तु उनकी अहिंसा प्रवृत्ति अन्त में विजयी हुई और अंग्रेजों ने भी उनकी भूरी-भूरी प्रशंसा की। अनेक वर्षों तक वहाँ संघर्षरत रहे। 22 अगस्त 1894 में

आपने रंगभेद के विरुद्ध "नेटाल इण्डियन कांग्रेस" (उपनिवेश विरोध संगठन) का गठन किया। दुनिया में यह अपने प्रकार का पहला संगठन था। रंगभेद मिटाने व स्वतंत्रता के लिए रैलियों और काम के बहिष्कार की शुरुआत के आन्दोलन चलाये जाने लगे और उसमें सफल हुए।

भारत उन दिनों पराधीन था और देश में ब्रिटिश सरकार का अन्याय और दमन बढ़ता जा रहा था। यहाँ स्वाधीनता संग्राम प्रारम्भ हो चुका था। गाँधीजी अफ्रीका से 18 अक्टूबर 1899 में वापस आये। दक्षिण अफ्रीका की शौर्य गाथा और सफलता के कारण उनका यहाँ भारी सम्मान हुआ। वे यहाँ के सर फिरोजशाह मेहता, लोंकमान्य तिलक और गोपाल कृष्ण गोखले आदि भारतीय नेताओं से मिले और देश की स्थिति की जानकारी के लिए देश का दौरा किया। इन्हीं दिनों पुनः अफ्रीका में आन्दोलन के संचालन हेतु पुनः उन्हें आमंत्रित किया गया और 20 नवम्बर 1901 को पुनः दक्षिण अफ्रीका गये, जहाँ उन्हें 15 वर्ष तक रहना पड़ा। अफ्रीका में 1912 में "अफ्रींकी नेशनल कांग्रेस" की स्थापना की। इसके प्रथम अध्यक्ष जॉन डुबे इनान्डा थे, जो गाँधीजी के पड़ौसी और दोनों एक दूसरे से प्रभावित थे। अफ्रीका में गाँधी जी ने करीब 21 साल बिताये। इस दौरान उन्हें चार बार जेल की सजा हुई। इन चारों मौकों पर गाँधीजी ने अपने आपको गिरफ्तारी के लिए समर्पित किया था। उन पर किसी षड़यन्त्र का आरोप नहीं था केवल उन कानूनों को जो अन्यायपूर्ण थे उनके खिलाफ (कानून तोड़ने के लिए) आन्दोलन के कारण गिरफ्तार किये जाते थे। वहाँ गाँधीजी के अनुयायियों में नेल्सन मंडेला अफ्रीकी नेता भी थे। गाँधीजी को जोहान्सबर्ग के किले में कैदी के रूप मे रखा गया। गाँधीजी जेल की स्थितियों के अनुसार अपने आप को ढाल लेते थे। सत्याग्रही के रूप में उन्होंने अत्याचार सहन करते हुए स्वतंत्रता पाने का रास्ता चुना था और न्याय प्राप्त करना उस लक्ष्य का एक हिस्सा था। गाँधीजी ने सुविधाओं के लिए सदैव इनकार किया। गाँधीजी की पत्नी और पुत्र हरिलाल और मणिलाल भी अफ्रीका साथ थे, उन्हें भी जेल में रहना पड़ा।

अन्ततोगत्वा अफ्रीका में रंगभेद समाप्त हुआ और समझौता हुआ। अफ्रीकियों को आजादी मिली और महात्मा गांधी 9 जनवरी 1915 को भारत वापस लौटे। गाँधीजी ने भारत के स्वातंत्र्य आन्दोलन की बागडोर संभाली। 20 मई 1915 को गाँधीजी द्वारा अहमदाबाद में "सत्याग्रह आश्रम" की स्थापना की गई, जिसे आज "साबरमती आश्रम' के नाम से जाना जाता है।

सन् 1914 में यूरोप में "प्रथम महायुद्ध" प्रारम्भ हो गया था। गाँधीजी ने भारतीय नेताओं से मिल-जुलकर देश की परिस्थितियों का भली-भांति परिचय प्राप्त किया। उन्होंने भारत की विभिन्न परिस्थितियों को समझा और उनको यथा सम्भव हल करने के प्रयास के अन्तर्गत युद्ध में जर्मन के विरुद्ध इंग्लैण्ड (अंग्रेजों) की सरल भाव से खूब सहायता की, क्योंकि अंग्रेजों ने भारत को वचन दिया था कि यदि युद्ध में जीत जायेंगे तो भारत को स्वतन्त्र कर देंगे, किन्तु अंग्रेजों ने ऐसा कतई नहीं किया, अपितु सन् 1919 में युद्ध समाप्ति के बाद स्वतंत्रता की जगह भारत को "जलियांवाला बाग" जैसा क्रूर हत्याकांड भुगतना पड़ा।

गाँधीजी का सबसे पहला आन्दोलन अप्रेल 1917 में "चम्पारन सत्याग्रह" था, जो बिहार में नील की खेती करने वाले किसानों को गोरों के जुल्मों से बचाने के लिए किया गया था। यहीं उनकी भेंट बिहार के प्रमुख व्यक्तियों श्री राजेन्द्र प्रसाद आदि से हुई और वे सभी गाँधीजी के अनुयायी हो गये।

महात्मा गाँधी ने वर्धा (सेवाग्राम) को अपनी कर्मभूमि बनाया और वहीं से उन्होंने आजादी के आंदोलन की अधिकांश गतिविधियों का संचालन किया। यह सेवाग्राम अग्रवंशी सेठ जमनालाल बजाज की समर्पणयुक्त कर्मभूमि थी। सरदार बल्लभ भाई पटेल चाहते थे कि गाँधीजी साबरमती में ही रहकर आन्दोलन का संचालन करें किन्तु उनकी नाराजगी को सहकर भी गाँधीजी ने सेवाग्राम को ही अपनी कर्मभूमि बनाया क्योंकि वे जानते थे कि राष्ट्रीय आन्दोलन के संचालन के लिए जिन साधनों की

जरूरत होगी उनकी पूर्ति सेठ जमनालाल बजाज जैसे श्रेष्ठियों द्वारा ही सम्भव है। उन्होंने सेठ जमनालाल बजाज को अपने पाँचवे पुत्र के रूप में भी स्वीकार किया। श्री बजाज ने गांधीजी की समस्त योजनाओं के क्रियान्वयन के लिए राष्ट्रीय स्वाधीनता आन्दोलन के लिए लाखों रुपये स्वयं दिये और करोड़ों रुपये एकत्र किये। वे 1920 से लेकर अपनी मृत्युपर्यन्त 1942 तक कांग्रेस के कोषाध्यक्ष रहे और कांग्रेस को कभी धन का अभाव न होने दिया। अंग्रेजी सरकार भी इस तथ्य को भली-भांति जानती थी कि स्वतंत्रता हेतु आन्दोलन के संचालन में मारवाड़ी अग्रवाल समाज की महत्त्वपूर्ण भूमिका है। उनका कहना था कि यदि इस मारवाड़ी समाज को आंदोलन से अलग कर दिया जाये तो 90% आन्दोलन स्वयं समाप्त हो सकता है।

गाँधीजी को अपने अभियान को संचालित करने में वैश्य समाज के हजारों महान व्यक्तियों का सक्रिय योगदान मिला। देश के कोने-कोने से लाखों वैश्य बन्धुओं ने सत्याग्रह में भाग लेकर जेल की यातनाएं सहन कीं। स्वाधीनता की प्रेरणा देने वाले गीत "विजयी विश्व तिरंगा प्यारा, झण्डा ऊँचा रहे हमारा" के लेखक कवि श्री श्यामलाल गुप्त पार्षद थे। इस अग्र महापुरुष श्री गाँधीजी को अग्रवंशी सेठ जमनालाल बजाज, डॉ. भगवान दास, डॉ. राममनोहर लोहिया, अमर शहीद लाला लाजपत राय, शिवप्रसाद गुप्त, हनुमानप्रसाद पोद्दार इत्यादि का पूर्ण सहयोग मिला।

13 अप्रेल 1919 को अमृतसर में "जलियांवाला बाग हत्याकांड" हुआ। इस गोलीकांड में निरीह लोगों पर मशीनगन से गोलियां चलाई गईं। जिनसे अनेक अग्र/वैश्य वीर शहीद हुए। असंख्य भारतीय अग्रवाल युवकों ने ऐसे अत्याचार का विरोध किया। अंततः महात्मा गाँधी के नेतृत्व में अगस्त 1920 को ब्रिटिश सरकार द्वारा बनाए "रौलेट-एक्ट" के विरुद्ध देशव्यापी सत्याग्रह चलाया गया। इन्हीं दिनों स्वतन्त्रता संग्राम के पुरोधा लोकमान्य तिलक की मृत्यु हो गई, फलतः देश के पूरे स्वतन्त्रता संग्राम की बागडोर गाँधीजी को सम्हालनी पड़ी।

"सत्याग्रह" एक असहयोग आन्दोलन के रूप में प्रारम्भ हुआ। सन् 1920 में कलकत्ता में हुए कांग्रेस अधिवेशन में असहयोग आन्दोलन करने का प्रस्ताव पास हो गया। असहयोग कार्यक्रम से जनता को परिचित कराने के लिए गाँधीजी देश के दौरे पर निकले। हरियाणा के भिवानी नगर में 22 अक्तूबर 1920 को राजनीतिक सम्मेलन आयोजित हुआ। इसमें श्रीमती कस्तूरबा गाँधी आदि भी उपस्थित थीं। गाँधीजी ऊँची मोटी धोती, काठियावाड़ी अंगरखा और पगड़ी धारण किये हुए थे। सीधी-सादी भाषा में नपे-तुले शब्दों में बोले– "असहयोग में मेरा विश्वास है यह एक साल में स्वराज्य दे सकता है। ईश्वर स्वार्थहीन बलिदान चाहता है।" गाँधीजी के आह्वान पर विद्यार्थियों ने कालेज छोड़ दिए, सरकारी कर्मचारियों ने नौकरियों से त्याग पत्र देने आरम्भ कर दिये, सरकारी खिताब और उपाधियाँ लौटाई जाने लगीं। वकीलों ने अदालतों का बहिष्कार किया। स्थान-स्थान पर विदेशी कपड़ों-सामग्री की होली जलाई जाने लगी, शराब की दुकानों पर धरने दिये जाने लगे। समूचे देश में एक नये प्रकार की जागृति दिखाई देने लगी। परिणामस्वरूप ब्रिटिश सरकार ने हजारों सत्याग्रहियों को जेलों में ठूँस दिया। अनेक व्यक्तियों की सम्पत्तियाँ जब्त कर ली गईं और अनेक प्रकार के जुल्मों का दौर आरम्भ हो गया। गाँधीजी को 10 मार्च 1922 को गिरफ्तार कर उन पर मुकदमा चलाया गया और 6 वर्ष की सजा देकर साबरमती जेल भेज दिया गया, फिर भी स्वतन्त्रता संग्राम देश में बराबर चलता रहा। गाँधीजी को यातनायें दी गईं। वे अस्वस्थ हो गये तथा उन्हें मार्च 1924 में रिहा कर दिया गया।

इसके बाद गाँधीजी ने देश से ऊँच-नीच के भेद को मिटाने के लिए अछूतोद्धार आन्दोलन चलाया। उनकी अवधारणा थी कि दलितों को साथ मिलाये बिना स्वराज्य नहीं मिल सकता। गाँधीजी ने नागपुर अधिवेशन में कहा था कि स्वराज्य प्राप्ति की एक शर्त दलित भाईयों को उनके अधिकार दिलाने की होगी। अतः दलित भाई इनकी नीतियों को अपनाएं, असहयोग आन्दोलन में साथ दें। अंग्रेजों से अलग हटकर, इस अत्याचारी सरकार

के हाथ कमजोर करने में जुट जाएं। देश की आर्थिक स्थिति– रोजगार को ध्यान में रख, चरखा और खादी तथा अन्य ग्रामोद्योगा का कार्यक्रम देशव्यापी आरम्भ किया। उन्होंने देश की स्वतंत्रता के लिए नैतिक, सामाजिक, आर्थिक सभी परिस्थितियों में सुधार करने के लिए देश के नेताओं, संगठनों और सामाजिक संस्थाओं को जागृत किया। हिन्दू-मुस्लिम एकता, स्त्रियों की शिक्षा, अछूतों का उद्धार, खादी-स्वदेशी प्रचार इत्यादि पर बल दिया। आपकी सबसे बड़ी विशेष महानता यह थी कि जिस बात के लिए वे दूसरों को उपदेश या निर्देश देते थे उसका अपने जीवन में पूर्णतया पालन करते थे। उनकी कथनी और करनी एक थी। सत्य और अहिंसा के बल पर प्रभूत साधन-सम्पन्न विदेशी सत्ता को जड़ से उखाड़ना कोई छोटी बात नहीं थी। अखिल भारतीय साहित्य सम्मेलन, गुजराती साहित्य सभाओं, मारवाड़ी अग्रवाल सभा, अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के आप सभापति रहे।

सन् 1924 में हिन्दू मुस्लिम साम्प्रदायिक दंगों के विरुद्ध, उनकी एकता के लिए आपने 21 दिन का आमरण-अनशन (उपवास) रखा और सफलता पाई।

भारत की आजादी की जंग पूरे जोर शोर पर थी। महात्मा गाँधी ने 26 जनवरी 1930 को भारत की आजादी की घोषणा करने के लिए ब्रिटिश शासन का ध्यान आकर्षित किया। सरकार की चुप्पी देखकर अहिंसावादी, राजनीतिक विरोध का मुद्दा बनाया "नमक आंदोलन" "दांडी यात्रा" नमक गर्म जलवायु वाले भारतीय लोगों के लिए अपने शरीर की क्रियाओं को सही ढंग से चलाने के लिए अत्यन्त आवश्यकता थी। ब्रिटिश सरकार ने "सॉल्ट टैक्स" (नमक पर कर) लगाकर मुफ्त में प्राप्त होने वाले नमक पर प्रतिबंध लगा रखा था। गाँधी जी ने गोरी सरकार के इस एकाधिकार के खिलाफ महत्त्वपूर्ण "सत्याग्रह" अभियान चलाया। इसे "सविनय अवज्ञा आन्दोलन" की संज्ञा दी गई। 12 मार्च 1930 को गाँधीजी 78 पुरुष सत्याग्रहियों के साथ साबरमती आश्रम से 240 किमी. समुद्र तट पर स्थित गांव "दांडी" के लिए पैदल रवाना हुए। यह यात्रा

23 दिन तक चली। यात्रा के दौरान हर शहर में भारी भीड़ को गाँधीजी ने भाषण दिया और जुलूस बढ़ता चला गया। अन्ततः 6 अप्रेल 1930 के दिन महात्मा गाँधीजी ने समुद्र जल से नमक बनाकर सरकारी कानून की धज्जियाँ उड़ा दीं। नमक पर टैक्स के खिलाफ जंग एक "राष्ट्रीय सप्ताह" के रूप में 13 अप्रेल तक चला। सत्याग्रहियों द्वारा निर्मित नमक भारत के समस्त समुद्री तटों पर बनाया व बेचा गया। 4 मई 1930 की रात गाँधीजी को गिरफ्तार कर लिया गया। इससे समूचे देश में क्रांति का दौर चल पड़ा। अंग्रेजी प्रशासन में हड़कंप मच गया। अब आजादी की लड़ाई ने और भी तेजी से जोर पकड़ लिया। जेल से छूटने के बाद भी गाँधीजी ने आजादी की लड़ाई जारी रखी।

गाँधीजी मार्च 1931 में "गाँधी-इरविन एक्ट" के अन्तर्गत कांग्रेस के प्रतिनिधि के रूप में "गोलमेज परिषद" के सम्मेलन में शामिल होने के लिए लंदन गये। वहाँ कोई सार्थक समझौता नहीं हो सका। यद्यपि सरकार ने राजबंदियों को मुक्त कर दिया, परन्तु ब्रिटिश वायसराय लार्ड विलिंगटन ने फौजी कानून लागू करके दमन चक्र चला दिया। इस पर गाँधीजी ने पुनः 3.1.1932 से "अवज्ञा आंदोलन" की घोषणा कर दी। उन्हें जेल में बंद कर दिया गया। जेल में गाँधीजी ने आमरण अनशन आरम्भ कर दिया।

इन्हीं दिनों हरिजन समुदाय से संबंधित सामाजिक भेदभाव को दूर करने के लिए तथा हिन्दू मुस्लिम एकता के लिए भी आपने प्रयास आरम्भ कर आमरण-अनशन आरम्भ कर दिया और 1934 में कांग्रेस पार्टी का नेतृत्व जवाहर लाल नेहरू को सौंपकर राजनीति से सन्यास की घोषणा कर दी। गाँधीजी की गिरफ्तारी और अनशन से भारत उद्वेलित हो उठा, आन्दोलन ने उग्र रूप ले लिया। नगर-नगर, ग्राम-ग्राम में गिरफ्तारियाँ होने लगीं। तीन माह में ही तीस हजार से अधिक लोग जेलों में बंद कर दिये गये। इस आन्दोलन में महिलाओं ने भी बढ़-चढ़ कर भाग लिया।

सन् 1939 में हिटलर ने द्वितीय विश्वयुद्ध आरम्भ कर दिया। ब्रिटिश सरकार ने भारतीय नेताओं से परामर्श किये बिना भारत को युद्ध

में सम्मिलित कर लिया। इस बात का विरोध किया गया। गाँधीजी को पुनः सक्रिय राजनीति में आना पड़ा और भारत की स्वतंत्रता संघर्ष की बागडोर सम्हालनी पड़ी।

सन् 1942 को अखिल भारतीय कांग्रेस समिति के मुंबई अधिवेशन में "भारत छोड़ो आन्दोलन" आरम्भ करने की योजना पारित की गई और गाँधीजी के नेतृत्व में यह आन्दोलन "करो या मरो" की भावना से अनुप्रेरित आरम्भ हो गया। देश-भक्तों ने बढ़ चढ़कर इस आन्दोलन में भाग लिया और असंख्य कुर्बानियां दी गईं। युद्ध के बाद ब्रिटेन के चुनावों में मजदूर-दल की जीत हुई। भारत को आजाद करने की प्रकिया चल पड़ी।

सन् 1944 में गाँधीजी की धर्मपत्नी स्वातंत्र आन्दोलन की महीषि कस्तूरबा गाँधी का दिल्ली के आगाखां महल में निधन हो गया।

सन् 1946 में मुस्लिम लीग द्वारा भारत की आजादी के साथ अलग राज्य की मांग उठाई जाने लगी। साम्प्रदायिक दंगे भी बढ़ते जा रहे थे। यही कुछ ऐसे कारण थे जिनसे गाँधीजी में जीने का उत्साह भी समाप्त हो चला था। गांधीजी ने इसका पुरजोर प्रतिरोध किया। लेकिन अंग्रेजों की दोहरी नीति व कूटनीति से पूर्ण चालों के कारण भारत को दो भागों में बांटकर **दि. 15 अगस्त सन् 1947 को स्वतंत्रता दी गई।** एक भाग का नाम "भारतवर्ष" और दूसरे भाग का नाम "पाकिस्तान" दिया गया। उससे तो गाँधीजी टूटकर रह गए। फिर भी वह अपने अंतिम समय तक भारत और पाकिस्तान को पुनः एक करने के प्रयास में लगे रहे। इसी कड़ी में ही गाँधीजी ने सरोजनी नायडू को पाकिस्तान बातचीत करने को भेजा। अभी वह वहीं थीं कि गांधी जी चलते बने और बात फिर खटाई में पड़ गई और भारत को 200 वर्षों की गुलामी से आजादी मिली, यह गाँधीवादी आदर्शों तथा अहिंसा की जीत का जीता जागता प्रमाण है। स्वतंत्रता के बाद हिन्दुस्तान-पाकिस्तान के आपसी विस्थापित होने की भयंकर समस्या सामने आई। भीषण मार-काट मची। उसे रोकने के लिए उन्होंने प्राणों की परवाह न करके "नोआखली" जैसे स्थान पर

जाकर दोनों ओर के व्यक्तियों को समझाया और शान्ति स्थापित कराई। इसके लिए 18 जनवरी 1948 को केन्द्रीय शांति कमेटी का गठन कराया और शांति शपथ दिलाई। तभी गाँधीजी ने विश्वास कर अपना अनशन समाप्त किया।

भारत को आजादी दिलाकर और जवाहरलाल नेहरू के हाथ में देश की बागडोर सौंप कर गाँधीजी आगे के कार्यक्रमों पर विचार कर ही रहे थे कि 30 जनवरी 1948 को संध्या समय जब वे दिल्ली के बिड़ला मंदिर में प्रार्थना सभा में भाग लेने जा रहे थे तो एक सिरफिरे मराठा युवक नाथूराम गौड़से ने उन्हें गोली से मार दिया। वे वहीं "हे राम" कहते हुए गिर पड़े। देश में हाहाकार मच गया। विश्व के कोने-कोने में दुःख और शोक व्याप्त हो गया। गाँधीजी अपना नश्वर शरीर तो छोड़ गए किन्तु उनका यश युग-युगान्तर के लिए अमर हो गया। शान्ति, सत्य और अहिंसा का सूर्य सदा के लिए अस्त हो गया। दिल्ली के राजघाट पर आज भी उनकी ज्योति उनकी याद संजोये हुए प्रज्वलित है। सारे विश्व ने मानवता के इस महान् पुजारी को अपनी अश्रुपूरित श्रृद्धांजलि अर्पित की थी।

महात्मा गाँधी भारत के सच्चे सपूत थे। भारत के प्रत्येक व्यक्ति को वे अपनी संतान से अधिक चाहते थे। उनकी सेवाओं और भावनाओं के कारण ही वे "बापू" कहलाए। बापू के व्यस्त जीवन में कई ऐसे अवसर भी आए, जब वे बच्चों के साथ बच्चे बनकर जीये और उस अवसर विशेष को यादगार बनाया। गंभीर और चिंतन प्रवृत्ति के बापू ने हमेशा बच्चों की जिज्ञासाओं को भी शान्त किया। राष्ट्रपिता ने बच्चों में सदैव स्फूर्ति, प्रेरणा और उत्साह का संचार किया। वे खेल-खेल में बच्चों को गंभीर विषय भी सरल तरीके से समझाते थे। यही कारण था कि गाँधीजी बच्चों के बहुत करीब थे। और बच्चे भी उन्हें पूरा आदर और सम्मान देते थे। यही नहीं बापू बड़ों के प्रति भी बड़े विनोद प्रिय थे। अपने हास्य-व्यंग्य द्वारा सटीक उत्तर देते और समाधान करते। गाँधीजी के अनेक प्रसंग मिलते हैं, जो अपने आप में प्रेरणादायक हैं तथा आज की स्थिति में

नैतिकता के लिए प्रासंगिक भी हैं। संस्मरणीय भी हैं। भारतीय जनता उन्हें राष्ट्रपिता के रूप में स्मरण करती है। राजनीतिक नेता के रूप में, समाज सुधारक व धर्मप्रचारक के रूप में तथा संत के रूप में गाँधीजी का उच्च कोटि का व्यक्तित्व बहुत ही आदर्शपूर्ण था। आप सत्य-अहिंसा-प्रेम के व्यावहारिक व्याख्याता, उच्च कोटि के विचारक, समाज उद्धारक, धार्मिक समन्वय के पोषक एवं अनेक विषयों के लेखक थे। उन्होंने अंग्रेजी शिक्षा के स्थान पर "बुनियादी शिक्षा" को एक नयी और क्रांतिकारी शिक्षा-पद्धति के रूप में प्रतिष्ठित किया। यह शब्द और कर्म को जोड़ने वाली शिक्षा थी। आपने यंग इण्डिया, हरिजन, नवजीवन, हरिजन बन्धु आदि कई हिन्दी, अंग्रेजी और गुजराती पत्रों का सम्पादन किया। "आत्मकथा", "दक्षिण अफ्रीका का सत्याग्रह" तथा "हिन्दू स्वराज्य" आपकी प्रसिद्ध कृतियाँ हैं। भारतवर्ष सदैव इनका ऋणी रहेगा। आपकी स्मृति को बनाये रखने के लिए भारत सरकार द्वारा 15 अगस्त 1948 को डेढ़ आना, बाद में समय-समय पर साढे तीन आना, 12 आना तथा 10 रुपया, 20 पैसे, 75 पैसे, 35 पैसे, 50 पैसे, 5 रुपया, 60 पैसे तथा 1 रुपया का डाक टिकट जारी किये, जो आज भी निरन्तर छप रहे हैं। भारत की करैन्सी में भी बापू का चित्र अंकित किया जाता है।

युग-परिवर्तन/युग संस्थापक/युग संचालक/हे युगाधार।
युग-निर्माता/युग मूर्ति/तुम्हें युग-युग तक युग-युग का नमस्कार॥

महात्मा गाँधी की पुण्य तिथि प्रतिवर्ष सम्पूर्ण देश में शहीद दिवस के रूप में मनाई जाती है। इस अवसर पर सर्वधर्म प्रार्थना सभाएं आयोजित की जाती हैं। गरीब और पीड़ितों की सहायता के लिए अनेक कार्यक्रम किये जाते हैं। राष्ट्रपिता के सम्मान में देशभर में पूर्वान्ह 11 बजे दो मिनट का मौन रखा जाता है और दिनभर रामधुन और महात्मा गाँधी के प्रिय भजन गाये व बजाये जाते हैं। दिल्ली में यह दिवस कुष्ठ निवारण दिवस के रूप में भी मनाया जाता है।

बापू को हमारा शत-शत-नमन्।

—*—

राष्ट्र के लिए समर्पित
"राष्ट्ररत्न"– श्री शिवप्रसाद गुप्त

अग्रवाल समाज ने राष्ट्र को अनेक महान् विभूतियाँ दी हैं उनमें राष्ट्ररत्न श्रीशिवप्रसाद गुप्त भी देश के अग्रणी समाज सेवियों तथा स्वाधीनता सेनानियों में युग के महान् दानवीरों में से एक थे। जिन्होंने अपना सर्वस्व ही राष्ट्र तथा भारत माता के चरणों में समर्पित कर दिया था। स्वाधीनता आन्दोलन में उनका निवास स्थान राष्ट्रप्रेमी सेनानियों एवं नेताओं के लिए सेवा-कानन ही बन गया था। इनका राष्ट्रप्रेम अलौकिक था।

"राष्ट्ररत्न" बाबू शिवप्रसाद जी का जन्म काशी के अजमेतगढ़ में एक सम्पन्न अग्रवाल परिवार में दि. 28-6-1883 को हुआ। आठ वर्ष की आयु में ही उनके पिताजी का देहान्त हो गया। प्रारम्भिक शिक्षा उर्दू, फारसी में मौलवी यादअली से प्राप्त की। अपने मुनीम सेठ वैष्णवदास से महाजनी अक्षर और हिसाब किताब सीखा। उन्होंने प्रथम हिन्दी पुस्तक "वीरेन्द्रवीर" पढ़ी। इसके पश्चात् देवकीनन्दन खत्री द्वारा रचित कई पुस्तकें पढ़ी। स्थानीय स्कूल से उन्होंने इंटर की परीक्षा पास की। आपका राष्ट्रभाषा के प्रति अनुराग बढ़ने लगा। आपने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से स्नातक की उपाधि प्राप्त की, जहाँ आचार्य नरेन्द्र देव, पंडित गोविन्द बल्लभ पंत जैसे विचारक और राष्ट्रीय नेता उनके सहपाठी रहे थे। इनका परिवार प्राचीन नगरी काशी में व्यापार करता था। वे बचपन से ही

लोकमान्य तिलक के ओजस्वी लेखों से प्रभावित रहे तथा उन्हीं की प्रेरणा पर सन् 1904 में केवल 21 वर्ष की अल्पायु में बम्बई में हुए कांग्रेस अधिवेशन में शामिल हुए। आप काशी अग्रवाल समाज के सदस्य बने तथा काशी अग्रवाल स्पोर्टस क्लब और सामाजिक कार्यों में सक्रिय योगदान करने लगे। राजनीतिक और सामाजिक कार्यकर्ताओं से सम्पर्क होने लगा। सन् 1905 में काशी में कांग्रेस-अधिवेशन हुआ तो शिवप्रसाद जी उसे सफल बनाने में जी-जान से जुटे रहे। इसी दौरान वे लाला लाजपतराय, लोकमान्य तिलक तथा महात्मा गांधी के निकट सम्पर्क में आये। 'लाल-बाल-पाल' के राजनीतिक मत का उन पर गहरा प्रभाव पड़ा।

काशी के श्री शिवप्रसाद जी गुप्त ने सन् 1914 में विश्व-भ्रमण कर भारत की स्वाधीनता के औचित्य का प्रचार किया। पंजाब केसरी लाला लाजपतराय उन दिनों इंग्लैण्ड में थे। ब्रिटेन, अमेरिका तथा जापान आदि देशों में पहुँचकर उन्होंने भारत की स्वाधीनता की माँग उठाई। लन्दन पहुँचने पर महात्मा गाँधी से उनकी पहली भेंट हुई थी। चीन के बाद वे हांगकांग पहुंचे तो वहाँ अंग्रेज शासन के संकेत पर "क्रांतिकारी" करार देकर गिरफ्तार कर लिया और जेल में डाल दिया। उन्हें तीन महीने तक सिंगापुर की जेल में अमानवीय यातनाएं दी गईं। श्री शिवप्रसाद जी गुप्त की राष्ट्रीय भावनाओं से महामना पंडित मदनमोहन मालवीय बहुत प्रभावित थे। उन्हीं के प्रयास से उन्हें सिंगापुर जेल से मुक्ति मिली थी। शिवप्रसाद जी की गणना कुछ ही समय में देश के अग्रणी कांग्रेसी नेताओं में होने लगी थी। वे कांग्रेस के राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष रहे।

मालवीय जी ने जब अंग्रेजों द्वारा लादी गई अंग्रेजी शिक्षा प्रणाली की जगह भारतीयता पर आधारित शिक्षा प्रणाली अपनाने पर जोर दिया तब शिवप्रसाद जी ने राष्ट्र-भाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार का संकल्प लिया। और सन् 1917 में काशी में "ज्ञान मंडल प्रकाशन" की स्थापना की तथा 5 सितम्बर 1920 को हिन्दी दैनिक 'आज' का प्रकाशन शुरू कर

दिया और इसके माध्यम से राष्ट्रीय आन्दोलन का संदेश फैलाया। "आज" की स्थापना के लिए शिवप्रसाद जी ने सारा धन अपने पास से लगाया और उसके संपादकीय विभाग पर अपना कोई अंकुश नहीं रखा। श्री शिवप्रसाद जी समाज के असहाय तथा पिछड़े वर्ग के लोगों की सहायता के लिए सदैव तत्पर रहा करते थे। उन्होंने समय-समय पर सैकड़ों छात्रों, साहित्य-सेवियों तथा कांग्रेस कार्यकर्ताओं को आर्थिक सहायता की। क्रांतिकारियों को भी लम्बे समय तक गुप्त रूप से आर्थिक सहायता देते रहे। राजा मोतीचन्द्र श्री गुप्त जी के रिस्तेदार थे जिनका क्रांतिकारियों से निकट का संबंध था।

महात्मा गांधीजी ने जब सन् 1920 में असहयोग आन्दोलन चलाया तो अनेक राष्ट्र भक्त, स्वतंत्रता संग्राम सेनानी छात्रों ने अंग्रेज सरकार की सहायता से चलने वाले स्कूलों का बहिष्कार कर दिया था। उस समय ऐसे सेनानियों की शिक्षा की गंभीर समस्या उठी। राष्ट्रभक्ति से ओत-प्रोत शिक्षा देने के उद्देश्य से महात्मा गांधी ने शिव प्रसाद जी गुप्त को ऐसा विद्यालय खोलने का सुझाव दिया, जो बिना किसी सरकारी सहायता से चले। और गांधी जी की प्रेरणा से गुप्तजी ने काशी में "काशी-विद्यापीठ" की स्थापना की, जिसके विधान में सरकार से डिग्री की मान्यता के लिए अनुरोध करने पर एवं सरकारी सहायता लेने पर प्रतिबंध था। स्वयं महात्मा गांधी ने काशी विद्यापीठ की नींव रखी। इसके निर्माण में बाबू शिवप्रसाद गुप्त ने अपने भाई हरप्रसाद की स्मृति में "हरप्रसाद शिक्षा निधि" की स्थापना में 10 लाख रुपये का दान दिया। सन् 1920 में उनके छोटे भाई का प्लेग के कारण देहान्त हो गया। किसी ने जब गुप्तजी से कहा कि आपने बहुत बड़ा दान दिया है तो बड़ी सहजता से उन्होंने उत्तर दिया– मैंने कुछ नहीं दिया है, यह तो मेरे भाई के हिस्से का धन है, यदि वे जीवित रहते तो वे अपने हिस्से के हकदार होते। मैंने तो केवल अपने भाई का अधिकार मात्र ही दिया है। इस प्रकार के महान् विचार और निःस्वार्थ के धनी थे– बाबू शिवप्रसाद जी।

सन् 1921 में काशी विद्यापीठ का गांधीजी ने उद्घाटन किया। आचार्य नरेन्द्र देव, लाल बहादुर शास्त्री, कमलापति त्रिपाठी, डॉ. बालकृष्ण केसकर तथा अन्य अनेक राष्ट्रनेता "काशी विद्यापीठ" की देन हैं।

सन् 1930 तथा 1932 के आन्दोलनों में उन्होंने सक्रिय भाग लेकर जेल यातनाएँ सहन की थीं। काशी में 25 जून 1930 को जब 'नमक कानून भंग' करने के आरोप में उन्हें गिरफ्तार किया गया तो हजारों की भीड़ उन्हें जेल तक छोड़ने पहुँची थी। पूर्वी उत्तर प्रदेश और वाराणसी राष्ट्रीय आन्दोलन के सफल नेता होने के कारण जनता ने आपको सम्मानपूर्वक "राष्ट्ररत्न" कहना शुरू कर दिया।

गुप्तजी बहुमुखी प्रतिभा के महापुरुष थे। वे तत्कालीन अँग्रेजी शिक्षा नीति के विरुद्ध थे। उन्होंने "पृथ्वी परिक्रमा" नामक ग्रन्थ की रचना हिन्दी में ही की। मोटरकार की नम्बर प्लेट भी हिन्दी में लिखवाई, चाहे वे इसके लिए जुर्माना देते-रहे। हिन्दी से अनभिज्ञ विदेशियों के अतिरिक्त सबसे वे केवल हिन्दी में ही बोलते थे। भारतीय संस्कृति के उपासक थे। इंग्लैण्ड प्रवास में वे भारतीय पोशाक में ही रहे।

शिवप्रसाद जी यद्यपि कांग्रेस के नेता थे तथा उनका अहिंसा में पूर्ण विश्वास था किन्तु वे देश के क्रांतिकारियों के प्रति भी पूर्ण सहानुभूति रखते थे। वीर सावरकर, सरदार भगतसिंह, भाई परमानंद जी तथा अन्य क्रांतिकारियों के प्रति उनके हृदय में अपार श्रद्धा थी। उन्होंने 'आज' में लिखा था–

"जहाँ देश की स्वाधीनता में महात्मा गांधी, जवाहर लाल नेहरू तथा अन्य विभूतियों का योगदान माना जायेगा वहीं जान हथेली पर रखकर भारत माँ को स्वाधीन कराने वाले क्रांतिकारियों के बलिदान को कम करके आंका जाना न्याय संगत कदापि नहीं होगा। हमारी भावी पीढ़ी इनके जीवन से कहीं अधिक प्रेरित होगी।"

शिवप्रसाद जी कहा करते थे– "भारत केवल साधारण जमीन के

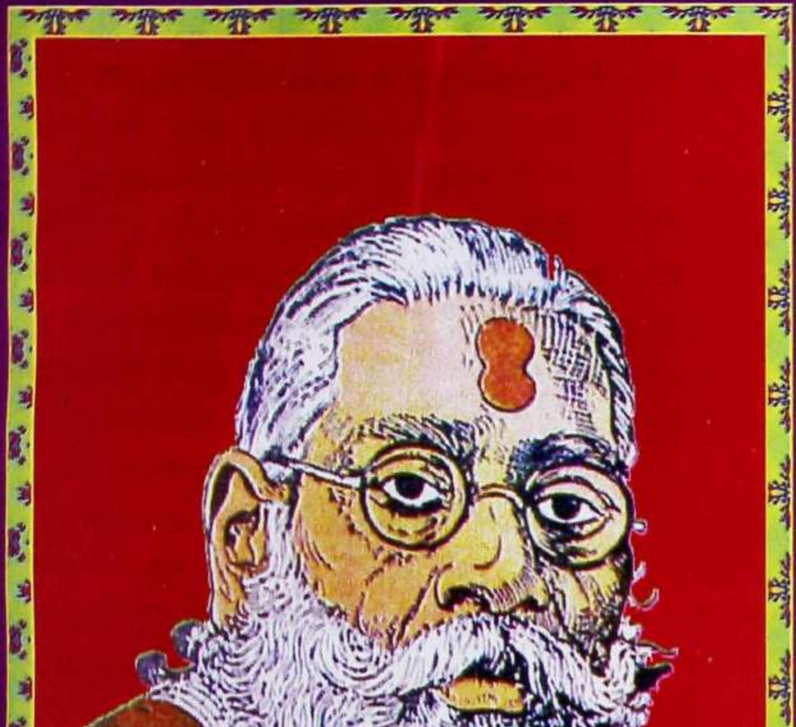

''राष्ट्ररत्न''– श्री शिवप्रसाद गुप्त

टुकड़े का नाम नहीं है। भारत हमारी पावन मातृभूमि है– पुण्यभूमि है। इसका कण-कण हमारे लिए अतिपावन है। भारतीय मनीषियों ने इसे 'माता' की संज्ञा दी है। संसार में केवल भारतीय ही अपने देश को 'भारत-माता' कहकर उसे अद्वितीय सम्मान प्रदान करते हैं।'

उन्होंने अपनी इसी भावना को मूर्तरूप देने के उद्देश्य से काशी में 'भारत माता मंदिर' की स्थापना कराई थी। उनके द्वारा स्थापित "भारत माता मंदिर' अपने ढंक का अनोखा राष्ट्र मंदिर है। इसके दर्शनों के लिए देश-परदेश के भारतीय काशी में आते हैं। इस मंदिर के बनाने में जिन-जिन राजगीरों ने काम किया था, उन सभी का नाम उस पर खुदवाया गया, पर बाबू शिवप्रसाद जी का नाम कहीं नहीं खुदा है। लोकेषणा से आप कोसों दूर थे। ऐसा था आपका व्यक्तित्व।

शिवप्रसाद जी को इस बात का गर्व था कि उनका जन्म अग्रवाल परिवार में हुआ। सन् 1903 से ही वे काशी अग्रवाल समाज के सदस्य रहे। उन्होंने "काशी सेवा समिति" की स्थापना कर अग्रवाल समाज के माध्यम से सेवा का आदर्श उपस्थित किया था।

शिवप्रसाद जी के यशस्वी पुत्र सत्येन्द्र कुमार गुप्त भी वर्षों तक दैनिक 'आज' के सम्पादक रहे। वे भी दृढ़ राष्ट्रवादी विचारों के महापुरुष थे। वर्तमान समय में उनके दौहित्र शार्दूल विक्रम "दैनिक-आज" का कुशल सम्पादन कर रहे हैं।

वाराणसी में उनका निवास 'सेवा उपवन' स्वाधीनता सेनानियों और क्रांतिकारियों का आश्रम बना हुआ था। महात्मा गांधी के असहयोग के प्रस्ताव पर सर्वप्रथम विचार विमर्श 'सेवा उपवन' में आयोजित कांग्रेस कार्यकारी समिति की बैठक में ही किया गया था। आपका दरवाजा सदैव स्वतंत्रता संग्राम में लगे भारत माता के सपूतों के लिए खुला रहता था। भारतीय कांग्रेस के प्रायः सभी बड़े-बड़े नेता जब कभी काशी आते थे तो आपके ही मेहमान होते थे। आप गांधीवादी थे पर क्रांतिकारियों की मदद भी किया करते थे। आपने लाखों रुपया दान दिया, दोनों हाथों से

धन लुटाया, पर कभी नाम की इच्छा नहीं की। कभी किसी पर एहसान नहीं थोपा। आदरणीय आचार्य नरेन्द्र देव जी ने अपने संस्मरण में लिखा था– "मैंने एक ऐसा दानी देखा, जो दान के बदले नाम न चाहता था।"

आजादी की लड़ाई के जमाने में शिवप्रसाद जी गुप्त के नेतृत्व में "रणभेरी" छपती थी व बंटती थी। अंग्रेज पता लगाते लगाते थक गये मगर पता नहीं लगा पाये। गोपालदास शाह लेन में उनका एक मकान था, जो आज भी है। उसमें अंग्रेजों ने बड़ी तलाशी ली मगर "रणभेरी" का एक टुकड़ा नहीं मिला। मगर जब वे वापस जाने लगे तो छत पर से शिवप्रसाद जी ने उन लोगों के ऊपर एक बोरा "रणभेरी" पत्रों की फेंककर अपनी गिरफ्तारी दी। वे ऐसे निर्भीक व महान् थे। इनके सहयोगी श्रीप्रकाश जी, बाबू ठाकुरदास एडवोकेट, लक्ष्मीचन्द्र चौधरी आदि अनेकों बार जेल गये व अंग्रेजों की लाठियाँ खायीं। श्री अग्रवाल समाज को चाहिए कि इन महापुरूषों के इतिहास को प्रकाशित करावें ताकि हमारे युवकों को मार्ग दर्शन मिल सके एवं देश की आर्थिक लड़ाई में वे भी आगे बढ़ चढ़कर अपना हिस्सा लें। अग्रवाल समाज ही एक ऐसा समाज है जो बिना जाति-पाति के, भेद-भाव के उद्योग व्यापार में ही नहीं, प्रशासनिक, पुलिस, सेना, इंजीनियरिंग, डॉक्टरी तथा अन्य सभी क्षेत्रों में सेवा का आदर्श उपस्थित कर रहा है।

भारत की स्वतंत्रता, राष्ट्रभाषा हिन्दी की प्रतिष्ठा और भारतीय गौरव की अभिवृद्धि ये आपके तीन महान लक्ष्य थे।

24 अप्रैल 1944 को मानव मात्र से प्रेम करने वाले स्वाधीनता सेनानी और शिक्षा विद् श्री शिवप्रसाद गुप्त का देहावसान हो गया। आपकी स्मृति में 28.6.88 को 105 वीं जयन्ती के अवसर पर भारत सरकार ने 60 पैसे का डाक टिकट का प्रकाशन किया। इसका विमोचन भारत के पूर्व प्रधानमंत्री श्री राजीव गांधी के कर कमलों से हुआ। निःसन्देह आप राष्ट्ररत्न थे। जब तक सूरज चांद रहेगा, बाबूजी का नाम रहेगा।

—*—

अग्रगौरव राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त

भारत की स्वतंत्रता के आन्दोलन में अनेक राष्ट्रभक्त क्रांतिकारियों, मनीषियों तथा भामाशाहों का अविस्मरणीय योगदान रहा है। साहित्य जगत में भी ऐसे अनेक मनीषी और महापुरुष हुए हैं, जिन्होंने भारत की आर्य संस्कृति की पुनर्स्थापना और राष्ट्रीय चेतना के लिए सतत् प्रयास कर स्वाधीनता आन्दोलन को गति प्रदान कर सफल बनाया है। ऐसे महानुभावों में महान् राष्ट्रकवि श्री मैथिलीशरण गुप्त का नाम अग्रणी रूप से स्मरणीय है।

राष्ट्रकवि श्री मैथिलीशरण गुप्त जी का जन्म एक सम्पन्न महावर गहौई (कनकने) वैश्य कुल में जिला झांसी के चिरगांव में दिनांक 3 अगस्त 1886 को हुआ। इनके पिता सेठ श्री रामशरण जी गुप्त परम वैष्णव और कवि हृदय थे। इनकी माता काशी देवी बड़े दयालु संत स्वभाव की थी। इनके छोटे भाई सियाराम शरण गुप्त भी हिन्दी साहित्यकार और उच्च कोटि के कवि हुए। जो राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रबल समर्थक थे, जिन्होंने अनेक कृतियाँ लिखीं जो एक काव्य के रूप में प्रसिद्ध हुई हैं।

गुप्तजी को रामभक्ति तथा कवित्व शक्ति दोनों ही उन्हें पैतृक सम्पत्ति के रूप में प्राप्त हुई थी। पारिवारिक परिस्थितियों के कारण आपकी प्रारंभिक शिक्षा गांव में ही हुई। अंग्रेजी के अध्ययन के लिए आपने मेकडानल स्कूल, झांसी में प्रवेश लिया, परन्तु वहाँ उनका मन न लगा और घर लौट आए। वहीं पर आपने संस्कृत, हिन्दी और बंगला साहित्य का अध्ययन किया। गुप्तजी सरल, सादगी-प्रिय, निरभिमानी व्यक्ति थे।

वैष्णव धर्म के अनुयायी होते हुए भी आप सब धर्मों के प्रति उदार और सहिष्णु थे। आगरा विश्वविद्यालय से आपने साहित्य में "डी. लिट." की मानद उपाधि प्राप्त की थी।

गुप्त जी का प्रथम विवाह सन् 1893 (8 वर्ष की आयु) में हुआ, परन्तु 1903 में ही पत्नी की मृत्यु हो गई। इसी वर्ष इनके पिता का भी देहान्त हो गया। 1904 में गुप्त जी का दूसरा विवाह हुआ। ईश्वर की विडम्बना ही थी कि इसी वर्ष इनकी माता स्वर्ग सिधार गई। इसी दौरान गुप्तजी का सम्पर्क महावीर प्रसाद जी द्विवेदी से हुआ और उनसे इन्हें कविता लिखने के लिए प्रोत्साहन मिला। आपकी कविताओं का प्रथम प्रकाशन 1905 में "सरस्वती" में हुआ। राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी से प्रभावित, उनसे प्रेरणा लेकर आप राष्ट्रीय स्वाधीनता आन्दोलन से सम्बन्धित साहित्य की रचना में योगदान करने लगे। आपने 1912 में "भारत भारती" जैसे राष्ट्रीय भावनाओं से ओत-प्रोत राष्ट्रीय काव्य का प्रकाशन कराया जिसने देशवासियों के मन में अदम्य उत्साह भर दिया। इसमें भारत के अतीत गौरव का गुणगान है। लेकिन ब्रिटिश राज्य को इसका प्रकाशन राष्ट्रद्रोही लगा और इसे जब्त कर लिया। गुप्तजी इससे हतोत्साहित नहीं हुए बल्कि उनकी लेखनी अविश्राम चलती रही। इनकी रचनाओं में प्रबन्ध, मुक्तक एवं गीतों से परिपूर्ण आदर्शवादी भावना पल्लवित हुई। आपने राष्ट्र भावना प्रतीक "ध्वज-वन्दना" लिखी है "यह पुण्य पताका फहरे"। इसके भाव हैं:– "त्याग हमारा धर्म, किन्तु हम हरण कभी न सहेंगे, किसी आततायी का तुष्टीकरण कभी न सहेंगे" इत्यादि।

गुप्तजी के "मंगल-घट" काव्य में राष्ट्रीयता से ओत-प्रोत भारत-भूमि की वन्दना कर, महिमा का गान किया है:–

> **"नीलाम्बर परिधान हरित पट पर सुन्दर है,**
> **सूर्य-चन्द्र युग-मुकुट, मेखला रत्नाकार है।**
> **नदियां प्रेम-प्रवाह, फूल तारे मंडल हैं,**
> **बंदीजन, खगवृन्द, शेष फन सिंहासन हैं॥"**

गुप्त जी ने अपना पूरा जीवन साहित्य-सेवा में लगाया। आपकी प्रमुख रचनाएं भारत-भारती, जयद्रथ वध, शकुन्तला, पंचवटी, साकेत, त्रिपथगा, द्वापर, यशोधरा, कुणाल, सिद्धराज, गुरुकुल, विष्णुप्रिया, काबा और कर्बला, स्वदेश-गीत, किसान, रंग में भेद, विकट-भट, नहुष झंकार, मंगल-घट आदि हैं। आपने तिलोत्तमा, चन्द्रहास और अनघ इत्यादि नाटक भी लिखे हैं। मेघनाथ-वध, स्वप्नवासवदत्ता' और उमरखय्याम् पुस्तकों का आपने अनुवाद भी किया।

"यशोधरा" की स्वाभिमान-पूर्ण विरह व्यंजना मर्म-स्पर्शी है। गुप्तजी के काव्य में नारी को महत्त्वपूर्ण एवं सम्मानित स्थान मिला है। "यशोधरा", "उर्मिला" आदि काव्य में नारियों को गुप्त जी ने अमर बना दिया है। "साकेत" गुप्त जी का अमर काव्य है, जिसमें चिर उपेक्षिता उर्मिला के स्वरूप की गौरवमय स्थापना हुई है। रामायण-कार की चिर-लांछित कैकेयी "साकेत" में पश्चाताप की अग्नि में जलकर पवित्रात्मा बन गई है। कैकेयी में आत्मसम्मान है और उसे अपने वात्सल्य पर गर्व है। "साकेत" के प्रथम सर्ग में उर्मिला के अनुराग तथा नवम् सर्ग में उसकी विरह वेदना की व्यंजना अत्यन्त ही मर्म-स्पर्शी है।

गुप्तजी ने "साकेत" महाकाव्य में "उर्मिला के रूप वैभव" का वर्णन किया है, कुछ अंश उद्धरित हैं:-

"अरुण-पट पहने हुए आल्हाद में,
कौन यह बाला खड़ी प्रासाद में?
प्रकट-मूर्तिमती उषा ही तो नहीं?
कान्ति की किरणें उजाला कर रहीं।।

लोल-कुण्डल, मण्डलाकृति गोल है,
धन-पटल से केश, कान्त कपोल है।
देखती है जब जिधर यह सुन्दरी,
दमकती है दामिनी-सी द्युति-भरी।।

स्वर्ग का यह सुमन धरती पर खिला,
नाम है इसका उचित ही "उर्मिला"
शील सौरभ की तरंगें आ रही,
दिव्य-भाव भावाब्धि में है ला रही॥"

इसी प्रकार गुप्त जी ने महाकाव्य 'यशोधरा' में राजकुमार सिद्धार्थ (भगवान गौतम बुद्ध) के गूढ़ जीवन दर्शन संबंधी विचारों का बोध कितना सटीक वर्णन किया है :–

"देखी मैंने आज जरा"
हो जायेगी क्या? ऐसी ही मेरी यशोधरा,
हाय! मिलेगा मिट्टी में, वह वर्ण सुवर्ण खरा?
सूख जायेगा मेरा उपवन, जो है आज हरा?
सौ-सौ रोग खड़े हों, सम्मुख पशुज्यों बांध मरा,
धिक, जो मेरे रहते, मेरा चेतन जाय चरा।
रिक्त मात्र है क्या सब भीतर, बाहर हरा-भरा?
कुछ न किया, यह सूना भव भी यदि मैंने न तरा।

गुप्त जी ने अपने आराध्य भगवान श्रीराम के "वन-गमन" के समय "वन में राम" का कथन वर्णन किया है– श्रीराम ने वन में आने का अपना अभिप्राय यानी प्रयोजन माता सीता को स्पष्ट किया और कहा :–

"मैं आर्यों का आदर्श बताने आया,
जन-सम्मुख धन को तुच्छ जताने आया।
सुख-शान्ति हेतु मैं, क्रान्ति मचाने आया,
विश्वासी का विश्व बचाने आया॥

मैं आया, जिसमें बनी रहै मर्यादा,
बच जाय प्रलय से, मिटै न जीवन सादा।
संदेश यहाँ मैं, नहीं स्वर्ग का लाया,
इस भूतल को ही, स्वर्ग बनाने आया।

जो मेरा गुण, कर्म, स्वभाव धरेंगे,
वे औरों को भी तार, पार उतरेंगे।।''

महाकवि गुप्त जी ने ''मनुष्यता'' पर अपने भाव बताते हुए लिखा है कि उदारता, परोपकार और सहानुभूति की भावना ही मनुष्यता का श्रेष्ठ गुण है। जो अपने स्वार्थ को त्यागकर दूसरों के लिए काम आता है वही अमर हो जाता है। ऐसे लोग मर कर भी नहीं मरते। कवि ने स्पष्ट कहा है कि ''मनुष्य-मनुष्य में भेद-भाव नहीं होना चाहिए। धन के मद में अन्धा होना पाप है। ईश्वर सबका रक्षक है, विपदा में धैर्य नहीं खोना चाहिए''। कहा है :-

''विचार लो कि मर्त्य हो, न मृत्यु से डरो कभी,
मरो परन्तु यों मरो कि याद तो करें सभी।
अखण्ड आत्म-भाव से जो, असीम विश्व में भरे,
वही मनुष्य है कि जो, मनुष्य के लिए मरे।
अहा! वही उदार है, परोपकार जो करे,
अनर्थ है कि बन्धु ही न बन्धु की व्यथा हरे।''
वही मुनष्य है कि जो.............

गुप्त जी ने महाकाव्य ''जयद्रथ-वध'' को सात सर्गों में विभाजित कर ऐतिहासिक घटनाओं का सरस वर्णन किया है, जिसमें जयद्रथ की वीरता, अभिमन्यु की अमरता, अर्जुन की श्रेष्ठता और युद्ध की विभीषिका (हानियों) का बृहत चित्रण प्रस्तुत किया है। मुख्य तौर पर ''असत्य पर सत्य'' की विजय पर श्रीकृष्ण के कथोपकथन का मार्मिक वर्णन है। कुछ अंश दृष्टव्य है :-

''दु:ख शोक जब जो आ पड़े, सौ धैर्य-पूर्वक सब सहो
होगी सफलता क्यों नहीं, कर्तव्य पथ पर दृढ़ रहो।।
अधिकार खोकर बैठे रहना, यह महा दुष्कर्म है।
न्यायार्थ अपने बन्धु को भी दण्ड देना धर्म है।।

पड़ता समय है वीर पर ही, भीरु-कायर पर नहीं।
दृढ़-भाव अपना विपद में भी, भूलते बुधवर नहीं॥

निज जन विरह के शोक का, दुःख दाह कौन न जानता।
पर मृत्यु का होना न जग में, कौन निश्चित मानता॥

रण में मरण क्षत्रिय जनों को, स्वर्ग देता है सदा।
है कौन ऐसा विश्व में, जीता रहे जो सर्वदा॥

अच्छा-बुरा बस नाम ही रहता सदा इस लोक में।
वह धन्य है जिसके लिए हों लीन सज्जन शोक में॥

गुप्त जी की भाषा शुद्ध साहित्यिक खड़ी-बोली है जिसने यह सिद्ध कर दिया है कि उसमें भी बृज-भाषा जैसा माधुर्य आ सकता है। खड़ी-बोली का शुद्ध एवं परिष्कृत रूप आपकी रचनाओं में दृष्टिगोचर होता है। भाषा सरल एवं व्याकरण सम्मत है। संस्कृत शब्दों का प्रयोग तो आपके काव्य में है लेकिन विदेशी शब्दों का प्रयोग कम ही है। शैली प्रवाहमयी व आधुनिक काल की विविधताओं से परिपूर्ण है। गुप्तजी के काव्यों में भारतीय संस्कृति के महान् आदर्शों और राष्ट्रीय भावनाओं की गम्भीर, गौरवमयी व्यंजना हुई है। बदली परिस्थितियों के साथ-साथ आपने अपने काव्य का स्वर भी बदला है। इसलिए गुप्तजी को आधुनिक-युग का प्रतिनिधि राष्ट्र कवि कहलाने का गौरव प्राप्त हुआ है। आपने अपने साहित्य सृजन के 60 वर्षों में लगभग 50 ग्रन्थों की रचना की। वे एक महान् देशभक्त थे। इन्होंने भारत के स्वातंत्र्य संग्राम में बड़ी निष्ठा और विश्वास से काम कर अपने अग्रवाल वैश्य-कुल के गुणों को साकार कर दिखाया है।

1936 में आपके उर्मिलाचरण नामक पुत्र का जन्म सात सन्तानों की मृत्यु के बाद हुआ। इसी वर्ष आपने "मैथिलीमान ग्रंथ" गाँधीजी को काशी में भेंट किया था। वर्ष 1940 से 1941 तक आप झाँसी और आगरा जेल में बंद रहे थे। गाँधीजी के स्वाधीनता सत्याग्रह और "भारत छोड़ो आन्दोलन" में बराबर भाग लेते रहे।

अग्रगौरव राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारत के महामहिम राष्ट्रपति ने इन्हें भारतीय-संसद (राज्य सभा) के सदस्य के रूप में मनोनीत कर राष्ट्र-सेवा का पुरष्कार दिया और 1954 में इन्हें "पदम्-भूषण" की उपाधि से अलंकृत किया गया। 1962 में इलाहाबाद में सरस्वती के स्वर्ण-महोत्सव के आप अध्यक्ष बने।

आपका स्वर्गवास दिनांक 12 दिसम्बर 1964 को 78 वर्ष की आयु में हुआ। आपकी पुण्य स्मृति सम्मान में दिनांक 3.8.1974 को भारत सरकार ने 25 पैसे का डाक-टिकट जारी किया। आपने वैश्य-अग्रवाल कुल में जन्म लेकर अपने आदर्शों व योग्यता से अग्रवाल-जाति का गौरव-मय इतिहास बनाया है। आप सदैव स्मरणीय रहेंगे। साहित्य-जगत व भारतीय समाज आपका हृदय से ऋणी है।

आपको शत्-शत् प्रणाम्। जय भारत! जय अग्रसेन!

—*—

अंतःकरण की ज्योति

मनुष्य के अन्तःकरण को ही उसका सब से विश्वसनीय मार्गदर्शक व पथ-प्रदर्शक माना गया है। राजा जनक ने अपनी सभा में विद्वानों से प्रश्न किया कि कौनसी ज्योति है जो मनुष्य को प्रेरणा देती है और भटकाव से बचाती है? याज्ञवल्क्य ने बताया कि सूर्य की ज्योति। अगला प्रश्न उठा कि सूर्य अस्त हो जाए तो? याज्ञवल्क्य बोले कि चंद्रमा की ज्योति। फिर सवाल उठा कि यदि ये दोनों अस्त हों तो? तो अग्नि के आश्रय से और यदि अग्नि भी जलकर शांत हो जाय तो...? जनक की जिज्ञासा थी। तब याज्ञवल्क्य ने उत्तर दिया कि वाक् द्वारा अर्थात् एक-दूसरे को आवाज लगाकर। फिर प्रश्न उठा यदि कोई मायावी शक्ति द्वारा वाक् शांत कर दे तो...? याज्ञवल्क्य बोले, तो फिर मनुष्य अपने अंतःकरण की ज्योति द्वारा ही मार्गदर्शन प्राप्त कर सकता है। "आत्म ज्योति" का आश्रय किसी भी व्यक्ति के जीवन में नया आयाम जोड़ देता है। अंतःकरण की यही ज्योति हमें पहले गुरु और फिर गोविंद से परिचित करा देती है।

महाराजा अग्रसेन जी का प्रकृति प्रेम

"शुद्ध पर्यावरण"

खिल उठी प्रकृति शुद्ध हुआ पर्यावरण,
महाराजा अग्रसेन के जहां पडे पावन चरण।
महकने लगे वन-उपवन मुस्कराये पक्षी-प्राणी
महामानव अग्रसेन की सुनकर मधुर वाणी।।

वृक्षारोपण धर्म महान,
एक वृक्ष दस पुत्र समान।

यशयां समुद उत सिन्धुरापो यशयांमन्नं कृष्ठयहः संमभूँवुः
यशयामिदं जिन्वति पाणदेजत् सा नो भूमिः पूवपेये दधातु।।

अग्रवाल सेवा योजना, राजस्थान द्वारा जारी स्टीकर

राष्ट्रभक्त वैश्यर्षि सेठ जमना लाल बजाज

राष्ट्रीय स्वाधीनता आन्दोलन के भामाशाह श्री जमना लाल बजाज उन महापुरुषों में से थे जिनसे आज सम्पूर्ण राष्ट्र गौरवान्वित है। अपने जीवन काल में उन्होंने तन-मन-धन से मानव सेवा और परोपकार को ही जीवन का मुख्य उद्देश्य बनाया था। जीवन पर्यन्त उन्होंने महात्मा गाँधी के साथ उन हजारों कार्यकर्ताओं और राष्ट्रीय स्वाधीनता सेनानियों का भी ध्यान रखा, जो राष्ट्रीय आन्दोलन में व्यस्त होने के कारण पारिवारिक जिम्मेदारियों को वहन करने में असमर्थ थे। यह सहायता किसी मान, सम्मान की इच्छा से प्रकट में नहीं, अपितु गुप्त दान के तरीके से दी जाती थी, जिनकी खबर स्वयं प्राप्त कर्ता को भी नहीं होती थी। अनेक विधवाओं के आँसू पोंछे, कितने लोगों को शिक्षित बनाया, कितने प्राकृतिक विपदा ग्रस्त लोगों की मदद की। बापू उन्हें "कामधेनु" कहते थे। महात्मा गाँधी के समक्ष अपनी समस्त सम्पत्ति अर्पित कर देश के स्वाधीनता अभियान को तेजी से चलाये जाने में सहयोग कर आदर्श उपस्थित किया था।

गाँधी युग की सर्वोत्तम अग्र विभूतियों में से एक श्री जमना लाल बजाज ने राजस्थान के सीकर जिले में स्थित काशी का वास नामक ग्राम में दि. 4 नवम्बर सन् 1889 को अग्र परिवार के कनीराम बजाज के पुत्र के रूप में जन्म लिया। इनकी माता का नाम श्रीमती बिरधी बाई था। इसी गांव के एक सेठ बच्छराज बजाज व्यापार व्यवसाय के लिए वर्धा

(सौराष्ट्र) रहते थे। ये चार भाई थे लेकिन निःसंतान थे। वंश चलाने के लिए कनीराम व बिरधी बाई के सामने बच्छराज व उनकी पत्नी सद्दीबाई ने अपनी व्यथा रखते हुए पुत्र की इच्छा प्रकट की। श्री कनीराम ने उनकी पुत्र-व्यथा को दूर करने के लिए अपने हृदय के टुकड़े पांच वर्षीय बालक जमन को उनके गोद दे दिया। वर्धा आने के बाद चार साल में ही बालक जमना लाल ने अक्षर ज्ञान, हिसाब-किताब और अंग्रेजी भाषा पर अपना अधिकार जमा लिया। पिता के साथ उनके व्यापार में सहयोग करने लगे।

बच्छराज अपना वंश चलाने वाला वारिस चाहते थे। अतः ग्यारह वर्ष की अवस्था में जमना लाल का विवाह इन्दौर के पास जावरा ग्राम के सेठ गिरधारी जी जाजोदिया की 8 वर्षीय पुत्री जानकी देवी के साथ कर दिया। विधि की विडम्बना थी कि सद्दीबाई जमना लाल की शादी के पूर्व ही भगवान को प्यारी हो गई थी। शादी के नौ दिन बाद ही जमना लाल के छोटे भाई बदरी भी टायफाइड की अल्पकालिक बीमारी से चल बसे। इन घटनाओं का जमना लाल के जीवन पर बहुत गहरा असर पड़ा। जीवन-मृत्यु, सुख-दुःख, जीवन की निरर्थकता से उनका मन वैरागी होने लगा। इनकी माता एक धार्मिक विचारों की थी। इनके घर में साधू-संत आते रहते थे। इनकी संगति से जमना लाल को वैराग्य, ज्ञान और जीवन की सार्थकता के संबंध में अनुभव हो चुके थे। पुत्र की इस स्थिति से पिता बच्छराज को भारी असंतोष था और वे जमना लाल जी को बुरा-भला कहते और डांट देते थे। एक बार किसी शादी विवाह जाने के समय बच्छराज ने जमना लाल को गहने आदि पहनकर जाने को कहा। उन्होंने गहने पहनना स्वीकार नहीं किया। बच्छराज जी ने क्रोधित होकर कहनी-न-कहनी सब कह बैठे। जमना लाल जी के मन में उनके व्यवहार का बहुत गहरा असर पड़ा और एक पत्र लिखकर उसी दिन घर छोड़कर चल दिये। पत्र पढ़ते ही बच्छराज जी भागे गए। स्टेशन से वापिस लौटा लाये। साथ ही पत्र के प्रभाव से बच्छराज जी का हृदय परिवर्तन हो गया तथा लक्ष्मीनारायण के मंदिर में एक लाख रु. दान देकर उसे पूर्ण करवा दिया।

एक स्कूल को काफी धन राशि देकर उन्नत किया। अंत में 17 वर्ष की अवस्था में जमना लाल जी को निराधार छोड़कर वह भी परलोक सिधार गये।

क्षुब्ध जमना लाल जी को ऐसे समय में वकील श्री कृष्णदास जाजू ने उनका मार्ग-दर्शन कर देश-प्रेम और समाज-सेवा की ओर मोड़ दिया। 1906 में कलकत्ता में कांग्रेस के अधिवेशन में साथ ले गये। जहाँ उन्हें महान विचारकों, दार्शनिकों को सुनने और जानने का मौका मिला। बाल गंगाधर तिलक, दादाभाई नौरोजी, जगदीशचन्द्र बसु, गुरु रविन्द्रनाथ टैगोर, महामना मदनमोहन मालवींय, महात्मा गाँधी से भेंट हुई और स्वदेशी की शपथ ले ली। जमना लाल जी ने पिता के कारोबार को तो सम्हाल लिया, लेकिन एक महज ट्रस्टी के रूप में। प्राप्त सम्पत्ति को सार्वजनिक सेवा हेतु प्राप्त धरोहर माना। उन्होंने व्यापार को बढ़ाया। उत्तरप्रदेश के लखीमपुर में शूगर मिल की स्थापना कर उद्योग को बढ़ाया। मुकुंद आयरन एण्ड स्टील वर्क्स का संचालन किया।

उद्योग व व्यापार में वह ईमानदारी और सच्चाई की कड़ाई से पालन करते। मुनीमों और एजेंटों पर भी अंकुश रखते। स्वदेशी वस्तुओं-वस्त्रों का उपयोग करते। सत्रह वर्ष की आयु में परिवार व व्यापार के काम में साथ देने उनके बड़े भाई माधव लाल शामिल हुए, लेकिन भाग्य ने साथ नहीं दिया, कुछ ही दिनों में बुखार से पीड़ित हो चल बसे। जमना लाल जी इस धक्के को सह न सके और खुद बीमार हो गये। ऐसे समय में उनकी पत्नी जानकी देवी ने अत्यन्त धैर्य के साथ उन्हें सम्हाला और वे पुनः कर्मयोगी बन, काम में जुट गये। सन् 1912 में मारवाड़ी पंचायत का बाड़ी बम्बई में मंत्रणा अधिवेशन हुआ उसमें 23 वर्षीय युवक जमना लाल ने शिक्षा प्रसार तथा समाज सुधार पर वक्तव्य दिया तथा राष्ट्रसेवा का श्रीगणेश हुआ। बम्बई में सन् 1910 में वर्धा में मारवाड़ी विद्यार्थी-गृह और मारवाड़ी हाईस्कूल की स्थापना की। उनकी उत्कृष्ट सेवाओं से प्रसन्न होकर तत्कालीन अंग्रेज सरकार ने 18 वर्ष की आयु में हीं उन्हें

"आनरेरी मजिस्ट्रेट" नियुक्त कर दिया और "रायबहादुर" के खिताब से विभूषित किया।

सन् 1912 में उनके घर में प्रथम बेटी कमलाबाई ने जन्म लिया। सन् 1915 में प्रथम बेटे कमल नयन का जन्म हुआ। ऐसे समय में जमना लाल जी ने दान देने में कोई कसर नहीं छोड़ी। घर में उत्सव के अवसर पर मेहमान आए, उन्हें जेवर पहने देखकर जानकी बाई ने पति से भी सोने की तागड़ी पहनने का आग्रह किया। लेकिन जमना लाल जी को अपने पिता के साथ हुए झगड़े की बात याद थी। उन्होंने यह कहते हुए मना कर दिया कि सोना कलि का रूप है; दूसरों में ईर्ष्या-द्वेष पैदा करता है, चोरी-डकैती का डर बना रहता है। ब्याज-धन का नुकसान होता है। मैं तुम्हें भी गहने उतारने को कहता हूँ। पति-परायण, आज्ञाकारिणी जानकी देवी ने बिना झिझक सारे जेवर उतार दिये और उनके घर में जेवर पहनना बंद हो गया। घर-परिवार में पर्दा खत्म करवाया। विदेशी वस्त्रों को जलाकर समाप्त कर-दिया। घर में सभी चर्खा कातते और खादी-वस्त्र पहनने लगे। सादा जीवन अपना लिया। बच्चे भी उसी रंग में रंग गये।

सन् 1915 में गांधीजी भारत आए। अहमदाबाद में आश्रम खोला। जमना लाल जी आश्रम में आने जाने लगे। गाँधीजी से व्यक्तिगत सम्पर्क बढ़ा। देखा कि गाँधीजी की कथनी-करनी में कोई अन्तर नहीं है। संत जीवन तो था ही, गाँधीजी के आचार-विचारों के अनुसार चलने लगे। मन से गाँधीजी को अपना पिता मान लिया। गाँधीजी के प्रत्येक कार्य में भक्ति-श्रद्धा के साथ सहयोग करने लगे। फलतः गाँधीजी ने भी उन्हें पूरी तरह पाँचवा पुत्र स्वीकार कर लिया।

सन् 1918 में आपने वर्धा में अ.भा. मारवाड़ी अग्रवाल सम्मेलन तथा वित्तीय कोष की स्थापना की।

1921 में जमना लाल जी ने वर्धा में सेवाग्राम आश्रम की स्थापना की और गाँधीजी की प्रतिमूर्ति विनोबा जी को अपना गुरु बनाकर वर्धा ले आए। उनके साथ उन्होंने दान के साथ-साथ जीवन में त्याग की भावना

को अपनाया और पूर्ण रूप से समाज और देश-भक्त बन गए। यह आश्रम स्वाधीनता संग्राम का केन्द्र बन गया था।

1920 में कांग्रेस के नागपुर अधिवेशन में जमना लाल जी को राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष नियुक्त किया गया, जिसका उन्होंने आजीवन कर्मठतापूर्वक निर्वाह किया। इस प्रकार राजनीति से भी जुड़ गये।

नागपुर में सन् 1923 में जलियाँवाला बाग के शहीदों की स्मृति में तथा-स्वराज प्राप्ति हेतु संघर्ष के लिए राष्ट्रीय सप्ताह असहयोग आन्दोलन के रूप में तिरंगे झण्डे के साथ जुलूस निकालने का निर्णय लिया गया। अंग्रेजी सरकार ने जुलूस पर रोक लगा दी। श्री जमना लाल जी सत्याग्रह करते हुए नागपुर में गिरफ्तार कर लिये गये। गाँधीजी ने छात्रों, अध्यापकों और वकीलों को खासतौर पर आन्दोलन में भाग लेने का आह्वान किया। इनके परिवारों के भरण-पोषण की सहायता के लिए करोड़ रुपये का तिलक "स्वराज कोष" की स्थापना की। जमना लाल जी ने इस कोष में दो लाख रु. का दान तुरन्त देकर सहायता आरम्भ करवाई। इसी अवसर पर वर्धा में एक महिला आश्रम की स्थापना की, जिसमें निराश्रित महिलाएं शरण पाती थीं।

गाँधीजी के सत्संग के कारण अंग्रेजों की खिलाफत करने वाले व्यक्ति व आन्दोलनकारी जमना लाल जी के यहाँ घर पर ही ठहरते थे। अंग्रेज कमिश्नर "मास्किंग" के निषेध के बावजूद भी उन्हें ठहराने व मदद करने में लगे रहे। इसी अवसर पर अंग्रजों की दी हुई "रायबहादुर" की उपाधि को भी वापिस कर दिया। झण्डा आन्दोलन एक सौ नौ दिन चला, जिसमें एक हजार आठ सौ अड़तालीस से अधिक गिरफ्तारियां हुईं। जमना लाल जी ने इस आन्दोलन का नेतृत्व किया था, अतः इन पर अठारह माह का कठोर कारावास और तीन हजार रु. का जुर्माना किया गया। जमना लाल ने जुर्माना देने से इंकार कर दिया। उनकी मोटर तथा घोड़ा गाड़ी जब्त कर ली गई।

यह आन्दोलन सफल हुआ और अंग्रेज सरकार ने स्वीकार किया

राष्ट्रभक्त वैश्यर्षि सेठ जमनालाल बजाज

कि तिरंगे झण्डे को कहीं भी फहराया जा सकता है। प्रतिबंध हटा और जमना लाल बजाज अपने सभी 1800 साथियों के साथ छूटकर कारावास से बाहर आये। इनका अभूतपूर्व स्वागत हुआ।

इस विजय के बाद जमना लाल के छोटे बेटे "रामकृष्ण" का जन्म हुआ।

अंग्रेजों की कूटनीति से साम्प्रदायिक दंगे भड़कने लगे थे। दंगाई पनपने लगे थे। ऐसे समय में गाँधीजी के साथ जमना लाल जी हिन्दू-मुस्लिम एकता के कार्य में जुट गये। उस समय अछूतों की बड़ी दुर्दशा-दुर्गति थी। अछूतोद्धार के कार्य को प्रगति लाने के लिए जमना लाल जी अपने घर में हरिजन को नौकर रखा, उसके हाथ का भोजन लेने लगे। वर्धा में अपने पूर्वजों के लक्ष्मीनारायण मंदिर के ट्रस्टियों के विरोध के बावजूद भी मंदिर को हरिजनों के लिए खोल दिया और सच्चे मानव का जीवन जीने का अधिकार दिलाया। खादी-स्वदेशी के समर्थक माणिक्य लाल वर्मा को खादी आन्दोलन के काम में आत्म निर्भरता प्राप्त करने में आपने धन से मदद की । गाँधी आश्रम, हटूण्डी, वनस्थली विद्यापीठ जयपुर को सहायता दी।

1918 में जमना लाल जी ने वर्धा में अखिल भारतीय अग्रवाल सभा की नींव डाली जिसका पहला अधिवेशन श्री खेमराज श्रीकृष्ण दास जी की अध्यक्षता में हुआ। सन् 1919 में बम्बई में सम्मेलन बुलाया गया। इसमें विशेष रूप से भाग लेने महात्मा गाँधी पधारे। इस अधिवेशन में 9 लाख रुपये से अग्रवाल जातीय कोष की स्थापना की गई। इसी कोष से बम्बई में शिक्षा-प्रसार-कार्य का विस्तार हुआ तथा माटुंगा में अग्रवाल नगर की स्थापना हुई। 1926 में दिल्ली में अग्रवालों की अखिल भारतीय महासभा के अधिवेशन के सभापति बाबू जमना लाल बजाज थे।

उन्होंने दहेज के बहिष्कार, स्त्री शिक्षा, विवाह समारोहों मे फिजूल खर्ची रोकने, विधवा विवाह कराने, बाल विवाह रोकने, पर्दा प्रथा हटाने जैसे आवश्यक कदम उठाये। अपने पुत्र-पुत्रियों के विवाह अत्यंत सादगी

तथा खादी के वस्त्रों में करके आदर्श उपस्थित किया। नाच-गाने, फूहड़ नृत्य, गीत आदि सब का बहिष्कार किया।

अग्रवाल सभा के सम्मेलनों का क्रम चल पड़ा और उसमें महात्मा गाँधी, लाला लाजपत राय, मदनमोहन मालवीय जैसे बड़े-बड़े नेता भाग लेने आने लगे। इसी सभा द्वारा आश्विन शुक्ला प्रतिपदा को महाराजा अग्रसेन जयंती सम्पूर्ण भारत में मनाने तथा अग्रोहा को अग्रवालों की जन्मभूमि घोषित कर उसके पुनर्निर्माण के प्रस्ताव पारित किए गए। 'महाराजा अग्रसेन टैक्नीकल एण्ड इंजीनियरिंग कालेज सोसायटी' का निर्माण हुआ। अग्रोहा (हिसार) में भूमि खरीदी गई और आज उन्हीं की नींव पर भव्य अग्रोहा के निर्माण का स्वप्न साकार हो रहा है। 1920 में बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय को 50,000 रुपये का दान दिया। वे वैश्य समाज को व्यापक आधार पर संगठित करना चाहते थे, इसलिए उन्होंने अपने पुत्र राधाकृष्ण बजाज का विवाह माहेश्वरी समाज के श्रीकृष्ण प्रसाद जाजू की पुत्री से किया था। उन्होंने समाज को प्रेरणा दी कि "संघ शक्ति के बिना किसी भी जाति का अस्तित्व-उन्नति कठिन है। संसार में उसी जाति तथा समाज का नाम अमिट रह सकता है, जिसका संगठन मजबूत हो। व्यक्ति अथवा समाज केवल धन-वैभव के आधार पर प्रगति नहीं कर सकते, जब तक कि उसमें सद्गुणों, सद्-भावनाओं का निवास न हो। परिश्रम, ईमानदारी और होशियारी में ये तीन गुण जिस व्यापारी में होंगे, वह कभी मात नहीं खा सकता। धर्म और नीति के साथ धन का अर्जन कोई बुरी बात नहीं है, किन्तु उसका उपयोग फिजूल खर्ची एवं दिखावे में न कर समाज और देशहित में करना चाहिए, इसी में उसकी सार्थकता है।" अग्र समाज ने राष्ट्रभक्ति की जो उच्च परम्पराएं स्थापित की हैं, वे अनुकरणीय हैं, वरेण्य हैं और उनके उदाहरण बहुत कम मिलते हैं। यह वही वैश्य/अग्रवाल समाज है, जिसने महात्मा गाँधी, लाला लाजपतराय, राममनोहर लोहिया, जमनालाल बजाज, सर सीताराम, डॉ. रघुवीर, शिवप्रसाद गुप्ता, भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, हनुमानप्रसाद पोद्दार, रघुकुल तिलक

जैसे उत्कृष्ट कोटि के देशभक्तों की लम्बी श्रृंखला देश को प्रदान की है।

सन् 1930 में गाँधीजी ने महत्त्वपूर्ण आन्दोलन चलाया। जमना लाल बम्बई में विले पार्ले छावनी में नमक सत्यागृह के नेता चुने गये। आन्दोलन में भाग लेने के कारण उन्हें गिरफ्तार कर 2 वर्ष का कारावास दिया गया और नासिक रोड़ जेल में रहे। इनके साथ इनकी पत्नी जानकी देवी भी सत्यागृही के रूप में रही। इनके पुत्र कमल नयन बजाज ने डांडी मार्च में भाग लिया। इनके ओजस्वी भाषण और निर्भीक राष्ट्रप्रेम तथा त्याग व निडरता को देखकर मारवाड़ी समाज को आजादी के मूल्य का आभास होने लगा। वे सक्रियता से भाग लेने लगे। जमना लाल जी का वर्धा निवास, बिड़ला हाउस सभी स्थान राष्ट्रीय नेताओं सत्याग्रहियों के आतिथ्य गृह शरणस्थली बन गये थे।

आन्दोलन को गतिशील बनाने के लिए उनका ठोस लक्ष हिन्दी को राष्ट्रभाषा के स्तर पर स्थापित करने का प्रयास था। उन्होंने राष्ट्रभाषा प्रचार समिति की स्थापना की और हिन्दी साहित्य सम्मेलन के मद्रास अधिवेशन में अध्यक्ष के रूप में प्रचार यात्राएं कीं। हिन्दी नवजीवन, कर्मवीर, प्रताप, राजस्थान केसरी, त्यागभूमि आदि पत्र-पत्रिकाओं को वे निरन्तर प्रोत्साहन और मदद देते रहे थे। इस तरह हिन्दी भाषा की उन्होंने अभूतपूर्व सेवा कर राष्ट्र में हिन्दी के प्रचार व प्रसार के लिए अपना सर्वस्व अर्पण कर दिया।

इन्हीं दिनों में साबरमती आश्रम में ही उन्होंने बड़ी बेटी कमला का विवाह रामेश्वर प्रसाद जी नेवटिया से बड़ी सादगीपूर्ण रीति से खादी के कपड़ों में ही किया। न बैण्ड था, न दहेज, न कोई दिखावा, वह एक आदर्श विवाह था।

जमना लाल जी राजस्थान के थे। उनका अपनी जन्मभूमि से भी बराबर लगाव था, वे आते रहते थे। यहाँ की समस्याओं को सुलझाते रहते थे। बिजोलिया के राजा ने किसानों के लगान न देने पर जमीनें छीन ली थी। उन्होंने किसानों की पीड़ा देखकर उनके हक में सत्याग्रह किया और

अंत में समझौता कराया। ब्यावर के मिल मजदूरों व मालिक में समझौता करवाया। जयपुर व सीकर राज्यों में आपसी तनाव बढ़े हुए थे। अक्सर रियासतों में अंग्रेज अधिकारी आपस में झगड़े पैदा कर लड़ाते रहते थे। सीकर के राव राजा माधोसिंह थे। वे प्रजा पर मेहरबान थे, अक्सर लगान आदि माफ कर देते थे। अंग्रेजों को यह पसंद नहीं था। उन्होंने जयपुर-सीकर रियासतों को लड़वा दिया। लेकिन जमना लाल जी ने सूचना पाकर उनमें समझौता करवा दिया। अंग्रेजों ने दूसरी चाल चली। सीकर के राव राजा को पागल करार देकर अजमेर ले गए। इससे सीकर की प्रजा में असंतोष बढ़ गया और आन्दोलित हो गए। इस समय जमना लाल जी जयपुर राज्य प्रजामण्डल के अध्यक्ष थे। हीरालाल शास्त्री, हरिभाऊ उपाध्याय आदि के साथ बिजोलिया सत्यागृह में हस्तक्षेप कर उसे सफल किया। सीकर की प्रजा की सहायतार्थ आन्दोलन किया। जयपुर व सीकर में जमना लाल जी के प्रवेश पर रोक लगा दी, लेकिन महात्मा गाँधी के आशीर्वाद से जबरन प्रवेश लिया। अंग्रेजों ने उन्हें गिरफ्तार कर लिया और नजरबन्द कर दिया। जमना लाल बजाज ने अनशन कर अंग्रेजों को झुका दिया और समझौता कर लिया। बजाज का एक पैर जेल में और एक पैर बाहर रहता था। उनका हर क्षण राष्ट्र सेवा, जन-सेवा में समर्पित था। हरिजन-उद्धार, हिन्दी राष्ट्र भाषा आन्दोलन, गोरक्षा आन्दोलन, विधवाओं का कल्याण, नारी जाति की उन्नति, खादी ग्रामोद्योग की योजनाएं, देश के औद्योगिकरण के महान् कार्य, स्वदेशी तथा समाज सुधार सभी में उनकी सेवाएँ महान् थीं। अपने शरीर की परवाह नहीं की। फलतः बीमार रहने लगे।

1940 में द्वितीय विश्व युद्ध के खिलाफ देश में सत्याग्रह आरम्भ हुआ। जमना लाल जी ने सत्याग्रह किया और नागपुर जेल में बंद कर दिये गये। यहाँ संत विनोबा के सानिध्य में आत्म चिंतन और आत्म प्राप्ति के मार्ग की खोज का मौका मिला। जेल से छूटने पर अरविन्द आश्रम गए, यहाँ महर्षि रमण से भेंट की। स्वास्थ्य लाभ के लिए देहरादून-शिमला

गये। वहाँ कमला नेहरू की गुरु माँ आनंदमयी के दर्शन किये। माँ का स्नेह प्राप्त किया। वापिस वर्धा आने पर गो सेवा में लग गए।

11 फरवरी 1942 को ब्रेन हैम्ब्रेज हो गया और राष्ट्र विभूति जमना लाल दिवंगत हो गए। बापू महात्मा गाँधी, घनश्याम दास बिड़ला को सेवा ग्राम से तुरन्त बुलाया गया। तब तक कर्मयोगी चिर निद्रा में विलीन हो चुके थे। गाँधीजी ने कहा "मैं नहीं जानता उसके बिना मैं क्या कर पाऊँगा" उनकी शोक संतप्त पत्नी और बूढ़ी माँ व बच्चों को दिलासा देते रहे लेकिन खुद संयम खो बैठे और कहा "जमना लाल ने मुझे पिता बनाया। उसे मेरे सर्वस्व का उत्तराधिकारी होना था। इसके बजाय वह मुझे अपने सर्वस्व का उत्तराधिकारी छोड़ गया।"

शव यात्रा में पूरा वर्धानगर उमड़ पड़ा। रामधुन गाई गई, वंदेमातरम् और सेठ जमना लाल के जय के नारे लगाये गये। सरदार बल्लभ भाई पटेल ने कहा– "वे चले गए इससे अच्छी मौत हो नहीं सकती परन्तु कहावत है– सौ मरें, पर सौ को पालने वाला नहीं मरे।" किसान-व्यापारी, गरीब-अमीर, हरिजन-सवर्ण, स्त्री-पुरुष, कार्यकर्त्ता-नेता, मजदूर-मालिक सभी उनकी कमी महसूस कर रहे थे।

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद, जवाहर लाल नेहरू, काका कालेलकर, श्रीमती सरोजनी नायडू, महादेव देसाई, डॉ. राममनोहर लोहिया, मौलाना आजाद, डॉ. राधाकृष्णन इत्यादि ने जमना लाल बजाज के गुणों की प्रशंसा की और उनकी क्षति को अपूर्णीय बताया।

जमना लाल जी के निधन के 6 मांह बाद गाँधी जी ने "भारत छोड़ो आन्दोलन" शुरू किया। यद्यपि जमना लाल जी नहीं रहे, पर बजाज परिवार ने त्याग व बलिदान की अपनी परम्परा को अक्षुण्य रखा। छोटे पुत्र रामकृष्ण को तीन साल जेल, कमलनयन की पत्नी सावित्री देवी को एक वर्ष की छोटी बेटी उमा अग्रवाल को भी एक साल की सजा भुगतनी पड़ी। कमलनयन ने बाहर रहकर जय प्रकाश नारायण, अन्ना सहस्त्रा बुद्धे और अनेक राष्ट्रीय नेताओं को आन्दोलन सक्रिय रखने के लिए वित्तीय

सहायता दी। चीमूर, आष्ठी तथा वर्धा के मुकदमों को लड़ने के लिए तीन लाख रुपये से अधिक सहायता प्रदान की।

महात्मा गाँधी ने जमना लाल जी के बाद उनके पुत्र-पुत्रियों के विवाह बड़ी सादगी से कराये। मझली पुत्री मदालसा का विवाह श्री मन्नारायण अग्रवाल से हुआ। सेठ जमना लाल बजाज के उच्च आदर्श, कर्मशीलता, दान-वीरता, निर्भीक विचार व व्यवसायिक क्षेत्र में ईमानदारी एवं नैतिकता बनाए रखने के लिए वे उच्चकोटि के अग्रवाल महापुरुष प्रेरणा-स्रोत हैं। सम्पूर्ण वैश्य जगत् के लिए गौरव का विषय है। वास्तव में सेठ जमना लाल बजाज भारतीय स्वाधीनता संग्राम के भामाशाह थे। जिस प्रकार वैश्य कुलभूषण सेठ भामाशाह ने विदेशी-विधर्मी मुगलों से संघर्ष के दौरान महाराणा प्रताप के श्री चरणों में अपना सर्वस्व समर्पित कर हिन्दू संस्कृति की रक्षा में सहयोगी रहे थे, उसी प्रकार सेठ जमना लाल बजाज ने स्वाधीनता, गो सेवा, स्वदेशी तथा हिन्दी के प्रचार-प्रसार के लिए अपनी समस्त सम्पत्ति और परिवार को समर्पित कर दिया था। वे अपना जीवन-निर्वाह केवल 500 रु. प्रतिमाह के अन्दर करते और अपनी सम्पूर्ण कमाई 25 लाख से अधिक उस जमाने में देश हित के लिए अर्पित कर दिया था। अपने सम्पूर्ण परिवार तथा सम्पत्ति को राष्ट्रीय स्वतंत्रता के लिए अपिर्त कर उच्चकोटि की देशभक्ति का परिचय दिया था। राजनीति में इस प्रकार के त्याग और बलिदान के आदर्श बहुत कम मिलते हैं। देश-सेवियों के इस परिवार को शत्-शत् नमन।

अग्रगौरव जमना लाल बजाज के उच्चकोटि के आदर्श पूर्ण संस्कार व शिक्षा के आधार पर उनके पुत्रों ने देश में अनेक उच्च कोटि के व्यवसायों को फैलाया। बजाज समूह द्वारा बच्छराज एण्ड कम्पनी लि., मुकुन्द आयरन एण्ड स्टील वर्क्स, बजाज इलेक्ट्रिकल्स लि. और बजाज आटो, डी.सी.एम, उड़ीसा सीमेंट, उदयपुर में बजाज समूह की सीमेंन्ट इकाई, हिन्दुस्तान शूगर मिल्स इत्यादि कम्पनियों की स्थापना व संचालन आज भी जग प्रसिद्ध व सेवारत हैं।

जनकल्याण और रचनात्मक कार्यों को प्रोत्साहन देने के लिए 1976 में "जमना लाल बजाज फाउन्डेशन" की स्थापना की गई। इस ट्रस्ट के द्वारा ग्रामीण विकास क्षेत्र में योगदान पर प्रतिवर्ष 7 लाख रुपये का पुरस्कार दिया जाता है। इसके साथ-साथ जमना लाल बजाज सेवा ट्रस्ट, जानकीदेवी बजाज सेवा ट्रस्ट, कमलनयन बजाज चैरेटेबिल ट्रस्ट आदि की स्थापना की गई। 1988 में फाउन्डेशन ने एक अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कार की स्थापना की, जिस के अन्तर्गत विदेशी मुद्रा में एक लाख रुपये की राशि, पदक, प्रशस्ति-पत्र आदि अभारतीय नागरिकों को प्रदान किये जाते हैं, जो गाँधीवादी मूल्यों का विदेशों में प्रसार करते हैं। इन पुरस्कारों के अलावा जो युवा स्नातक ग्रामीण क्षेत्र में रचनात्मक कार्य करना चाहते हैं, उनको फाउण्डेशन द्वारा प्रतिवर्ष 10-10 हजार की पाँच छात्रवृत्तियाँ तीन वर्ष के लिए प्रदान की जाती हैं।

फाउण्डेशन ने वर्धा जिले के सेवाग्राम, पवनार, अंजी क्षेत्र में स्थानीय संस्थाओं के सहयोग से ग्रामीण विकास के कार्य प्रारम्भ किये गये हैं, जिसमें कूप निर्माण, बालवाड़ी, ग्रामीण उद्योगों हेतु वैकल्पिक तकनीक के शोध को प्रोत्साहन, निर्धूम चूल्हे, सुलभ शौचालय, सामाजिक वनिकरण, रेशम उत्पादन, सांस्कृतिक कार्यक्रमों द्वारा जनजागरण आदि प्रकल्पों का समावेश है।

उदयपुर के आस-पास के गांवों में कम लागत की स्वच्छ पीने के पानी की व्यवस्था जैसे अनेकों प्रकल्प फाउण्डेशन द्वारा चलाये जा रहे हैं।

ऐसे अग्र महापुरुष, महात्मा गाँधी के परम सहयोगी सेठ जमना लाल बजाज की पुण्य स्मृति व सम्मान में दि. 4.11.1970 को राष्ट्रपति वी.वी. गिरी ने 20 पैसे के 30 लाख डाक टिकट जारी किये। ऐसे महानपुरुष को युगों-युगों तक याद किया जाता रहेगा। पुनः नमन्।

—※—

स्वाधीनता सेनानी व चिन्तक

अग्रगौरव श्री श्रीप्रकाश

महान् स्वाधीनता सेनानी तथा चिन्तक श्री श्रीप्रकाश जी देश की उन महान् विभूतियों में अग्रणी थे जिन्होंने अपना सर्वस्व अपनी मातृभूमि की स्वाधीनता, वैदिक संस्कृति, हिन्दी भाषा तथा साहित्य की साधना के लिए समर्पित किया हुआ था।

श्री श्रीप्रकाश जी का जन्म 3 अगस्त 1890 को काशी में अग्रवाल कुल की महान् विभूति विश्वविख्यात दार्शनिक प्रथम भारत रत्न महर्षि डॉ. भगवान दास जी के घर हुआ था। वे जन्मजात प्रतिभाशाली तथा भारतीयता व सात्विकता की प्रतिमूर्ति थे।

श्री श्रीप्रकाश जी की आरंभिक शिक्षा घर पर हुई थी। वाराणसी के सेन्ट्रल हिन्दू स्कूल में उन्होंने आगे की शिक्षा ग्रहण की और सन् 1911 में प्रयाग विश्वविद्यालय से बी.ए. की परीक्षा ससम्मत उत्तीर्ण की। इसके अनन्तर श्रीमती एनीबेसेंट के साथ इंग्लैंड गए और तीन वर्ष बाद सन् 1914 में कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय (ट्रिनिटी कॉलेज) से एल.एल.बी. (आनर्स) की उपाधि ससम्मान प्राप्त कर स्वदेश लौटे। उन दिनों एक भारतीय के लिए विलायत जाना असाधारण बात थी और कैम्ब्रिज युनिवर्सिटी में प्रवेश पाना तो और भी कठिन था। कैम्ब्रिज में पं. जवाहरलाल नेहरू और श्रीप्रकाश जी सहाध्यायी रहे।

स्वदेश लौटने पर श्री श्रीप्रकाश जी ने वाराणसी सिविल कोर्ट में

कुछ समय तक बैरिस्टरी की, किन्तु उसमें उनका मन नहीं लगा और वे सैन्ट्रल हिन्दू कालेज में इतिहास के प्रोफेसर पद पर प्रतिष्ठित हुए।

श्रीप्रकाश जी प्रथम श्रेणी के पत्रकार भी थे। हिन्दी और अंग्रेजी दोनों में उनकी गति उन्नतशील थी। गहन से गहन विषय को वे सरल-सुबोध शैली में प्रस्तुत करने में सिद्धहस्त थे। "लीडर" इंडिपेन्डेट" तथा "फ्रीडम" आदि अंग्रेजी के समाचार पत्रों के संपादन एवं 'नेशनल हेरल्ड' के संचालन में उन्होंने महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। सन् 1920 में काशी से प्रकाशित होने वाले दैनिक "आज" के वे संस्थापक सदस्य थे। 23 वर्षों तक वे "आज" के प्रधान व्यवस्थापक तथा संचालक मण्डल के सदस्य और सम्पादक रहे।

श्रीप्रकाश जी की प्रेरणा से ही राष्ट्ररत्न श्री शिवप्रसाद गुप्त ने सन् 1921 में काशी विद्यापीठ की स्थापना की थी। राष्ट्रीय भावनाओं से प्रेरित होकर विद्यापीठ के कुलाधिपति तथा अन्य पदों को भी श्रीप्रकाश जी ने सुशोभित किया। वहाँ उन्होंने राजनीति शास्त्र तथा अंग्रेजी का अध्यापन भी किया। अध्यापन करते हुए उन्होंने विद्यार्थियों में राष्ट्रीय भावना का पूर्ण-रूपेण संचार किया। पं. कमलापति त्रिपाठी, लालबहादुर शास्त्री, त्रिभुवन नारायण सिंह, हरिहरनाथ शास्त्री, राजाराम शास्त्री तथा डॉ. बालकृष्ण विश्वनाथ केलकर प्रभृति महानुभाव श्रीप्रकाश जी के प्रिय शिष्यों में रहे। श्रीप्रकाश जी ने काशी हिन्दू विश्वविद्यालय की स्थापना में महामना पं. मदनमोहन मालवीय को सन् 1914 से 1916 तक लगातार महत्त्वपूर्ण सहयोग दिया।

एक उत्कृष्ट लेखक तथा विचारक के रूप में भी श्रीप्रकाश जी सदा स्मरण किये जायेंगे। अंग्रेजी तथा हिन्दी दोनों में लिखी उनकी कृतियों ने पर्याप्त सम्मान प्राप्त किया। अंग्रेजी में लिखी डॉ. एनीबेसेंट की जीवनी से उनको यथेष्ट यश मिला। हिन्दी में "गृहस्थ गीता" उनकी कालजयी कृति है, जिसका पद्यानुवाद उनके विशेष अनुरोध पर राष्ट्रकवि मैथिलीशरण जी गुप्त ने किया था। "नागरिक शास्त्र", "मेरे विचार", "भारत के समाज

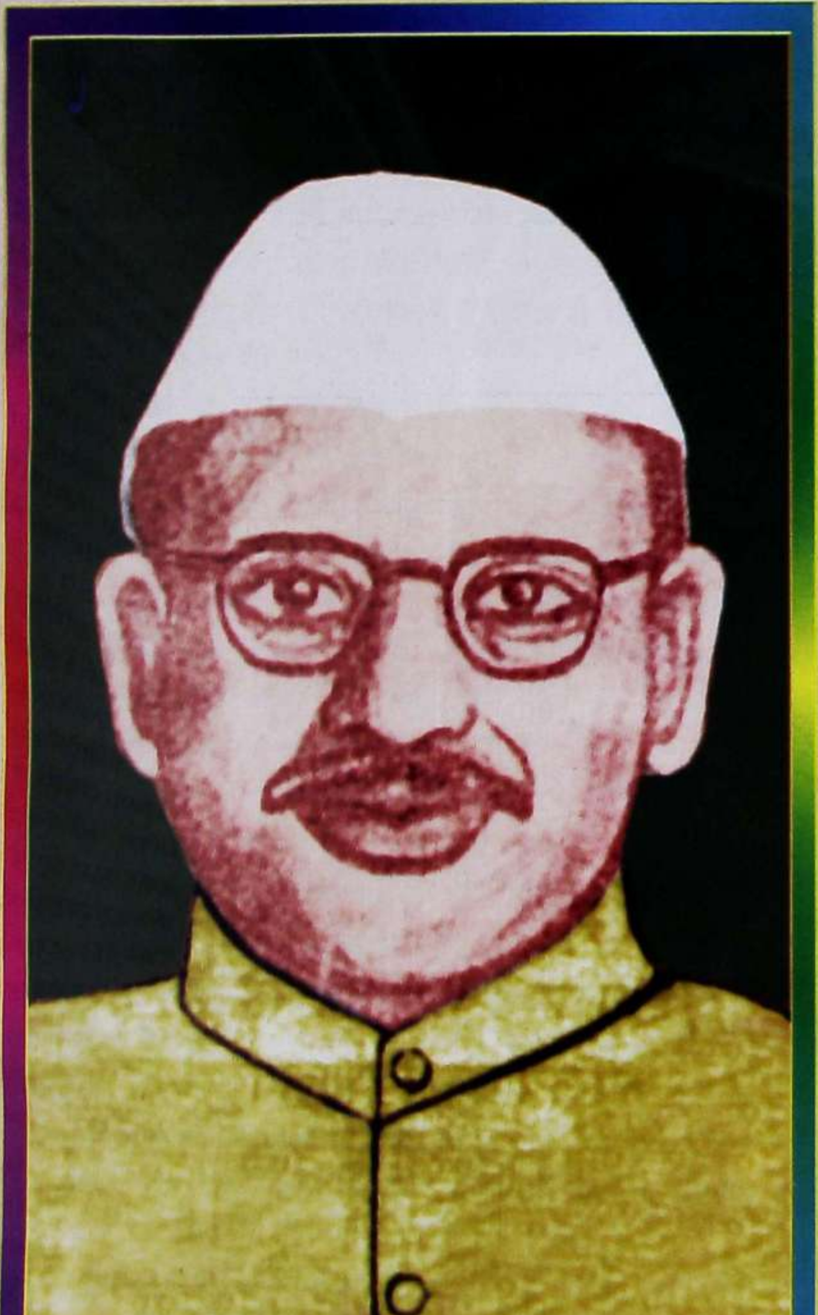

स्वाधीनता सेनानी व चिन्तक

अग्रगौरव श्री श्रीप्रकाश

और इतिहास पर स्फुट विचार'' ''हमारी आंतरिक गाथा'' और ''व्यक्तिगत आचरण'' आदि उनकी उल्लेखनीय कृत्तियाँ हैं।

श्रीप्रकाश जी नागरिकता के नियमों का पालन बहुत दृढ़ता से करते और अपने आचरण से दूसरों को आदर्श नागरिक बनने की प्रेरणा दिया करते थे। मार्ग में केला, संतरा आदि फलों के छिलकों पर पैर फिसल जाने में होने वाली दुर्घटनाओं को ध्यान में रखकर वे स्वयं उनको हटाने में संकोच नहीं करते थे।

श्रीप्रकाश जी समय के बहुत पाबंद थे। जिन दिनों श्रीप्रकाश जी असम के गवर्नर थे, वे अपने साथ नरेन्द्र देवजी आचार्य जी को गोहाटी ले गये। हवाई अड्डे पर वायुयान यथा समय उतर नहीं पा रहा था, यह स्थिति उन्हें असह्य थी क्योंकि इससे उनका अगला कार्यक्रम बाधित हो रहा था। उन्होंने आचार्य जी से कहा– ''अब क्या किया जाये''। आचार्य जी ने बड़ी गंभीरता से कहा– ''कूद पड़ने के अलावा और कोई चारा नहीं है।'' समय के पाबंद पं. जवाहरलाल नेहरू भी इस मामले में श्रीप्रकाश जी को अपना गुरु मानते थे।

1944 की बात है स्वतंत्रता सेनानी मोतीलाल जी केजरीवाल अपने पुत्र गोविन्द प्रसाद के विवाह का निमंत्रण-पत्र लेकर श्रीप्रकाश जी के पास गए। निमंत्रण-पत्र पढ़कर उन्होंने कहा– ''क्षमा करें, मैं नहीं आ पाऊँगा''। फिर कैफियत देते हुए बोले– बारात और समय का बैर है, लोग समय का मूल्य नहीं समझते। मनमानी करते हैं। वैसे आपके बेटे की बारात का समय क्या है। केजरीवाल जी ने कहा– पांच बजकर तेरह मिनट सायंकाल। पांच-तेरह के आंकड़े पर श्रीप्रकाश जी चौंके और कहा– चलिए, मैं यही देखने अवश्य आऊँगा। बारात पांच-तेरह पर ही निकली। श्री प्रकाश आए। पाणिग्रहण संस्कार में सम्मिलित हुए और जीमकर भी गए।

श्रीप्रकाश जी सद्भावना और शिष्टाचार को अत्यन्त महत्त्व देते थे– चाहे वह भारतीय हो या विदेशी। लंदन में उनके एक अंग्रेज साथी ने

शिकायती लहजे में कहा– "आप भारतीय लोग बड़े गंदे होते हैं। शौच के बाद अंगुलियों को पानी के साथ रगड़ते भी हैं। छिः। श्री प्रकाशजी ने तत्काल ही बड़े शिष्ट ढंग से कहा– "और आप सभ्य अंग्रेज लोग, नहाते भले ही हों, लेकिन गंदगी विशेष को धोते नहीं, मात्र पोंछते हैं।" कहने को तो वह अशिष्ट भाषा में उत्तर दे सकते थे परन्तु उन्होंने पूर्ण शिष्टाचार निभाया।

श्रीप्रकाश जी का ड्राईंग रूम भारतीय ढंग से सुसज्जित रहता। दुग्ध-धवल गद्दे और मसनद पर बैठाकर अभ्यागतों का स्वागत करते थे। एक बार साहित्यकारों का एक शिष्ट-मण्डल उनसे मिलने आया। उन्होंने स्वागत में सबको इलायची दी। एक खाली कटोरी में छिलके डालने को कहा। सबने छिलके कटोरी में डाल दिये, लेकिन एक व्यक्ति ने छिलका उनके दुग्ध धवल गद्दे पर ही कहीं फेंक दिया था, उसे बहुत संकोच आया। छुपकर छिलके को खोजा और निगल गया। यदि उन्होंने छिलका गद्दे पर देख लिया होता तो शिष्टाचार व सफाई पर वे अवश्य ही लेक्चर देते।

सन् 1957 में पं. गोविन्द बल्लभ पंत "भारत रत्न" से और श्रीप्रकाश जी "पद्मविभूषण" से अलंकृत किए गए। एक बार पंतजी के कोट का बटन अव्यवस्थित था। श्रीप्रकाश जी को यह अखरा और उन्होंने उसे ठीक कर दिया। यह देखकर वहीं उपस्थित महानुभावों ने प्रशंसा की।

श्रीप्रकाश जी अनुशासन प्रिय थे और उनकी कथनी और करनी में कोई भेद नहीं था। उनके स्वभाव में सरलता और व्यवस्था में कठोरता उनकी विशिष्टता थी। ईमानदारी इतनी कि उनके कोई आत्मीय जन भी उनसे कोई अनुचित लाभ नहीं उठा पाते थे। पद के कारण उनमें कठोरता नहीं आ पायी, बल्कि उनमें सहृदयता परिपूर्ण थी। श्रीप्रकाश जी की हाजिर-जवाबी और उनके चुटकलों से तथा हास्य-प्रियता से सभी प्रभावित थे। उनका हास्य-व्यंग एक शक्तिशाली अस्त्र का काम करता था। बड़े-बड़े अंग्रेज अधिकारी उनकी इस विशेषता से आतंकित रहते थे। उनकी

नेक नियती और कर्तव्य निष्ठा उच्चतम अधिकारियों को भी बराबर प्रभावित करती रहती थी।

श्री श्रीप्रकाश जी पं. जवाहरलाल नेहरू के अत्यन्त विश्वस्त तथा अंतरंग मित्रों में थे। नेहरू जी जब प्रथम बार कांग्रेस के सभापति चुने गये, तब श्रीप्रकाश जी प्रधान सचिव बनाए गए। वाराणसी में सिगरा स्थित उनका 'सेवाश्रम' राष्ट्रतीर्थ रहा है, जहाँ सभी मूर्धन्य नेता और क्रांतिकारी पहुंचते थे। अमर शहीद चन्द्रशेखर आजाद एक बार 'सेवाश्रम' के निकट ही श्रीप्रकाश के उपवन (अनसुइया उद्यान) में टिके थे। उस समय श्रीप्रकाश जी ने उनकी न केवल प्राण रक्षा की थी अपितु ब्रिटिश शासन की जेल से लोकनायक जयप्रकाश नारायण तथा डॉ. राममनोहर लोहिया सरीखे नेताओं और क्रांतिकारियों को मुक्त कराने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। दानापुर-हत्याकांड, काकोरी षडयंत्र तथा आजाद हिन्द फौज के मुकदमे के सैकड़ों राष्ट्रभक्त अभियुक्तों को भी श्रीप्रकाश जी ने फाँसी के तख्ते से बचाया था।

सर्वसाधन सम्पन्न प्रतिष्ठित अग्रवाल परिवार में जन्म लेने वाले श्रीप्रकाश जी में राष्ट्र प्रेम कूट-कूट कर भरा था, जिसके परिणाम स्वरूप सन् 1921 में वे बापू के असहयोग आन्दोलन में कूद पड़े और उन्होंने अपना संपूर्ण जीवन राष्ट्रसेवा में ही व्यतीत किया। किसी समय युक्त प्रांत में कांग्रेस संगठन के वे मुख्य स्तंभ थे। डॉ. एनीबेसेंट जिनसे उनका पारिवारिक घनिष्ठ संबंध था, के होमरूल आंदोलन में भी उन्होंने भाग लिया था। सन् 1919 से वे बराबर जिला व शहर कांग्रेस कमेटियों के वर्षों तक अध्यक्ष रहे और सन् 1928 से 1934 तक युक्त प्रांतीय कांग्रेस समिति के प्रधान सचिव रहे। सन् 1931 तथा सन् 1934 में युक्त प्रांतीय राजनीतिक सम्मेलन के वे अध्यक्ष रहे और सन् 1936 में कांग्रेस के स्वागताध्यक्ष रहे। उनका मुख्य उद्देश्य संगठन तथा व्यवस्था में पारस्परिक मतभेद दूर करना था। इस कार्य में वे पूर्णतः सफल भी रहे। बापू को उनकी कार्यकुशलता पर पूरा भरोसा रहता था। यही कारण था कि

रियासती मामलों में कांग्रेस की ओर से श्रीप्रकाश जी को ही भेजते थे। जोधपुर में वे बापू के निजी प्रतिनिधि के रूप में गए थे तथा उस समय की कठिन परिस्थिति में उन्होंने बहुत सूझ-बूझ से काम लिया था।

श्रीप्रकाश जी ने सन् 1930, 32, 41 तथा 42 में नजरबंदी एवं कारावास की पीड़ा को हंसते-हंसते झेला और इस अवधि में उन पर कई भयंकर रोगों का आक्रमण हुआ। सन् 1932 में जब उनको कारावास का दंड मिला और वे न्यायालय में उपस्थित हुए, उस समय उनका बयान इतना शिष्ट, निर्भीक तथा देशभक्ति से ओतप्रोत था कि न्यायाधीश ने उसे अपनी दैनंदिनी में अक्षरक्षः अंकित किया था। श्रीप्रकाश जी कभी सरकारी पदों के लिए लालायित नहीं रहे, अपितु उपराष्ट्रपति तक का पद उन्होंने स्वीकार नहीं किया, किन्तु नेहरू जी के विशेष अनुरोध पर सर्वप्रथम पाकिस्तान के प्रथम भारतीय उच्चायुक्त (हाई कमिश्नर) का पद अत्यन्त कठिन परिस्थितियों में संभाला। उनकी ईमानदारी, कार्यक्षमता तथा मिलनसारिता ससीखे विशिष्ट गुणों से नेहरू जी अत्यधिक प्रभावित थे। अत्यन्त भयावह स्थिति में अपने प्राण दांव पर लगाकर श्रीप्रकाश जी पश्चिमी पाकिस्तान तथा पूर्वी पंजाब के अनेक जिलों में गए और भीषण नरसंहार के बाद बचे हिन्दुओं की चल-अचल संपत्ति तथा उनकी प्राण रक्षा हेतु संघर्ष किया।

भारत की पूर्वी सीमा की सुरक्षा-व्यवस्था का भार भी बहुत नाजुक घड़ी में श्रीप्रकाश जी को सौंपा गया था। दूसरे शब्दों में वे एक मोर्चे से दूसरे मोर्चे पर भेजे गये थे। असम का राज्यपाल पद ग्रहण करते समय उनके सामने पूर्वी पाकिस्तान, बर्मा तथा चीन की भयावह चुनौती थी। उस समय भी उन्होंने अपनी कार्यकुशलता का परिचय दिया था। तमिलनाडू तथा महाराष्ट्र के राज्यपाल पद को उन्होंने सुशोभित ही नहीं किया अपितु महिमामंडित बनाया। सन् 1950 में वे भारत सरकार के वाणिज्य, प्राकृतिक संसाधन मंत्री बनाये गये थे और इस पद का उन्होंने सफलतापूर्वक निर्वाह किया।

उनका निधन 23 जून 1971 को हुआ तथा उनकी स्मृति व सम्मान में भारत सरकार ने दो रुपये का डाक टिकट आपके जन्म दिवस के उपलक्ष में 3 अगस्त 1991 को जारी किया।

इस प्रकार हम देखते हैं कि एक पत्रकार, लेखक, शिक्षक, प्रशासक, विधिवेत्ता, स्वतंत्रता सेनानी, उत्कृष्ट राजनेता और आदर्श नागरिक के रूप में श्रीप्रकाश जी ने राष्ट्र की मूल्यवान सेवा की। उनके बहुआयामी इन्द्रधनुषी व्यक्तित्व और उनकी बहुमुखी सेवा का समुचित मूल्यांकन सहज संभव नहीं है। एक लंबी अवधि तक उन्होंने मिश्नरी भावना से देशवासियों की सेवा करके एक कीर्तिमान स्थापित किया। अग्रवाल समाज को ऐसी विभूति पर हमेशा गर्व रहेगा।

—*—

* अनमोल वचन *

* *दूसरों के साथ वह व्यवहार न करो, जो तुम्हे अपने लिए पसन्द नहीं।*
* *अपने को मनुष्य बनाने का प्रयत्न करो, यदि इसमें सफल हो गये तो हर काम में सफलता मिलेगी।*
* *जो कुछ बच्चों को सिखाते हैं, उन पर यदि बड़े खुद अमल करें तो यह संसार स्वर्ग बन जाय।*
* *मनुष्य परीस्थितियों का दास नहीं, वह उनका निर्माता, नियन्त्रणकर्ता और स्वामी है।*

✲ जय अग्रोहाधाम ✲

(आमंत्रण)

सुनो खंडहर गाथा कहते हैं, अग्रोहाधाम की।
आओ हम सब शान बढ़ायें, अपने तीर्थ महान की।
जय अग्रोहाधाम! जय अग्रोहाधाम!

मां शीला का मंदिर देखो सुख शांति का दाता है।
टीलों खंडहरों को देखो, भव्य अतीत बताता है।
मेडिकल कालेज भूमि को देखो, नव जागृति बतलाता है।
मंदिर देखो जहां विराजी महालक्ष्मी माता है।
चाहे जितना ले लो इनसे, कमी नहीं वरदान की।

आओ हम सब ....
सरस्वती मां भी बैठी हैं, प्यारी हंस सवारी है।
साथ में दादा अग्रसेन जी, जिनकी महिमा भारी है।
हरे भरे प्रांगण में तीनों, मंदिर की छवि न्यारी है।
राम नाम के दिव्य बैंक के, स्थापन की अब बारी है।
नब्बे फिट की ऊँची प्रतिमा, देखो श्री हनुमान की।
आओ हम सब ....

शक्ति सरोवर में जल देखो, लहर-लहर लहराता है।
सागर मंथन की झांकी देखो, मन को रूप लुभाता है।
घाट, धर्मशाला, गौशाला का निर्माण यह बताता है।
अग्रवंश का धर्म-कर्म, और कला से गहरा नाता है।
कई योजनाएं जारी हैं, अग्रोहा के नव उत्थान की।
आओ हम सब ....

अग्रबंधुओं जागो, हमें अब सारा देश जगाना है।
अग्रसेन की समता को, सारे जग में फैलाना है।
अग्रोहा को संस्कृति का, पावन केंद्र बनाना है।
दिव्य ध्येय लेकर के, अग्रभूमि को भव्य बनाना है।
तन-मन देकर करें प्रतिष्ठा, हम अपने पहचान की।
आओ हम सब ....।

स्वाधीनता तथा स्वदेशी के प्रणेता

आध्यात्मिक विभूति भाई हनुमान प्रसाद पोद्दार

अग्रवाल वैश्य समाज की देश की स्वाधीनता के लिये चलाये गये सभी अभियानों में अग्रणी भूमिका रही थी– इस बात का इतिहास साक्षी है। 1857 के स्वातंत्र समर के दौरान लाला झनकूमल सिंहल ने मेरठ मंडल के ग्राम धौलाना में तेरह राजपूत वीरों के साथ फाँसी पर चढ़कर जहाँ "हुतात्मा" पद प्राप्त किया, वहीं डासना (गाजियाबाद) के लाला मटोल चन्द्र अग्रवाल ने बहादुर शाह जफर के समक्ष अपनी तमाम सम्पत्ति अर्पित कर भामाशाह का आदर्श उपस्थित किया था।

देश में "स्वदेशी" तथा "खादी" के प्रचार-प्रसार अभियान में सबसे रचनात्मक भूमिका अग्रवाल समाज की महान् विभूति "गीता प्रेस" गोरखपुर के संस्थापक भाई जी श्री हनुमान प्रसाद पोद्दार की थी, जिन्हें यह पता चलते ही कि अंग्रेजों की मिलों में बनने वाले कपड़े में गौमाता की अपवित्र चर्बी का मांड के रूप में प्रयोग किया जाता है, विदेशी वस्त्रों के बहिष्कार का संकल्प ही नहीं लिया था, अपितु उन्होंने घर के तमाम विदेशी वस्त्रों को सार्वजनिक रूप से आग में जलाकर भस्मीभूत कर डाला था। उन्होंने अपनी धर्मपत्नी श्रीमती रामदेई को प्रेरित कर उनकी विदेशी साड़ियाँ भी आग की भेंट चढ़वा दी थीं तथा अपनी पुत्री के विवाह में उसे शुद्ध खादी की साड़ी में बिठाकर पूरे अग्रवाल समाज तथा देश को

सादगी तथा 'स्वदेशी' की प्रेरणा दी थी। भाईजी ने उस समय "मारवाड़ी अग्रवाल" स्वदेशी वस्तु भण्डार की स्थापना की थी तथा जगह-जगह जाकर स्वदेशी वस्तुएं अपनाने तथा विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार की प्रेरणा का अभियान चलाया था और बम्बई में मारवाड़ी खादी प्रचार मण्डल की स्थापना की थी। उन्होंने खादी के महत्त्व को प्रदर्शित करते हुए लिखा थाः-

"खादी साधारण-वस्त्र मात्र नहीं है। खादी पवित्रता, अहिंसा, सादगी, स्वावलम्बन, सदाचार, वैराग्य, परमार्थ तथा परोपकार का पर्याय है।"

भाई जी श्री हनुमानप्रसाद जी पोद्दार का जन्म राजस्थान के चूरू जिले के रतनगढ़ नगर में लाला भीमराज जी अग्रवाल के यहाँ दिः 23 सितम्बर, 1892 को हुआ था। श्री भीमराज जी उस समय शिलांग में व्यापार करते थे। माता का नाम श्रीमती रिखी बाई था। इनके हनुमान जी के अनन्य भक्त होने के कारण भाई जी का नाम हनुमान प्रसाद रखा गया। इनकी माता इन्हें दो वर्ष का ही छोड़कर स्वर्ग सिधार गई। इनका लालन-पालन इनकी दादी श्रीमती रामकौर बाई ने किया और इनको निम्बार्क सम्प्रदाय के सन्त से दीक्षा दिलाई। बालक हनुमान ने एक वर्ष में ही पूरी गीता कंठस्थ कर ली। एक मारवाड़ी ब्राह्मण श्री जोरजी से महाजनी व हिन्दी पढ़ी। आपने कोई विशेष स्कूली या कॉलेज की शिक्षा उत्तीर्ण नहीं की फिर भी ईश्वरीय प्रदत्त ज्ञान-विद्या के आप धनी बने।

युवावस्था में ही गीता के प्रति अनन्य निष्ठा व धार्मिक विचारों से प्रेरित होकर विदेशी-विधर्मी ब्रिटिश सरकार की गुलामी के विरुद्ध विद्रोह के लिए इनका मन छटपटाने लगा और आजादी के दीवानों-क्रांतिकारियों के सम्पर्क में रहने लगे। सन् 1904 में कलकत्ता में स्वदेशी आन्दोलन ने जोर पकड़ा और आपने 13 वर्ष की आयु में ही निश्चय कर लिया कि मैं देशी वस्त्र पहनूँगा। रास बिहारी बोस, विपिन चन्द्र पाल, लोकमान्य तिलक तथा महर्षि अरविन्द के लेखों, विचारों और उनके कार्यों से वे

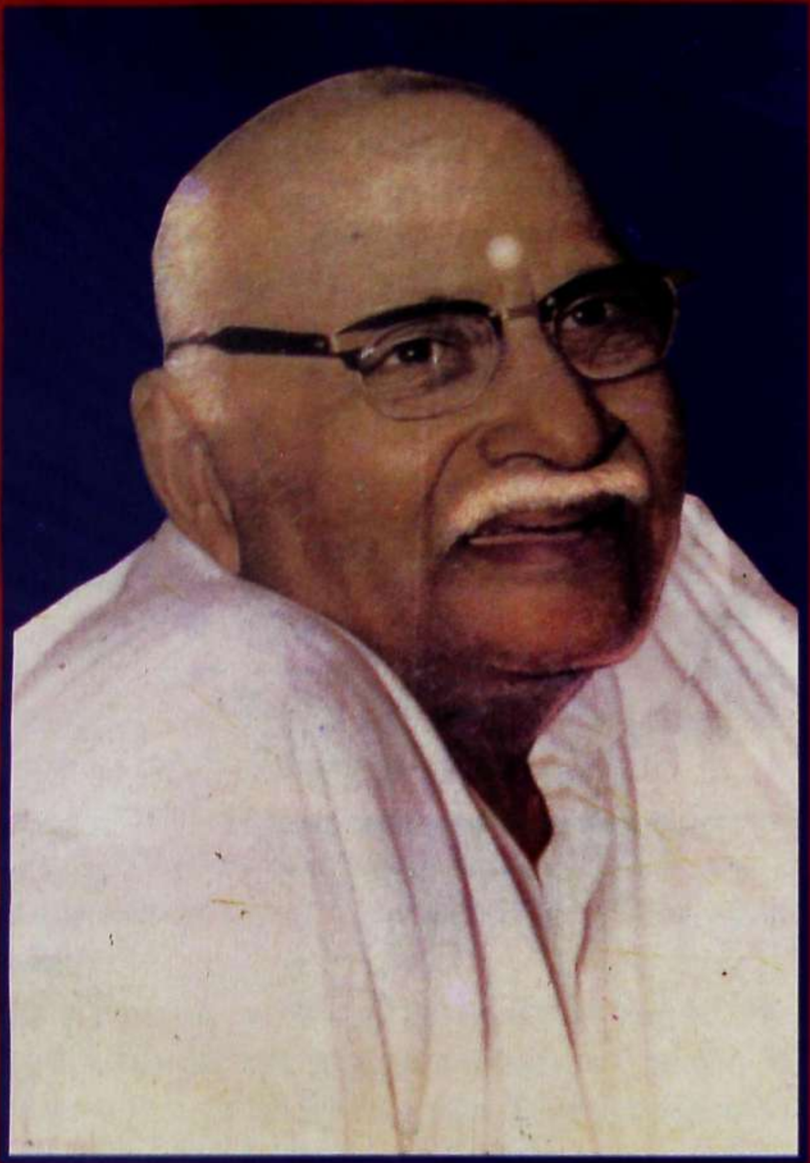

आध्यात्मिक विभूति भाई हनुमान प्रसाद पोद्दार

अत्यधिक प्रभावित हुए और क्रांतिकारियों की गुप्त बैठकों में कलकत्ता में शामिल होने लगे। इसी समय भाई जी ने गीता की पुस्तक का प्रकाशन कराया, जिसके मुख पृष्ठ पर भारत माता का ऐसा चित्र प्रकाशित किया गया, जिसमें वे हाथ में खड्ग धारण किये खड़ी क्रांतिकारियों को आमंत्रित कर रही थी। इस प्रति ने पूरे कलकत्ता में तहलका मचा डाला था। कलकत्ता के अंग्रेज गवर्नर ने गीता के इस संस्करण को भड़काने वाला करार देकर जब्त कर लिया। इसका भाईजी पर बड़ा असर पड़ा।

सन् 1906 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का कलकत्ता में अधिवेशन हुआ। श्री पोद्दार जी भी उसमें सम्मिलित हुए। और बाद में वे भी अनेक राष्ट्रीय अधिवेशनों में सम्मिलित होते रहे। उनका सम्पर्क गोपाल कृष्ण गोखले, लाला लाजपतराय, अरविन्द घोष, देशबन्धु, बाबू बालमुकंद गुप्ता, राधामोहन गोकुल जी, यतीन्द्रनाथ दास आदि से हो गया और वे उनके प्रिय पात्र बन गए। वीर सावरकर के ग्रंथ स्वातंत्र्य सफर ने भी उन्हें बहुत प्रभावित किया था और वे उनके दर्शनों के लिए मुंबई भी गए थे।

सन् 1914 में महामना पं. मदनमोहन मालवीय जी हिन्दू विश्वविद्यालय (काशी) के लिए धन-संग्रह के उद्देश्य से कलकत्ता पधारे थे तो भाई जी ने अनेक लोगों से मिलकर उन्हें दान-राशि दिलाई थी और महामना का सार्वजनिक अभिनन्दन भी कराया था।

कलकत्ता में व्यापार करते समय भाई जी वैश्य सभा, अग्रवाल महासभा, हिन्दी साहित्य परिषद, मारवाड़ी सहायता समिति आदि संस्थाओं को सक्रिय सहयोग देने लगे थे तथा इन संस्थाओं के विभिन्न पदों पर कार्यशील रहे।

सन् 1915 में जब गाँधी जी कलकत्ता आये तो पोद्दार जी उनके सम्पर्क में आये और उनसे पारिवारिक सम्बन्ध बन गये। जब गाँधी जी अफ्रीका से भारत लौटे तो भाई जी ने उनका हिन्दू सभा में मंत्री रूप में स्वागत किया और उन्हें अभिनन्दन पत्र भेंट किया। स्वतंत्रता आन्दोलन के सिलसिले में जब गांधी जी के पुत्र देवदास गांधी को गोरखपुर की जेल

में बंदी बनाकर रखा गया तो भाई जी ने उनकी पूरी देखभाल की थी तथा गांधीजी ने इसके लिए उनका आभार भी व्यक्त किया था।

26 अगस्त सन् 1914 को एक विशेष क्रांतिकारी घटना का सूत्रपात भाई हनुमानप्रसाद पोद्दार के नेतृत्व में हुआ। अनेक लोगों के लिए यह आश्चर्य की बात होगी कि गीता प्रेस, गोरखकर से प्रकाशित प्रसिद्ध "कल्याण" मासिक पत्र एक हजार आध्यात्मिक व धार्मिक पुस्तकों के संपादक-प्रकाशक भाई जी किसी युग में बंगाल के सक्रिय क्रान्तिकारी रहे थे। उन दिनों हनुमानप्रसाद जी पोद्दार कलकत्ता की प्रसिद्ध विप्लवी संस्था "अनुशीलन समिति" के विश्वस्त और सक्रिय सदस्य थे। कलकत्ता में बंदूकों-पिस्तौलों और कारतूसों आदि की भारी पैमाने पर बिक्री करने वाली एक विदेशी शस्त्र कम्पनी "रोड़ा आर.बी. कम्पनी" थी, जो शस्त्रों की पेटियाँ जर्मनी आदि से बिक्री के लिए मंगाती थी।

क्रांतिकारियों ने निश्चय किया कि उस कम्पनी में आने वाले अस्त्र-शस्त्रों की पेटियों को जब्त कर लिया जाये क्योंकि उन्हें पिस्तौलों और कारतूसों की अत्यन्त आवश्यकता थी और उन्हें खरीदने के लिए समिति के पास धन का पूरा अभाव था। इस काम में हनुमान प्रसाद जी पोद्दार और उस कम्पनी में कार्यरत एक बंगाली क्लर्क शिरीषचन्द्र मित्र को जो इसी "अनुशीलन समिति" का ही सदस्य था, को सौंपा गया। 26 अगस्त को कलकत्ता बंदरगाह के चुंगी कार्यालय से शस्त्र विक्रेता फर्म आ. बी. रोड़ा एण्ड कम्पनी का उक्त कर्मचारी शिरीषचन्द्र एक बड़ा पार्सल बैलगाड़ियों में लेकर रवाना हुआ। उसने 202 पेटियों में से 192 पेटियाँ तो कम्पनी में पहुँचा दी। शेष 10 पेटियाँ (जिनमें 80 माउज़र पिस्तौलें और 46000 हजार कारतूस थे) गुप्त रूप से कार्यालय तक पहुँचाने से पहले ही एक बैलगाड़ी रास्ते में ही गायब कर दी। जिसको छिपाने-लाने आदि की व्यवस्था हनुमानप्रसाद पोद्दार ने अपने कुछ साथियों के साथ पूरा किया। कम्पनी के रिकार्ड में माल कम होने की सूचना से पुलिस और खुफिया दल के लोग चतुर्दिक दौड़-धूप करने लगे। पिस्तौलों और कारतूसों

से भरी पेटियों के गायब हो जाने का समाचार फैलते ही कलकत्ता में सनसनी फैल गई। क्रांतिकारियों ने पेटियाँ गुप्त अड्डे पर ले जाकर 41 पिस्तौलें बंगाल के क्रांतिकारियों में बाँट दीं, शेष 39 बंगाल के बाहर अन्य प्रान्तों को भेजी गईं, काशी भी आई। एक माउत्तर पिस्तौल चन्द्रशेखर आजाद के पास थी। बंगाल के मामूराबाद में क्रांतिकारियों ने जो डाका डाला था उसमें इन पिस्तौलों को इस्तेमाल किया गया। सरकारी अफसरों, अंग्रेज आदि को मारने जैसे 54 काण्ड इन पिस्तौलों से ही सम्पन्न किये गये।

पिस्तौलें तो वितरित कर दी गईं किन्तु हजारों कारतूसों को कहीं छिपाने की समस्या सामने आई। प्रख्यात् पत्रकार पं. बाबूराव विष्णु पराड़कर, अग्रवाल वंशी देशभक्त प्रभुदयाल हिम्मतसिंहका, हनुमान प्रसाद पोद्दार, ओंकारमल सर्राफ, ज्वालाप्रसाद कानोड़िया, कन्हैयालाल चितलानिया, फूलचन्द्र चौधरी आदि क्रांतिकारियों की गुप्त समिति के सक्रिय सदस्य थे। इन्होंने विचार कर कुछ कारतूस की पेटियाँ भाई जी की "बिरलाश्राफ एण्ड कम्पनी" की गद्दी पर चुपचाप पहुँचा दिये। पराड़कर ने भी हजारों कारतूस अपने किसी परिचित के यहाँ छुपा दिये। किसी मुखबिर द्वारा सुराग मिलते ही कलकत्ता पुलिस ने श्री पोद्दार की गद्दी पर छापा मारा और कुछ कारतूस बरामद कर लिये। श्री पोद्दार पर "राजद्रोह" का आरोप लगाया गया और इन्हें गिरफ्तार कर लिया गया।

श्री हनुमानप्रसाद पोद्दार, ज्वालाप्रसाद कनोड़िया, ओंकारमल सर्राफ तथा फूलचन्द चौधरी इन चारों अग्रवंशी क्रांतिकारी युवकों को गिरफ्तार करने के बाद शुरू में दो सप्ताह तक कलकत्ता के "डुरान्डा हाउस जेल" में कैद रखा गया। इन 15 दिनों में इन चारों कैदियों को अलग-अलग बैंरकों में बंद रखकर खुफिया पुलिस ने पोद्दार आदि सभी लोगों को फांसी चढ़ाने, कालेपानी भेजने, पत्नी को अपमानित करने आदि यातनाओं की धमकियाँ देकर क्रांतिकारियों की जानकारी करनी चाही। बिजली का करंट आदि लगाकर भी मुख खुलवाने की चेष्टा की गई। लेकिन पोद्दार जी या

उनके किसी साथी ने पुलिस के लालच, आतंक व धमकियाँ देने के बावजूद कोई भेद नहीं दिया।

सरकार ने उन्हें अत्यन्त खतरनाक "षड़यन्त्रकारी" तथा "राजद्रोही" घोषित कर दिया और इन चारों राष्ट्र भक्त युवकों को "अलीपुर जेल" में स्थानान्तरित कर दिया गया। सुविख्यात पत्रकार तथा राजस्थान की महान् विभूति पं. झाबरमल शर्मा जो उन दिनों कलकत्ता में रहते थे, उन्होंने इन चारों को अलीपुर जेल में भोजन आदि भिजवाने की व्यवस्था कराई थी। अलीपुर जेल में कुछ दिन रखने के बाद "भारत रक्षा अधिनियम" के अन्तर्गत हनुमानप्रसाद जी पोद्दार को शिमला पाल (बांकुडा) जिला में नजरबन्द कर दिया गया। वे लगभग 21 माह जेल में नजरबन्द रहे। नजरबन्दी के दौरान भाई जी के जीवन में अनोखा परिवर्तन होता चला गया। उन्होंने वहाँ के एकान्त जीवन का "साधना" के रूप में लाभ उठाया। वे सवेरे ब्रह्म मुहूर्त में तीन बजे उठ जाते "हरे राम" षोड्स मंत्र का तीस माला जाप करने के बाद शौच-स्नान से निवृत्त होते। स्नान तथा संध्या-वन्दन के पश्चात "श्री विष्णु सहस्त्रनाम" का पाठ करते। इसके बाद भगवान "श्री ध्रुवनारायण" की आकृति का ध्यान करते। उन्हें चौबीस घन्टों में से नौ-नौ घन्टे तक अखण्ड साधना करने का अभ्यास हो गया था। इससे उन्हें अपने हृदय पटल पर साक्षात् विष्णु की मनोहारी मूर्ति विराजमान दिखाई पड़ने लगी थी।

भाई जी ने शिमला पाल में साधना तथा शास्त्रों के अध्ययन के साथ-साथ मरीज़ों की सेवा का कार्य भी करने लगे। सरकार की ओर से एक चिकित्सक वहाँ मरीजों की जांच करने आते थे, उनके मार्ग दर्शन में भाईजी ने होम्योपैथिक औषधियों का ज्ञान प्राप्त किया तथा बाहर से कुछ औषधियाँ तथा पुस्तकें मंगवा लीं। उन्होंने वहाँ के ग्रामीण क्षेत्र में रहने वाले रोगियों को औषधियाँ देने तथा उनकी सेवा करने का कार्य आरम्भ कर दिया। नजरबन्दी की 21 माह की लम्बी अवधि में उन्होंने हजारों व्यक्तियों को रोग मुक्त किया, उनकी सेवा की तथा साथ-साथ

उन्हें भगवत्नाम-जाप, संकीर्तन तथा गीता-रामायण के अध्ययन की प्रेरणा देकर उनके कल्याण का मार्ग प्रशस्त किया। 21 माह बाद जब उन्हें बंगाल छोड़ने का आदेश मिला तो शिमला पाल क्षेत्र के हजारों ग्रामीणों ने उन्हें अश्रुपूर्ण नेत्रों से विदाई दी। ग्रामीण उन्हें हृदय से अपना 'प्रेरणा स्रोत' तथा 'मुक्तिदाता' मानने लगे थे। भाई जी ने सेवा तथा सद् मार्ग की प्रेरणा देकर अपनी अमिट छाप छोड़ी थी।

पर्याप्त प्रमाण न मिलने पर उन्हें जेल से मुक्त तो कर दिया गया किन्तु सरकार उन्हें खूंखार क्रांतिकारी समझती थी, इसलिये उन्हें बंगाल से निष्कासन का आदेश देकर उन पर पाबंदी लगाई गई कि वे बिना राजकीय अनुमति के बंगाल की सीमा में प्रवेश नहीं कर सकेंगे। 21 माह की लम्बी नजरबंदी और बंगाल से निष्कासन के आदेश ने श्री हनुमान प्रसाद पर कहर बरसाने जैसा कार्य किया। उनका समस्त व्यापार तो चौपट हो ही गया था, साथ ही काफी कर्ज भी चढ़ गया था, जिसे वे 20 वर्षों में अथक परिश्रम कर उतार पाये।

भाई श्री हनुमान प्रसाद जी पोद्दार के मौसेरे भाई अग्रसमाज की महान् विभूति सेठ श्री जयदयाल जी गोयन्दका थे जो चूरू (राजस्थान) के निवासी थे। इनका व्यापार बांकुड़ा (बंगाल) में था। जब बाकुंडा के निकट शिमला पाल में पौने दो वर्ष तक पोद्दार जी नजरबन्दी के जीवन में रहे तब सेठ जी इनके लिए खाद्य-सामग्री भेजा करते थे। नजरबन्दी से मुक्त होकर पोद्दार जी मुम्बई चले गए तब पोद्दार जी ने सेठ जी को सत्संग के लिए मुम्बई आमंत्रित किया और वहाँ इनके सम्बन्ध और भी प्रगाढ़ हो गये।

गीता प्रेस के निर्माण तथा विकास की भी एक विचित्र गाथा है। श्री जयदयाल जी गोयन्दका एवं श्री हनुमानप्रसाद जी पोद्दार इन दो कर्मठ महापुरुषों के निष्ठापूर्ण समर्पित जीवन ने "कल्याण" तथा "गीता प्रेस" के माध्यम से पूरे संसार में भक्ति-भागीरथी प्रवाहित कर दी, यह स्वर्णाक्षरों में लिखी जाने वाली गाथा है।

पूर्व संस्कारों के फलस्वरूप गोयन्दका जी बचपन से ही गीता-साधना में लगे हुए थे। 18 वें अध्याय के श्लोक संख्या 68, 69 को मनन करते जिसमें भगवान ने कहा– "जो पुरुष इस रहस्ययुक्त गीता शास्त्र का मेरे भक्तों में प्रचार करेगा उससे बढ़कर मेरा प्रिय कार्य करने वाला मनुष्यों में न कोई है और न उससे बढ़कर कोई होगा।"

श्री गोयन्दका जी ने निश्चय किया कि मैं भी ऐसा ही बनूँ। इन्होंने अपने भावानुसार गीता की व्याख्या लिखकर कलकत्ता के वणिक प्रेस से पाँच हजार पुस्तकों का संस्करण छपवाया, फिर दूसरा संस्करण छपवाया लेकिन उनमें मुद्रण की अशुद्धियों के कारण इन्होंने अपना प्रेस स्थापित करने पर विचार किया। सेठ जी के मित्र श्री घनश्याम दास जी जालान ने सुझाव दिया कि यदि प्रेस की स्थापना गोरखपुर में की जाये तो उसकी व्यवस्था मैं अपने व्यापार के साथ कर सकता हूँ। सेठजी ने सुझाव मानकर गोरखपुर में प्रेस खोलने के लिए सन् 1922 में "गोविंद भवन कार्यालय" नाम से एक ट्रस्ट सोसाइटी रजिस्ट्रेशन एक्ट के अन्तर्गत पंजीकृत कराया और मई, सन् 1923 में गीताप्रेस की गोरखपुर में स्थापना कर दी गई। गीता के छोटे-बड़े कई संस्करण प्रकाशित होने लगे। लेकिन गोयन्दका जी की भावना के अनुरूप प्रगति नहीं हो पाई। भाई हनुमान प्रसाद जी सम्पर्क में थे ही, उनको इसकी बागडोर अपने हाथ में लेने के लिए आग्रह किया गया। भाईजी ने अपने आपको इस कार्य हेतु समर्पित कर दिया।

श्रीहनुमान प्रसाद जी पोद्दार जब मुम्बई आये तो अपने सामाजिक संस्कारों के कारण "मारवाड़ी अग्रवाल सभा" से जुड़कर सेठ जमनालाल बजाज के साथ समाज सेवा कार्यों में लग गये। इन दिनों एक वृद्ध करोड़पति सेठ द्वारा सोलह वर्षीय कन्या से विवाह रचाने को भाई जी ने चुनौती दी और उसका अनमेल विवाह रुकवाया। सन् 1919 में "अग्रवाल सभा" का प्रथम अधिवेशन हैदराबाद में हुआ उसमें आपने नारी उद्धार, बाल-विवाह रोकने, अनमेल विवाहों पर पाबंदी, विधवाहों व असहाय वर्ग की सहायता सेवा जैसे प्रकल्पों तथा अन्य समाज में बढ़

रही कुरीतियों के विरुद्ध प्रस्ताव पारित कराये तथा इनके लिए जन-जागरण अभियान में लग गये। सन् 1920 में अग्रवाल सभा मुम्बई के आप महामंत्री बनाये गये। सन् 1925 में फतेहपुर (राजस्थान) में अग्रवाल मारवाड़ी सभा का 7 वाँ अधिवेशन आयोजित करवाया जिसमें वैश्य समाज को गोपालन तथा प्राचीन मन्दिरों के जीर्णोद्धार करने के प्रस्ताव पारित किये गये और इन पर कई स्थानों पर कार्य आरम्भ करवाये। गौरक्षा आन्दोलन के लिए आवाज उठाई और सक्रिय रूप से ऐसी संस्थाओं में योगदान करने लगे।

श्री पोद्दार जी की आध्यात्मिक व कल्याणकारी प्रवृत्तियों से प्रभावित होकर मुम्बई में खेमराज श्रीकृष्ण दास जी ने "कल्याण" नामक पत्रिका के प्रकाशन की योजना बनाई और अगस्त 1925 को प्रथम "कल्याण" विशेषांक निकाला। इन्हीं दिनों गीता प्रेस के संस्थापक गोयन्दकाजी का संदेश मिला और गीता के सांथ-साथ "कल्याण" नाम से प्रकाशित पत्रिका के प्रकाशन का कार्य श्री पोद्दार जी ने सम्हाल लिया और अगस्त सन् 1926 से गीताप्रेस गोरखपुर से कल्याण का प्रकाशन शुरू हो गया। तेरह महीने "कल्याण" मुम्बई से निकला।

प्रारम्भ में गोयन्दका जी द्वारा लिखी दो पुस्तकों "प्रेम भक्ति प्रकाश" और "ध्यानावस्था में प्रभु से वार्तालाप" में आवश्यक भाषा एवं मूल भावों का समावेश कर प्रकाशित करवाया। इन पुस्तकों में अत्यन्त स्पष्ट और साहित्यिक शैली में प्रभावशाली अभिव्यक्ति की गई थी, जो पोद्दार जी की साहित्यिक योग्यता का परिचायक था।

श्री हनुमान प्रसाद जी ने अनुभव किया कि भारत का आध्यात्मिक साहित्य संस्कृत भाषा में होने के कारण जन-सामान्य के उपयोग में नहीं आता तो आपने गीता, महाभारत, श्रीमद्भागवत, वाल्मीकि रामायण उपनिषद्, पुराण आदि ग्रंथों का हिन्दी में अनुवाद करवाकर प्रकाशित कर देश-विदेश में प्रचार किया।

साहित्य प्रकाशन का कार्यभार पोद्दार जी के संभालने पर कार्य तीव्र

गति से बढ़ने लगा। कल्याण के दूसरे वर्ष से पहला अंक विशेषांक के रूप में प्रकाशित होने लगा तथा पहला विशेषांक था "श्रीभगवन्नामांक'। इसके प्रकाशित होते ही आशातीत सफलता मिली एवं ग्राहक संख्या सोलह सौ से बढ़कर पाँच हजार हो गयी। इसके पश्चात् तो एक-से-एक बढ़कर विशेषांक निकलने लगे। साधारण अंकों में भी ठोस आध्यात्मिक सामग्री प्रकाश में आने लगी। हिन्दी-अहिन्दी सभी प्रान्तों में "कल्याण" समान रूप से समादृत हुआ।

"कल्याण" के विद्युत गति से विकास होने का मूल कारण था श्री पोद्दार जी का दिव्य व्यक्तित्व। महात्मा गाँधी की सलाह से प्रारंभ से ही उन्होंने यह निर्णय ले लिया कि 'कल्याण' में विज्ञापन तथा पुस्तक-समीक्षा स्वीकार नहीं की जायेगी एवं इस पर वे अटल रहे। बिना विज्ञापन के इसकी ग्राहक संख्या आज के नास्तिक युग में पौने दो लाख तक पहुँचाकर श्री पोद्दार जी ने हिन्दी पत्रकारिता जगत् में एक नया कीर्तिमान स्थापित किया। किसी भी साम्प्रदायिक खंडन-मंडन से वे सर्वथा दूर रहे। किसी भी सिद्धान्त का खंडन उन्हें अभीष्ट नहीं था। सुन्दर चित्रों ने भी 'कल्याण' के चार चाँद लगाये। सिद्धान्त पर वे इतने दृढ़ रहे कि उसके अनुरूप सामग्री न हो तो बड़े-से-बड़े लेखक के लेख में भी वे संशोधन कर देते थे। समाज के विभिन्न वर्गों के उपयोगी लेख देने की उन्होंने सतत् चेष्टा रखी। हिन्दी साहित्य में आध्यात्मिक ऐसे ठोस लेख पहले कभी इस मात्रा में प्रकाशित नहीं हुए थे।

'कल्याण' के माध्यम से श्री पोद्दार जी ने हिन्दी-साहित्य को समृद्ध बनाया उसमें भी सर्वोपरि स्थान है, उनके विशेषांकों का। अपने जीवन-काल में उन्होंने 44 विशेषांक निकाले, जो विषय-चयन, सामग्री उत्कृष्टता आदि सभी दृष्टि से एक-से-एक अनुपम सिद्ध हुए। उनके इस अध्यवसाय का ही परिणाम था कि हिन्दी साहित्य के विद्वत्वर्ग उन्हें अपने विषय के विश्वकोष कहने लगे एवं उनमें प्रकाशित सामग्री को प्रमाण के रूप में प्रस्तुत करने लगे।

'कल्याण' तथा गीताप्रेस के द्वारा राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रचार का बहुत ही ठोस कार्य हुआ। कल्याण के कुल ग्राहक संख्या में लगभग एक तिहाई भाग अहिंदी भाषी प्रदेशों के ग्राहकों का था।

'कल्याण' की भाँति गीताप्रेस से प्रकाशित अन्य पुस्तकें भी अहिंदी भाषी प्रदेशों में समाहित हुई। इनके माध्यम से ऐसी ठोस एवं गम्भीर सामग्री हिन्दी में प्रकाशित होने लगी, जिसका अन्य भाषाओं में अभाव था। साथ ही यह ध्यान रखा गया कि भाषा क्लिष्ट न होकर सरल रहे, जिससे गम्भीर विषय भी सरलतापूर्वक हृदयग्राही बन जाये। इसका फल यह हुआ कि कल्याण तथा श्री पोद्दार जी द्वारा लिखित ग्रन्थ पढ़ने के लिए लाखों अहिन्दी भाषी लोग हिन्दी का अध्ययन करने लगे। दक्षिण भारत में जहाँ हिन्दी भाषा के प्रति जन कटुता का भाव है, वहाँ के लोग भी 'कल्याण' एवं पोद्दारजी के ग्रन्थ पढ़ने के लिए हिन्दी का अध्ययन करने लगे। हिन्दी के प्रचार के लिये इससे उत्तम मार्ग हिन्दी साहित्य के इतिहास में शायद ही किसी भाषा का रहा हो।

मूल्य की दृष्टि से देखा जाये तो कल्याण के प्रथम वर्ष के बारह अंकों की कुल पृष्ठ संख्या 384 थी तथा वार्षिक शुल्क 3 रु. था। पोद्दारजी के नित्यालीलालीन होने के पूर्व सन् 1970 के 44वें वर्ष का वार्षिक शुल्क 9 रु. था तथा पृष्ठ संख्या 1356 लगभग साढ़े तीन गुनी। प्राकरान्तर से कल्याण का वार्षिक शुल्क पोद्दारजी ने वही रखा जो 44 वर्ष पहले था, जबकि इन 44 वर्षों में जीवनयापन की वस्तुओं के मूल्य 1000 प्रतिशत से अधिक बढ़े हैं। बिना विज्ञापन के पत्रकारिता जगत में यह एक आश्चर्यजनक कीर्तिमान है। यही बात गीता के संस्करणों के विषय में है।

श्री पोद्दारजी ने अनुभव किया कि हमारा विशाल महत्त्वपूर्ण साहित्य संस्कृत भाषा में होने से वह जनसाधारण के लिये उपयोगी नहीं हो रहा है। इस कमी की पूर्ति के लिए उन्होंने संस्कृत के विशेष ग्रन्थों का सम्पूर्ण अनुवाद या संक्षिप्त अनुवाद हिन्दी में प्रकाशित किया। इनमें प्रमुख है

आचार्यों द्वारा गीता पर लिखे भाष्य, सम्पूर्ण महाभारत, श्रीमद्भागवत्, श्रीमद्बाल्मीकीय रामायण, उपनिषद, ब्रह्मसूत्र, पातंजलि योग दर्शन एवं 'कल्याण' के विशेषांक के माध्यम से संक्षिप्त पद्मपुराणांक, मार्कण्डेय ब्रह्मपुराणांक, स्कन्दपुराणांक, नारद-विष्णु-पुराणांक, देवीभागवतांक, योगवसिष्ठ-अंक, शिवपुराणांक, ब्रह्मवेदर्त्तपुराणांक, अग्निपुराण-गर्ग-संहितांक, नरसिंह-पुराणांक आदि।

हमारे पुराण-साहित्य को हिन्दी में उपलब्ध कराने का श्रेय श्री पोद्दारजी को ही है। इस तरह हिन्दी साहित्य की एक बड़ी कमी की पूर्ति करके उन्होंने एक ऐतिहासिक कार्य किया।

पोद्दारजी के जीवनकाल में लगभग पौने छः सौ पुस्तकें विभिन्न आकार प्रकारों में मुद्रित होकर देश-विदेश में देवी-सम्पदा का प्रचार-प्रसार करने लगी थीं। बहुत सी पुस्तकों के संस्करण लाखों की संख्या में पहुँच गये थे तथा श्रीमद्भगवद्गीता एवं श्रीरामचरितमानस के विभिन्न आकारों के संस्करण करोड़ों की संख्या में पहुँच गये। पुस्तकें की भाँति गीताप्रेस ने भगवान् के विभिन्न स्वरूपों एवं देवी-देवताओं के हजारों प्रकार के रंगीन चित्र प्रकाशित किये हैं, जिनके माध्यम से लोगों को अपनी उपासना में बड़ी सहायता मिली। प्रत्येक चित्र श्री पोद्दारजी की भावना एवं अनुभूति का प्रसाद है। सीता, राधा, पार्वती आदि के चित्रों में यह ध्यान रखा गया कि उद्दीपक न होकर मातृभाव की श्रद्धा-भक्ति उत्पन्न करें। चित्रों में वस्त्र, आभूषण तथा भाव-भंगिमा इसी दृष्टिकोण से रखे गये। इस प्रकार गीताप्रेस की अपनी विशिष्ट शैली बनी, जिसे 'पोद्दार चित्रशैली' की संज्ञा दी जा सकती है।

हिन्दी के ग्रन्थों में श्री पोद्दारजी द्वारा प्रमुख रूप से तुलसी एवं सूरदास के साहित्य का सम्पादन तथा प्रकाशन हुआ। अन्य लेखकों की पुस्तकें भी उनके सम्पादकत्व में प्रचुर मात्रा में प्रकाशित हुई। गोस्वामी तुलसीदासजी के ग्रन्थों में आज भारत में जो घर-घर प्रचार हुआ इसका श्रेय एकमात्र पोद्दारजी को दिया जा सकता है। उनके द्वादश ग्रन्थों के

अलग-अलग संस्करण हिन्दी साहित्य में जितनी मात्रा में श्री पोद्दारजी ने प्रचारित किये वे अभूतपूर्व थे एवं भविष्य में भी उससे अधिक प्रचार कोई कर सकेगा यह संदेहास्पद है।

आपने अहिंसा के व्यावहारिक प्रचार के लिए चर्मरहित जूतों, लाख रहित चूड़ियों एवं आयुर्वेदिक औषधियों के विक्रय की गोविन्द भवन में व्यवस्था की।

इतने बड़े कार्य के सम्यक संचालन के लिए अर्थ की समुचित व्यवस्था होना परमावश्यक था। इन्होंने प्रारम्भ से ही अनुभव किया कि चन्दे या दान पर चलने वाली संस्थाओं का जीवन सुदीर्घ नहीं होता। चन्दे पर निर्भर रहने से न तो आय का स्थायी स्रोत रहता है न उनके सिद्धान्त सदैव स्थिर रहते हैं। दानदाता अर्थ के बल पर संस्था की नीति को प्रभावित करते रहते हैं। इसलिए इन विभूतिद्वय ने प्रारम्भ से ही ऐसी नीति अपनायी कि अर्थ की दृष्टि से गीताप्रेस की आधारशिला सुदृढ़ रहे। साथ ही पुस्तकों को लागत से भी कम मूल्य पर उपलब्ध कराना था, जिससे सस्ती रहने से प्रचार अधिकाधिक होता रहे। इन सपनों को साकार करने के लिये टीटागढ़ पेपर मिल से कागज की एजेंसी ली गई। साथ ही अहिंसा के व्यावहारिक प्रचार के लिये चर्मरहित जूतों की दुकान, लाख रहित चूड़ियों की दुकान तथा आयुर्वेद औषधियों की दुकान कलकत्ता में गोविन्द भवन में खोली गयीं। इस अर्थ नीति का ही परिणाम था कि गीताप्रेस की प्रगति के लिये कभी किसी से दान नहीं लिया गया। 'न लाभ, न हानि' के सिद्धान्त को स्वीकार करने पर जब कार्य का विस्तार अधिक होने से घाटा लगने लगा तो हाथ से बुने कपड़ों का व्यापार खोला गया। आज भी गीताप्रेस की अधिकांश पुस्तकें लागत से कम मूल्य पर ही विक्रय होती हैं और इस घाटे की पूर्ति कपड़े के व्यापार से होती है। इस सुदृढ़ दूरदर्शी नीति के लिए जिसमें अर्थ व्यवस्था के लिये न दूसरों की ओर ताकना पड़े, न सिद्धान्तों का विसर्जन करना पड़े। श्री गोयन्दकाजी तथा श्री पोद्दारजी सदैव वन्दनीय एवं अनुकरणीय रहेंगे।

यह गाथा अधूरी ही रहेगी जब तक इन दोनों महापुरुषों के सहयोगियों के बारे में कुछ न लिखा जाये। इनके विलक्षण व्यक्तित्व से आकर्षित होकर कई निस्पृह एवं कर्मठ व्यक्ति गीताप्रेस में सेवा भावना से आ गये थे। श्री घनश्यामदास जी जालान तो आजीवन निष्ठापूर्वक कार्य सँभालते रहे। इनके अतिरिक्त मुख्य थे, श्री सुखदेवजी अग्रवाल, श्री गंगाप्रसाद जी अग्रवाल व श्री शंभुनाथजी चतुर्वेदी। ये लोग अपने-अपने विभागों का कार्य इतनी निपुणता से देखते थे जो हजारों रुपये मासिक के वेतन भोगी भी नहीं देख सकते। ये महानुभाव समर्पित रहे और कोई भी वेतन न लेकर केवल प्रेस के बासे में सादा भोजन करना और आवश्यकता पूर्ति के लिये वस्त्र ग्रहण करते हुए दिन-रात कार्य में लगे रहते थे। इनके अतिरिक्त प्रारम्भ में कल्याण के ग्राहकों की संख्या वृद्धि करने तथा पोद्दारजी के इशारे से हर एक कार्य करने में श्री गम्भीरचन्द जी दुजारी का नाम उल्लेखनीय है। इनका तथा ऐसे ही अन्य महानुभावों का विवरण यहाँ स्थानाभाव से नहीं दिया जा सकता।

इन दोनों महापुरुषों ने आधार स्तम्भ के रूप में इतनी ठोस और गहरी नींव डाली कि श्री गोयन्दकाजी को ब्रह्मलीन हुए लगभग 26 वर्ष हो गये और श्री पोद्दारजी को नित्यकालीन हुए 20 वर्ष होने जा रहे हैं तथापि गीताप्रेस तथा कल्याण उन्नतिक पथ पर हैं। कल्याण की ग्राहक संख्या में वृद्धि हुई है और प्रेस में दो बड़े आकार की अत्याधुनिक ऑफसेट मशीनें लग गई हैं। जब तक व्यवस्था इनकी नीतियों पर आधारित रहेगी उन्नति होती रहेगी। ऐसा विश्वासपूर्वक कहा जा सकता है कि हमारी भावी पीढ़ियाँ इन दोनों विभूतियों को वैसे ही वन्दन करेगी जैसे आज शंकराचार्य, चैतन्य महाप्रभु, तुलसीदासजी प्रभृति संतों को करती है।

सन् 1937 की बात है जब भाईजी का मन मुम्बई जैसे शहरों के भौतिक प्रपंचों से उपराम होकर पारमार्थिक साधना की ओर बढ़ रहा था। भाईजी के एक मित्र साधन-संपन्न, सुदृढ़ बलिष्ठ शरीर के थे। अचानक

वे बीमार हुये और शरीर छूट गया। भाईजी शोकमग्न अर्थी के साथ श्मशान घाट गये। मित्र का सुन्दर व बलिष्ठ शरीर जिसे वे मित्र दिनभर संभालते थे, कुछ ही क्षणों में जलकर राख हो गया। संसार का यह नश्वर रूप देखकर भाईजी को वैराग्य हो गया। जगत में हम स्वजनों-मित्रों की मृत्यु के प्रसंग देखते रहते हैं पर हम सब कुछ समझते हुए भी नहीं बदलते। भाईजी ने उक्त घटना से प्रेरणा लेकर शेष जीवन गीताप्रेस, गोरखपुर की सेवा में लगा दिया। उनके प्रेरणात्मक जीवन से आज कितने ही प्राणी लाभान्वित हो रहे हैं।

श्रद्धेय भाई जी पदों तथा उपाधियों आदि के मोह से सदैव दूर रहे। भाईजी की धर्म तथा साहित्य सेवा को देखते हुए गोरखपुर के अंग्रेज कलैक्टर ने उन्हें "रायसाहब" की उपाधि से अलंकृत किया, जिसे भाईजी ने विनम्रतापूर्वक अस्वीकार कर दिया। इसके बाद उन्हें "रायबहादुर" की उपाधि देनी चाही, उसे भी आपने अस्वीकार कर दिया। भाईजी ने विनम्रतापूर्वक कहा कि मैं "उपाधि की व्याधि" से मुक्त रहने का संकल्पित हूँ, इसलिए कृपया मेरे संकल्प में बाधा न डालें। इस प्रकार भाईजी ने कभी भी महत्वाकांक्षा को पास नहीं फटकने दिया।

सन् 1936 में गोरखपुर में भीषण बाढ़ आ गई और हजारों व्यक्ति बेघरबार हो गए। भाईजी बाढ़ पीड़ितों की सहायता के लिए तन-मन-धन से जुटे रहे। पंडित जवाहरलाल नेहरू कांग्रेस के नेता के रूप में उस क्षेत्र का दौरा करने आए तो उनके लिए कार की जरूरत पड़ी। गोरखपुर के अंग्रेज कलैक्टर ने वहाँ के रईसों को चेतावनी दी हुई थी कि यदि कांग्रेस को किसी प्रकार का सहयोग दिया तो उनकी खैर नहीं होगी। इससे आतंकित कोई रईस नेहरूजी को कार देने के लिए तैयार नहीं हुआ। स्वाधीनता सेनानी बाबा राघवदासजी ने भाईजी से कहा। भाई जी थे निर्भीकता की प्रतिमूर्ति। तुरन्त कार दे दी और बोले मुझ फक्कड़ का अंग्रेज कलैक्टर क्या बिगाड़ लेगा।

जब महात्मा गांधी के सुपुत्र देवदास गांधी (सम्पादक-हिन्दुस्तान

टाइम्स) गिरफ्तार कर गोरखपुर जेल में बंदी थे और बीमार हो गए तब गांधीजी ने भाईजी को उनकी देखभाल का जिम्मा सौंपा। भाईजी निरन्तर जेल पहुँचकर देवदास की देखभाल करते रहे।

भाईजी को अगाध भगवत-प्रेम था, फलतः उन्हें भगवत का साक्षात्कार प्राप्त हो गया था। भाईजी के लेखन का उद्देश्य समाज में नैतिक मूल्यों के महत्त्व को प्रतिपादित करना तथा समाज को भगवत-भक्ति तथा सद्मार्ग की ओर प्रेरित करना था। उन्होंने अपने ग्रन्थ "पूर्ण समर्पण" में लिखा है कि "मनुष्य जीवन का प्रधान उद्देश्य है भगवत साक्षात्कार या भगवत-प्रेम। इसी में जीवन की सार्थकता है। सद्-साहित्य मनुष्य की सुषुप्त-सात्विक भावनाओं को जगाकर उसे भगवतमुखी बना देता है। भाईजी उच्च कोटि के कवि, लेखक तथा साहित्य साधक थे। भगवान श्रीकृष्ण तथा अपनी आराध्या राधाजी की भक्ति में तन्मय होकर उन्होंने उनकी लीलाओं के दर्शन अपनी वाणी, भजनों तथा व्याख्यानों के द्वारा कराये हैं। इनके प्रभावी भजनों का संग्रह पाँच भागों में "पत्र-पुष्प" नाम से प्रकाशित हुए हैं। "प्रार्थना-पियूष" "हरि प्रेरित" "हृदय की वाणी", "श्री राधा माधव रससुधा" "बृजरस-माधुरी", "श्रीराधा-माधव चिन्तन" आदि भाईजी द्वारा विरचित अनुपम संग्रह हैं।

दहेज के नाम पर नारी उत्पीड़न से संबंधित "विवाह में दहेज" प्रेरक पुस्तक लिखीं। शिक्षा कैसी हो, इस पर उन्होंने "वर्तमान शिक्षा", "नारी शिक्षा' जैसी पुस्तकें लिखीं। भाईजी उच्च कोटि के भक्तहृदय कवि थे, उनके लिखे भक्ति गीत "पद्य रत्नाकर" ग्रन्थ में संग्रहित हैं। भाईजी राधा-माधव के दर्शन-प्रेम में तल्लीन हो जाते थे। सुध-बुध खो बैठते थे।

एक बार भाईजी की धर्म चर्चा श्री सागरमल जी गनेड़ी वाले के साथ हो रही थी। राम के नाम की व्याख्या करते-करते भाईजी का बाह्य ज्ञान (चेतना शून्य) जाता रहा और अन्तर ज्ञान से राम लक्ष्मण-सीता के दर्शन करने में विमग्न हो गये। सागरमल जी ने उन्हें चेतना करानी चाही लेकिन रातभर आन्तरिक दर्शन में लीन रहे। प्रातः सागरमलजी ने उन पर

जल की धाराएँ डालकर जागृत किया और भगवत कीर्तन सुनाया। भाईजी को तब बाह्य ज्ञान हुआ और अन्तर ज्ञान में हुऐ दर्शनों की घटना का बखान किया।

भाईजी भगवत नाम संकीर्तन महोत्सवों के माध्यम से भक्ति-भागीरथी को प्रवाहित करने का प्रयास करते थे। सन् 1930 में तीर्थराज प्रयाग में, सन् 1934 में बदायूं जिले में गंगा बांध पर, सन् 1935 में पुनः प्रयाग में बृहत नाम संकीर्तन आयोजित कराये थे। भाईजी ने "श्री राधा-अष्टमी" आदि पर्व देशभर में धूमधाम से मनाने आरम्भ किये। गोरखपुर में बहुत विशाल समारोह आज भी प्रतिवर्ष मनाया जाता है।

सन् 1955 में भाईजी के साथी "कल्याण" के सम्पादक श्री सुदर्शनसिंह नेपाल स्थित मुक्तिधाम-दामोदर-कुण्ड की यात्रा को जाने वाले थे। जाते समय भाईजी को प्रणाम करने के लिए आये। भाईजी ने आशीर्वाद के स्थान पर उन्हें जाने से रोक लिया। दूसरे दिन भाईजी ने बताया कि जिस हवाई जहाज से इनको जाना था वह दुर्घटनाग्रस्त हो गया और उसके सारे यात्री मारे गये। यह वाकया निश्चय ही भाईजी के ईश्वरीय चमत्कारों का परिणाम था। भाईजी को अग्रिम रूप से आभास हुआ और यात्रा पर जाने से उन्हें रोका और उनके प्राण बचाने थे, सो वे बच गये।

भाईजी ने कितने व्यक्तियों की प्राणों की रक्षा की, इसकी गणना सम्भव नहीं है क्योंकि ऐसे प्रसंग वे प्रायः गुप्त ही रखते थे। भाईजी के एक कार्यकर्ता सेवानिवृत्त हुए और वे रोग तथा अभावों से ग्रसित हो गये। उन्होंने मन से निराश होकर गंगा में जल-समाधि लेने का निश्चय किया। तभी उन्हें ज्ञात हुआ श्री पोद्दार जी आये हुये हैं, दर्शनों को जा पहुँचे। भाईजी ने उनकी हालत देखकर कहा– "आत्महत्या करना पाप ही नहीं, महापाप है। इससे दुःखों से छुटकारा नहीं मिलता वरन् यह नवीन भयानक दुःखों को निमंत्रण देता है। प्रेत-योनि मिलती है और प्राणी को कठोर कष्ट उठाने पड़ते हैं। कर्मों का छुटकारा तो उनको भोगकर समाप्त कर देने पर ही मिलता है। भगवान की कृपा पर विश्वास कीजिए, निश्चय ही आपकी

प्रार्थना से आपके कष्ट का निवारण हो जायेगा।" भाईजी ने उनके भोजन, आवास और दवा का प्रबंध कर उन्हें धैर्य बंधाया। समय पर वे निरोग तथा आर्थिक सम्पन्नतापूर्ण हो गये। भाईजी की दृढ़ निश्चयी भगवत् भक्ती-प्रेरणा का यही अनूठा परिणाम व्यक्तियों को लाभान्वित करता रहा, जो अप्रमेय है।

भारत विभाजन के दौरान सन् 1947 में नोआखाली (पूर्वी बंगाल) में जब हिन्दुओं का भीषण नरसंहार किया गया, हिन्दू महिलाओं पर अत्याचार ढाये गये तो भाईजी का हृदय द्रवित हो उठा। महामना पं. मदन मोहन मालवीय जी महाराज के हृदय को तो इन घटनाओं से इतना गहरा आघात लगा कि उनका देहान्त हो गया। भाईजी ने श्रीकृष्णचन्द्र अग्रवाल, श्रीकृष्णदास बंगाली तथा श्री गिरधारी बाबा को पीड़ित हिन्दुओं की सहायतार्थ नोआखाली भेजा। भाईजी ने महामना मालवीय जी की पावन स्मृति में "कल्याण" का विशेष अंक निकाला, लेक़िन उसमें वर्णित वास्तविकताओं के क़ारण उसे आपत्तिजनक घोषित कर जब्त कर लिया।

सन् 1965 में भाईजी ने मथुरा में श्रीकृष्ण जन्मस्थली पर भागवत भवन निर्माण के लिए शिलान्यास किया था। भाईजी ने चारों धामों में "वेद-भवन" स्थापित करवाये। जहाँ वैदिक ऋचाओं के अध्ययन, सस्वर पाठ आदि की नियमित शिक्षा दी जा रही है। धर्मप्राण भारत में "गौहत्या" को कलंक मानते थे। उन्होंने कल्याण का "गौ अंक" प्रकाशित कर गौ-रक्षा आन्दोलन को सक्रिय सहयोग दिया।

श्रीराम जन्म-भूमि (अयोध्या) की मुक्ति के लिए उन्होंने कहा था कि "आज चाहे देश स्वतंत्र है, गणराज्य है। हिन्दू-मुसलमान का कोई प्रश्न नहीं है तब यह उचित है कि हिन्दुओं के उन पवित्र स्थानों को जिन्हें जातिवाद के आधार पर विध्वंश कर दिये गये थे अब उनको लौटा दिया जायें तथा उनका धर्म-नीति से पुनर्निर्माण करवा दिया जाये, इसी में सभी का कल्याण है। पर वे मानेंगे या नहीं, भगवान जाने। पर वे नहीं मानेंगे तो काल उन्हें मनवा देगा। धनिकों को इस पावन कार्य के लिए धन देना

चाहिए। जीवन किसी का स्थायी नहीं लेकिन उनका धन बना रहेगा। ऐसे सुअवसर फिर कभी आयेगा या नहीं। अतः इस पावन कार्य में तन-मन और धन से जितना सहयोग दिया जा सके, देना चाहिए।''

दिनांक 22 मार्च 1971 का वह दिन निकट आ गया जब ''कल्याण'' तथा ''गीताप्रेस'' के माध्यम से पूरे विश्व में भक्ति की भागीरथी प्रवाहित करने वाली दिव्य विभूति तथा स्वातंत्र्य संग्राम के क्रांतिकारी सेनानी हमसे सदा के लिए दूर हो गये। ऐसे दिव्य महापुरुष पर समूचे विश्व के अग्रवाल समाज को सदैव गर्व रहेगा। सन् 1992 में भाईजी का शताब्दी वर्ष पूरे देश में मनाया गया और इस अवसर पर भारत सरकार ने भाईजी की स्मृति में दिनांक 23 सितम्बर, 1992 को एक रुपये के 6 लाख डाक टिकिट जारी किये। गोरखपुर में भाईजी की स्मृति में संस्थापित संस्थान कैंसर रोग की चिकित्सा एवं अनुसंधान के क्षेत्र में विशिष्ट उपलब्धि है।

आज हम लोगों के मन में धर्म-भावना जगाने, प्रभु के प्रति आत्म-विश्वास सुदृढ़ करने तथा विभिन्न मत-मतान्तरों में सामंजस्य स्थापित कर शील तथा सदाचारी, निष्ठावान बनने के लिए भाईजी के निर्देश स्मरणीय व अनुकरणीय हैं। आज उनके प्रतिष्ठान निर्बल न होने पायें इसी में समाज की उन्नति निर्भर है। भावी पीढी को इनके मार्गदर्शन, आदर्शों का चिन्तन-मनन करना ही उनके प्रति सच्ची श्रृद्धांजलि होगी। भाईजी सदैव स्मृति-पटल पर अमरत्व प्रदाने करते रहेंगे।

—*—

आदमी काम की अधिकता से नहीं, वरन् उसे भार समझकर अनियमित रूप से करने पर थकता है।

अनमोल वचन

मेरा कुछ नहीं है, मुझे कुछ नहीं चाहिये और मुझे अपने लिये कुछ नहीं करना है — ये तीन बातें शीघ्र उद्धार करने वाली होती हैं॥

* * *

संसार में ऐसी कोई भी परिस्थितिं नहीं है, जिसमें मनुष्य का कल्याण न हो सकता हो। कारण कि परमात्मा प्रत्येक परिस्थिति में समानरूप से विद्यमान हैं॥

* * *

घर में रहने वाले सभी लोग अपने को सेवक और दूसरों को सेव्य समझें तो सबकी सेवा हो जायेगी और सबका कल्याण हो जायेगा॥

* * *

चारों वर्णों और आश्रमों में श्रेष्ठ व्यक्ति वही है, जो अपने कर्तव्य का पालन करता है। जो कर्तव्यच्युत होता है, वह छोटा हो जाता है॥

जिस प्रकार आकाश में वृक्ष जितना ही ऊँचा उठे, उसकी कोई सीमा नहीं है, इसी प्रकार मनुष्य की उन्नति की भी कोई सीमा नहीं है॥

* * *

बुद्धि के अनुसार मन और मन के अनुसार इन्द्रियाँ होने से उत्थान होता है। परन्तु इन्द्रियों के अनुसार मन और मन के अनुसार बुद्धि बनाने से पतन होता है॥

अग्रविभूति, महान् समाजवादी चिंतक
डॉ. राममनोहर लोहिया

डॉ. राममनोहर लोहिया अग्रवाल समाज की एक ऐसी महान् विभूति थे, जिनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व को शब्दों में वर्णन करना असंभव प्रायः है। गांधी विचारधारा, सहयोग तथा समाजवाद की भावना को समझने-परखने तथा उसके विवेचन करने की समझ रखने वालों में आपका प्रमुख स्थान रहा था। आप जिस प्रकार से तुलनात्मक विवेचन करने में सक्षम थे, उससे कहीं अधिक प्रखर व निर्भीक भी थे। वे अपनी भावना व विचारों को अभिव्यक्त करने में किसी के सन्मुख नहीं हिचकिचाते थे।

डॉ. राममनोहर लोहिया ब्रिटिश साम्राज्य की जड़ हिला देने वाले सन् 1928 की क्रांति के नायक, समाजवादी चिंतक, स्वतंत्रता सेनानी का जन्म 23 मार्च 1910 को अकबरपुर, जिला फैजाबाद (उत्तर प्रदेश) में हुआ था। लोहिया जी के पिता श्री हीरालाल लोहिया कट्टर गांधीवादी थे, तथा गांधी जी के ही साथ रहते थे। इसी कारण उन्हें भी गांधी जी का सानिध्य सहज में ही प्राप्त हो गया था। इसलिए स्वाभाविक ही गांधी जी के चिन्तन, देशभक्ति की प्रेरणा उन्हें बचपन से मिल गई।

उन्हें उनकी प्रतिभा के अनुरूप शिक्षा प्राप्त करने की सुविधायें नहीं मिलीं, फिर भी वे शैक्षिक उपलब्धियाँ अर्जित करते रहे। डॉ. लोहिया ने 1916 में प्राथमिक शिक्षा टंडन पाठशाला अकबरपुर में तथा मिडिल

शिक्षा विश्वेश्वरनाथ हाईस्कूल में प्राप्त की थी। 1929 में कलकत्ते के विद्यासागर कालेज से ग्रेजुएशन करने के बाद वे उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए इंग्लैण्ड और जर्मन गए तथा अग्रवाल मारवाड़ी महासभा द्वारा प्रदत्त छात्रवृत्ति की सहायता से बर्लिन हुम्बोर्ट युनिवर्सिटी (जर्मन) से डाक्टरेट की उपाधि "नमक और सत्याग्रह" विषय पर 1932 में प्राप्त करने में सफल हुए। निर्धनता ने उनके जीवन को धैर्य व साहस के साथ परिस्थितियों का मुकाबला करने की क्षमता प्रदान की। वे परिस्थितियों से कभी हारे नहीं।

डॉ. लोहिया 1933 में भारत लौटे। 1934 में डॉ. लोहिया और कतिपय सहयोगियों ने मिलकर 'कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी" की स्थापना की। वे "कांग्रेस सोशलिस्ट" साप्ताहिक पत्र के प्रथम सम्पादक थे।

डॉ. लोहिया जर्मनी से लौटते हुए जब मद्रास में उतरे तो उनकी जेब में उतने पैसे भी नहीं थे कि वे रेल से कलकत्ता जा सकें, किन्तु उनमें प्रतिभा तथा योग्यता-के साथ आत्म विश्वास भी था। वे मद्रास के अंग्रेजी दैनिक 'हिन्दू' के कार्यालय में गए। वहीं बैठकर एक लेख लिखा और लेख स्वीकृत होने पर पारिश्रमिक प्राप्त कर कलकत्ता चल पड़े। वे आजीवन अविवाहित रहे। भूख, संकट, परेशानी सहना जैसे उनका स्वभाव बन गया था। उन्हें यदि प्रातः चाय, काफी, मूंगफली का नाश्ता मिल जाता तो इस बात की चिंता नहीं करते थे कि संध्या के समय ये चीजें भी उनको उपलब्ध हो पायेंगी या नहीं। इन परिस्थितियों ने उन्हें लोह पुरुष बना दिया। स्वतंत्रता प्राप्ति से पूर्व तथा पश्चात् अन्याय के विरुद्ध संघर्ष के लिए कठिन से कठिन यातनाओं को सहना उनका स्वभाव बन गया था।

जीवन में चालीस बार जेल की यात्रा करने वाले डॉ. लोहिया के समान शायद ही अन्य कोई होगा? अंग्रेजों के विरुद्ध उन्होंने जिस निर्भीकता एवं निष्ठा से संघर्ष किया, स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् उन्होंने कांग्रेस के विरुद्ध वैसा ही आन्दोलन जारी रखा।

बम्बई के सुप्रसिद्ध ऐतिहासिक मैदान में 8 अगस्त, 1942 में राममनोहर लोहिया ने "भारत छोड़ो" आन्दोलन में सक्रिय भाग लिया। 'करो या मरो' की भावना से अनुप्रेरित इस आन्दोलन में अग्रवाल समाज के यशस्वी अनेक वीरों ने बढ़चढ़ कर भाग लिया और असंख्य कुर्बानियां दीं। अपने महान् नेताओं के नेतृत्व में गिरफ्तारियाँ दीं, जेल गए, यातनाएं सही, जुलूस और सभाओं का नेतृत्व किया। क्रान्तिकारियों के आन्दोलन के लिए आर्थिक सहायता जुटाई, उन्हें अपने आवास स्थानों में आश्रय दिया, अखबार निकाले, पर्चे बांटे। जितने भी उपाय हो सकते थे, उन सबका अवलम्बन करते हुए इस आन्दोलन को सफल बनाने में अपनी पूरी भागीदारी निभाई। डॉ. लोहिया ने बम्बई और कलकत्ता में गुप्त रेडियो स्टेशन स्थापित किए। 1942 में जब कांग्रेस के तमाम नेता गिरफ्तार कर लिये गये तब डॉ. लोहिया अचानक भूमिगत हो गए और गुप्त रूप से नेपाल पहुँचकर उन्होंने "आजाद दस्ता" बनाया तथा "कांग्रेस रेडियो" से प्रसारण करते रहे। 20 मई सन् 1944 में उन्हें ढूंढकर गिरफ्तार कर लिया गया। उन्हें यातनाओं के लिए कुख्यात लाहौर जेल की बन्द कोठरी में बन्दी रखकर असहनीय यातनाएँ दी गईं। 1946 में जेल से छूटने के बाद उनसे कांग्रेस पार्टी का सचिव बनने का प्रस्ताव किया गया किन्तु उन्होंने अस्वीकार कर दिया।

1948 में कुछ अन्य समाजवादी नेताओं के साथ कांग्रेस पार्टी हमेशा के लिए छोड़ दी। 1952 में इन समाजवादियों ने किसान मजदूर प्रजा पार्टी के साथ मिलकर "प्रजा सोशलिस्ट पार्टी" का गठन किया। इस पार्टी के आप सभापति भी रहे और गांधीवादी विचारधारा को समाजवाद में लाने का प्रयत्न किया। 1954 में जब भाषा के प्रश्न को लेकर आन्दोलन करने वालों के ऊपर पुलिस ने गोली चला दी और त्रावणकोर-कोचीन के मुख्यमंत्री पत्तमताण पिल्लै ने इस मुद्दे पर कार्यवाही नहीं करते हुए मुख्यमंत्री पद छोड़ने से इंकार भी कर दिया तो डॉ. लोहिया ने पार्टी से इस्तीफा दे दिया। 1956 में उनके द्वारा हैदराबाद में सोशलिस्ट

पार्टी की स्थापना की गई और वे उसके अध्यक्ष भी रहे। वे पार्टी के मुख्य पत्र ''मैन काइण्ड' के सम्पादक भी थे।

गलत कार्यों का विरोध तो, डॉ. लोहिया के स्वभाव में ही बसा था। वे जीवन भर विरोधी दल के नेता की भूमिका निभाते रहे। देश के स्वतंत्र होने पर भी जब जनता को उनके उचित अधिकार नहीं मिले तो उन्होंने नेहरूजी की नीतियों का विरोध करने में संकोच नहीं किया और 1962 के चुनाव में जवाहरलाल नेहरू के विरुद्ध चुनाव में खड़े हुए। यद्यपि वे जानते थे कि नेहरू जी के समक्ष उनकी विजय सम्भव नहीं है। बाद में वे 1963 में फरुखाबाद संसदीय निर्वाचन क्षेत्र से उप चुनाव में विजयी हुए और 1967 का चुनाव भी वहीं से जीता।

डॉ. लोहिया उच्च कोटि के वक्ता एवं प्रखर सांसद थे। संसद में उनका कार्यकाल अत्यन्त क्रांतिकारी रहा। उन्होंने संसद में हर जुल्म के विरुद्ध विद्रोह का झंडा फहराये रखा। संसद में उनकी वक्तृकताएं एवं प्रश्न प्रधानमंत्री नेहरू जैसे महान-राजनीतिज्ञ को भी हिलाकर रख देते थे। वे व्यक्ति पूजा के विरोधी थे और उन्होंने एक मात्र नेता के रूप में नेहरू जी को प्रतिष्ठापित करने की नीति पर गहरा प्रहार किया। उन्होंने एक पुस्तक केवल इसी तथ्य को प्रगट करने के लिए लिख दी थी किस प्रकार नेहरू जी पर प्रतिदिन 25 हजार रुपया खर्च होते हैं। उन्होंने 1963 में स्पष्ट प्रमाणों के आधार पर यह कटु सत्य रखकर संसद को हिला दिया था कि देश की दो तिहाई भारतीय जनता केवल तीन आने रोज में गुजारा करती है।

डॉ. लोहिया हिन्दी के जबरदस्त समर्थक थे और संसद में सदैव हिन्दी में ही बोलते थे। उनका विश्वास था कि जनता देश की समस्याओं को तभी समझ सकती है जब देश का सम्पूर्ण कार्य राष्ट्रभाषा में हो।

लोहिया को भारतीय राजनीति में गैर कांग्रेसवादी शासन के प्रवर्त्तन का श्रेय प्राप्त है। उन्होंने गैर कांग्रेसी दलों को एक-दूसरे के समीप लाकर कांग्रेस विरोधी वोटों का बंटवारा रोकने की नीति चौथे आम-चुनाव से

पहले ही प्रतिपादित कर दी थी। उनके विचारों का परिणाम था कि देश में संविद सरकारों का निर्माण हुआ और आज केन्द्र में गैर कांग्रेसी शासन का अस्तित्व दिखाई देता है।

लोहिया राजनीतिक स्थिरता के नाम पर राजनीति में पनपी सड़ांध को सहने के प्रबल विरोधी थे। उनका मत था कि जिन्दा कौमें कभी 5 साल तक चुनावों का इन्तजार नहीं करती और आवश्यकता पड़ने पर चुनावों के सहारे निकम्मी सरकार को बदल डालने में कोई बुराई नहीं है। उनका कहना था कि राष्ट्र के रूप में हमारी सबसे बड़ी कठिनाई यह है कि हम स्थिरता को बहुत अधिक पसन्द करते हैं।

डॉ. लोहिया का व्यक्तित्व बहुआयामी था। उन्होंने सिद्धान्तों से कभी समझौता नहीं किया। वे योद्धा ही नहीं, महान चिन्तक और दार्शनिक भी थे। उन्होंने अनेक पुस्तकों की रचना की जिनमें पच्चीस पैसे की छोटी पुस्तिकाओं से लेकर अनेक बड़े-बड़े ग्रंथ सम्मिलित हैं। वे आजीवन विश्व नागरिकता का स्वप्न देखते रहे। उनकी इच्छा थी कि सभी देशों के नागरिकों को बिना किसी बन्धन के एक-दूसरे के देश में जाने की स्वतंत्रता होनी चाहिए। वे भारत को सुदृढ़ राष्ट्र के रूप में देखना चाहते थे। इसलिए 1962 में भारत पर चीन के आक्रमण के बाद उन्होंने भारत को सैन्य दृष्टि से सशक्त राष्ट्र बनाने की वकालत की। गोवा को पुर्तगाली शासन से मुक्त कराने में भी उनकी अहम् भूमिका रही। श्री लोहिया भारतीय संस्कृति के अनन्य पुजारी रहे। रामायण, महाभारत, वेद, उपनिषद तथा अन्य भारतीय धर्मग्रंथों को वे अत्यंत ही महत्त्वपूर्ण समझते थे। उन्होंने भारतीय इतिहास, दर्शन, साहित्य, धर्म, कला, संगीत आदि का गहन अध्ययन किया और अपने जीवन के अनुभवों को व्यक्त करते हुए कहा– "इन सबसे हमें अपने महान अतीत का परिचय मिलता है।" आप रामचरित मानस को भारतीय संस्कृति का मेरूदण्ड मानते थे, इसलिए आपने चित्रकूट में रामायण मेला का शुभारम्भ किया। भगवान श्रीराम कृष्ण और शिव के बारे में उनके लिखे गये लेख उनकी गहन भारतीयता की भावना को प्रगट करते हैं।

उन्होंने 1967 में गौरक्षा आन्दोलन का भी खुलकर समर्थन किया। यह उनके देश प्रेम का ही उदाहरण था कि उन्होंने गम्भीर रूप से बीमार होने पर भी अपने उपचार के लिए विदेश जाने की बात् स्वीकार नहीं की और कहा कि जब तक इस देश के बड़े लोग भारत के अस्पतालों में अपना इलाज नहीं करायेंगे, यहाँ के अस्पतालों की हालत नहीं सुधरेगी, इसलिए उन्होंने अपना ईलाज दिल्ली के विलिगंडन अस्पताल में करवाया, जहाँ उनका लम्बी बीमारी के बाद 12 अक्टूबर 1967 को देहावसान हो गया। उनकी पुण्य स्मृति में इस अस्पताल का नाम बाद में "डॉ. राममनोहर लोहिया अस्पताल" कर दिया गया।

उत्तर प्रदेश सरकार ने भी अवध विश्वविद्यालय का नामकरण डॉ. राममनोहर लोहिया विश्वविद्यालय करके तथा राजधानी लखनऊ में उनके नाम पर करोड़ों की लागत से अस्पताल बनाया है तथा प्रति वर्ष लाखों रुपयों के पुरस्कार देते हैं तथा अग्रवाल समाज की भावनाओं का आदर किया है।

डॉ. राममनोहर लोहिया के उच्च अध्ययन एवं प्रगति में अग्रवाल समाज का भी विशेष योगदान था, इसलिए उन्होंने बार-बार अग्रवाल समाज का आह्वान किया कि वह गरीबों व पिछड़े वर्गों की सेवा के लिए आगे आएँ। उन्होंने सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध की आवाज बुलन्द की। उनके व्यक्तित्व की सबसे बड़ी विशेषता यह रही कि उन्होंने अपने राजनीतिक लाभ के लिए कभी बुनियादी सिद्धान्तों से समझौता नहीं किया और राजनीति के दलदल में कमलवत बने रहे।

किसानों, खेतीहर मजदूरों, श्रमिकों के दुर्भाग्य की चर्चा वह हमेशा करते थे। ग्रामीण महिलाओं की मजबूरियों की व्यथा का जिक्र वह हमेशा करते थे। डॉ. लोहिया कहते थे कि सुबह नित्यक्रिया से निवृत्त होने के बाद रोजगारी-रोटी जैसी चिन्ताएं जिन मनों में रहती है उनकी बेबसी का, दर्द का आंकलन और निदान सरकार क्यों नहीं सर्वोच्च प्राथमिकता पर करती है।

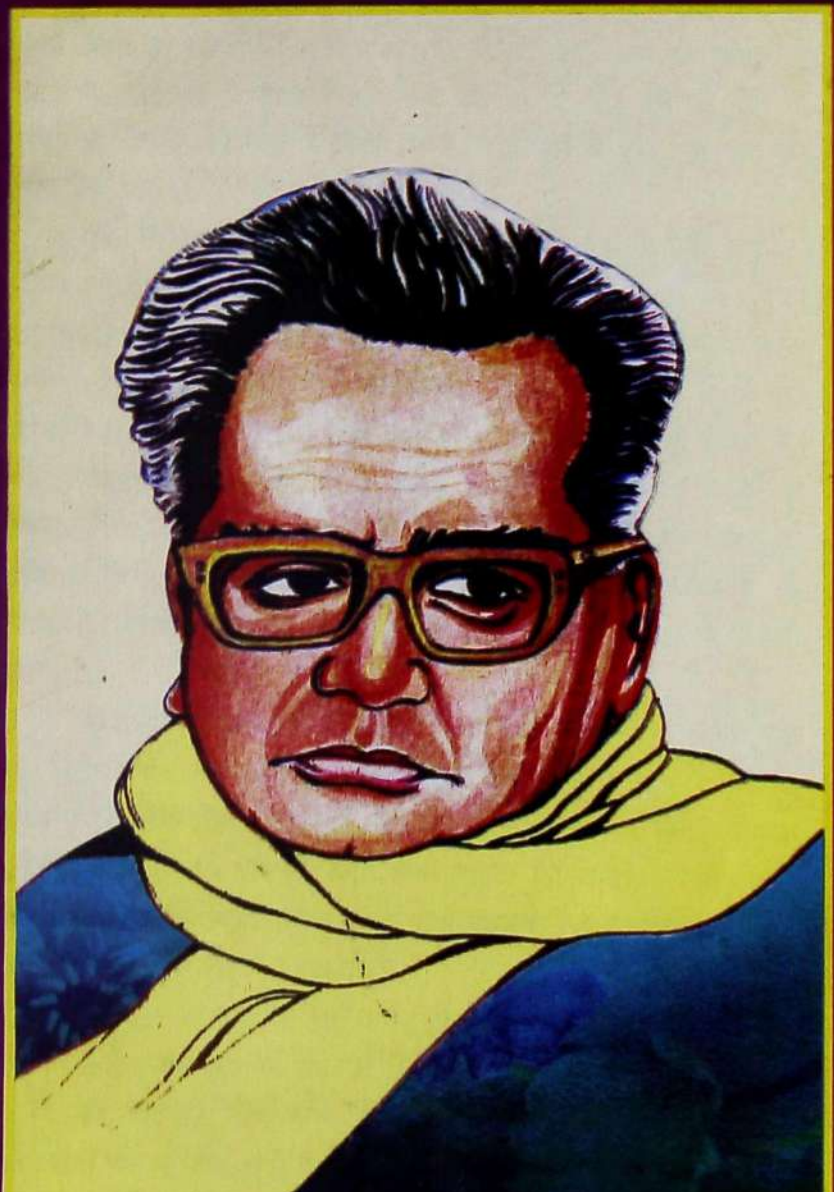

अग्रविभूति, महान् समाजवादी चिंतक

डॉ. राममनोहर लोहिया

त्यागपूर्ण राजनीति शैली के हिमायती डॉ. लोहिया हमेशा चार नग कुर्ता धोती ही रखते थे। कहीं वस्त्र हीन गरीबों को देखते ही दुखित हो उठते थे और एक जोड़ा कपड़ा उसे दे देते या दो तीन ऐसे ही होते तो सभी को दे देते थे। बाद में किसी सम्पन्न सहयोगी से उसे फिर पूरा कर लेते थे।

डॉ. साहब कहते थे कि किराये के घर को सजाना नहीं चाहिए। महंगा कपड़ा नहीं पहनना चाहिए। किराये के घर को सजाने से उसका उससे मोह हो जाता है। येन केन प्रकारेण किराये वाला उसे हथियाये रखना चाहता है। शासन के मन्त्रियों से लेकर विधायकों से जुड़े लोगों को सरकारी सेवाओं के एवज में मिले मकान को वे किराये का ही मानते थे।

महंगा कपड़ा पहनने से वे मानते थे कि महंगा कपड़ा पहनने से उससे मोह हो जाता है। अपने किसी फटेहाल साथी को देखकर हृदय तो द्रवित होता है कि इसे वस्त्र दे दिये जाएं किन्तु कपड़े का मूल्य आड़े आ जाता है। इससे कपड़े की कीमत ही इन्सानी फर्ज पूरा करने से रोकती है।

श्री लोहिया अग्रवाल परिवार में पैदा हुए, फिर भी वे जाति प्रथा के विरोधी थे। अग्रवालों की व्यापारिक क्षमता और सहन शक्ति के सम्बन्ध में उनके विचार अत्यन्त उच्च थे। उनका कथन था कि 'अग्रवाल समुदाय यदि अपनी प्रतिष्ठा और उच्च स्वरूप को बनाए रखना चाहता है तो भामाशाह के बहुत समीप रहना होगा अन्यथा यह समुदाय आलोचना और घृणा का शिकार बन सकता है।'

अग्रवाल समाज के इस महान् विभूति पर गौरव करने का पूर्ण अधिकार है। हम व्रत लें कि डॉ. लोहिया की विचारधारा के अनुरूप अपने को ढालकर ऊँच-नीच, छोटे बड़े का भेद मिटाकर समाज में भामाशाह की भूमिका अदा करें तभी हमें हमारी गिरती प्रतिष्ठा को सम्मान मिल सकता है। अग्रोहा का पुनर्निर्माण करके हमें फिर से एकता दिखलानी है।

11 अक्टूबर 1967 का दिन दिल्ली के सफदरजंग अस्पताल का वह कक्ष जिसमें डॉ. लोहिया बेहोश पड़े थे और उनके आस-पास डॉ. साहब के सचिव मधुलिमये, राजनारायण, कर्पूरी ठाकुर, मनीराम बागड़ी आदि पार्टीजनों के अलावा कई देशों से आये डाक्टरों की फौज खड़ी थी।

डॉ. लोहिया की आँख खुली। कुछ पल के पश्चात् पार्टीजनों के अभिवादन के बाद डाक्टरों की फौज से परिचय एवं अभिवादन हुआ लेकिन दूसरे ही पल उन्होंने कहा कि एक आदमी के लिए इतने डाक्टर........? जो बात भारत जैसे गरीब देश के आम आदमी के लिए सम्भव नहीं उसे मेरे जैसा आदमी कैसे स्वीकार करें.......?

फिलहाल डॉ. लोहिया ने देश विदेश से पधारे सभी डाक्टरों की टीम के एक-एक सदस्य का और उनके देश का आभार व्यक्त किया और कहा कि "मेरे अन्त-काल का सन्देश आ चुका है, मैं तो बचूँगा नहीं इसलिए डाक्टर अपना समय और ज्ञान मुझ पर बर्बाद न करें। उन्होंने सभी डाक्टरों से अनुरोध करते हुए कहा कि अगर आप मेरे लिये कुछ करना ही चाहते हैं तो इतना कर दीजिए कि ज्यादा न सही तो कम से कम दिल्ली और आस-पास के अस्पतालों में जाकर उन मरीजों को देख लीजिए जिनको आप सबकी जरूरत है।"

भारत सरकार ने उनकी स्मृति में सर्वप्रथम 12 अक्टूबर 1977 को उनकी पुण्य तिथि पर 25 पैसे का डाक टिकट जारी किया, उसके बाद 23 मार्च 1977 को पुनः उनकी पुण्य स्मृति में डाक टिकट जारी किया। महात्मा गांधी एवं नेहरूजी को छोड़कर सम्भवतः किसी भारतीय नेता को डाक टिकट से दो बार सम्मानित होने का यह विशेष गौरव था। उनके चित्र को संसदीय हाल में 1991 में लगाया गया।

वास्तव में डॉ. लोहिया भारत के महान् व्यक्तित्व थे, जिन्होंने अपने अद्भुत कृतित्व द्वारा न केवल अग्रवाल समाज अपितु सम्पूर्ण राष्ट्र को गौरवान्वित किया। उनकी जयन्ती पर अग्रवाल समाज की ओर से हार्दिक श्रद्धांजलि।

डॉ. राममनोहर लोहिया पुरस्कार–

यह पुरस्कार हिन्दी के ऐसे साहित्यकारों जिन्होंने हिन्दी के विकास में विशेष योगदान दिया हो, को उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा प्रतिवर्ष सम्मानित कर दिया जाता है। अग्रवाल समाज द्वारा अनेक पुरस्कार इसी स्तर से दिये जाते हैं।

भारत के समाजवादी आन्दोलन के प्रवर्तक, जिन्होंने पूरा जीवन समाज के उपेक्षित, दलित एवँ पिछड़े लोगों के उत्थान में लगा दिया। भारत में नेहरू परिवार के अधिनायक तंत्र के प्रबल विरोधी और गैर कांग्रेस शासन की स्थापना के प्रमुख सूत्रधार थे। यह उनकी विचारधारा का ही परिणाम था कि भारत में 1979 में जनता पार्टी की सरकार बन सकी। अपनी प्रखर वाणी एवं तेजस्विता द्वारा संसद को गुंजा देने वाले विरोधी दल के सशक्त नेता जिन्होंने कभी उच्च पद की ओर झांककर भी नहीं देखा तथा अपने सिद्धान्तों पर सदैव अटल रहे। इन्होंने चित्रकूट में 'रामायण मेला' का शुभारम्भ किया था। आपको शत् शत् नमन्।

एक भाव्यमय श्रद्धांजलि

डॉ. राममनोहर लोहिया – राष्ट्र धरोहर

भूखी नंगी जनता के सच्चे प्रतिनिधि
ज्ञान शौर्य साहस के शाश्वत वारिधि
भारतीय संसद के सब से मुखर तूर्य
तिमिर जाल जंजाल विनाशक प्रखर सूर्य
व्यक्ति अर्चना ध्वंस ध्वस्त कर दी तुमने
मर्यादित जीवन रेखा बांधी तुमने
राजनीति के अहम् हुए तब खंड खंड
संसद में गूंजी तेरी वाणी प्रचण्ड
कायरता से ग्रस्त देश का आह्वान कर
साहस धीरज मनमानस के प्राणों में भर
पथ दिग्दर्शन किया डरी भूखी पीढ़ी का

युगों-युगों तक शोषित अपमानित पीढ़ी का
आज नहीं तुम, पर जागा है देश हमारा
अत्याचारी शासक ने कर लिया किनारा
पूर्ण क्रान्ति का लक्ष्य अभी पूरा करना है
ऋणी तुम्हारा राष्ट्र, उसे अब भी लड़ना है।
कृतज्ञ राष्ट्र श्रद्धांजलि अर्पित करता है
सच्चे आदर्शों से झोली भरता है
निर्भय है वह, पुनः प्रतिज्ञा करता है
राम मनोहर तुम्हें वचन यह देता है
देश की जनता की धरोहर
जिन्दाबाद राम मनोहर।

—*—

पूरे विश्व में हिन्दू-समाज ही अकेला ऐसा समाज है जो सब पंथों की समानता में विश्वास करता है तथा आदर देता है।

*

हिन्दू समाज अपनी उदारता व सहिष्णुता के लिए विश्व में वंदनीय है।

*

अस्पृश्यता जैसी सामाजिक बुराई को मिटाने के लिए वैश्य समाज ने संघर्षमय और सार्थक प्रयत्न किये हैं।

*

जब तक शरीर स्वस्थ है और इन्द्रियाँ सबल हैं, तभी तक परमार्थ और कल्याण के लिए पूरा प्रयत्न हो सकता है। रोगी या वृद्ध शरीर से साधना नहीं होगी, अतएव अभी से साधना में लग जाओ।

अमर शहीद लाला हुकुमचन्द अग्रवाल कानूनगो

भारत के स्वाधीनता संग्राम में अग्रवाल समाज सदैव अग्रणी रहा है। अंग्रेजों के शोषण के विरुद्ध स्वाधीनता की भावना का जागरण सन् 1857 ई. की क्रांति के रूप में हुआ, जिसने भारत के कोने-कोने में हलचल मचा दी। हाँसी के तत्कालीन प्रसिद्ध अमर शहीद नेता श्री हुकमचन्द अग्रवाल ने इसी क्रांति-यज्ञ में अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।

लाला हुकमचन्द जी का जन्म 1816 ई. में हाँसी-हिसार (हरियाणा) के अग्रवाल-गोयल गौत्री लाला दुलीचन्द जैन के प्रसिद्ध कानूनगो घर हुआ था। आपकी शिक्षा-दीक्षा हांसी में हुई। फारसी और गणित में आपकी विशेष रुचि थी। इन विषयों पर आपने कई पुस्तकें भी लिखीं।

आपने शिक्षा-प्राप्ति के बाद दिल्ली के अन्तिम बादशाह बहादुरशाह जफर के दरबार में अपनी प्रतिभा के बल पर उच्च पद प्राप्त किया और सन् 1841 में इनको हांसी और करनाल जिले का कानूनगो नियुक्त कर दिया और अन्य पदों से अलंकृत करके उक्त क्षेत्रों का आपको प्रबन्धकर्ता भी बना दिया। इस प्रकार सात वर्षों तक मुगल बादशाह के दरबार में रहकर हाँसी इत्यादि इलाके का प्रबन्ध करने लगे। बादशाह के साथ आपके अच्छे प्रगाढ़ सम्बन्ध हो गये थे। प्रायः उनसे साहित्य पर चर्चा किया करते थे।

10 मई 1857 को मेरठ से सशस्त्र क्रांति का उद्घोष हुआ और

भारत को अंग्रेजों की दासता से मुक्त कराने की ज्वाला धधकी तथा मेरठ के राष्ट्रभक्त सैनिक बहादुरशाह जफर की सहायता को दिल्ली पहुँचे। लाला हुकमचन्द जी भी बहादुरशाह जफर की सहायता के लिए तत्पर हो उठे। उन्होंने दिल्ली पहुँचकर राष्ट्रभक्त क्रांतिकारियों की एक गुप्त बैठक का आयोजन किया, जिसमें तात्या टोपें और अनेक प्रसिद्ध देशभक्त वीरों ने भाग लिया। लाला जी ने हाँसी की ओर से बादशाह को पूरा समर्थन देने की घोषणा की और विश्वास दिलाया कि स्वतन्त्रता-संग्राम में अपना तन-मन-धन सर्वस्व का बलिदान करने को तैयार है। इसके उत्तर में मुगल बादशाह ने भी लाला हुकमचन्द जी को विश्वास दिलाया कि वे अपनी सेना, गोलाबारूद तथा हर प्रकार की आवश्यक सामग्री से उनकी सहायता पहुंचायेंगे। इसी विश्वास के साथ लाला जी दिल्ली से हाँसी तैयारी करने के लिए लौट गये।

उधर मेरठ के देशभक्त सेनानियों ने दिल्ली पर अधिकार जमा लिया और बहादुरशाह जफर को पुनः सत्तासीन कर दिया। अंग्रेजों की हार के चर्चे होने लगे। अंग्रेज चुप नही रहे। हरियाणा की छावनी से जब गोरे सैनिक दिल्ली की ओर बढ़ रहे थे तो हाँसी में लाला हुकमचन्द जी ने सामंत मिर्जा मुनीर बेग के साथ मिलकर ग्रामीणों को इकट्ठा कर उनकी सहायता से दिल्ली की ओर बढ़ रही अंग्रेज सेनाओं पर हमले किये और उन्हें रोकने का प्रयत्न किया। कई दिनों तक ये वीर अंग्रेजों की पलटन से जूझते रहे। अन्ततोगत्वा अंग्रेजों के सैनिक तोपें लेकर वहाँ पहुँचे, तब राष्ट्रभक्त ग्रामीणों को पीछे हटने को बाध्य होना पड़ा। यद्यपि अंग्रेजों की सेना को भारी हानि हुई लेकिन लाला जी के पास युद्ध सामग्री की कमी थी। आपके देश भक्त सैनिकों ने हथियारों से ही जी-जान पर खेलते हुए अंग्रेजों की सशक्त सेना का मुकाबला किया। दिल्ली के बादशाह से जो आश्वासन मिला था, दुर्भाग्य से वह सैनिक सहायता नहीं मिल सकी। आपकी मन की उमंगें मन में ही रह गईं। आपके कुशल नेतृत्व में जो वीरता-पूर्ण संघर्ष हुआ वह सराहनीय व चिरस्मरणीय है।

कुछ ही दिनों में अंग्रेजों ने दिल्ली को घेर लिया तथा बहादुर शाह जफर को बन्दी बना लिया गया। लाला जी के साथी मिर्जा मुनीर बेग ने फारसी भाषा में एक गुप्त पत्र मुगल सम्राट को सहायता भेजने हेतु लिखा था, जिसमें गोरा-शाही के विरुद्ध अपनी घृणा के भाव भी प्रकट किये थे। इस पत्र का उत्तर नहीं आया, क्योंकि भारत को तो अभी नव्वे-सौ वर्षों की पराधीनता और भोगनी लिखी थी। देश-द्रोही (अंग्रेज) और मजबूत होते गये।

15 सितम्बर, 1857 ई. को बादशाह की व्यक्तिगत फाइलों की जांच-पड़ताल में लाला हुकमचन्द और मिर्जा मुनीर बेग का लिखा हुआ वह पत्र उनको मिल गया। यह पत्र दिल्ली के अंग्रेज कमिश्नर सी.एम.सांडर्स ने हिसार के कमिश्नर मि. कार्टलैण्ड को भेज दिया और आदेश दिया कि लाला हुकमचन्द तथा उनके साथियों को विद्रोह की कठोर सजा दी जाये।

पत्र प्राप्त होते ही कमिश्नर एक सैनिक दस्ते के साथ हाँसी पहुंचे और लाला हुकमचन्द और मिर्जा मुनीर बेग के मकानों पर छापे मारे तथा लाला हुकमचन्द को उनके तेरह वर्षीय भतीजे फकीरचन्द तथा मिर्जा बेग को 18.1.1858 को गिरफ्तार कर लिया। हिसार के मजिस्ट्रेट जॉन एकिसन ने इनको फाँसी देने की सजा सुना दी।

अगले दिन 19 जनवरी 1858 को मिर्जा मुनीर बेग और लाला हुकमचन्द को उनके भतीजे फकीरचन्द के साथ उनके घर के सामने ही फाँसी पर लटका दिया गया। अंग्रेजों ने अपनी क्रोध-अग्नि के कारण उनकी लाशें भी उनके परिवार को नहीं दीं और उनकी धार्मिक भावनाओं को ठेस पहुँचाने के लिए उनके शवों को भंगियों के द्वारा दफनाया गया और मुस्लिम धर्म के विरुद्ध मिर्जा बेग के शव को जलाया गया। ताकि जनता इससे आतंकित हो और भविष्य में कोई अंग्रेजी साम्राज्य का विरोध करने की हिम्मत न कर सके।

इस प्रकार लाला जी चालीस वर्ष की आयु में ही देश की आजादी

के लिए शहीद हो गये। शहीद होने के बाद आपकी धर्मपत्नी अपने दो बच्चों सुगनचन्द (19 वर्ष) व न्यामतचन्द (8 वर्ष) को लेकर गुप्त रूप से किसी सम्बन्धी के यहाँ चली गई। लाला हुकमचन्द एक बड़े रईस और जमींदार थे, उनकी सम्पूर्ण चल-अचल संपत्ति जो करोड़ों रुपयों की थी। उनके सोने के गहनों को केवल चार रुपये तोले के भाव से नीलाम किया गया। जिन वस्तुओं की कोड़ियों के भाव नीलामी की गई, उन मुख्य वस्तुओं का विवरण इस प्रकार है :–

भूमि	-	9000 एकड़
सोना	-	400 तोले
चाँदी	-	3300 तोले
नकद चांदी के सिक्के	-	1300
मोहरें	-	107
अनाज	-	1500 मन
बैल-गाय	-	17
भैंस	-	12
घोड़ा-गाड़ी	-	8
ऊँट	-	3
घोड़ा-बग्घी	-	2

आपकी पत्नी की अंग्रेजों ने खोज की, पर वह नहीं मिली। महारानी विक्टोरिया के शासन के बाद माफी मिलने तक इधर से उधर बच्चों की सुरक्षा के लिए मारी-मारी फिरती रही।

इस प्रकार लाला हुकमचन्द जी ने प्रथम स्वतंत्रता संग्राम में अदम्य साहस का अद्वितीय परिचय दिया तथा आप फाँसी के फंदे पर झूल गये। जहाँ आप भारत माता की आजादी के दीवाने थे, वहीं आप अपने क्षेत्र के गणमान्य जमींदार थे, वहाँ उच्च कोटि के दानी, उदार-हृदय और परोपकारी भी थे। आपने गांवों में मन्दिरों, शिवालयों, कुओं व तालाबों का निर्माण कराया तथा जीर्णोद्धार कराया। तहसील सोनीपत के भट्ट-गांव

में एक प्राचीन मन्दिर आज भी आपकी दानशीलता व धार्मिक भावना का अमर प्रतीक है। जब रूसी नेतागण ख्रुश्चेव तथा बुल्गानिन इस गांव में पधारे तो इस प्राचीन मन्दिर के दर्शन कर उन्होंने बड़े आनन्द का अनुभव किया।

लाला श्री हुकमचन्द के शहीदी-स्थल पर नगर पालिका हाँसी ने 22 जनवरी 1961 को उनकी पावन स्मृति में "अमर शहीद हुकमचन्द पार्क" की स्थापना की है, जो उनके महान् बलिदान का साक्षी यादगार रहेगा।

अग्रवाल समाज अपने इस वीर पर गर्व अनुभव करता है। वास्तव में ऐसे बलिदानी वीरों के कारण ही आज हम स्वतन्त्रता से जीवन बिता रहे हैं। ऐसे महान् कृतित्व व व्यक्ति से परिपूर्ण अमर शहीद को हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित है।

—*—

* जय अग्रसेन – जय अग्रोहा *

वाणी में वरदान था जिनकी, करनी में कल्याण।
अग्रसेन महाराज को शत् शत् करो प्रणाम॥
निष्ठा लगन और संयम से, अग्र बंधु हो एक।
वैर-भाव सब त्याग कर, कर्म करें सब नेक॥
अग्रोहा की पावन भू पर, गौरव गर्वित यश ठहरे।
समाजवाद समता, ममता का, केसरिया ध्वज फहरे॥
बसी जहाँ हो लक्ष्मी माता, और शारदे शीला।
अग्रसेन की कथा सुनाए, अग्रोहा के टीला॥
बने पांचवा धाम धरा का, यह अग्रोहा धाम।
मिले मान सम्मान सभी को, रास करे नित श्याम॥

अग्रसमाज की दो कृष्णभक्त विभूतियाँ

श्री ललित किशोरी एवं ललित माधुरी

(शाह कुन्दल लाल व शाह फुन्दन लाल)

'प्यारी मुहिं दीजै श्रीवृंदावन वास, छिन प्रति नव अनुराग बढत जहं भक्त प्रेमरस रास' के अमर गायक, कृष्ण-भक्त शिरोमणि श्री ललित किशोरी एवं श्री ललित माधुरी की भक्ति रस से ओत-प्रोत वाणी आज भी ब्रज के कण-कण में निनादित होती हुई न जाने कितने रसिक जनों को राधा-कृष्ण की रूप माधुरी का पान करा रही है और उनकी अनुपम कृति शाह बिहारी जी के मन्दिर (वृंदावन) के दर्शन कर जाने कितने भक्तजनों ने अपने को कृत-कृत्य अनुभव किया होगा? किन्तु कितने ऐसे अग्रवाल होंगे, जो अपने ही समाज के इन अमूल्य रत्नों के विषय में जानकारी रखते होंगे?

श्री ललित किशोरी एवं श्री ललित माधुरी का जन्म लखनऊ के शाह परिवार में क्रमशः कार्तिक कृष्णा 2, सम्वत् 1882 और मिती माघ शुक्ला 14 सम्वत् 1885 को हुआ। आपके बचपन के नाम **शाह कुन्दनलाल** और **शाह फुन्दनलाल** थे। पितामह शाह बिहारीलाल जी सुप्रसिद्ध अग्रवाल एवं अपने समय के कोट्याधीश सेठ थे। हीरे-जवाहरात का व्यापार था और नवाबी से आपको 'शाह' की उपाधि मिली। उन्हीं के ज्येष्ठ पुत्र शाह गोविन्द लाल की द्वितीय पत्नी के गर्भ से आप दोनों भाइयों का जन्म हुआ।

दोनों भाइयों में गहरा प्रेम था। दोनों एक-दूसरे को राम-लक्ष्मण की तरह से प्रेम करते थे। दोनों ही अच्छे कवि और भगवान कृष्ण की

लीलाओं के रसिक थे। दोनों ही भाई हिन्दी, पंजाबी, गुजराती, बंगला, संस्कृत, फारसी आदि भाषाओं के जानकार थे। दोनों ही प्रवीण गवैये और संगीत के विभिन्न रागों के ज्ञाता थे।

श्री ललित किशोरी जो कविता में इतने प्रवीण थे कि प्रायः पत्र भी ब्रज भाषा की कविता में लिखते थे। आपने विद्वानों की सहायता से 'चातुर्वण्य विवेक' ग्रंथ का प्रणयन कर डाला। आपने उसके द्वारा प्रतिपादन किया कि वैश्यों को संस्कृत की शिक्षा देना शास्त्र विरुद्ध नहीं है।

परिवार का वातावरण धर्ममय होने के कारण बचपन में ही दोनों भाइयों में धार्मिक संस्कार का वपन हो गया। पितामह श्री बिहारीलाल जी ने वृंदावन में राधारमण जी का मंदिर बनवाया था। सं. 1906 में दोनों भाई श्रीधाम के दर्शनों के लिए वृन्दावन पधारे। भगवद् चरणों में आपका इतना श्रद्धानुराग था कि वे राधारमण जी के विग्रह पर भेंट के लिए स्वर्णमंडित सिंहासन अपने साथ लाए। आप एक मास तक ब्रज भूमि के कोने-कोने में घूमते हुए भगवान की दिव्य लीलाओं का दर्शन करते रहे।

श्रीजी के चरणार्विंदों में आपकी भावना और भी दृढ़ हो गयी। आपनें अपने निज सेव्य श्री राधारमण जी के विग्रह को उनके साथ वृंदावन भिजवा दिया और कहा, वे शीघ्र ही वृंदावन आकर रहेंगे और साथ ही अपने निवास स्थान का निर्माण वहाँ करायेंगे।

भक्त वत्सल, करुणासिंधु, मुरली मनोहर भगवान श्रीकृष्ण की अपने भक्तों पर विशेष कृपा रहती है। अपने भक्त की सच्ची श्रद्धा देखकर उन्होंने ललित किशोर जी को स्वप्न में दर्शन दिए और शीघ्र ही वृंदावन में जाकर निधिवन में निवास करने की प्रेरणा दी। आप भावमग्न हो गाने लगे–

वृंदावन को जाना हेली वृंदावन को जाना है।
रसिक रंगीले राधामोहन तिनसों दिल लहराना है।
ललित किशोरी ने दृढ कर अब ये ही मन में ठाना है।
ललित लता निधुवन के नीचे वोई ठीक ठिकाना है।।

उसके बाद तो आप निरंतर राधा-रमण कृष्णबिहारी के गुणों का गान

करते हुए पद-रचना करने लगे। आपके छोटे भ्राता श्री फुंदनलाल जी आपके पदों का संकलन करते जाते। इन्हीं पदों से 'अमिताष माधुरी' ग्रंथ की रचना हुई। इस ग्रंथ में भगवान श्रीकृष्ण की लीलाओं, श्री ललित किशोरी की भक्ति भावना, विनय-शृंगार-शतक, बारहमासे, युगलविहार शतक आदि का चित्रण बड़े ही सुन्दर ढंग से हुआ है। इन पदों में लालित्य, माधुर्य, मार्मिकता और भावोच्छ्वास है।

भक्ति की प्रेम संजीवनी ने उनके रोम-रोम में जो श्री चरणों के प्रति आवेग भर दिया था, उसके कारण अपने प्रियतम से एक क्षण के लिए भी बिछुड़े रहना उनके लिए कठिन हो गया। वे शिकायत भरे स्वर में अपने प्रियतम से पुकार उठे–

श्री वृंदावन कुंज लता क्यों
नैनों को दरसाइये ना।
रासविलास रंग कनि मेरे हियरे में
सरसाइये ना।
ललित किशोरी लाल विनती
सुनिवे में अरसाइये ना।
हा हा टुक मुसक्याय हेरिये जियरा
को तरसाइये ना।

भक्त रसखान के समान उनकी अपने प्रभु में इतनी अनन्यता है, इतनी तन्मयता और बेकली है कि वे इस जन्म की तो बात ही क्या, जन्म जन्मांतर में भी ब्रज की उन गलियों को छोड़ना नहीं चाहते। प्रेम के उस आदर्श की, भक्ति की उस तल्लीनता को उन्होंने अपना लिया, जिसमें शरीर और चेतना, शिथिल और बेसुध हो जाते हैं। दिन-रात अपने प्रियतम को छोड़कर कुछ नहीं सूझता। देह ब्रह्म का उच्चारण करते-करते स्वयं ब्रह्ममय हो जाती है। भक्त ललित किशोरी जी की स्थिति देखिए–

नैन राधे वैनन राधे सैनन राधे, कृतनित राधे
कानन राधे तानन राधे, राधेहितवत राधे।

दुःख में राधे सुख में राधे, मुख में राधे उर चित राधे।
ललित किशोरी अंइतउत राधे, जित देखो तित राधे।

उनके सुललित गीतों में हृदय का शाश्वत भाव बड़ी ही रमणीयता से व्यक्त हुआ है। कोई भी रसिक उनको गाकर भगवान चैतन्य महाप्रभु के पदों-सी भाव-विह्वलता और मस्ती का अनुभव कर सकता है। उनको गाकर वे स्वयं तो धन्य हुए ही हैं, साथ ही में हमें भी उस अपार भाव-सम्पदा को सौंपकर धन्य कर गये हैं, जो हमारी अमूल्य थाती है, धरोहर है। ब्रज भूमि के प्रति आपके हृदय में इतना अनुराग था कि आपने कभी उस पर मल-मूत्र तक नहीं त्यागा। आपके मल-मूत्र त्यागने के स्थान पर आगरे से मिट्टी लाकर बिछाई जाती थी। आगरा के बने हुए कुंडों में ही आप मल त्याग करते थे और उन कुण्डों को ब्रज की सीमा से बाहर फिकवाया जाता था। वृंदावन और ब्रजभूमि से आपको इतना लगाव हो गया था कि आपने जीवन के अंतिम समय में यह आदेश दे दिया था कि उनकी कोई भी प्रिय वस्तु, यहाँ तक कि उनका चित्र भी ब्रजभूमि से बाहर न जाए। माघ शुक्ला 5, सम्वत् 1917 वि. को आपने वृंदावन में राधे बिहारी जी के मन्दिर का निर्माण प्रारम्भ किया। सम्पूर्ण मन्दिर में वास्तुकला, चित्रकला, मूर्तिकला का अद्भुत समन्वय है। मन्दिर के गर्भगृह के बाहर विशाल हाल है, जिसकी दीवारों पर अंकित चित्रकारी देखने ही योग्य है। बाहर प्रवेश द्वारा की ओर विशाल बरामदा बना है, जो स्तम्भों पर स्थित है। उन स्तम्भों की विशेषता यह है कि ये स्तम्भ श्वेत संगमरमर से निर्मित हैं और सर्पाकार आकृति लिए हुए हैं। बरामदे के फर्श में परिवार के साथ एक मुनीम के चित्र बने हुए हैं। इस मुनीम के विषय में किंवदन्ती प्रचलित है कि उसे श्वेत संगमरमर का मन्दिर बनवाने का आदेश दिया था लेकिन अभूत धन्य व्यय होते देखकर मुनीम जी के मन में लालच आ गया और उन्होंने श्वेत संगमरमर के स्थान पर लाल पत्थरों का प्रयोग किया। इससे वह अन्धा हो गया। उसका चित्र भी भक्त प्रवर ललित किशोरी एवं ललित माधुरी जी के साथ फर्श पर इसलिए बना दिया गया

है, ताकि भगवान के भक्तों के चरणस्पर्श से उसका भी उद्धार हो जाए। सम्पूर्ण मन्दिर ऊँचे चबूतरे पर बना है। मन्दिर के गर्भगृह में स्वर्ण से निर्मित राधे-बिहारी की सुन्दर मूर्तियाँ हैं। मन्दिर के ऊपरी भाग में प्रस्तर निर्मित विविध भाव-भंगिमाओं से युक्त आकर्षक मूर्तियाँ हैं, जो भक्ति की विभिन्न मुद्राओं को प्रकट करती हैं। मन्दिर के बाहरी प्रांगण में सुन्दर मंडप है, रंग-बिरंगे जल से युक्त फव्वारे और उद्यान हैं। विशिष्ट अवसरों पर शाह बिहारी के विग्रह को जब बाहर लाया जाता है, तब बिहारी जी इन्हीं मंडपों में अधिष्ठित हो विहार करते हैं। शाह बिहारी जी के इस मन्दिर का निर्माण कार्य 8 वर्ष में पूर्ण हुआ। यद्यपि इसके निर्माण-व्यय का विवरण उपलब्ध नहीं है, फिर भी मन्दिर की वास्तुकला और बनावट को देखते हुए कहा जा सकता है कि इसके निर्माण में करोड़ों रुपया अवश्य व्यय हुआ होगा। इसकी तुलना सहज ही ताजमहल से की जा सकती है। उपयुक्त प्रचार के अभाव में इस अद्भुत कलाकृति का मूल्यांकन समुचित ढंग से नहीं हो पाया है। अन्यथा अग्रवाल समुदाय की कीर्ति-कौमुदी में आज और भी चार चांद लगे होते और कोई कारण नहीं कि इस मन्दिर की गणना भी संसार के आश्चर्यों में न होती।

आज भी ललित किशोरी एवं ललित माधुरी का नाम ब्रज काव्य के रसिकों एवं रास-प्रेमियों में अमर है। रास के समय उनके पदों को बड़े ही आनन्द से गाया जाता है। धन्य हैं ऐसे भक्त और धन्य हैं उनका भगवदानुराग! अग्रवाल समुदाय ऐसी विभूतियों को जन्म दे, निश्चित ही अपने को गौरवान्वित अनुभव कर सकता है।

—※—

जिंदगी देना परमात्मा का काम है, उसे अच्छे से जीना हमारा काम है। जिन्दगी को जीना सीखो। जिनसे जिंदगी मिलती है उनके निकट होने की कोशिश करो।

भामाशाह लाला मटोलचन्द अग्रवाल

लाला मटोल चन्द डासना (गाजियाबाद) के निवासी थे। वे बड़े दानी और प्रसिद्ध व्यक्ति थे। बहादुरशाह जफर के वे अनन्य मित्रों में से थे। 1857 की क्रांति के दौरान दिल्ली के सिंहासन पर अंग्रेजों की जगह बहादुरशाह जफर को सत्तारूढ़ किया गया था। बहादुरशाह जफर का खजाना खाली हो गया। सैनिकों को वेतन देने के लाले पड़ गए। सेना के हथियार खरीदने के लिए भी कोषागार में एक फूटी कोड़ी तक नहीं थी तो स्वतंत्रता संग्राम को कैसे सफल बनाया जाए। यह विकट समस्या उत्पन्न हो गई।

बहादुरशाह जफर ने अपना दूत सन्देश देकर डासना भेजा। उसमें उन्होंने लाला मटोल चन्द जी से कुछ धन उधार देने को कहा था। लाल मटोल चन्द ने दूसरे दिन सवेरे अपना तमाम सोना, चाँदी, जेवर तथा नकदी इकट्ठी की तथा उन्हें छकड़ों में भर कर बैलगाड़ी में रखकर डासना से दिल्ली जा पहुँचे। उस तमाम सम्पत्ति को बहादुरशाह जफर को समर्पित करते हुए बोले– मैं इसे ऋण के रूप में नहीं, अपितु राष्ट्र की स्वाधीनता के यज्ञ में अपनी छोटी सी आहुति के रूप में भेंट कर रहा हूँ। लाला मटोल चन्द के ये शब्द सुनकर बादशाह की आँखें नम हो उठीं।

बहादुरशाह जफर की गिरफ्तारी के बाद श्री मटोल चन्द को भी गिरफ्तार कर लिया गया तथा उन्हें भी फांसी की सजा दे दी गई।

—*—

1857 की क्रांति के महान् अग्रवीर

लाला झनकूमल सिंहल

आप 1857 में प्रथम स्वातंत्र्य संग्राम में उन अमर सेनानायकों में से थे, जिन्होंने देश की आजादी के लिए हंसते-हंसते फाँसी का तख्ता चूम लिया और देश, जाति तथा समाज पर कलंक न लगने दिया। जब देश में क्रांति की ज्वाला फूटी तो मेरठ मंडल के ग्राम धौलाना में 14 देशभक्तों को भी विद्रोह के आरोप में गिरफ्तार कर फाँसी के तख्ते पर लटकाये जाने की सजा दी गई। आप भी उन 14 देशभक्तों में से एक थे। ग्रामीणों के बीच एक बनिये को पाकर, अंग्रेज अधिकारी को बड़ा आश्चर्य हुआ और उसनें सेठ झनकूमल को अलग करने की दृष्टि से कहा– 'लाला' तुम इन हत्यारों के बीच में कैसे फंस गये? तब लाला झनकूमल ने जो उत्तर दिया, उससे कोई भी जाति गर्व से अपना मस्तक ऊँचा कर सकती है।

श्री सिंहल का उत्तर था "साहब हमारे पूर्वज भामाशाह ने महाराणा प्रताप को जिस तरह मुगलों के विरुद्ध आजादी की लड़ाई में सहयोग दिया था' उसी प्रकार मेरा भी कर्त्तव्य है कि अपने देश को आजाद कराने के लिए उस संघर्ष में साथ दूं।" यह सुनकर गोरा अधिकारी क्रोध से पागल हो उठा था और उसने क्रोध से तमतमाते हुए यह आदेश दिया सबसे पहले इस बनिये के गले में फंदा डाला जाये और हजारों आतंकित ग्रामीणों की उपस्थिति में लाला झनकूमल को फाँसी के तख्ते पर चढ़ाकर सदैव के लिए सुलवा दिया गया। इस प्रकार झनकूमल मर मिटे किंतु देश की शान-बान कम न होने दी। आज भी इस महान् बलिदानी की गौरव-गाथा के स्मरणार्थ उनकी समाधि धौलाना में बनी हुई है, जो अग्र जाति के महान् यश एवं गौरव की प्रतीक है।

—*—

स्वतंत्रता संग्राम की ध्वजा फहराने वाले अग्रविभूति सेठ

रामजी दास एवं नारायण दास गुड़वाले

1857 की क्रांति भारतीय इतिहास की महत्त्वपूर्ण घटना है। यह वह काल है जबकि भारतीयों ने अंग्रेजी शासन के विरुद्ध आवाज बुलंद की और संपूर्ण देश ब्रिटिश साम्राज्य के विरुद्ध उठ खड़ा हुआ। 1857 की इस क्रांति में अग्रवाल/वैश्य समाज ने भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई और तन-मन-धन से समाज की सहायता कर अपनी अग्रगामिता स्थापित की। यहाँ ऐसे कतिपय अग्रवीरों का उल्लेख किया जा रहा है, जिन्होंने झांसी की रानी वीर लक्ष्मीबाई, तांत्या टोपे और बहादुरशाह जफर के नेतृत्व में हिस्सा लिया और हंसते-हंसते अपने प्राणों की आहूति दी और त्याग का उत्कृष्ट कोटि का उदाहरण प्रस्तुत किया।

सेठ रामजी दास गुड़वाले सम्पन्न और ख्याति प्राप्त व्यापारी थे। आपके कोष में सदा लक्ष्मी वास करती थी। मुगल बादशाहों तथा ईस्ट इंडिया कम्पनी को जब भी धन की आवश्यकता पड़ती, आप ही से ऋण लेकर अपना काम चलाते थे।

1857 की क्रांति में बहादुरशाह जफर के पास सेना को वेतन देने व अस्त्र-शस्त्र खरीदने के लिए जब पैसे की आवश्यकता हुई तो सेठ रामजी दास ने दो करोड़ रुपये दिये। इस धन के समाप्त होने पर दूसरी बार चार करोड़ और तीसरी बार भी करोड़ों रुपये स्वातंत्र्य संघर्ष हेतु दिये। परन्तु किसी कारणवश जब यह स्वातंत्र्य संग्राम असफल हो गया तो अंग्रेजों ने बहादुर शाह जफर को बन्दी बनाकर रंगून जेल भेज दिया और सेठ रामजी दास को बहादुर शाह का साथ देने के आरोप में गिरफ्तार कर

फांसी के फंदे पर लटका दिया तथा उनका अरबों रुपयों का खजाना जब्त कर लिया। इस प्रकार आपने अपने स्वातंत्र्य प्रेम की महान् कीमत चुकाई।

सेठ रामजी दास के पुत्र नारायणदास थे। आप दिल्ली के आनरेरी मजिस्ट्रेट व म्यूनिसिपल कमिश्नर रहे। जब सेठ रामजी दास को फांसी दी गई तो आप तीर्थ यात्रा पर गए हुए थे। जब यात्रा से वापस लौटे तो अंग्रेज सरकार ने उन्हें भी बंदी बना लिया और पूछा कि बोलो, आपके साथ कैसा व्यवहार किया जाए तो आपने निडरतापूर्वक उत्तर दिया "जैसा मेरे पिता जी के साथ किया गया है।" आपकी इस निर्भीकता से अंग्रेज अधिकारी आश्चर्य चकित रह गयें और फांसी देने की बजाय आपके साथ मैत्रीपूर्ण व्यवहार ही उचित समझा। आपको महाराजा की उपाधि दी और आनरेरी मजिस्ट्रेट बनाया।

आपके परिवार की राज्य में इतनी प्रतिष्ठा थी कि आपको कोर्ट में बहियाँ न लाने की छूट थी। दानी इतने कि जब वे किसी अग्रवाल भाई को संकट में देखते तो उसके जीवनयापन के लिए अनाज की बोरियाँ और उसमें छिपाकर रुपयों की पोटली गुप्त रूप से भिजवा देते थे।

आपके कुल में राजाराम गुड़वाले भी हुए, जिन्होंने तन-मन-धन से क्रांतिकारियों की सहायता की और उन्हें अन्य क्रांतिकारियों के समान फांसी दे दी गई। 1857 की क्रांति के इतिहास में अन्य अनेक ऐसे प्रसंग मिलते हैं जिनसे यह सिद्ध होता है कि वैश्य/अग्रवाल समाज ने क्रांतिकारी देशभक्तों की हर प्रकार से सहायता की। शिवपुरी, ग्वालियर क्षेत्र के वैश्यों ने तांत्या टोपे की तथा झांसी के वैश्यों ने महारानी झांसी की पूरी तरह सहायता की थी। बिहार में बाबू कुंवर सिंह की सहायता के लिए वैश्य परिवार हमेशा तत्पर रहते थे। इस प्रकार अग्रवाल जाति में उत्पन्न भामाशाहों ने सदैव देश-जाति की सेवा व रक्षा में अहम भूमिका निभाकर अपने आदर्शों का प्रतिपादन किया है।

—*—

चौधरी परिवार के तीन भ्राता अग्र भामाशाह

सेठ नथमल जी, रामनिवास जी व श्री निवास जी

सेठ श्री नथमल जी

नायब श्री रामनिवास जी

सेठ श्री श्रीनिवास जी

चौधरी परिवार के सेठ श्री कन्हीरामजी के नथमलजी, रामनिवासजी तथा श्रीनिवास जी नामक तीन पुत्र रत्न उत्पन्न हुए। आप तीनों ही भाइयों ने अपनी प्रतिभा, कार्य कुशलता तथा सार्वजनिक सेवा भाव से जयपुर के सार्वजनिक क्षेत्र में अपना गौरव तथा विशिष्ट स्थान प्राप्त किया। आप लोगों के उद्योग से धन्वन्तरि औषधालय, पिंजरापोल गौशाला, अग्रवाल मिडिल स्कूल, अनाथालय आदि जनोपयोगी संस्थाओं की स्थापना हुई तथा जीवन पर्यन्त तीनों भाइयों का इनके संचालन में मुख्य भाग रहा।

स्व. सेठ श्री नथमलजी चौधरी– आपका जन्म संवत् 1918 में हुआ। सन् 1863 में आप जयपुर राज्य के शिकारखाने में मुन्तजिम नियुक्त हुए। अपनी कार्यदक्षता के कारण आप स्वर्गीय जयपुर नरेश श्री माधोसिंह जी के निकटतम व्यक्तियों में से थे। शिकार के इन्तजाम में आप बड़े दक्ष

थे जिससे प्रसन्न होकर जार्ज पंचम, प्रिंस जर्मनी, प्रिंस बवेरिया आदि संसार प्रसिद्ध व्यक्तियों ने बड़ी-बड़ी अमूल्य चीजें देकर आपका सम्मान किया। आपके गुणों से प्रभावित होकर बंबई के सेठ श्री खेमराजजी, श्रीकृष्णजी ने आपको मान पत्र भेंट किया।

सम्वत् 1978 में आपका स्वर्गवास हुआ।

स्व. नायब श्री रामनिवासजी चौधरी– आपका जन्म संवत् 1926 में हुआ। बचपन से ही आप होनहार तथा प्रतिभाशाली थे। सन् 1884 में आप इंजीनियरिंग विभाग में मुलाजिम हुए तथा सन् 1906 में शिकारखानें में नायक सुपरिन्टेंडेण्ट नियुक्त हुए जहाँ आपने अपने कार्यों से बहुत ख्याति प्राप्त की। अपनी बुद्धिमत्ता तथा कार्य कुशलता के कारण आपको बड़े-बड़े राजा महाराजा तथा यूरोप के नरेशों तथा भारतीय वाइसराय आदि से परिचय हुआ तथा सभी ने आपको सैकड़ों अमूल्य वस्तुएँ भेंट स्वरूप देकर आपका सत्कार किया।

सार्वजनिक क्षेत्र में भी आपका स्थान बहुत ऊँचा रहा है। सम्वत् 1956 के भीषणतम अकाल के समय आपने राज्य सरकार की ओर से इन्तजाम करके जनता की सेवा की। आप सन् 1925 में जयपुर प्रांतीय अग्रवाल महासभा के अधिवेशन के समय स्वागताध्यक्ष तथा 1926 में सवाईमाधोपुर अधिवेशन के सभापति बनाए गए। कुछ वर्ष आप म्युनिसिपल कमिश्नर भी रहे। पिंजरापोल गौशाला के आप कई वर्षों तक मंत्री बनकर उसका संचालन बड़ी योग्यता से करते रहे।

सम्वत् 1995 में आपका स्वर्गवास हुआ।

स्व. रायसाहब श्री श्रीनिवासजी नाजिम– आपका जन्म सम्वत् 1936 में हुआ। मैट्रिक पास करने के बाद आप महाराजा मानसिंह के शासनकाल में सफल प्रशासक रहे।

प्रारंभ में आप पी.डब्ल्यू.डी. में नायब जिलेदार रहे, फिर कारखाने जात में नायब मोतमीन हुए तथा बाद में रेवेन्यू कमिश्नर बनाए गए। सन् 1922 में आप सवाईमाधोपुर के नाजिम तथा जिलाधीश नियुक्त हुए।

उनके कार्यकाल में सवाईमाधोपुर में संवेदनशील हालात पैदा हो गये थे, उन्होंने बड़ी सूझबूझ से उसका निवारण किया। प्रशासनिक सफलता से प्रसन्न होकर महाराजा सवाई मानसिंह शासन की रजत जयन्ती पर राय साहब मुन्शी की उपाधि से सम्मानित किया और स्वर्णाक्षरों से रचित सम्मान पत्र दिया। सन् 1942 में सेवा से अवकाश लेने के बाद में रियासत में उन्हें ओनरेरी मजिस्ट्रेट बनाया।

जैसा कि पहले कहा जा चुका है श्री नाजिम साहब का जीवन सेवा पूर्ण रहा। आप जहाँ भी गए वहाँ के सामाजिक जीवन में स्वयं को मिला दिया तथा सार्वजनिक संस्थाओं में सहयोग देते रहे। अग्रवाल स्कूल के आप प्रारंभ से कई वर्षों तक मंत्री तथा पीछे जीवन पर्यन्त सभापति पद पर रहे। अग्रवाल स्कूल को अग्रवाल इण्टर कालेज बनाने में भी आपका प्रमुख योगदान था। कुछ वर्ष पूर्व स्थानीय अग्रवाल जाति में उत्पन्न हुई कलह को आपने बड़ी बुद्धिमानी से समाप्त किया। निरन्तर अस्वस्थ होने पर भी आप यथा शक्ति सार्वजनिक संस्थाओं का कार्य करते रहे।

सम्वत् 2001 में आपका स्वर्गवास हुआ।

आप तीनों भाइयों की यश पताका पर समाज अपने आपको गौरवान्वित महसूस करता है।

—*—

जवानी को इस तरह बिताओ कि बुढापे में रोना न पडे, बुढ़ापे को इस तरह बिताओ कि किसी के आगे हाथ फैलाना न पड़े।

***

तुम चाहो या ना चाहो, कभी न कभी जगत से नाता तोड़ना ही पड़ेगा।

***

महान कार्यों के लिए आत्मविश्वास अनिवार्य है।

पितम्बर 1998 अग्रवाल पृ 5-6

क्रांतिकारी राष्ट्रभक्त

श्री राधा मोहन गोकुलजी

श्री राधा मोहन गोकुल जी एक अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त चिन्तक, लेखक तथा स्वाधीनता संग्राम के जुझारू सेनानी थे। उनकी लिखी पुस्तकों व लेखों से संसार के अनेक देशों के विचारकों ने समता, समाजवाद, स्वाधीनता तथा स्वदेश प्रेम की प्रेरणा ली।

श्री राधा मोहन गोकुल जी एक जन्मजात क्रांतिकारी, कुरीतियों व अन्धविश्वास के प्रबल विरोधी तथा मौलिक चिन्तक थे। यह बहुत कम व्यक्तियों को मालूम होगा कि शहीदे आजम सरदार भगतसिंह ने लाहौर में जिस पिस्तौल से सांडर्स की हत्या का प्रयास किया था, वह श्री राधा मोहन गोकुल जी द्वारा मुहैया कराई गई थी। श्री राधा मोहन जी का जन्म 15 दिसम्बर 1865 को ला. गोकुलचन्द अग्रवाल के घर हुआ था। सन् 1904 में वे कलकत्ता पहुँचे तथा वहाँ बंगाली क्रांतिकारियों के सम्पर्क में आये। कुछ वर्ष बाद वे अग्रवाल समाज की विभूति प्रभुदयाल हिम्मतसिंहका, श्री हनुमानप्रसाद पोद्दार तथा अन्य युवकों के साथ क्रांतिकारी गतिविधियों में भाग लेने लगे। सन् 1914 में रोडा कम्पनी द्वारा विदेशों से मंगाये गये हथियारों व कारतूसों को गायब कर क्रांतिकारियों तक पहुँचाने वाली घटना में भाई जी (श्री हनुमानप्रसाद पोद्दार) तथा अन्यों के साथ राधा मोहन गोकुल जी का भी हाथ था।

श्री राधा मोहन जी की प्रारंभिक शिक्षा हिन्दी तथा उर्दू में बिहार तथा शहजादपुर के स्कूलों में हुई। तत्पश्चात् आप आगे पढ़ने के उद्देश्य से अपने ताऊजी के पास कानपुर गए, जहाँ फारसी तथा बही खाता

सम्बन्धी ज्ञान प्राप्त किया। आगरा के सेंट जॉन्स कालेजियट स्कूल में कुछ अंग्रेजी भी पढ़ी, किन्तु बचपन में विवाह हो जाने तथा घर की आर्थिक स्थिति ठीक न होने के कारण विद्योपार्जन में बाधाएं आयीं। इलाहाबाद के एक सरकारी कार्यालय में कुछ दिन तक बीस रुपये मासिक की नौकरी की परन्तु किसी गोरे कर्मचारी से मतभेद हो जाने के कारण वह नौकरी भी छोड़नी पड़ी।

आपको बहुत छोटी अवस्था से ही स्वदेश एवं स्वदेशी की भावना से गहरा लगाव था। यह कारण है कि तंग-दस्त होने के बावजूद इलाहाबाद की 'स्वदेशी व्यापार कंपनी' में 25 रुपये का शेयर खरीदा।

इलाहाबाद में नौकरी समाप्त हो जाने पर राधा मोहन जी रीवां तथा फिर कानपुर गये। कानपुर में प्रताप नारायण मिश्र के सम्पर्क में आये। राधा मोहन जी की साहित्य सेवा का विधिवत् श्रीगणेश यहीं पर हुआ। यहीं पर आपने तत्कालीन भारत की दयनीय दशा पर एक पुस्तक भी लिखी।

पारिवारिक समस्याएं एवं दुर्घटनाएं सदैव राधा मोहन जी के सम्मुख अजगर सा मुँह खोले खड़ी रहीं। आपको अपनी पत्नी और एक पुत्री की मृत्यु का विछोह भी सहन करना पड़ा। राधा मोहन जी ने घरवालों के दबाव से दूसरा विवाह तो किया परन्तु एक विधवा के साथ। किन्तु विधवा विवाह का परिवार एवं समाज द्वारा विरोध होने पर राधा मोहन जी पहले मुम्बई और फिर बीकानेर चले गये। कुछ दिन परिवार के साथ आगरा में भी रहे।

श्री राधा मोहन जी के अंदर समाज को उसके उत्कृष्ट रूप में देखने की तीव्र आकांक्षा थी। उन्होंने प्रत्येक प्रकार के अंधविश्वास तथा रूढ़ियों के विरोध में जमकर प्रचार किया तथा इस सम्बन्ध में सुरुचिपूर्ण प्रेरणादायक और सामाजिक सुधार से सम्बन्धित साहित्य की रचना की। उन्होंने 'सत्य सनातन धर्म' नाम का पत्र भी निकाला।

श्री राधा मोहन जी ने अपने कलकत्ता प्रवास के दौरान बहुत से प्रेरणादायक साहित्य की रचना की। 1907 में लाला लाजपतराय जी को देश निकाला दिए जाने पर 'देशभक्त लाजपत' नामक पुस्तक लिखी।

श्री राधा मोहन जी ने इटली के महान् देशभक्त एवं भारतीय क्रांतिकारियों के प्रेरणास्रोत मैजिनी और गैरीबाल्ड़ी से प्रभावित होकर उनकी जीवनियां लिखीं। 'यंग इटली' नामक पुस्तक भी काफी लोकप्रिय हुई।

जब काशी नागरी प्रचारिणी सभा ने 'मनोरंजन पुस्तक-माला' का प्रकाशन आरंभ किया तो राधा मोहन जी ने इस क्रम में नेपोलियन बोनापार्ट का जीवन-चरित्र लिखकर अपना योगदान दिया। 'ओंकार पुस्तक-माला' के अन्तर्गत गुरु गोविन्द सिंह का जीवन चरित्र लिखकर प्रकाशित किया।

श्री राधा मोहन जी अंग्रेजों द्वारा भारतीय अर्थव्यवस्था को तहस-नहस किये जाने तथा मजदूरों और कर्मकारों के शोषण से अत्यन्त क्षुब्ध थे और सन् 1908 में जब भारतीय अर्थव्यवस्था पर कोई रचना लगभग अप्रयाप्त थी, राधा मोहन जी ने अर्थशास्त्र की पुस्तक 'देश का धन' से देशवासियों को परिचित कराया। 'नीति दर्शन' भी आपकी उल्लेखनीय रचना है।

उन्होंने 1921 की तपती हुई गर्मियों में अपना जमा-जमाया ढर्रा एवं कारोबार त्याग कर नागपुर के असहयोग आश्रम का निरीक्षक बनकर अपना योगदान प्रदान करने का निश्चय किया और पूरे जोशो-खरोश के साथ आंदोलन में सक्रिय भूमिका निभाई। यहीं पर सरकार द्वारा उनके किसी भाषण को राजद्रोही करार देकर उन्हें दो वर्ष का कारावास भी दिया गया।

यहीं पर वे श्री सतीदास मूंधड़ा के सम्पर्क में आये तथा उनके विचारों से प्रेरित होकर 'प्रणवीर' का प्रकाशन एवं संपादन किया। परन्तु राधा मोहन ज्री अपनी राजनीतिक गतिविधियों एवं अपनी गिरफ्तारियों के कारण 'प्रणवीर' के संपादन को भी अधिक समय न दे सके। यद्यपि 'प्रणवीर' का कार्य चलता रहता था तथा श्री सत्यभक्त उस दायित्व को निभाते रहे और 'प्रणवीर' ने काफी प्रगति भी की। परन्तु श्री सत्यभक्त के ही अनुसार उनका ध्यान उस समय साम्यवादी आंदोलन की ओर झुका था, इसलिए सब प्रकार की सुविधा और प्रगति की संभावना होने पर भी उस कार्य को छोड़कर वे कानपुर चले आये। उसके बाद राधा मोहन जी

को भी उन्होंने वहीं बुलवा लिया। वहां रहकर वे क्रांतिकारी दल का ऐसा कार्य करते रहे जिसके लिए आज भी उनको स्मरण किया जाता है।

कानपुर में श्री राधा मोहन जी ने क्रांतिकारी पार्टी के संगठन में भी सहयोग दिया। एक बार वे क्रांतिकारी कार्य के सिलसिले में राजा महेन्द्र प्रताप से भेंट करने के लिए नेपाल गये परन्तु भेंट न हो सकी।

मेरठ कांस्परेसी केस के सिलसिले में श्री राधा मोहन गोकुल जी के छोटे भाई के मकान पर जहां राधा मोहन जी आगरा जाने पर ठहरा करते थे, तलाशी हुई। परन्तु पुलिस कुछ भी आपत्तिजनक सामग्री न पा सकी, केवल 'कम्युनिज्म क्या है? पुस्तक की कुछ प्रतियाँ ही उनके हाथ लगीं। तलाशी के समय श्री राधा मोहन जी आगरा में नहीं थे।

श्री राधा मोहन जी इसके बाद कानपुर चले आये और क्रांतिकारियों को सहयोग भी देते रहे, परन्तु 1930 में पुलिस ने पुनः कुछ अभियोग लगाकर आपको जेल भेज दिया। जेल में राधा मोहन जी के स्वास्थ्य पर बुरा असर पड़ा। जेल से छूटकर श्री राधा मोहन जी इलाहाबाद पहुँचे। वहां पर भी सी.आई.डी की निगाह श्री राधा मोहन जी पर लगी हुई थी। जिससे बचने के लिए वे हमीरपुर के खोही गांव में पहुँचे। यहां पर उनको पेचिश का भयंकर रोग लग गया तथा उनका स्वास्थ्य बुरी तरह बिगड़ गया और एक महान् व्यक्तित्व की जीवन लीला समाप्त हो गई।

श्री राधा मोहन गोकुल जी की साहित्य सेवा और उनकी रचनाओं का जिक्र ऊपर किया ज़ा चुका है। उनकी सभी रचनाओं का विस्तृत विवेचन इस छोटे से लेख में संभव नहीं है। अस्तु, आज भी हमारे लिए उतनी ही उपयोगी है।

पहली पुस्तक 'कम्युनिज्म क्या है?' में मार्क्सवाद एवं कम्युनिज्म के आधारभूत सिद्धान्तों को सरल एवं सादी भाषा में बहुत ही रोचक ढंग से प्रस्तुत किया गया है। जिन लोगों ने मार्क्सवाद या कम्युनिज्म के सम्बन्ध में कुछ भी नहीं पढ़ा है, उनके लिए यह पुस्तक आज भी अत्यन्त उपयोगी है।

—*—

श्री जगन्नाथ दास "रत्नाकर"

श्री जगन्नाथ दास जी का जन्म संवत 1923 (सन् 1866) में काशी के एक प्रतिष्ठित अग्रवाल कुल में श्री पुरुषोत्तमदास के घर हुआ था। आपने बी.ए. उत्तीर्ण कर नौकरी कर ली। आप अयोध्या नरेश के निजी सचिव रहे। आपका हिन्दी साहित्य से अतिशय अनुराग था। संवत् 1980 में आप हिन्दी साहित्य सम्मेलन के कलकत्ता अधिवेशन के सभापति निर्वाचित हुए।

आपने हिन्दी और फारसी में अनेक काव्य रचनाएँ की। इनमें मुख्य गंगावतरण, उद्धवशतक, हिण्डौल, हरिश्चन्द्र है। आपने बिहारी सतसई की 'बिहारी रत्नाकार" नाम से टीका लिखी है। आपकी शैली रीतिकाल के सूर तथा मीरा की भावुकता, देव की प्रेम ममता, बिहारी की कलात्मकता, पद्माकर का प्रभाव तथा भूषण की ओजस्विता का सुन्दर समन्वय है।

आपकी भाषा शुद्ध साहित्यिक बृजभाषा है। मुहावरों और लोकोक्तियों का अत्यन्त सफल प्रयोग किया गया है। आपके विषय श्रृंगार, भ्रमरगीत, भक्ति सम्बन्धी कवित्त, प्रकृतिचित्रण से मिश्रित अत्यन्त सफल है। आपका 66 वर्ष की आयु में संवत् 1989 को हरिद्वार में निधन हो गया। आपके लिए राष्ट्र-कवि सोहनलाल द्विवेदी ने लिखा था–

'एक स्वर्ण खो जाने से, हो उठता उर कतार।
कैसे धैर्य धरें वह जिसका, लुट जाता रत्नाकर"

ऐसे साहित्यकार-मनीषि पर अग्रवाल जाति गौरवान्वित है।

—✻—

उच्च न्यायालय में प्रथम भारतीय न्यायाधीश

अग्र-गौरव सर शादीलाल

अग्रवाल समाज उद्योग और व्यवसाय में ही नहीं, जीवन के सभी क्षेत्रों में अग्रणी रहा है। अग्रे-अग्रे अग्रवाल जो प्रत्येक क्षेत्र में आगे रहे वह होता है अग्रवाल।

सर शादीलाल अग्रवाल समाज के ऐसे ही महान् गौरव थे, जिन्होंने भारत के किसी उच्च न्यायालय में सर्वप्रथम मुख्य न्यायाधिपति होने का गौरव प्राप्त हुआ।

आपका जन्म 12 मई 1874 को जिला महेन्द्रगढ़ के रिवाड़ी नगर में मंगल गौत्री अग्रवाल कुलीन परिवार में हुआ। 1890 में आपने मैट्रिक परीक्षा प्रथम स्थान से उत्तीर्ण की तथा स्नातक परीक्षा में पुनः प्रथम स्थान प्राप्त कर, छात्रवृत्ति प्राप्त करने का गौरव प्राप्त किया। तत्पश्चात् आप उच्च अध्ययन के लिए इंग्लैंड चले गये। वहाँ आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय के अन्तर्गत बेलायल कालेज में दाखिल होकर संस्कृत, गणित, भौतिकी तथा दीवानी कानून के विषय लिये और "बैचलर ऑफ सिविल लॉ" की परीक्षा प्रथम स्थान से उत्तीर्ण की। वहाँ आपने अपने अध्ययन के मध्य संवैधानिक कानून में विशिष्ट पुरस्कार प्राप्त किया। आप मार्डन लॉ तथा कानूनी शिक्षा के स्कॉलर रहे।

आप बोर्डन संस्कृत छात्रवृत्ति, भौतिकी एवं गणित कीर्तिमान, ग्रे जइन का आर्डन स्कालर एवं विधिविद्या परिषद् का सम्मानित व्यक्ति और संवैधानिक कानून में विशिष्ट पदकधारी रहे। स्नातक परीक्षा में शादीलाल ने सर्वोच्च स्थान प्राप्त किया।

कानून में शादीलाल की बेजोड़ प्रतिभा प्राध्यापकों में चर्चा का

विषय थी। वे उन्हें क्या पढ़ायें, कहां से पायें, यही सोचते रहते थे। रोमन कानून के प्राध्यापक मि. एफ. आइ. स्मिथ की कक्षाओं में शादीलाल प्रायः अनुपस्थित रहा करते थे। पर स्मिथ साहब ने इसका जरा भी बुरा नहीं माना। वह समझते थे कि रोमन लॉ में शादीलाल का ज्ञान इतना विस्तृत है कि अब उन्हें कुछ बताने की आवश्यकता नहीं। इसीलिये एक दिन प्रो. स्मिथ ने उन्हें बुलाकर कहा, 'मि. शादीलाल तुम्हारे लिये यह जरूरी नहीं कि तुम मेरी कक्षाओं में नियमित हाजिर रहो, क्योंकि यह विषय तुम भी उतना ही जानते हो जितना मैं जानता हूँ।'

संयोग से यही स्मिथ साहब सब से छोटी आयु के लार्ड हाई चांस्लर थे और उनके शिष्य शादीलाल भारत में छोटी आयु के चीफ जस्टिस।

विदेश से लौटने पर आपने पंजाब मुख्य न्यायालय लाहौर में वकालत करना प्रारम्भ किया। परिणामस्वरूप आप पंजाब विधान परिषद के सदस्य चुन लिये गये, जहां उन्होंने न्यायिक संरचना में व्यापक सुधार हेतु प्रयत्न किये।

1920 में आपकी असाधारण प्रतिभा को देखते हुए पंजाब उच्च न्यायालय लाहौर का मुख्य न्यायाधिपति नियुक्त किया गया। किसी भी भारतीय को उच्च न्यायालय का मुख्य न्यायाधीश होने का यह प्रथम गौरव था।

1934 में आप मुख्य न्यायाधीश के पद से सेवा निवृत्त हुए तो अंग्रेज सरकार ने न्यायिक क्षेत्र में आपकी विशिष्ट प्रतिभा को देखते हुए इंग्लैंड की प्रीविकौंसिल की न्यायिक समिति का सदस्य नियुक्त किया, जो सभी भारतीय उच्च न्यायालयों की अपील के लिए सर्वोच्च न्यायालय था। ब्रिटिश सरकार ने आपकी असाधारण योग्यता से प्रभावित होकर आपको 'सर' की उपाधि भी प्रदान की। आपने अपना जीवन समाज की सेवा के लिए अर्पित कर दिया। आप जीवन भर अपने सिद्धान्तों पर दृढ़ रहे। विदेशों में रहते हुए भी पूर्ण रूप से शाकाहार व्रत का पालन किया। मद्यपान जैसी बुराई से दूर रहे। मार्च 1945 में आपका निधन हो गया। आपकी पुण्य तिथि पर आपको शत्-शत् नमन।

—*—

अग्र महीषी दादी माँ महारानी माधवी

युग सृष्टा, आदि पुरुष, अग्रकुल प्रवर्तक महाराजा अग्रसेन महाभारत के समकालीन सूर्यवंशी क्षत्रीय कुल में राजा बल्लभसेन के दिव्य ज्ञान के दिवाकर सुयोग्य पुत्र थे। राजा बल्लभ सेन अग्रोदक राज्य के नृप थे। इस विशाल जनपद के शासन का राज्यभार राजा बल्लभसेन ने अपने रूपवान, गुणवान समस्त विद्याओं के ज्ञाता, अस्त्र-शस्त्र में निपुण, परम तपस्वी पुत्र श्री अग्रसेन को उनकी 25 वर्ष की आयु में सौंपकर वन-गमन कर लिया।

महाराजा अग्रसेन ने अपने साम्राज्य का विस्तार किया। दो भागों में विभक्त कर एक भाग अपने लघुभ्राता शूरसेन को देकर आगरा (अग्रनगर) का अधिपति बनाया और अपने न्याय व समानता के सिद्धान्त का मधुरतम प्रति-पादन किया।

महाराजा ने महाभारत-कालीन युद्धों की विभीषिका को देखकर अपनी प्रजा के जान-माल की देखरेख व राज्य की सुरक्षा का समुचित प्रबन्ध करने की दृष्टि से उत्तर भारत में अग्रोहा नगर बसाकर उसको अपनी राजधानी बनाया। महाराज ने साम्राज्य प्रबंध व्यवस्था के लिए अपना विवाह 40 वर्ष की अवस्था तक नहीं किया। महाराजा की कीर्ति और वैभव चारों ओर प्रकाशित हो रही थी।

उस समय दक्षिण भारत में नागवंश के शक्तिशाली राजाओं का साम्राज्य था। नागलोक के वैभवशाली नगर कोल्हापुर के प्रतापी शासक राजा कुमुद ने अपनी अत्यन्त रूपवान गुणशीला, सुलक्षणा, विदुषी कन्या

माधवी के विवाह के लिए स्वयंवर रचाया। भू-लोक, देवलोक व देश-देशान्तरों के राजा महाराजाओं को निमंत्रण भेजे गये। इस स्वयंवर में महाराजा अग्रसेन और इन्द्रलोक के देवराज इन्द्र् भी पधारे। महाराजा अग्रसेन जी को कुलदेवी माता महालक्ष्मी का आदेश था कि समृद्धशाली नागलोक के साथ पारिवारिक संबंध स्थापित कर अपने राज्य को सुखी और समृद्धिशाली बनाने में सहयोग प्राप्त करें।

नागकन्या सुन्दरी माधवी ने महाराजा अग्रसेन को रूपवान, गुणवान और अपने योग्य वर पाकर स्वयंवर में उनका वरण कर लिया और वरमाला उनके गले में डाल दी। नागराज इससे अति प्रसन्न हुए और अपनी कन्या का विवाह विधि-विधान पूर्वक धूमधाम से महाराजा अग्रसेन के साथ कर दिया। यह विवाह दो विभिन्न संस्कृतियों का मिलन था। अग्रसेन सूर्यवंशी क्षत्रीय और राजा कुमुद नागवंशी।

इस विवाह से देवराज इन्द्र बहुत हताश और दुःखी हुआ, क्योंकि इन्द्र नागकन्या माधवी की सुन्दरता पर मोहित था और विवाह करना चाहता था, जिसमें उसे सफलता नहीं मिली। इससे वह रुष्ट होकर कुपित हो गया और महाराजा अग्रसेन व महारानी माधवी से बदला लेने के लिए इनके राज्य पर कहर ढाना प्रारम्भ कर दिया। उसने अपने मेघों को पानी बरसाने से रोक दिया। फलतः राज्य में वर्षा के अभाव में पानी की कमी हो गई। खेती-बाड़ी सूख गई। चारों ओर त्राहि-त्राहि मच गई, भीषण अकाल पड़ गया। इस परिस्थिति से महाराजा अग्रसेन और माता महारानी माधवी विचलित नहीं हुए। इन दोनों ने बृम्हचर्यव्रत का पालन करते हुए भगवान शिव की आराधना आरम्भ कर दी। शिवजी ने प्रसन्न होकर कुलदेवी महालक्ष्मी की शरण प्राप्त करने का निर्देश दिया। दोनों पति-पत्नी अकाल और अनावृष्टि पर विजय पाने व उसके लिए समाधान प्राप्त करने के लिए कुलदेवी माता महालक्ष्मी की तपस्या कर, उसे प्रसन्न करने में जुट गये। इनकी निःस्वार्थ, घनघोर तपस्या से प्रसन्न होकर कुलदेवी लक्ष्मी ने उनके राज्य में धन-धान्य, वैभव बने रहने का वरदान प्रदान किया। वरदान

प्राप्त कर तथा इन्द्र से निर्भय होकर अपने समूचे राज्य में महाराजा ने नदियों से नहरें निकाली, बांध और जलाशय बनवाये। कूवें और बावड़ियाँ बनवाई, प्यासी धरती की प्यास बुझाई। माता लक्ष्मी की कृपा से अन्न-जल की कमी दूर हो गई। खेती-बाड़ी होने लगी। पशु-धन की रक्षा हुई। इस प्रकार महाराजा व महारानी ने अपने तपोबल से व नैतिक बल से अकाल और दुर्भिक्ष का मुकाबला कर अपनी प्रजा को सुख पहुँचाया व उनके प्राण बचाये। महाराज ने इन्द्र के द्वारा दी गई यातना से मुक्ति पाई। देवराज इन्द्र महाराजा की शक्ति के आगे टिक नहीं सका और उसे पराजय माननी पड़ी। पराजय से दुःखी इन्द्र ने बृम्हाजी की शरण ली। बृम्हाजी ने आदेश दिया कि युगपुरुष महाराज अग्रसेन तथा अग्रकुल माता माधवी से वैर-भाव छोड़कर मित्रता रखो इसी में भलाई है। राजा इन्द्र ने देवर्षि नारद के माध्यम से महाराज और महारानी माधवी से क्षमा याचना की और संधि कर मित्रता कर ली। इस प्रकार माता माधवी के अपूर्व सहयोग से वेदों की परम्परा का निर्वाह करते हुए महाराजा ने अपने राज्य में सुख और वैभव की पुनर्स्थापना करने में सफलता प्राप्त की।

महाराजा अग्रसेन ने माता माधवी के अतिरिक्त 17 और विवाह रचाये। इनके तीन-तीन पुत्र और एक एक कन्या का जन्म हुआ। इससे महाराजा व महारानी की शक्ति और कीर्ति बहुत बढ़ गई। महाराजा ने अपनी पटरानी महारानी माधवी को साथ लेकर 17 महान अश्वमेघ यज्ञ तथा एक बिना अश्व-बलि के यज्ञ को सम्पूर्ण कर विश्व में धर्माचरण की पताका फहराई। अपने साम्राज्य को 18 विभिन्न गणराज्यों में विभक्त कर अपने 18 पुत्रों को उनका अधिपति (गणाधिपति) नियुक्त किया। 18 यज्ञों के पुरोहितऋषियों के नाम से 18 गोत्रों का प्रचलन कर अग्रवाल वंश की प्रतिष्ठापना की।

इनके 54 पुत्र, 18 पुत्रियाँ तथा 52 पौत्र और 52 पौत्रियाँ हुईं। इनके वंश का बहुत विंस्तार हुआ। महारानी माधवी से उत्पन्न ज्येष्ठ पुत्र का नाम कुमार विभु था, वह महाराजा अग्रसेन का उत्तराधिकारी था, जो

बाद में महाराजा की राजगद्दी पर बैठा। महाराजा और महारानी ने 108 वर्षों तक निर्विघ्न राज्य किया और महाराजा ने 133 वर्ष की आयु होने पर राज-सिंहासन का भार ज्येष्ठ पुत्र विभु को सौंपकर अपनी रानियों सहित वन में तप करने चले गये। दक्षिण में गोदावरी के तट पर ब्रम्हसेन नामक तीर्थ पर तपस्या करते हुए 193 वर्ष की आयु में महाराज अग्रसेन बृम्हलीन हो गये। रानियाँ भी समय समय पर तप करती हुई महाराजा अग्रसेन के जीवनकाल में ही स्वर्ग सिधार गई।

महाराजा अग्रसेन ने क्षात्र-धर्म के साथ साथ वैश्य धर्म का भी प्रतिपादन किया। कृषि-व्यापार को अपनाया। अहिंसा और सत्य को मरमोधर्म मानकर "आग्रेय गणराज्य" तथा "अग्रकुल" की स्थापना की, जो आज अग्रवाल जाति व अग्रवंश कहलाता है। महाराजा के 18 पुत्रों का विवाह भी नागलोक के अहिनगर राज्य (पाताल यानी अमेरिका) के शासक राजा वासुकि (विशानन) की पुत्रियों (18 नागकन्याओं) के साथ हुआ था। ये नागकन्यायें नाग-चोलों में रहती थीं। इससे इनके सन्तान नहीं हो सकती थी। महाराजा अग्रसेन इससे चिंतित थे। लेकिन अग्रसेन जी के दूरदर्शी-स्वामीभक्त तपस्वी भानजे जसराज ने इस समस्या का निवारण किया। नागपंचमी को नागकन्याऐं अपने चोले उतारकर स्नान करती थी। जसराज ने उन चोलों को लेकर अग्नि में प्रवेश कर उन्हें जला डाला और नागकन्याओं को चोलों से मुक्ति दिलाई तथा वंशवृद्धि योग्य बनाया।

नागकन्याऐं चोलों से रहित होकर बहुत दुःखी हुई, लेकिन महाराजा अग्रसेन व महारानी माधवी ने उनका समाधान कर सांत्वना प्रदान की। माता माधवी ने व्यवस्था स्थापित की कि शक्तिशाली व सुप्रसिद्ध नागवंश से तुम्हारा संबंध होने के कारण अग्रवाल वंश के लोग नागों (सर्पों) को मामा कहेंगे। श्रावण शुक्ला नाग पंचमी के दिन सर्पों की पूजा की जावेगी। उन्हें दूध पिलाया जावेगा। भवनों के दरवाजों पर नाग-रूपी थापे मांडे जावेंगे तथा फन के रूप में पत्र-पुष्प द्वारा पूजा की जावेगी। विवाह के समय सांप के फन के आकार की चूण्डी बांधी जावेगी। दुल्हन को चोलों

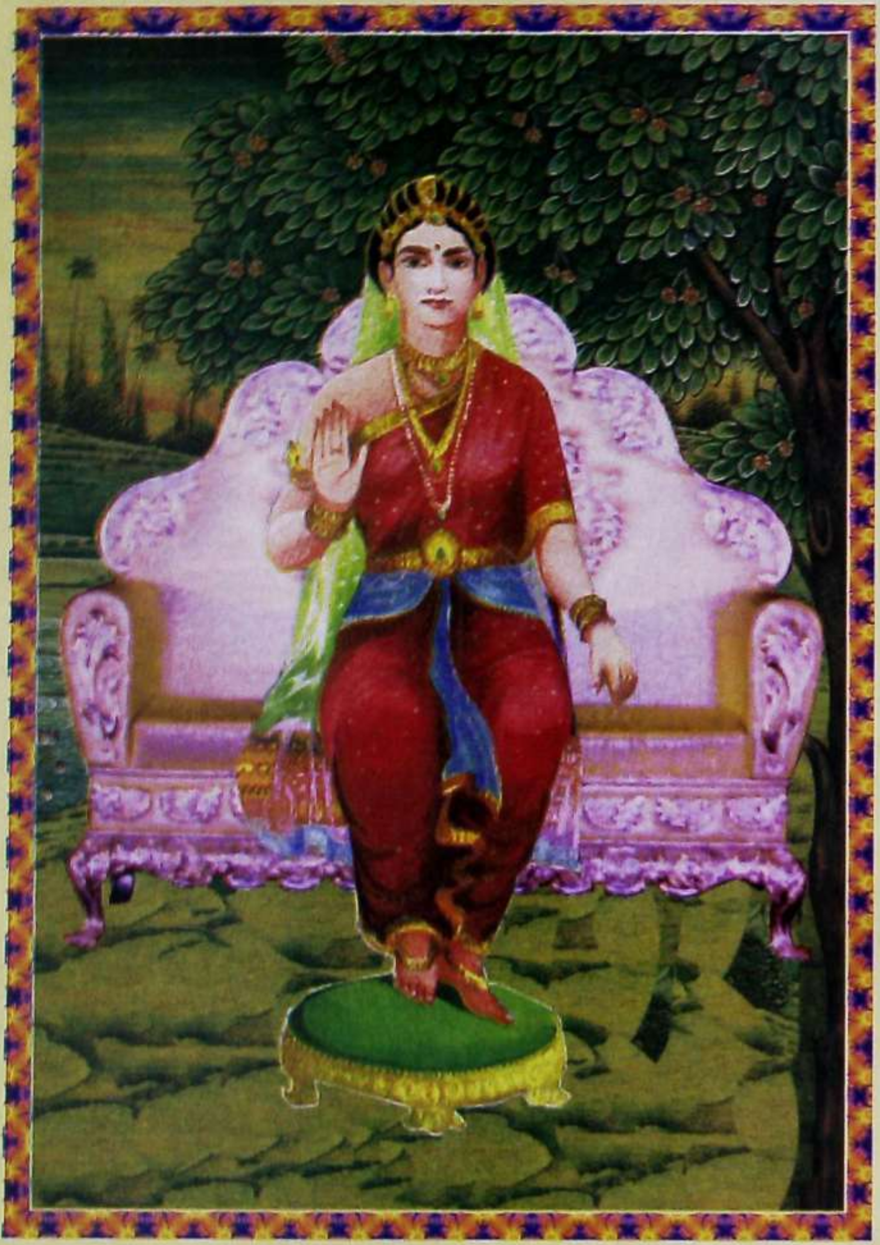

अग्र महीषी दादी माँ महारानी माधवी

की प्रतीक चुनरी ओढ़ाई जावेगी। घोड़े पर सवारी, सिर पर छत्र और चँवर लेकर चला जावेगा। यह सब क्षत्रिय तथा नागवंश का प्रतीक होगा। तुम्हें कभी भुलाया नहीं जावेगा। इस प्रकार तुम्हारी स्मृति अमिट होगी। तुम्हारा यह बलिदान निरर्थक नहीं रहेगा। नागकन्यायें प्रसन्न हो गई और वंशवृद्धि में सहायक बनी। यही कारण है कि इनसे उत्पन्न संताने व आगे की पीढ़ियाँ अत्यन्त बलशाली, बुद्धिमान, परिश्रमी,सद्चरित्र और वैभव युक्त आज भी हैं। आज नाग जो एक आर्येत्तर दिव्य जाति थी, उन्हें गोगा-पीर आदि नामों से अग्रवाल जाति के लोग मानते और पूजा कर इच्छित वरदान प्राप्त करते हैं। मामा पक्ष होने के कारण अग्रवाल वंशजों को सर्प नहीं काटते हैं। महारानी माधवी युग निर्मात्री व अग्रवालों की जन्मदात्री आदिमाता सदैव प्रातः स्मरणीय है। आपका इस वंश को पूर्ण आशीर्वाद प्राप्त है। इनकी स्मृति, जागरण तथा इनसे प्रेरणा प्राप्त करने हेतु प्रतिवर्ष विश्व महिला दिवस के अवसर पर 8 मार्च को इनकी जयन्ति अग्रवाल समाज के विविध संगठनों द्वारा मनाई जाती है। अन्तर्राष्ट्रीय विश्व महिला दिवस पर माता माधवी को याद कर उनके द्वारा प्रतिपादित सिद्धान्तों, उनके सौहार्द, स्नेह तथा मातृत्व को विषयांकित कर प्रतिभा सम्मान व संगोष्ठियाँ आदि के कार्यक्रम आयोजित किये जाते हैं। प्रदर्शनियाँ लगाई जाती हैं। महिलाओं को सम्मानित किया जाता है। महिलाओं की बुलन्दियों की कहानियाँ, सभी क्षेत्रों में बढ़ती नारियों व सामाजिक कार्यकर्त्रियों को याद किया जाता है।

महिला सशक्तिकरण एवं वैश्वीकरण, महिलाओं को शिक्षित और रोजगारोन्मुख करने की योजनाऐं बनाई जाती हैं। महिलाओं की सुरक्षा, उनके आरक्षण, उनके अधिकारों के संबंध में चर्चाऐं की जाती हैं। श्रम कानून के अन्तर्गत उनके स्वास्थ्य विषय पर विचार किये जाते हैं। महिलाओं के अनमेल विवाहों पर रोक, बाल विवाह तथा धोखे की शिकार, दहेज उत्पीड़न की शिकार, वर-पक्ष की ओर से अनावश्यक दबाव से दुःखी महिला वर्ग के संबंध में ठोस कदम व प्रयासों पर चर्चा

होती है। विधवा व परित्यक्ताओं के पुनर्विवाह की योजनाएँ बनाई जाती हैं।

महिलाओं पर घर-गृहस्थी की जिम्मेदारियों, बच्चों के लालन-पालन, पुरुषों की अपेक्षा अधिक परिश्रम तथा कुपोषण की शिकार तथा परिणामतः स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव, इसके अतिरिक्त गृहस्थी के अन्य व्यक्तियों के दुर्व्यव्यवहार, जलीकटी वाणी, बुराई-भलाई की शिकार, सास-बहू की अनबन, घर गृहस्थी को चलाने के लिए अतिरिक्त श्रम, नौकरी करना, व्यवसाय चलाना, मेहनत मजदूरी करना, शिक्षा की कमी तथा अपने बच्चों की शिक्षा में रत इत्यादि अनेकों प्रकार के व्यवहार जन्य आयाम महिलाओं के प्रति विचारणीय बिंदु हैं। महिलाओं-कन्याओं की अति-शिक्षा, सुन्दरता, योग्यता के कारण उनके अनुरूप सुयोग्य लड़कों की कमी, उनके भावी जीवन के लिए एक प्रश्न चिन्ह स्थापित करते हैं। यह समस्या कन्याओं के माता-पिताओं के लिए एक अभिशाप बनती जा रही है। इसके न्विारण के लिए समाज को सोचना पड़ेगा।

माता माधवी जैसी विदुषी महिला के संस्मरण, उनकी व्यवस्थाऐं संभवतया सहायक हो सकें, ऐसा विश्वास है। हमें हमारी महत्वाकांक्षा और सोच को बदलना होगा, कोई ठोस सामन्जस्य पूर्ण रास्ता अपनाना होगा और महिला-दिवस की उपयोगिता सार्थक करनी होगी।

चिरस्मरणीय माता माधवी को शत् शत् नमन्।

—*—

सेवा तो भागीदारी है, जितनी अधिक सेवा करोगे, उतना अधिक पुण्य कमाओगे। अगर सेवा करने का अवसर मिले, तो सेवा करने से चूकना नहीं।

*

सज्जनों के संकल्प, कल्पवृक्ष के फल की भांति शीघ्र ही परिपक्व हो जाते हैं।

माता कस्तूरबा गांधी
(1869-1944)

भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन के गाँधी युग में माता कस्तूरबा का व्यक्तित्व बहुआयामी रहा। उन्होंने गाँधीजी के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर कार्य किया। उनका जन्म काठियावाड़ के पोरबन्दर में अप्रैल, सन् 1869 में हुआ था तथा वह बापू से कुछ माह बड़ी थीं। तेरह वर्ष की आयु में उनका बापू से विवाह हुआ। उन्होंने पत्नी के रूप में बापू की अथक सेवा की तथा उनके क्रोध को भी सहा। उनका पहला पुत्र मृत उत्पन्न हुआ था तथा उनका दूसरा पुत्र (हरिलाल) जब कुछ माह का ही था तो बापू को एक कानूनी मुकदमे के सम्बन्ध में सन् 1893 में एक वर्ष के लिए दक्षिण अफ्रीका जाना पड़ा। वहाँ प्रवासी भारतीय उन्हें वापिस नहीं आने देना चाहते थे और उनके आग्रह पर बापू ने डरबन में अटार्नी के रूप में वकालत करनी स्वीकार की। तीन वर्ष बाद जुलाई, सन् 1896 में अपने परिवार को दक्षिण अफ्रीका लेकर गए। वहाँ उनके सन् 1898 में रामदास और सन् 1900 में देवदास नामक पुत्र उत्पन्न हुए।

गाँधीजी ने दक्षिण अफ्रीका में प्रवासी भारतीयों के लिए जो सत्याग्रह किए उनमें कस्तूरबा की अन्तःप्रेरणा व सहयोग रहा। एक स्त्री के लिए त्याग की भावना प्राकृतिक और स्वः प्रवर्तित होती है। उनसे प्रभावित होकर गाँधीजी ने यह अनुभव किया कि नारी कभी हथियार नहीं उठा सकती और इसलिए उसे अत्याचार व शोषण रोकने हेतु स्व-पीड़ा के अस्त्र का विकास करना पड़ा। नारी ने ही सत्याग्रह की प्रविधि का विकास

किया था, यद्यपि तब तक सत्याग्रह का नाम कोई नहीं जानता था जब तक गाँधीजी ने इसे अपने शब्दावली में प्रस्तावित नहीं किया।

सन् 1901 के अन्त में गाँधी जी ने कस्तूरबा एवं बच्चों के साथ पुनः भारत आने का निश्चय किया तो अफ्रीकी भारतीय समुदाय ने उन्हें इस वायदे के साथ स्वीकृति दी कि यदि आवश्यकता पड़ी तो वे वापस आएंगे। दक्षिण अफ्रीका के भारतीय समुदाय ने उन्हें अत्यन्त महँगे उपहार दिए किन्तु गाँधी परिवार ने एक ट्रस्ट बनाया, जिसके तहत यह व्यवस्था की कि इन महँगे उपहारों से प्राप्त धन का उपयोग भारतीय समुदाय की भलाई के लिए किया जाए।

यह परिवार बम्बई में आकर सांताक्रुज में एक किराए के मकान में रहने लगा किन्तु अक्टूबर सन् 1902 में दक्षिण अफ्रीका के भारतीय समुदाय ने उन्हें पुनः वहाँ बुलाया। गाँधीजी ने 20 नवम्बर सन् 1902 को भारत छोड़ा और 1 जनवरी सन् 1903 को प्रीटोरिया पहुँचे। कस्तूरबा सन् 1904 में अपने तीन छोटे बेटों के साथ वहाँ पहुँची। हरिलाल भारत में ही रुक गए।

सन् 1903 में दक्षिण अफ्रीका आने के उपरान्त गाँधीजी एक तीव्र आध्यात्मिक परिवर्तन से गुजरे। सन् 1906 में उन्होंने ब्रह्मचर्य का व्रत ग्रहण किया और अपने जीने के तरीके को बदलने का निश्चय किया। उन्होंने नैटाल की राजधानी डरबन से चौदह मील दूर फिनीक्स रेल्वे स्टेशन के पास जमीन का एक टुकड़ा खरीदा तथा वहाँ 'फिनीक्स सेटलमेंट' की स्थापना की। उनके मस्तिष्क पर रस्किन की पुस्तक 'अन टू दिस लास्ट' ने गहरा प्रभाव छोड़ा था। उन्होंने निर्धनता का व्रत लिया। कस्तूरबा ने उनके सभी प्रयोगों में उनका साथ निभाया और स्वेच्छा एवं प्रसन्नता से सादा जीवन ग्रहण किया। बाद में दक्षिण अफ्रीका में सत्याग्रह के दौरान उन्होंने महिला सत्याग्रहियों का नेतृत्व किया और उस देश की जेलों में अत्यन्त कठोरता से पीड़ित हुईं। जितनी पीड़ाएँ उन्होंने एवं अन्य सत्याग्रहियों ने भोगी, आज के मानवाधिकारों के युग में उसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती। उस समय की अंग्रेज सरकार अपने उपनिवेशों

में मानवाधिकारों को लागू नहीं होने देती थी। सन् 1914 में "गाँधी-स्मट्स समझौते" से सत्याग्रह का सफलतापूर्वक अन्त हुआ। तत्पश्चात् गाँधी कस्तूरबा के साथ 9 जनवरी सन् 1915 को वापिस भारत पहुँचे। उनके दल के शेष सदस्य सन् 1914 में ही भारत आ गए थे।

भारत में, गाँधीजी का दल गुरुदेव टैगोर के आमन्त्रण पर पहले शान्ति निकेतन में ठहरा, जहाँ सन् 1915 में गाँधी जी और कस्तूरबा आकर उनसे मिले। बाद में गाँधी जी ने स्वयं अपना आश्रम स्थापित किया, पहले कोचरब में, बाद में अहमदाबाद के साबरमती में और तत्पश्चात् सन् 1936 में विदर्भ के वर्धा जिले के सेवाग्राम में। गाँधीजी ने भारत के विभिन्न भागों और यहाँ तक कि विदेशों में कार्यकर्त्ताओं को आकर्षित किया। कस्तूरबा सभी आश्रमों में माता की आकृति थीं। वह कठोर परिश्रम करती थीं और सभी की देखभाल करती थीं। जो कुछ भी वह कर सकती थीं, वह स्वयं करती थीं और उन पर कभी भी थकान नजर नहीं आती थी। वह सच्ची सत्याग्रही थीं और जब उनके पति गिरफ्तार होते थे तो वह उनका स्थान ले लेती थीं।

भारत छोड़ो आन्दोलन प्रारम्भ होने पर जब 9 अगस्त सन् 1942 को कस्तूरबा को गिरफ्तार किया गया तो उनका स्वास्थ्य अत्यधिक खराब था। वह जेल का खाना किसी भी हालत में नहीं ले सकती थीं। वह डायरिया, बुखार और भूख से अत्यधिक कमजोर हो गईं थीं। जेल के अधिकारी अत्यधिक चिन्तित हो गए और उन्हें पूना के आगा खाँ महल के नजरबन्द शिविर में बापू के पास भेजने का निश्चय किया। 22 फरवरी, 1944 को इस शिविर में कस्तूरबा का 75 वर्ष की आयु में देहान्त हो गया और नजरबन्द शिविर के परिसर में 23 फरवरी सन् 1944 को उनका दाह संस्कार किया गया। गाँधी जी के साथ उन्होंने 62 वर्ष का दाम्पत्य जीवन व्यतीत किया और हर क्षेत्र में वह उनकी शक्ति बनी रहीं। वह केवल उनकी सहधर्मिणी ही नहीं थी, अपितु सहयात्री, सहनेत्री, निजी सहायक, मंत्रिणी एवं प्रेरणा आदि थीं। जैसा गाँधी जी ने स्वयं कहा कि सत्याग्रह की पहली सीख उन्होंने कस्तूरबा से प्राप्त की थी। ऐसी माता को शत्-शत् नमन।

—*—

अग्र विभूति माता जानकी देवी बजाज

स्वाधीनता आन्दोलन की जुझारु महीषी श्रीमती जानकी देवी इन्दौर के पास जावरा ग्राम के सेठ गिरधारी जी जाजोदिया की पुत्री थी। इनका विवाह 8 वर्ष की अवस्था में ही महात्मा गांधीजी के ओरस-पुत्र सीकर जिले के अग्रवाल परिवार के सेठ कनीराम बजाज के पुत्र जमनालाल बजाज के साथ हुआ था। छोटी सी उम्र में ही जानकी देवी अपने पति के साथ लक्ष्मणगढ़ से वर्धा आ गई और उनके साथ सेवामय जीवन बिताने लगी। इनकी सास श्रीमती सद्दी बाई इनकी शादी से पूर्व ही भगवान की प्यारी हो गई थी। इनके ससुर सेठ बच्छराज का भी कुछ काल बाद देहान्त हो गया। उस समय जमनालाल बजाज की उम्र मात्र 17 वर्ष की थी। जानकी देवी पर घर का सम्पूर्ण भार उनकी छोटी अवस्था में ही आ पड़ा। जिसे बड़े धैर्य और हिम्मत के साथ सम्हाला और अपने पति जमनालाल जी को ऐसे निस्सहाय समय में सहारा देकर जीवन को सम्हाला।

सन् 1912 में इनके प्रथम पुत्री कमलाबाई और सन् 1915 में प्रथम पुत्र कमल नयन का जन्म हुआ। सब प्रकार की सम्पन्नता होते हुए भी जानकी देवी अपना जीवन सर्वसाधारण जन की भांति सादगी से व्यतीत करती थी। अपने हाथों सारा काम करती। श्रम और सादगी को ही अपना श्रृंगार मानती थी। जमनालाल जी गहने आदि पहनने के विरोधी थे। फलस्वरूप जानकी देवी ने भी जेवर आदि पहनना बंद कर दिया। घर-

परिवार में पर्दा-प्रथा को बंद करवाया। स्वदेशी-वस्त्र-वस्तुओं के आन्दोलन के समय उन्होंने अपने घर के महंगे कपड़ों की होली जलाई और स्वदेशी के प्रचार में लग गईं। घर में सभी चर्खा कातते और खादी-वस्त्र पहनने लगे। सादा जीवन अपना लिया। इनके बच्चे भी उसी रंग में रंग गये। जमनालाल जी बजाज का जब गांधीजी से सम्पर्क बढ़ा तो जानकी देवी अपने पति का अनुसरण करती हुई गांधीजी के पद-चिन्हों पर चलने लगी। वर्धा में जमनालाल जी ने सेवाग्राम आश्रम की स्थापना की। जानकी देवी ने इसका समस्त कार्यभार सम्हाल लिया। वर्धा में ही महिला आश्रम की स्थापना की जिसमें निराश्रित महिलायें शरण पाती थी। इनकी देखरेख, सुरक्षा जानकी देवी करती थी। इन्हें सभी माता कहने लगे और ये माता जानकी देवी हो गई।

कुछ अर्से बाद इनके दूसरे बेटे रामकृष्ण का जन्म हुआ। जमनालाल जी अछूतोद्धार के कार्य में लग गये। इसके लिए अपने घर में हरिजन को नौकर रखा गया जो इनकी भोजन व्यवस्था देखने लगा।

माता जानकी देवी ने दहेज के बहिष्कार, स्त्री शिक्षा, विवाह समारोहों में फिजूल खर्ची रोकने, विधवा विवाह कराने, बाल-विवाह रोकने, पर्दा प्रथा हटाने जैसे अनेक सामाजिक सुधार के कार्यों में जमनालाल जी बजाज का सहयोग तन-मन-धन से करने लगी। अपने पुत्र-पुत्रियों के विवाह भी अत्यन्त सादगी तथा खादी के वस्त्रों में करके आदर्श प्रस्तुत किये। नाच-गाने, फूहड़-नृत्य इत्यादि का बहिष्कार किया।

सन् 1930-31 में गांधीजी के नमक-सत्याग्रह आन्दोलन में जमनालाल बजाज के साथ जानकी देवी ने भी सत्यागृही के रूप से भाग लिया। अपने पति के साथ 2 वर्ष का कारावास नासिक रोड जेल में बिताया।

इन्होंने अपनी बेटी कमला का विवाह रामेश्वर प्रसाद जी नेवटिया के साथ साबरमती आश्रम में ही बड़ी सादगी से किया। जानकी देवी की मझली बेटी मदालसा का विवाह श्री मन्नारायण अग्रवाल के साथ हुआ।

छोटी बेटी उमा अग्रवाल भी स्वाधीनता सेनानी बन गई। इनका विवाह गांधी जी ने करवाया।

जमनालाल जी राजनीति के कार्यों के साथ-साथ गो-भक्त थे। आचार्य विनोबाभावे के साथ गो सेवा में लग गये थे। सेठ जमनालाल बजाज अपने शरीर की परवाह किये बिना स्वदेशी प्रचार-प्रसार और स्वाधीनता संग्राम में इतने व्यस्त और परिश्रम करते रहे कि वे बीमार रहने लगे और 1942 में चिर-निद्रा में सो गये। इनके स्वर्गवास के बाद उस कार्य को माताजी ने तन-मन-धन से चलाया।

माताजी के जीवन कर्म नारी स्वतंत्रता एवं समानता के प्रकाश बिन्दु हैं। आधुनिक नारी उससे आलोक-ग्रहण कर देश तथा समाज तथा स्वयं का कल्याण कर सकती है।

माता जानकी देवी के नाम से "जानकी देवी बजाज सेवां ट्रस्ट" की स्थापना की गई है जो जानकी देवी जी के चलाये कार्यों व संस्थानों की व्यवस्था एवं देख रेख कर दीन-दुखियों की सेवा में संलग्न है।

माता जानकी देवी जैसी सती, विदूषी, सेवा की प्रतिमूर्ति, पति-परायण को शत् शत् नमन्।

—*—

जो माता-पिता-गुरु का आदर, सम्मान व सेवा करके उन्हें प्रसन्न रखता है, वह तीनों लोकों में प्रशंसनीय व सुख का भागीदारी बनता है। माता की भक्ति से मृत्युलोक को, पिता की भक्ति से अंतरिक्ष लोक को और गुरु की सेवा से ब्रह्मलोक को प्राप्त करता है।

*

ईर्ष्या आदमी को उसी तरह खा जाती है, जैसे कपड़े को कीड़ा।

स्वाधीनता सेनानी मदालसा नारायण

महान् देशभक्त व गाँधीवादी चिंतक श्रीमती मदालसा नारायण का स्वर्गवास सेवा ग्राम मेडिकल कालेज में हुआ। वे 83 वर्ष की थीं। वे अपने पीछे दो पुत्र भरत अग्रवाल तथा रजत अग्रवाल सहित भरा पूरा परिवार छोड़ गईं। उनकी यात्रा में उनके भतीजे शेखर बजाज परिवार सहित पहुँचे।

मदालसा नारायण का जन्म वर्धा में जमनालाल बजाज के यहाँ 27 अगस्त 1917 को हुआ। राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी और संत विनोबा भावे द्वारा प्रदत्त संस्कारों में पली-बढ़ी व दीक्षित हुई। सन् 1990 में महाराष्ट्र सरकार द्वारा उन्हें "सावित्रीबाई फूले पुरस्कार" से सम्मानित किया गया। राजस्थान के उदयपुर विश्वविद्यालय द्वारा उन्हें "कल्याणी शोभा" के रूप में अभिनंदित किया गया। शिक्षा साबरमती आश्रम में छठी कक्षा तक हुई। उनके हिन्दी, मराठी, गुजराती, अंग्रेजी आदि भाषाओं में अनेक लेख पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होते रहे हैं। उनके द्वारा संपादित व लिखित अनेकों पुस्तकें हैं, आकाशवाणी व दूरदर्शन में उनकी रचनायें एवं विचार अनेकों बार प्रसारित हुए हैं, वे स्वतंत्रता सेनानी थीं, किंतु पेंशन नहीं लेती थीं। उन्होंने "तरुणाभिनंदन" का शुभारंभ किया था। सर्वोदय समाज का प्रचार उन्होंने अपने पति श्रीमन् नारायण के साथ विदेशों में किया। भूदान आंदोलन के समय विनोबाजी के साथ पद यात्रायें कीं। उन्होंने सुविधापूर्ण प्रदर्शनी, गाँधी जीवन दर्शन प्रदर्शनी, सहकारी भंडार आदि सामाजिक

कार्यों में अपना समस्त जीवन अर्पण कर दिया। 3 जनवरी 1978 को उनके पति श्रीमन् नाारायण के स्वर्गवास के पश्चात् वर्धा में रहकर वे उनके अधूरे कार्यों को भक्ति और शक्ति भर पूर्ण करने में लगी रहीं। उन्होंने श्रीमन् नारायण स्मृति संस्थान की स्थापना की। मदालसा नारायण एक विदूषी महिला थी। उन्होंने किशोरावस्था में ही समस्त धार्मिक ग्रंथों का अध्ययन किया था। उन्हें अपने माता-पिता से समाज सेवा के संस्कार बचपन से ही प्राप्त हुए थे। मदालसा नारायण के स्वर्गवास का समाचार मिलते ही स्वतंत्रता सेनानियों, गाँधीवादियों, सामाजिक संगठनों तथा शहर में शोक की लहर फैल गई। कई संगठनों के लोग अपनी श्रद्धांजलि व्यक्त करने जीवन कुटीर गये। ऐसी माँ-महिषी को अग्रवालों का शत्-शत् प्रणाम।

—*—

सन्देश है आज उन्हीं का, उन पर श्रद्धा पक्की हो।
मदिरा, मांस, बुराई त्यागें, बात आज से नक्की हो॥
भूल करे जो इन नियमों में, उनके आगे अंधेरे हो।
अग्रसेन की ऊँची आत्मा, सब पर शीघ्र कृपालु हो॥

***

अग्रसेन हमारे पूर्वज के, गुण हमको अपनाना है।
अपनी उज्जवल संस्कृति का, दीपक सतत् जलाना है॥

***

भविष्य चाहे कितना ही सुन्दर हो, उस पर विश्वास न करो।
भूतकाल क्या रहा, की भी चिन्ता मत करो।
जो कुछ करना है, उसे स्वयं और इश्वर पर,
विश्वास रखकर वर्तमान में करो।

स्वदेशी के उन्नायक लाला हरदेवसहाय

महान् गौभक्त ला. हरदेवसहाय आजीवन राष्ट्र, गौमाता, हिन्दी, खादी तथा शिक्षा की सेवा में समर्पित रहे।

लाला जी का जन्म हिसार जनपद के सातरोड़ गांव में लाला मुसद्दीलाल अग्रवाल के घर हुआ था। उन्होंने 12 जुलाई 1912 को सातरोड़ गांव में हिन्दी विद्यालय की स्थापना की।

उन्होंने बचपन में ही खादी पहनने, चमड़े के जूते न पहनने तथा हिन्दी के प्रचार का संकल्प ले लिया था। सन् 1921 में सत्याग्रह करते हुए उन्हें गिरफ्तार कर पंजाब की मियांवाली जेल भेज दिया गया। जेल में स्वामी श्रद्धानन्द जी से गीता, गाय तथा गायत्री के प्रचार की प्रेरणा ली। सन् 1942 के असहयोग आन्दोलन में भी वे जेल भेजे गये।

देश स्वाधीन हुआ तो लाला जी ने कांग्रेस सरकार से गौहत्या बन्द करने, शराबबन्दी करने तथा अंग्रेजी की जगह हिन्दी को राष्ट्रभाषा का स्थान देने की मांग की। कांग्रेस सरकार ने जब गौहत्या बन्द करने से इन्कार कर दिया तो वे कांग्रेस के विरुद्ध मैदान में डट गये तथा 'भारत गौसेवक समाज' की स्थापना कर गौरक्षा के अभियान में जुट गये। उन्होंने गाय सम्बन्धी अनेक महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ लिखे। वर्षों तक 'गोधन' पत्रिका का सम्पादन किया। लालाजी ने 'देश के दुश्मन', 'मीठा जहर', 'भारत माँ की दुर्दशा क्यों?' तथा 'लोकसभा में गाय' जैसे अनेक महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ लिखे। उन्होंने कलकत्ता में गौवंश की हत्या रुकवाने के लिए सतत संघर्ष किया। धर्मसम्राट स्वामी करपात्री जी महाराज, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक श्री गोलवलकर (गुरुजी), भाई हनुमानप्रसाद पोद्दार तथा सन्त प्रभुदत्त ब्रह्मचारी जैसी विभूतियों का उन्हें निरन्तर सहयोग प्राप्त होता रहा। 30 सितम्बर 1962 को अग्रवाल समाज की यह महान् विभूति गोलोकवासी हो गई।

महान् आध्यात्मिक विभूति
श्री जयदयाल जी गोयन्दका

स्वामी श्री शिवानन्द जी के शब्दों में "सेठ श्री जयदयाल जी गोयन्दका ने हिन्दू धर्म के पुनरुद्धार के निमित्त जितना कुछ किया है, उसकी तुलना महर्षि वेद व्यास जी से की जाए तो उसमें कोई अत्युक्ति नहीं।" (योग वेदान्त-मई 1965)। बाल्यावस्था से ही गीता के प्रति उनकी अपार निष्ठा थी। गीता के नियमित अध्ययन से उन्हें साधना का पथ मिला, हृदय में शांति मिली। यह ज्ञान, यही शांति जन-जन को मिले, इस मंगल कामना से गोयन्दका जी ने अपना पूरा जीवन ही गीता प्रचार के लिए अर्पित कर दिया।

गोयन्दका जी का जन्म ज्येष्ठ कृष्ण 6 सं. 1942 को राजस्थान के चूरू नामक शहर में एक वैष्णव अग्रवाल परिवार में हुआ था। वे सात भाई-बहन थे। चार भाई एवं तीन बहनें। अपनी कोई संतान न होने के कारण, बाद में उन्होंने अपने कनिष्ठ भ्राता मोहन लाल जी को गोद ले लिया था। जयदयाल जी के पिता श्री खूबचंद जी हाथ से बुने कपड़े का व्यापार करते थे।

श्री गोयन्दकाजी गीता-प्रचार को ही अपने जीवन का लक्ष्य बना लिया। जहां कहीं भी वे जाते, व्यापार के कार्यों से छुट्टी पाने पर मित्रों, परिचितों और स्वजनों को गीतोक्त निष्काम कर्मयोग का उपदेश देते और उन्हें गीता पढ़ने की प्रेरणा देते। धीरे-धीरे व्यापार गौण होता गया, उसका स्थान गीतानुमोदित सत्संग-मनन, ध्यान-ज्ञान, भक्ति तथा वैराग्य-चर्चा ने ले लिया।

श्री गोयन्दका जी की दैनिकचर्या बड़ी ही नियमित थी। वे प्रातः काल 4 बजे से रात के 11-12 बजे तक कार्यरत रहते थे। कहीं प्रमाद नहीं, आलस्य नहीं, तन्द्रा नहीं, विश्राम नहीं, उदासीनता नहीं। वे चाहे यात्रा में हो, सभा में हो, चाहे जहाँ भी हो, संध्या के समय सब कुछ छोड़कर नियत समय पर सन्ध्योपासना में लग जाते। हल्का सात्विक भोजन। गो दुग्ध पर उनका विशेष आग्रह था। वस्त्र भी शरीर पर बस एक धोती, एक चौबन्दी, एक चादर। जब से होश सम्भाला, चमड़े के जूते नहीं पहने, विदेशी वस्त्र छूए नहीं, अंग्रेजी दवाईयाँ ली नहीं।

श्री गोयन्दका जी एक विशिष्ट मिशन लेकर आये थे। उनका सम्पूर्ण जीवन गीता के प्रकाश से प्रकाशित और उसके अमृत से ओत-प्रोत था। वे साक्षात् गीता मूर्ति थे। गीतानुसारी जीवन का ऐसा उदाहरण भारतीय संस्कृति और साधना के इतिहास में विरल ही है। भगवान ने मानो अपना गीतारूपी हृदय गोयन्दका जी के हृदय में ढाल दिया था और गोयन्दका जी ने इस अमृत प्रसाद को साठ पैसठ वर्षों तक दोनों हाथों से साहित्य प्रकाशित कर लुटाया, प्रवचनों द्वारा लुटाया व स्वयं अपना जैसा ही जीवन बनाकर लुटाया। गीता प्रवचनों का अजस्त्र प्रवाह चलता रहा। लगता था यह व्यक्ति केवल गीता के लिए ही इस पृथ्वी पर आया है।

श्री गोयन्दका जी ने गीताप्रेस के माध्यम से अत्यंत कम मूल्य पर धार्मिक साहित्य, वेद शास्त्रों, रामायण, महाभारत, गीता को घर- घर पहुंचाया। आज के घोर नास्तिकता के वातावरण में आज देश-विदेश में जो सनातन धर्म के सिद्धान्तों का प्रचार मिलता है, उसमें आपकी मुख्य भूमिका रही। सौभाग्य से आपको श्री घनश्याम दास जालान, श्री हनुमान प्रसाद पोद्दार एवं स्वामी रामसुखदास जी के रूप में ऐसे सहयोगी मिले, जिन्होंने सेठ जी के अनुष्ठान को पूर्ण करने में बहुत कुछ योगदान किया और स्वामी रामसुखदास जी तो आज भी संलग्न हैं।

व्यवसाय के सिलसिले में वे जन्मभूमि छोड़कर बाकुँड़ा (पश्चिमी बंगाल) चले गये थे। उनके परिवार में व्यापार का लक्ष्य भी प्रधानतः दीन-दुखियों की सेवा-सहायता के लिए अर्थोपार्जन ही बन गया था।

उनका अपना रहन-सहन बहुत ही सादा था। बाँकुड़ा व अन्यत्र गोयन्दका परिवार द्वारा अपार जन-सेवा की गई, जिनमें दुर्भिक्ष एवं बाढ़ के स्वयं सेवा, निशुल्क सेवा चिकित्सालय, विद्यालय आदि उल्लेखनीय हैं।

व्यापार के सिलसिले में सेठ जी प्रायः कलकत्ता जाया करते थे। सत्संग का कार्यक्रम वहां भी आयोजित होता था। सत्संग स्थल किसी घनिष्ठ परिचित का घर या दुकान होता था। धीरे-धीरे सत्संगियों की संख्या बढ़ने लगी और इसके लिए अन्य व्यवस्था की आवश्यकता हुई। तब बासतल्ला गली में "गोविन्द भवन" के नाम से एक मकान किराये पर ले लिया गया। बाद में यह सेठ जी के सत्संग का प्रधान केन्द्र हो गया। उनकी सन्निधि में सैकड़ों जिज्ञासु ध्यान का अभ्यास करते, नियमित रूप से नाम-जप होता और गीता पर आधारित प्रवचन चलता। सेठजी भगवान के निर्गुण और सगुण रूप को समान महत्त्व देते थे। परम-लक्ष्य की प्राप्ति में ज्ञान, निष्काम कर्म तथा भक्ति-तीनों ही पथ, साधक की रुचि के अनुसार उन्हें स्वीकार्य थे।

सत्संग समितियों का जाल बिछा– कालान्तर में सेठ जी के सत्प्रयास से उत्तरी भारत में गीता पर आधारित सत्संग-समितियों का एक जाल-सा बिछ गया और उसके परिणाम-स्वरूप साधकों का एक समूह सा खड़ा हो गया, जो गोयन्दका जी द्वारा उपदिष्ट मार्ग पर जीवन को सफल बनाने के लिए प्रयत्नशील रहता। इन सबको स्वाध्याय के लिये गीता की आवश्यकता हुई किन्तु इस समय शुद्ध अर्थ तथा शुद्ध पाठ की गीता सुलभ नहीं थी। अंत में सन् 1923 में गोरखपुर में इस कार्य के लिए प्रेस की स्थापना हुई और नाम रखा गया "गीता प्रेस।" एक छोटे से हैण्ड-प्रेस एवं ट्रेडिल मशीन से शुरू हुआ यह गीता प्रेस आज भारत का एक प्रमुख मुद्रणालय है। यहां से अब तक पाँच करोड़ से भी अधिक संख्या में गीता प्रकाशित हो चुकी है। गीता प्रेस के प्रकाशन सस्ते दाम तथा धार्मिक पुस्तकों के लिए भारत में सुप्रसिद्ध है। भारत के धार्मिक साहित्य को कम से कम दामों में जनता के हाथों तक पहुंचाने का जो यह कार्य सेठजी ने किया है, वह अद्वितीय है।

श्रीरामकृष्ण परमहंस और स्वामी विवेकानन्द की तरह सेठजी को भी एक अपूर्व सहयोगी प्राप्त हुए– "भाई जी" हनुमान प्रसाद पोद्दार। भाईजी 18 वर्ष की उम्र में संयोगवश ही एक सत्संग में सेठजी के सम्पर्क में आये और कालान्तर में अध्यात्म-पथ में उनके प्रधान साथी बन गये।

कल्याण की स्थापना– सन् 1926 में भाई जी के यशस्वी सम्पादकत्व में धार्मिक विचारों के प्रचार-प्रसार के लिए "कल्याण" नाम से एक हिन्दी मासिक पत्रिका का प्रकाशन हुआ। "कल्याण" ने हिन्दू धर्म के पुनरुत्थान में अभूतपूर्व कार्य किया। गीता प्रचार के कार्य में भी "कल्याण" के प्रकाशन में अभूतपूर्व सहयोग दिया। "कल्याण" में सेठजी की रचनाओं में से एक स्तम्भ "परमार्थ-पत्रावली" भी था, जिसके द्वारा सेठजी साधना-पथ में आने वाली व्यवहारिक कठिनाइयों और आध्यात्मिक जटिलताओं से सम्बद्ध पाठकों की शंकाओं का समाधान किया करते थे। "कल्याण" की ग्राहक संख्या डेढ़ लाख से भी अधिक थी और है, और यह पत्र आज भी सात्विकता और आध्यात्मिकता का संदेश जन-जन तक पहुंचाने का दुष्कर कार्य कर रहा है।

सेठजी की रचनाओं में "गीता-तत्व-विवेचनी" एक महान् कृति है– जो गीता का भाष्य है। उनके लेखों का संग्रह "तत्व-चिन्तामणि" के नाम से अनेक भागों में प्रकाशित हुआ है। अन्य ग्रन्थों में 'त्याग से भगवत्प्राप्ति', 'प्रेमभक्ति प्रकाश', 'परम साधन', 'मनुष्य जीवन की सफलता', 'परम शांति का मार्ग', 'ज्ञान-योग', 'प्रेम योग का तत्व' आदि एवं पत्रों का संग्रह 'परमार्थ पत्रावली' है। इसके अलावा टेपों में उनके प्रवचनों की रेकार्डिंग उपलब्ध है।

उनकी प्रेरणा से संस्थापित संस्था 'गोविन्द भवन' वर्तमान में एक विशाल भवन में है। सत्संग की सुव्यवस्था के सिवाय वहाँ अनुभवी वैद्यों द्वारा रोगियों की आयुर्वेदिक पद्धति से निःशुल्क चिकित्सा भी होती है। भवन के द्वारा निर्मित आयुर्वेदिक औषधियां तथा चर्म रहित वस्तुएं जैसे जूता-चप्पल-बिस्तरबंद, काँच की चूड़ियाँ एवं हस्तनिर्मित वस्त्रों के निर्माण एवं विक्रय की व्यवस्था भी है। इसके सिवाय, सेठजी के जन्मस्थान चूरू

में भी उनकी प्रेरणा से संस्थापित "ऋषिकुल ब्रह्मचर्याश्रम" प्राचीन गुरुकुल के आदर्शों से शिक्षा के कार्य में संलग्न है। उनके प्रयास से संस्थापित एक और प्रसिद्ध स्थान है। गंगा तट पर स्थित "स्वर्गाश्रम", ऋषिकेश का "गीता भवन" जहाँ सूर्योदय से शयन तक सत्संग-प्रवचन और भजन कीर्तन का कोई न कोई कार्यक्रम चलता ही रहता है। वहाँ की भवन-शृंखला में सत्संग के लिए आने वाले सज्जनों और साधकों के ठहरने और भोजन की समुचित व्यवस्था है। सेठजी श्रीमद्भगवद्गीता का संदेश घर-घर पहुंचाना चाहते थे और जीवन के अंतिम क्षण तक इसी प्रयास में संलग्न थे। गंगा-तट पर एक विशाल् वटवृक्ष के नीचे सैकड़ों जिज्ञासुओं के सम्मुख उनका विमुग्धकारी सत्संग-प्रवचन हुआ करता था। 80 वर्ष का दैहिक जीवन लोक-सेवा में अर्पण कर अपने जीवन के अंतिम क्षणों में भी सेठजी प्रभु-कृपा से उसी पावन गंगा तट पर ही थे और वहीं पर अपनी पंचतत्व निर्मित काया का परित्याग करके वे ब्रह्मलीन हुए। स्वामी शिवानन्द जी के शब्दों में 'शनिवार 17 अप्रैल 1965 को गंगा के पावन तट पर उन्होंने प्राण त्याग किया मानों महामना भीष्म उत्तरायण की प्रतिक्षा में हों।' देश के कोटि-कोटि धर्मप्राण लोगों ने उनके निधन के समाचार को सविषाद सुना और उनके प्रति श्रद्धांजलि भेंट की। सेठ जी अपने पीछे एक महान् आदर्श छोड़ गये हैं– गीता के संदेश पर चलकर जीवन को सात्विकता और आध्यात्मिकता से भरकर जीना ही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि है।

देश विदेश में धार्मिक साहित्य को लोकप्रिय बनाने और उसे घर-घर पहुंचाने में गीता प्रेस के संस्थापक श्री जयदयाल जी गोयन्दका ने जो भूमिका निभाई वह अप्रतिम एवं अतुलनीय है। आज घर-घर प्रत्येक परिवार में जो गीता, रामायण की प्रतियाँ मिलती हैं, उसमें गीता प्रेस एवं गोयन्दका जी का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। वे वास्तव में गीता एवं धर्म की साक्षात् विभूति थे।

धार्मिक जगत में आपका नाम सदैव अमर रहेगा। आप अग्रवाल समाज के गौरव हैं। आपको शत्-शत् नमन्।

—✻—

अग्रविभूति डॉ. सर सीताराम अग्रवाल

सुविख्यात् राजनीतिज्ञ एवं विधिवेत्ता सर सीताराम अग्रवाल का जन्म सन् 1885 में हुआ। आपने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से संस्कृत में एम.ए. किया। शिक्षा प्राप्ति के पश्चात् आपने वकालत प्रारम्भ की। आपकी विद्वता से सरकार ने सन् 1923 में आपको 'राय बहादुर' और सन् 1931 में 'नाइट हुड सर' की सम्मानित उपाधियों से अलंकृत किया।

डॉ. सर सीताराम सन् 1910 से 1920 तक मेरठ नगर पालिका के सदस्य तथा सन् 1921 से 1937 तक उत्तर प्रदेश विधान परिषद के सदस्य रहे। सन् 1937 से 1949 तक उत्तर प्रदेश विधान परिषद के अध्यक्ष पद और इसके पश्चात् पाकिस्तान में भारत के उच्चायुक्त पद को सुशोभित किया।

इसके अतिरिक्त आपने अनेक सरकारी महत्त्वपूर्ण समितियों का अध्यक्ष के रूप में संचालन किया। आपका 87 वर्ष की आयु में देहावसान हो गया। आपकी सूझबूझ और कार्यशैली तथा विद्वता से सरकारी कामकाज में अपूर्णनीय क्षति मानी गई।

अग्रवाल समाज आपके कृतित्व व व्यक्तित्व से गौरव अनुभव करता है।

—*—

अग्रणी संदेश जनवरी 2005 लेख पेज 7 -
जन्म 17 जनवरी 1888 निधन 13 अप्रैल 1963

राष्ट्रीयता के उपासक

बाबू गुलाबराय एम.ए.

बाबू गुलाबराय का हिंदी समालोचकों में एक विशिष्ट स्थान है। आपने "हिंदी काव्य विमर्श", "अध्ययन और आस्वाद", "मेरे निबंध" तथा "मेरी असफलताएं" जैसे अनेक ग्रंथ लिखकर हिंदी आलोचना साहित्य को समृद्ध किया। आपका जन्म 17 जनवरी 1888 को इटावा नगर में वैश्य परिवार में हुआ। एम. ए. दर्शनशास्त्र, एल.एल.बी की परीक्षा उत्तीर्ण की और छतरपुर नरेश के निजी सचिव और दीवान रहे। आगरा के सेन्ट जोन्स कालेज में अध्यापन किया। कई ग्रंथों की रचना एवं साहित्य सेवा के लिए आगरा विश्वविद्यालय से डी. लिट्. की मानद उपाधि से सम्मानित हुए। आपका देहावसान 13 अप्रैल 1963 को हुआ। आपकी स्मृति में भारतीय डाक तार विभाग ने 22 जून 2002 को 5 रुपये का डाक टिकट जारी किया। डाक टिकट पर बाबू गुलाबराय के चित्र के साथ उनके सुप्रसिद्ध ग्रंथों के नाम भी अंकित हैं, जो अपने आपमें गौरव का विषय है। आपके डाक टिकट विमोचन समारोह में प्रधानमंत्री श्री अटलबिहारी वाजेपेयी ने कहा कि साहित्य के एक विद्यार्थी होने के नाते वे श्री गुलाबराय से शैक्षणिक काल से ही प्रभावित रहे हैं। उनके लेखन, दूरदृष्टि तथा समालोचना के कार्य को स्मरण करते हुए भारत सरकार बाबू गुलाबराय जैसे साहित्यकार एवम् मनीषी पर डाक टिकट जारी कर गौरवान्वित हुई है।

धन्य है महाराजा अग्रेसन और उनकी ये विभूतियाँ!

—*—

अग्रवाल संदेश जनवरी 2005 फर्स्ट पेज 2 - फिर लेख पेज 4-5

अग्रविभूति साहित्य शिरोमणि जयशंकर प्रसाद

कामायनी के रचयिता महाकवि जयशंकर प्रसाद का व्यक्तित्व एवं कृतित्व किसी परिचय का मोहताज नहीं है। सम्पूर्ण हिन्दी जगत छायावाद के प्रवर्तक महाकवि प्रसाद की विलक्षण प्रतिभा से आज भी चमत्कृत है। महाकवि जयशंकर प्रसाद का काल आधुनिक हिन्दी काव्य-गणना में "प्रसाद युग" के नाम से जाना जाता है। प्रसाद जी का युग राजनीतिक, सामाजिक एवं धार्मिक उथल-पुथल का युग था और इन्हीं परिस्थितियों में प्रसाद जी ने अपनी संस्कृति एवं राष्ट्रीयता के विषयों को अपने साहित्य का आधार बनाया क्योंकि प्रसाद जी जानते थे कि पद-दलित जाति के लिए उसका गौरवपूर्ण अतीत अत्यन्त आकर्षक एवं प्रेरणादायी होना है। उनका विचार था कि अखण्ड भारतीयता का सांस्कृतिक पुनरुत्थान प्राचीन भारतीयता के उज्ज्वलतम् उदाहरणों को ही भारतीय जनमानस के सामने रखकर ही किया जा सकता है। अतएव वे प्राचीन भारत एवं नवीन युग को साथ लेकर चले।

तीन लोक से न्यारी काशी के अग्रवाल वैश्य घराने में 'सुघनी साहु' के नाम से सुविख्यात श्री देवी प्रसाद के घर में संवत् 1946 में जयशंकर प्रसाद का जन्म हुआ था। उन्होंने स्थानीय क्रींस स्कूल में मात्र छठवीं कक्षा तक अध्ययन किया। कारण, माता-पिता के असमय निधन के फलस्वरूप उन्हें पैतृक व्यवसाय को संभालने हेतु अपने अग्रज के आदेशानुसार नारियल बाजार की दुकान पर भी बैठना पड़ा। छठवीं कक्षा के बाद की शेष विद्या हिन्दी, अंग्रेजी और संस्कृत विद्वानों से घर पर ही

प्राप्त की। वे स्वाध्यायी थे। किशोरावस्था में ही कविता उनके कंठ से फूट चली और अपनी गद्दी-नारियाल बाजार वाली 'सुघनी साहु' की दुकान पर वे अविकल भाव से चुपचाप काव्य-साधना की ओर अग्रसर हुए। वि.सं. 1963 में 'भारतेन्दु' में प्रथम बार उनकी रचना प्रकाशित हुई। इसी वर्ष प्रसाद जी ने 'उर्वशी चंपू' एवं 'प्रेम राज्य' की रचना की, जिनका प्रकाशन वि.सं. 1966 में हुआ। साहित्य के प्रत्येक क्षेत्र में नये-नये तेवर के साथ 'इंदु' के माध्यम से उनकी कविताएं, कहानियां, नाटक और लेख प्रकाशित होने लगे। अगस्त 1910 में 'ग्राम' नामक उनकी पहली कहानी प्रकाशित हुई और हिन्दी कथा साहित्य में सर्वथा एक नये युग का सूत्रपात हुआ। महाकवि प्रसाद को काव्य की नवीन शैली का सर्वश्रेष्ठ कवि ही नहीं अपितु उसका आविष्कारक कहा जा सकता है। 'कामायनी' उनकी कालजयी एवं विश्व प्रसिद्ध कृति है। हिन्दी के महिमामंडित सर्वश्रेष्ठ नाटककार और मौलिक कहानीकार के रूप में साहित्य को उनकी अमर देन है। चन्द्रगुप्त, स्कन्दगुप्त, आम्रपाली और ध्रुवस्वामिनी जैसे नाटकों तथा आकाशदीप, गुन्डा जैसी कथाओं को भला कौन भूल सकता है। 'हिमाद्री तुंग-शृंग से, प्रबुद्ध-शुद्ध भारती। स्वयंप्रभा, समुज्ज्वलता स्वतंत्रता पुकारती' महाकवि का यह अमर देश-गान है।

प्रसाद जी के नाटक क्षेत्र में अवतरित होने से हिन्दी नाट्यसाहित्य का कायाकल्प रुचिकर हो गया। प्रसाद जी ने प्राचीन भारतीय गौरव और सभ्यता का चित्र उपस्थित करने वाले ऐतिहासिक नाटक लिखे।

प्रसाद जी के नाटकों में चन्द्रगुप्त, स्कन्दगुप्त, अजातशत्रु, ध्रुवस्वामिनी, विशाख, कामना, जन्मेजय का नागयज्ञ, राज्यश्री और एक घूंट प्रमुख हैं।

प्रसाद जी केवल नाटककार ही नहीं अपितु कवि भी थे। उन्हें उनकी कविताओं की गहरी समझ एवं सौन्दर्य के कारण "हिन्दी का रवीन्द्र" कहा जाता है। उनके "कामायनी" महाकाव्य की तो विश्व के सर्वश्रेष्ठ महाकाव्यों में गणना की जाती है।

काव्य और कथा रचना के सिवाय हिन्दी पत्र-पत्रिकाएं प्रकाशित

करने-करवाने में वे कभी पीछे नहीं रहे। प्रेमचन्द्र जी के "हंस" मासिक के प्रकाशन तथा उसको शीर्षक देने में वही आगे रहे। योजना उन्हीं की थी; "हंस" नाम भी प्रसाद जी ने ही दिया, किन्तु निकाला प्रेमचंद जी ने। सन् 1929 के बसंत के दिन 11 फरवरी को काशी में 'पुस्तक-मंदिर' से जो 'जागरण' पाक्षिक निकला, उसे यह नाम भी प्रसाद जी ने ही दिया था। आचार्य शिव पूजन जी उसके सम्पादक थे। निर्देशन प्रसाद जी का ही रहता था। यह साहित्यिक पत्र था, बाद में साप्ताहिक हो गया। इन पत्रों के पहले प्रसाद जी के भांजे ने 'इन्दु' मासिक निकाला था। वे भांजे थे अम्बिका प्रसाद गुप्त। इस पत्र ने हिन्दी जगत की सेवा तो बहुत ही की। रूपनारायण पाण्डेय भी 'इन्दु' के सम्पादन कार्य से जुड़े थे। जब 'जागरण' साप्ताहिक निकल रहा था, तब उसके सम्पादक मुंशी प्रेमचन्द ही थे।

महाकवि जयशंकर प्रसाद ने काशी में गोवर्द्धन सराय के जिस घर में जन्म लिया, आज उसकी दशा जीर्ण-शीर्ण है। काल के थपेड़ों ने उसे चहुं दिश जर्जर एवं ध्वस्त किया है। वह बैठक जहाँ बैठकर महाकवि नित्य नूतन विचारों एवं चिन्तन के नन्दन-कानन में विचरण किया करते थे, आज अपनी विपन्नावस्था में आंसू बहा रही है। कभी जिनकी उपस्थिति पाकर वह धन्य-धन्य हो जाया करता था आज अपनी छाती पर उन्हीं के छायाचित्र टांगे वह निर्वाक खड़ा है। वे दरों-दीवारें जो कभी महाकवि के अमर गानों की साक्षी बनीं थीं, आज अपनी किस्मत पर जार-जार आंसू बहाती प्रतीत होती हैं। वो अहाता जहाँ प्रसाद जी आगन्तुकों से मिला-जुला करते थे, घूमा-टहला करते थे, आज तक चिर-प्रतीक्षित 'प्रसाद स्मारक' की मौन आकांक्षा अपने मानस में समेटे खामोश खड़ा है। लगभग पौन एकड़ भूमि की यह हरी- भरी सुनहरी उपत्यका आज भी 'प्रसाद मन्दिर' की बांट जोहती खड़ी है। प्रसाद भवन के इसी प्रांगण में कभी महाकवि ने गाया था–

> "दुःख का गहन पाठ पढ़कर अब सहानुभूति समझते थे।
> नीरवता की गहराई में मग्न अकेले रहते थे।"

(कामायनी)

महाकवि के एकमात्र पुत्र रत्नशंकर ने अपने सुविख्यात पिता की अमर स्मृतियों को संजोने एवं अक्षुण्य बनाये रखने में ही लगभग अपना सम्पूर्ण जीवन होम कर डाला, पर अब वो भी निराश हो चले लगते हैं। सन् 52 में ही उन्होंने 'प्रसाद स्मारक' के वास्ते अपनी पौन एकड़ जमीन खाली कराई और तब से शासन, प्रशासन के सहयोग हेतु निरन्तर सन्नद्ध रहे, किन्तु अनेक मुख्यमंत्रियों और महामहिम राष्ट्रपति (तत्कालीन) डॉ. शंकरदयाल शर्मा के स्पष्ट आश्वासनों के बावजूद भी आज तक प्रसाद स्मारक की दिशा में कोई कारगर कदम न उठाया जा सका है। प्रसाद जन्मशती वर्ष समारोह में महामहिम उप-राष्ट्रपति महोदय के भवन प्रांगण में आकर 'प्रसाद स्मारक' निर्माण की घोषणा की थी, किन्तु आज तक वह महत्वाकांक्षी योजना प्रशासनिक फ़ाइलों में ही नजरबंद है। योजनानुसार वहां महाकवि की भव्य प्रतिमा, पुस्तकालय, वाचनालय एवं व्यायामशाला, पार्क आदि बनाने की बात तय थी। काशी नागरी प्रचारिणी सभा ने जयशंकर प्रसाद के भवन स्थित प्रवेश द्वार पर एक संगमरमर शिलालेख अवश्य लगवा दिया है, जिस पर अंकित है– 'महाकवि जयशंकर प्रसाद का जन्म स्थान।' महाकवि के मकान के पास ही स्थित है वह शिव मंदिर, जिसके चबूतरे पर बैठकर उन्होंने अपनी अनेकानेक रचनाओं का सृजन किया था। 'कामायनी' के अन्तिम छन्दों की रचना भी प्रसाद जी ने इसी शिव मंदिर के एक खम्भे पर टिका कर की थी। वे अक्सर कहा करते थे "लिखवाने वाली शक्ति तो और ही है, मैं तो क्लर्क बनकर लिख भर देता हूँ। जिस दिन मुझे यह अहं हुआ कि यह सब मैं लिख रहा हूँ, उस दिन से लिखना असंभव हो जायेगा।" प्रसाद अदृश्य, अनन्त और अलौकिक सत्ता के समक्ष सदैव नत्मस्तक रहे। आइए, शाश्वत ईश्वरानुभूति की बानगी हम महाकवि के शब्दों में ही 'कामायनी' में देखें–

"हे अनन्त रमणीय कौन तुम, ये मैं कैसे कह सकता?
कैसे हो, क्या हो? इसका तो भार विचार न सह सकता।।"

फिर महाकवि के कानों में मानो यह अमृतवाणी गूंजी–

"मैं हूँ, यह वरदान सदृश क्यों लगा गूंजने कानों में।
मैं भी रहूँ, कहा मैंने शाश्वत नभ के गानों में।।"

(कामायनी)

कुरेदने पर महाकवि प्रसाद के सुपुत्र रत्नशंकर के श्रीमुख से विगत की कुछ संस्मृतियां उभर आयीं, जो इस प्रकार हैं। प्रसाद जी अपने घर की बैंठक अथवा अहाते में नित्य-प्रति बैठा करते थे। उस बीच यदि कोई उनसे कुछ भी कह बैठता, तो उसका प्रत्युत्तर महाकवि तुरन्त कभी न देते। एक सुबह प्रसाद जी तेल मालिश करा रहे थे। तभी उपन्यास सम्राट मुन्शी प्रेमचन्द उनके घर मिलने चले आये। शरीर से काफी स्वस्थकाय थे महाकवि। उन्हें रईसों के समान तेल मालिश करवाते देख मुन्शी प्रेमचन्द के मन में न जाने, क्या आया कि झट कह बैठे– 'आज तो तुम एकदम गुण्डे लग रहे हो।'

कवि प्रसाद ने प्रेमचन्द को स्मित हास्य से देखा, पर कहा कुछ भी नहीं। प्रकारान्तर में उन्होंने अपनी सुप्रसिद्ध कहानी लिखी–
'गुण्डा।' एकमात्र पुत्र रत्नशंकर बतलाते हैं कि, 'पिताजी किसी भी बात का प्रत्युत्तर अपनी रचनाओं द्वारा ही देते थे।'

महाकवि की ऐतिहासिक बैठक की एक अन्य घटना– प्रेमचन्द और प्रसाद गहरे मित्र थे। एक दिन उपन्यास सम्राट मुन्शी प्रेमचन्द ने आते ही बतलाया कि 'मैंने अपने बोरियाँ-बिस्तर शान्ति निकेतन जाने के लिए बांध लिए हैं। वहां से गुरुदेव (रवीन्द्रनाथ टैगोर) का मेरे लिए बुलावा आया है। जापान से प्रोफेसर नागुची आये हैं। उनके साथ शान्ति निकेतन में रहकर मुझे कार्य करना होगा।' उल्लेखनीय है कि ये वही प्रो. नागुची हैं, जिन्होंने सारनाथ के विश्वविख्यात बौद्ध मंदिर (मूलगन्ध कुटी बिहार) में छवियों का चित्रांकन किया था। महाकवि प्रसाद जी प्रेमचन्द जी की बात चुपचाप सुनते रहे। जब उन्होंने बोलना समाप्त किया तो प्रसाद जी बोल पड़े– 'जब प्रो. नोगुची जापान से भारत आ सकते हैं, तो आपको बुलाने क्या शान्ति निकेतन से काशी नहीं आ सकते? कवि एवं साहित्यकार

आत्मसम्मानी होता है। यह हिन्दी जगत की प्रतिष्ठा का प्रश्न था। उपन्यास सम्राट प्रेमचन्द घर लौट गए और उन्होंने अपने बोरियाँ-बिस्तर खोल डाले। महाकवि प्रसाद को हिन्दी एवं हिन्दी साहित्यकारों की अस्मिता एवं प्रतिष्ठा का अत्यधिक ध्यान था।

वर्तमान में भी राष्ट्रभाषा के अनन्य भक्त और हिन्दी के महाकवि का वह 'प्रसाद भवन' पावन प्रांगण विद्यमान है, किन्तु अपने अमृतकंठ से प्रखर, अमर गान करने वाला महाकवि महाप्रस्थान कर चुका है। उनकी धरोहर, उनकी विरासत की रक्षा करना समस्त हिन्दी जगत का दायित्व है। महाकवि के पचहत्तर (75) वर्षीय एकमात्र पुत्र रत्न शंकर प्रसाद अकेले दौड़ते-दौड़ते थक कर निराश हो चले हैं। शरीर और ढलती उम्र अब साथ नहीं देते। कैसे रक्षण होगा उनके यशस्वी पिता की पुण्यमय-पावन धरोहर का? क्या यह समय संगत एवं समाचीन नहीं होगा कि हिन्दी जगत महाकवि जयशंकर प्रसाद के भवन एवं उनकी स्मृतियों को संरक्षित-सुरक्षित करें और रखें। यदि समय रहते कोई कदम न उठाया गया तो बहुत संभव है कि 'कामायनी' के महाकवि के इस ऐतिहासिक भवन की दरों-दीवारें अपने रखवाले और रक्षक के अभाव में, अपनी बदकिस्मती पर आंसू बहाते-बहाते, कालचक्र से लड़ते हुए दम तोड़ बैठे।

अग्रवाल वंशी प्रसाद जी शिवोपासक थे। गंगाजी में नौका विहार और खाली समय में शतरंज रुचता था। दुर्भाग्य यह रहा कि जहाँ उनकी पूर्व पत्नी-क्षय-रोग (तपेदिक) से ग्रस्त हो दिवंगत हुई, वहीं प्रसाद जी को भी यह रोग तोड़ गया। 18 जनवरी 1937 से ही उन्हें बुखार आने लगा था। इसके पहले वे लखनऊ प्रदर्शनी में गए। क्षय रोग से पीड़ित रहते हुए अंततः घुलते-छीजते उनका शरीर कंकालवत ही रह गया। यही संकट नहीं, क्षय के साथ ही वे चर्म रोग से भी बुरी तरह पीड़ित रहे और इसी रोग-जर्जर देह में उनकी अवसान-वेला भी 15 नवम्बर सन् 1937 ले आया। इसी दिन उषाकाल में साढ़े चार बजे यह साहित्य-मनीषी संसार से चिर विदा ले गया। उड़ गया हंस अकेला। ऐसे महान अग्र-विभूति को कोटि-कोटि प्रणाम।

*

अग्र गौरव जस्टिस मेहरचंद्र महाजन (1889-1967)

हिमाचल प्रदेश में बसे महाजन वैश्यों के शिरोमणि श्री मेहरचन्द्र जी पहले पंजाब में लाहौर हाई कोर्ट के जज और बाद में चीफ जस्टिस हुए। स्वतंत्रता प्राप्ति के समय वे काश्मीर राज्य के मुख्यमंत्री थे।

उस समय काश्मीर पर पाकिस्तान की फौज ने कबीलियों की ड्रेस में भीषण आक्रमण कर दिया था और लगता था कि वे उस पर कब्जा कर लेंगे, लेकिन उनके आक्रमण को श्री महाजन ने युक्ति से विफल कर दिया। भारत के प्रधानमंत्री पं. जवाहरलाल नेहरू काश्मीर का विलय भारत में स्वीकार करने को हिचकिचा रहे थे। क्योंकि वे चाहते थे कि वहाँ के महाराजा हरिसिंह उनके मित्र और लंगोटिया यार शेख अब्दुल्ला को शासन सौंप दें। ऐसे समय श्री मेहरचन्द्र महाजन ने बीच का रास्ता निकालकर काश्मीर को भारत संघ में प्रवेश कराया।

वे सुप्रीम कोर्ट के जज और फिर चीफ जस्टिस थे। उन्होंने अनेक महत्त्वपूर्ण निर्णय दिए। महाराजा हरिसिंह ने 10,00,000 रुपये उन्हें एक ट्रस्ट के रूप में सौंपे ताकि उसके ब्याज से काश्मीर राज्य में शिक्षा का प्रचार-प्रसार हो सकें। श्री महाजन ने यह राशि डी.ए.वी. कॉलेज मैंनेजमेन्ट सोसाइटी को सौंप दी। महाजन जो निष्ठावान आर्य समाजी थे। वे उक्त मैंनेजमेंट सोसाइटी के वर्षों अध्यक्ष रहे।

महर्षि दयानन्द की जन्म भूमि टंकारा में उन्होंने महर्षि की स्मृति में एक विशाल उपदेशक विद्यालय और गुरुकुल को भव्य रूप दिया। उनके दो पुत्र श्री डी.के. महाजन और विक्रम महाजन भी हाई कोर्ट के जज हुए। श्री विक्रम महाजन इन्द्रा नेहरू के शासन में केन्द्र में ऊर्जा राज्यमंत्री रहे। अग्र समाज श्री महाजन के कृतित्व व व्यक्तित्व के प्रति गौरवान्वित है।

—*—

सुकवि राम कृष्णदास अग्रवाल

श्री राम कृष्ण दास का जन्म संवत 1949 में काशी के अग्रवाल परिवार में हुआ था। उन्होंने आठ वर्ष की आयु में ही नियमित रूप से लेखन प्रारम्भ कर दिया था। उन्होंने गद्य गीतों के आधार पर छन्द रचने शुरू कर दिये थे। 15 वर्ष की आयु में तो पूर्ण रूप से साहित्य-सेवा में लग गये थे। आपको राष्ट्र कवि मैथिलीशरण गुप्त तथा आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी के सानिध्य में कार्य करने का अवसर मिला। उनसे प्रभावित होकर गद्य गीतों में उल्लेखनीय कार्य किया जो साहित्य जगत में अनमोल है।

—*—

दानवीर सेठ रामकृष्ण डालमियाँ

रामकृष्ण डालमियाँ का जन्म 7 अप्रैल 1893 को राजस्थान के चिड़ावा गांव में हुआ। प्राथमिक शिक्षा वहीं हुई। कलकत्ता आने के पश्चात् बांग्ला भाषा में निपुणता प्राप्त की। उन्होंने हिन्दू धर्म से सम्बन्धित बहुत से धर्म ग्रन्थों का गहन अध्ययन किया, जिससे उनके आध्यात्मिक ज्ञान में वृद्धि हुई।

18 वर्ष की अल्पायु में उनके सिर से पिता का साया उठ गया। परिवार के पालन-पोषण के लिए इनके मामा ने रामकृष्ण को अपने व्यापार में कार्यरत किया, नुकसान होने पर उन्हें व्यापार से अलग कर दिया गया। जिसके पश्चात् उन्होंने दलाली एवं सट्टे का कार्य आरम्भ किया। इसमें उन्होंने सफलता प्राप्त की। तत्पश्चात् बलदेवदास नाथानी के साथ शेयर एण्ड स्टाक एक्सचेंज में व्यापार किया।

डालमियाँ ने पटना के निकट दीनापुर में भी अपना व्यापार आरम्भ किया। उसी समय अपने दामाद शान्ति प्रसाद जैन के साथ डेहरी ऑनशॉन (बिहार) में एक चीनी मिल स्थापित की, जो बहुत सफल हुई। इस स्थान को अब डालमियॉ नगर कहते हैं। सन् 1936 में सीमेंट उद्योग में प्रवेश किया और डालमियाँ नगर के अतिरिक्त कराँची, दादरी, दन्डोट, पंजाब, डालमियाँपुरम्, सवाईमाधोपुर आदि स्थानों पर फैक्टरियाँ लगाईं। इसके बाद उन्होंने भारत बैंक की स्थापना की और कई शाखाएं खोलीं। हवाई-यात्रा के लिए भी एक कम्पनी खोली। दिल्ली के कवेन्टर्स डेयरी का व्यापार भी संभाला। सेठ डालमियाँ अपने कर्मचारियों के प्रति सहानुभूति व सदाचार का व्यवहार रखते थे।

जीवन के विभिन्न कार्य-क्षेत्रों में उनका विशिष्ट महानुभावों एवं राष्ट्रीय नेताओं से निकट का सम्बन्ध था। महात्मा गाँधी, सेठ जमनालाल बजाज, सरदार पटेल, डॉ. राजेन्द्र प्रसाद, जयप्रकाश नारायण, मौ. अली जिन्ना, निजाम हैदराबाद, जीन्द और जयपुर के महाराजा और मैसूर स्टेट के दीवान आदि सभी से घनिष्ट मित्रता थी।

सेठ डालमियाँ महान् परोपकारी थे। उन्होंने हजारों दुःखीजनों की सहायता की। गौ-हत्या विरोधी लीग बनाई और गौहत्या बन्द होने तक अनाज नहीं खाने की प्रतिज्ञा की। वे स्वदेशी के बड़े अनुयायी थे। स्वतंत्रता आन्दोलन में भी उन्होंने अंग्रेजी सरकार से बिना डरे, खुले रूप से भामाशाह के रूप में आर्थिक सहयोग दिया। 26 सितम्बर, 1978 को लम्बी बीमारी के पश्चात् उनका देहान्त हो गया। रामकृष्ण जी डालमियाँ न केवल औद्योगिक मार्गदर्शक थे, बल्कि एक बहुत बड़े देशभक्त और दानवीर थे। उनकी जीवनगाथा एक परिश्रमी, लग्नशील और देश-सेवा से परिपूर्ण है। धन्य है ऐसे अग्र महापुरुष।

—*—

धर्म के लिए जिऐं, समाज के लिए जिऐं।
ये धड़कने, ये श्वास रहे, अग्रवाल जाति के लिए॥

जयपुर-अग्रवाल समाज के अनमोल रत्न

सेठ श्री सूरजमल जी बम्बई वाले (समराय वाले)

अग्रवाल समाज में कई ऐसे अनमोल रत्न भामाशाह पुरुष उत्पन्न हुए हैं, जिन्होंने समाज की निःस्वार्थ भाव से सेवा करके समाज का गौरव बढ़ाया है। जयपुर में श्री रामबल्लभ जी समराय वालों के यहाँ आषाढ़ शुक्ला 13 सम्वत् 1951 को एक होनहार बालक ने जन्म लिया। उस वक्त आर्थिक दृष्टिकोण से स्थिति शोचनीय थी। बालक का नाम सूरजमल रखा गया।

विषम मजबूरियाँ होने के कारण इनको शिक्षा एक चटशाला में ही दिलवाई गई। बाल अवस्था से जब युवा अवस्था में आए तो नौकरी की तलाश में रहे, किन्तु शिक्षित न होने के कारण कहीं पर नौकरी न मिल सकी और फुटकर (खोमचा लगाकर बैठना) व्यापार करने लगे। परन्तु सफलता नहीं मिली और बहुत दुःखी रहने के कारण जीवन से ऊब गए। नंगे पांव सड़कों पर फिरना, माथे पर खोमचा लेकर चलना आदि। एक दिन माता-पिता को छोड़कर 13 वर्ष की आयु में ही बम्बई चले गए और मजदूरी करने लगे। भाग्य ने पलटा खाया और कुछ-कुछ सफलता मिलने लगी और जीवन ठीक से चलने लगा।

जब 22 वर्ष की अवस्था में थे तो जयपुर से सात मील दूर आमेर कुण्डों के पटवारी श्री रामदयाल जी के यहाँ पर विवाह कर दिया गया। इस समय भी आर्थिक दृष्टिकोण से हालत ठीक नहीं थी। विवाह के कुछ

समय बाद वापस बम्बई चले गए। जहाँ पर आपने अनेकानेक व्यापार में रुचि ली और किया, जिसमें असाधारण सफलता मिली। आखिर आपने सट्टे का व्यापार प्रारम्भ किया, जिसमें आशा से भी अधिक सफलता मिली और बराबर प्रगति पर रहे। वहाँ पर सेठ सूरजमल बम्बई वाला के नाम से विख्यात हुए। इन्हें बम्बई का "मवाली सेठ" भी कहा जाने लगा।

हिन्दू संस्कृति के नाते आप धार्मिक वृत्ति के थे। आपने सार्वजनिक कार्यों में भाग लेना प्रारम्भ कर दिया। जिससे जनता को काफी लाभ मिला। समय-समय पर आप जयपुर में आते और कुछ दिन रह कर वापस बम्बई चले जाते। आप शिक्षा प्रेमी थे इसलिए आपने अपने सुपुत्र को अच्छी तालीम दिलवाई। जयपुर में भी खानदानी पुराने बुर्जुगों का बैक समराय वाला होते हुए भी सेठ सूरजमल बम्बई वाला के नाम से प्रसिद्ध हुये। अग्रवाल समाज में व्यर्थ की रूढ़ीवादी कुरीतियाँ पनप रही थीं, आपने इसके लिए आवाज बुलंद की और कार्य किया। उस समय अग्रवाल पंचायत और अग्रवाल सभा इस प्रकार दो संस्थाएं चलती थीं। दोनों संस्थाओं में ही युवक और वृद्ध थे परन्तु पंचायत पुराने विचार वालों की संस्था थी और सभा समयानुसार विचारों में परिवर्तन करने वालों की संस्था थी। यदि कोई व्यक्ति पंचायत के नियमों के विरुद्ध कार्य कर लेता था तो उसका न्योता बंद कर दिया जाता था, सामाजिक बहिष्कार हो जाता था। एक दिन श्री बद्रीनारायण जी मावा वालों का न्योता बंद कर दिया। सभा वालों ने उनको अपना लिया। ऐसा करने से पंचायत और सभा में जबरदस्त संघर्ष प्रारम्भ हो गया। सेठ सूरजमल बम्बई वाला ने कहा कि "जो सभा से प्रेम रखते हैं बद्रीनारायण मावा वालों को अवश्य बुलावें।"

सेठ सूरजमल बम्बई वाला के कई निकट के रिश्तेदार पंचायत में थे। शादी विवाह में जब सूरजमल जी को बुलाने जाते थे तो सबसे पहले उनका यही प्रश्न होता था कि श्री मावा वालों को बुलायेंगे या नहीं। अगर नहीं, तो फिर बम्बई वाला भी नहीं आएगा। उन्होंने यह दृढ़ निश्चय कर लिया कि जो व्यक्ति श्री मावा वाले को बुलायेंगे, वहाँ पर ही वे स्वयं

जायेंगे। आखिर समय आया, सभा वालों की स्थिति मजबूत होने लगी। कई धनिक व्यक्ति भी सभा में आकर सम्मिलित हो गए और एक दिन श्री बद्रीनारायण मावा वालों को उचित स्थान दिलवाया। आगे चलकर पंचायत जो जबरदस्त संस्था थी, स्वयं ही समाप्त हो गई।

यह बात अवश्य थी कि विचारों की दृष्टि में आपस में (दोनों संस्थाओं में) घमासान युद्ध हुआ, परन्तु दायरे से बाहर सभी व्यक्ति एक दूसरे से मिलते थे, दुःख-दर्द में आड़े आते थे।

एक समय, कुछ दिनों के लिए आपका वृन्दावन जाना हुआ, वहाँ पर कृष्ण लीला का काफी आनन्द लिया और श्री बृजलाल बोरा (जो कि बोराजी की मंडली के नाम से प्रमुख थे) को मंडली सहित जयपुर आने का निमन्त्रण दिया। वे लोग आए और उनके साथ में तीन अन्य मंडलियों को भी बुलवाया गया तथा सांगानेर दरवाजा बाहर आगरा रोड़ पर नथमलजी के कटरे में उनको रखा गया। कटला काफी विशाल रूप में बना हुआ था। अतः वहाँ पर ही उनसे डेढ़ महिने तक कृष्णलीला (रासलीला) करवाई। हजारों नर-नारियाँ और बच्चे दिन में तथा रात्रि को रासलीला देखने जाते। कभी-कभी तो ऐसा दृश्य उपस्थित हो जाता था कि लोगों के आँखों में आंसू आ जाते थे। क्योंकि लीला इस प्रकार से होती थी जैसे प्रत्यक्ष में सभी स्वरूप सामने हो। एक बार जब कृष्ण कन्हैया काली-दह में कूद गये, तो हजारों लोग रो पड़े और कन्हैया-कन्हैया की आवाजों से वायु मण्डल गूंजने लगा।

जयपुर के इतिहास में आज तक ऐसी कृष्ण लीला नहीं हुई। यह बात स्पष्ट है।

कई बार शीतला अष्टमी एवं गोपालजी की परिक्रमा के मेलों में आपने दूध-बूरे की फांक लगाई। हजारों-लाखों लोगों ने दूध की ठंडाई पीकर आत्मा तृप्त की।

जयपुर और बम्बई में सेठ बम्बई वाला के नाम से विख्यात थे वे जब-जब भी जयपुर आते तो उनसे मिलने वालों का तातां लगा रहता था।

एक बार जयपुर में बरसात नहीं हुई। सूखा अकाल पड़ गया। उस वक्त पवित्र तीर्थ स्थान गलता जी में श्री सीताराम जी जौहरी के सहयोग से यज्ञ करवाया और भजन-कीर्तन आदि बड़े जोर-शोर से करवाये।

आपकी यह भी इच्छा हुई कि जयपुर नगर में एक आयुर्वेदिक संस्था चालू की जाये। आपने इस कार्य निमित्त किशनपोल बाजार स्थित एक जमीन खरीद कर विशाल रूप में भवन बनवाया जिसमें डेढ़ लाख रुपया निज का खर्च हुआ। भवन बनवाकर राज्य सरकार को दे दिया। आज भी वह 'सेठ सूरजमल बम्बई वाला आयुर्वेदिक अस्पताल' के नाम से चल रहा है, जिसमें हजारों लोग लाभ उठाते हैं।

अग्रवाल समाज में हाईस्कूल का न होना तथा कोई ऐसे स्थान का न होना कि जहाँ समाज के लोग बड़े पैमाने पर बैठकर आनन्द ले सकें और गर्व के साथ कह सकें कि यह समाज का अपना भवन है, अखरता था। समय आया और मालूम हुआ कि नथमल जी का कटरा बिक रहा है। आगे बढ़े और सम्पर्क स्थापित किया। उस कटरे को खरीदने के लिए सेठ सोहनमल दूगड़ मैदान में उतरे कि यह भूमि ओसवाल समाज के लिए खरीदी जायेगी।

श्री दूगड़ करोड़पति थे, परन्तु श्री सूरजमल जी बम्बई वाला भी आकर मैदान में खड़े हो गए और कहा कि कुछ भी हो, भूमि अग्रवाल समाज के लिए खरीदी जायेगी।

यह कैसी टक्कर? एक तरफ करोड़पति सेठ और दूसरी तरफ एक बात का धनी।

इधर श्री सुरजमलजी ने निजी साधनों से व अपनी जुम्मेदारी पर धन एकत्रित करने की व्यवस्था की। रातों रात चक्कर लगाने पड़े और धन एकत्रित किया और लगभग चार-सवा चार लाख में कटरा खरीद लिया।

विचार उत्पन्न हुआ कि कोई व्यक्ति यह न कह सके कि यह

सूरजमल बम्बई वाले का कटरा है। अतः चन्दा एकत्रित करने का विचार रखा गया ताकि अग्रवाल समाज का कटरा कहला सके।

अपने सुपुत्र के विवाह के अवसर पर चन्दे के कार्य की प्रथा को यानी अग्र-ध्वज-भेंट का श्रीगणेश किया। प्रथम स्वयं ने पच्चीस हजार की धनराशि लिखी। आखिर सभी के सहयोग से चन्दा एकत्रित हो गया और "अग्रसेन कटला" का नाम दिया गया।

यह बात निश्चित है कि जितना चन्दा रखा गया, उतना ही खर्च लगभग सेठ बम्बई वाला की ओर से (कटरा खरीदने के समय पर लोगों से मिलने, अधिकारियों से रातों-रात जाकर बात करने आदि में) हो गया था और इसे सभी जानकार लोग जानते हैं।

सपना साकार हुआ, हाईस्कूल प्रारम्भ हुआ और समाज का नाम रोशन हुआ।

आपका सम्पर्क सरकारी अधिकारियों एवं प्रमुख व्यक्तियों से काफी घनिष्ठ था।

यह बात निश्चित दावे के साथ कही जा सकती है कि यदि वे (सेठ सूरजमल बम्बई वाला) नहीं होते.....तो यह कटरा हमारा, अपने समाज का नहीं होता। राजस्थान में ऐसा विशाल कटरा, जहाँ पर काफी भूमि है, कहीं नहीं है।

एक दिन अग्रवाल समाज के प्रमुख (सामाजिक-कार्यकर्ता) अधिकारी ने मृत्युभोज की स्वीकृति दे दी और कटरे में जीमण हुआ। जब उन्हें मालूम पड़ा तो बड़ा दुःख हुआ और आत्मा को ठेस लगी। जब उनके पास लोग गए तो उन्होंने (अपने माथे पर, लीलाट पर) हाथ का ठकोरा लगाते हुए कहा– क्या यह कटरा इसलिए खरीदा गया था कि यहाँ मृत्युभोज जैसे जीमण हों? उन्होंने कहा कि जिस भूमि के लिए कष्ट उठाये तुमने..... और उस दिन के पश्चात् कभी उन्होंने कटरे की भूमि पर पांव नहीं रखा।

सेठ साहब हृदय रोग से पीड़ित थे और उधर उनकी स्थिति भी

कमजोर होने लगी। आर्थिक दृष्टि से भी कमजोर पड़ने लगे और उन्होंने अपने परिवार के लिए बहुत आलीशान भवन बनवाया था उसको भी बेचना पड़ा।

एक दिन श्री अग्रसेन जयन्ति के उपलक्ष्य में उनके निवास स्थान पर चार-पांच व्यक्ति गए। उनसे निवेदन किया कि आज जयन्ति समारोह की अध्यक्षता आप करें। सम्मेलन में लोग आपका इन्तजार कर रहे हैं। उनकी आँखों में आँसू भर आए कि एक तरफ समाज का प्रेम और दूसरी तरफ बात का सवाल। आखिर वे अपनी बात पर दृढ़ रहे और कहा– मैं कटरे में नहीं जा सकता। सभी व्यक्ति वापस लौट आए।

धीरे-धीरे बीमारी ने जोर पकड़ लिया, 10-12 दिन बाद आप पर लकवे का दौरा हो गया। एक दिन मंगसर बुदी 1 गुरुवार सम्वत् 2015 तारीख 27.11.58 को सायंकाल के समय अपनी लीला समाप्त कर समाज, पत्नी, पुत्र और पुत्री को छोड़कर सदैव के लिए परलोक यात्रा पर चले गए।

उनकी महान् आत्मा को वैकुण्ठ में आराम मिले। चूंकि यहाँ पर उन्होंने अपना सब कुछ ऐशोआराम छोड़कर सार्वजनिक जीवन में, देश और समाज की सेवा की थी, अतः उसे कभी भुलाया नहीं जा सकेगा।

चन्दादाता बहुत व्यक्ति होते हैं। धार्मिक प्रवृत्ति के लोग भी बहुत होते हैं। किन्तु उन्होंने जो जयपुर के अग्रवाल समाज के लिए कर दिखाया आज.... कोई नहीं कर सकता कि एक ही रात में अपनी जीवन की बाजी लगाकर महान् और विशाल कटरा समाज के सामने रख दिया, जिसके कारण हम गर्व के साथ कह सकते हैं कि यह कटरा हमारा अपना है।

अतः उसी प्रांगण में अग्रवाल कॉलेज जो कि राजस्थान की उच्च शिक्षण संस्थाओं में अपना स्थान रखती है एवं होस्टल, विज्ञान प्रयोगशाला एवं सैकण्डरी स्कूल, तरणताल चलता है।

स्वर्गीय आत्मा के प्रति जो संक्षिप्त लिखा है आज बहुत कम ऐसे लोग रह गए हैं, जो उनकी जीवनी से वाकिफ हैं कि वे इस संस्था के

निजी जन्मदाता थे। आज के लोग नहीं जानते कि कौन थे, जिन्होंने समाज का नाम रोशन किया। आपने जयपुर के अग्रबन्धुओं के उत्थान के लिए निःस्वार्थ सब कुछ किया। यहाँ तक आपने अपनी अचल सम्पत्तियाँ, अपनी पत्नी के गहने बेचकर अग्रवाल समाज के बन्धुओं को एक चादर पर बैठाने हेतु अग्रसेन कटरा का स्थान खरीदकर बड़ा ही परोपकारी कार्य किया है। इस महान् परोपकारी कार्य के लिए जयपुर अग्रवाल समाज के इतिहास में आपका नाम सदा ही अमर रहेगा। ऐसे महान् पुरुष के परोपकारी कार्य से प्रेरणा लेनी चाहिए। आपस में भाई-चारा बनाये रखें। हमें गर्व है हमारे इन महान् पुरुष भामाशाह सेठ सूरजमल बम्बई वाले पर।

—*—

तुमको प्रणाम शत्-शत् प्रणाम

हे अग्रवंश के अग्रदूत,
अभ्युदय दूत भारत सपूत।
हे महापुरुष हे जातिप्राण,
तुमको प्रणाम तुमको प्रणाम॥

हे अग्रवाल कुल तिलक भाल,
अग्रवंश के चिर मशाल।
हे जाति के उजागर पुण्य धाम,
तुमको प्रणाम शत् शत् प्रणाम॥

हे जन-रक्षक हे प्रजापाल,
हे जाति पुरुष तुम अग्र महान्।
रक्षक पोषक सुख शांति धाम,
तुमको प्रणाम शत्-शत् प्रणाम॥

हे वंश प्रवर्तक अग्रसेन,
ओ पूज्य पितामह अग्रसेन।
स्वीकार करो मेरा प्रणाम,
तुमको प्रणाम शत्-शत् प्रणाम॥

आधुनिक भारत के महान् भागीरथ
अग्रगौरव डॉ. कँवर सेन

इतिहास पुराणों में राजा भागीरथ की कथा आती है, जिसमें उन्होंने अपने अथक प्रयासों से गंगा को पृथ्वी पर लाकर पृथ्वी को शस्यश्यामला बनाने और कोटि-कोटि जनों की पिपासा को शान्त करने का महान् कार्य किया था। इसलिए शताब्दियाँ व्यतीत हो जाने पर आज भी राजा भागीरथ को बड़ी श्रद्धा से स्मरण किया जाता है।

शताब्दियाँ व्यतीत हो गईं किन्तु इस पृथ्वी पर उन जैसा महान् व्यक्तित्व अन्य पैदा नहीं हुआ, किन्तु उसी भूमिका को अग्रवाल समाज के महान् इंजीनियर एवं वैज्ञानिक डॉ. कंवर सेन ने राजस्थान की शुष्क मरुधरा में राजस्थान नहर जैसी महान् गंगा को अवतरित कर तथा अनेक नदी घाटी योजनाओं का सूत्रपात कर, क्रियान्वित करने का सफल प्रयास किया है।

डॉ. कंवर सेन अंतर्राष्ट्रीय ख्याति के एक अत्यन्त लब्धप्रतिष्ठित इंजीनियर तथा भारत में नदी घाटी योजनाओं के मुख्य सूत्रकार थे, जिनका जल संसाधनों के विकास के क्षेत्रों में महत्त्वपूर्ण योगदान रहा। विद्यार्थी जीवन से ही आपमें इंजीनियर बनकर देश की सेवा करने की महत्वाकांक्षा थी और आपने देश में भाखड़ा बांध, हीराकुंड, नर्मदा, दामोदर घाटी और राजस्थान नहर जैसी महत्त्वपूर्ण परियोजनाओं का प्रवर्तन कर देश-सेवा के क्षेत्र में उल्लेखनीय कीर्तिमान स्थापित किया। आप 1953 से लगभग साढ़े पाँच वर्ष तक केन्द्रीय जल एवं विद्युत आयोग के अध्यक्ष रहे और जल एवं विद्युत परियोजनाओं के संचालन में विशिष्ट भूमिका निभाई तथा संयुक्त राष्ट्र संघ में नौ वर्षों तक मकोंग विकास परियोजना में विशेषज्ञ

के रूप में सेवाएँ प्रदान कर राष्ट्र का नाम अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में प्रतिष्ठापित किया।

आप मूलरूप से हिसार जिले के टोहाणा कस्बा के निवासी थे। आपने 9 अक्टूबर, 1922 को अप्रेंटिस इंजीनियर के रूप में पंजाब के सिंचाई विभाग में कार्य प्रारम्भ किया। प्रशिक्षण पूरा करने के पश्चात् पंजाब हैडवर्क्स का डिजायन तैयार किया। पश्चिमी यमुना नहर के अधिशाषी अभियन्ता के रूप में कार्य किया तथा चिनाव और रावी नदियों के जल के उपयोग हेतु बनने वाली ट्रिम बैराज के निर्माण का दायित्व संभाला तथा बड़ी ही सफलता से पूर्ण किया। भाखड़ा बांध निर्माण का डिजायन करने हेतु आपने छः माह तक अमेरिका में प्रशिक्षण प्राप्त किया और केन्द्रीय डिजायन प्रभाग के अवर सचिव एवं निदेशक के पद पर अपनी सेवाएँ प्रदान कीं।

सिन्ध और पंजाब के बीच जल विवाद उपस्थित हुआ तो आपने हा राव कमीशन के सम्मुख पंजाब का पक्ष प्रस्तुत किया। आपकी योग्यताओं को देखते हुए आपको पंजाब में सिंचाई विभाग के निदेशक एवं परियोजना वृत्त के अधीक्षण अभियन्ता जैसे पदों पर अधिष्ठित किया गया। इन पदों पर रहते हुए डॉ. कंवर सेन ने पंजाब के लिए अनेक सिंचाई परियोजनाएँ तैयार कीं और भाखड़ा बांध स्थल का व्यापक सर्वेक्षण किया। ब्रिटिश सरकार द्वारा उन्हें विशिष्ट सेवाओं के लिए ''आर्डर ऑफ ब्रिटिश एम्पायर'' की उपाधि से सम्मानित किया गया।

देश के विभाजन के समय भाखड़ा हैडवर्क्स को भारत में रखने में उनकी महत्त्वपूर्ण भूमिका रही। डॉ. कंवर सेन की महत्त्वपूर्ण देन 1948 में राजस्थान नहर इंदिरा गाँधी नहर की परिकल्पना है, जो विश्व की सबसे बड़ी सिंचाई परियोजना मानी जाती है और इस कल्पना को राजस्थान की सूखी मरुभूमि पर लाकर पृथ्वी पर गंगा लाने जैसा महान् कार्य उन्होंने किया। सेवा-निवृत्त होने पर आप राजस्थान नहर योजना के अध्यक्ष एवं प्रशासक रहे तथा इस पद पर रहते हुए उन्होंने न केवल इस सिंचाई

परियोजना की रूपरेखा ही प्रस्तुत की अपितु तीन वर्ष की अवधि में उन्होंने नहर की पहली वितरिका का माननीय उपराष्ट्रपति के करकमलों द्वारा उद्‌घाटन कराकर अपनी अनुपम क्षमता का परिचय दिया। आपने भाखड़ा बांध के साथ-साथ कोसी नदी पर बनाये जाने वाले बांध एवं हीराकुंड बांध के डिजायन तैयार करने में भी विशेष कौशल का परिचय दिया तथा आप भारत की प्रायः सभी सिंचाई योजनाओं से सम्बद्ध रहे।

आपकी विशिष्ट योग्यताओं को देखते हुए 1961 में आपको संयुक्त राष्ट्र संघ में अंतर्राष्ट्रीय मेकांग परियोजना के निदशेक पद पर नियुक्त किया गया और लगभग 9 वर्ष तक इस पद पर रहते हुए उन्होंने इस महती नदी विकास योजना को तैयार करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। संयुक्त राष्ट्र संघ को अपनी सेवाएँ देने के बाद आपने मध्य प्रदेश की नर्वदा घाटी, उ.प्र. सरकार की कोसी परियोजना तथा हरियाणा एवं राजस्थान की विभिन्न सिंचाई सम्बन्धी योजनाओं के समाधान में महत्त्वपूर्ण सहयोग दिया। डॉ. कंवर सेन वास्तव में भारत के महान् वैज्ञानिक थे। उन्होंने अपने दायित्व का निर्वहन करते हुए चीन, सोवियत रूस, जापान, आस्ट्रेलिया, फ्रांस, जर्मनी, इटली, कनाडा, यूगोस्लाविया, वियतनाम, अमेरिका जैसे देशों की अनेक बार यात्राएँ कीं और अपने विराट अनुभवों से विदेशों में भारत के गौरव को नई गरिमा प्रदान की। वे एक अच्छे लेखक भी थे। उन्होंने 'अमेरिका थ्रू इण्डियन आईज' तथा 'रेमेनीसेन्सेज ऑफ इंजीनियर' जैसी पुस्तकें लिख, लेखन क्षेत्र में अपनी प्रतिभा को प्रकट किया। आपकी महान् राष्ट्र सेवाओं को देखते हुए 1956 में आपको भारत सरकार द्वारा "पद्मभूषण अलंकरण" से सम्मानित किया गया। इसके अलावा आपके अमेरिकन सोसायटी ऑफ इंजीनियर्स द्वारा "आजीवन मानद सदस्यता" तथा इंस्टीट्यूट ऑफ इंजीनियर, इण्डिया द्वारा आजीवन "मानद फैलोशिप" प्रदान की गई। रुड़की विश्वविद्यालय ने आपको "ऑनरेरी डाक्टरेट ऑफ इंजीनियरिंग" उपाधि से सम्मानित कर अपने आपको गौरवान्वित किया। थाईलैण्ड सरकार ने भी आपको 'आर्डर ऑफ एलीफैन्ट' उपाधि से विभूषित करने की घोषणा की।

वास्तव में डॉ. कंवर सेन भारत की नदी घाटी परियोजनाओं के जनक के रूप में हमेशा स्मरण किये जाते रहेंगे, जिन्होंने अपने श्रेष्ठ इंजीनियरिंग कौशल, सूझ-बूझ एवं विलक्षण प्रतिभा द्वारा न केवल अग्र समाज अपितु राष्ट्र का नाम अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्र में भी प्रतिष्ठापित किया। भारत सरकार का कर्त्तव्य है कि वह इस महान् इंजीनियर की स्मृति में डाक टिकट का प्रकाशन कर उन्हें उपयुक्त श्रद्धांजलि प्रदान करे तथा अग्र वैश्य सांसदों को भी इस दिशा में प्रयत्न करने चाहिए। अग्र समाज के ऐसे महान सपूत पर हम सदैव गौरवान्वित रहेंगे।

—*—

हक की रोटी

एक राजा के यहाँ एक संत आये। प्रसंगवश बात चल पडी 'हक की रोटी की'। राजा ने पूछा– "महाराज ! 'हक की रोटी' कैसी होती है? महात्माजी ने बतलाया कि "आपके नगर में अमुक जगह अमुक बुढ़िया रहती है, उसके पास जाकर पूछना चाहिए और उससे 'हक की रोटी' मांगनी चाहिए।

राजा पता लगाकर उस बुढ़िया के पास पहुँचे और बोले– 'माता! मुझे हक की रोटी चाहिए।'

बुढ़िया ने कहा– 'राजन मेरे पास एक रोटी है, पर उसमें आधी हक की है और आधी बेहक की।'

राजा ने पूछा– 'आधी बेहक की कैसे?'

बुढ़िया ने बताया– 'राजन् मैं एक दिन चरखा कात रही थी। श्याम का वक्त था। अंधेरा हो चला था। इतने में उधर से एक जुलूस निकला। उसमें मशाले जल रही थीं। मैं अलग चिराग न जलाकर उन मशालों की रोशनी में कातती रही और मैंने आधी पूनी कात ली। आधी पूनी पहले की कती थी। उस एक पूनी से आटा लाकर रोटी बनायी। इसलिए आधी रोटी तो हक की है और आधी बेहक की। इस आधी रोटी पर उस जुलूसवाले का हक है। राजा ने सुनकर बुढ़िया को सिर नवाया। और उसे 'हक की रोटी' का मतलब समझ में आ गया।

तेजस्वी अग्रविभूति – प्रो. रामसिंह

महान् स्वाधीनता सेनानी, समाज सुधारक, शिक्षाविद् तथा तेजस्वी हिन्दू नेता प्रो. रामसिंह अग्रवाल समाज की एक ऐसी विभूति थे, जो आजीवन राष्ट्र व समाज के लिए संघर्षरत रहे।

प्रो. रामसिंह का जन्म 28 अगस्त 1895 को रोहतक जिले के ग्राम फरमाना में लाला इच्छाराम अग्रवाल के घर हुआ। लाला इच्छाराम क्षेत्र के सुप्रतिष्ठित आर्य-समाजी तथा अग्रवाल समाज में प्रतिष्ठा प्राप्त समाज सेवी थे। अतः बालक रामसिंह को माता-पिता से ही भारतीयंता तथा वैदिक संस्कृति के संस्कार मिलने लगे।

गाँव में ही प्रारंभिक शिक्षा दिये जाने के बाद, आर्य-समाजी विचार होने के कारण उनके पिता ने उन्हें पढ़ने के लिए लाहौर भेजा। वे लाहौर में लाला लाजपतराय तथा भाई परमानन्द से प्रभावित हुए। लोकमान्य तिलक के राष्ट्रवादी लेखों ने उन्हें राष्ट्रीयता व स्वाधीनता की ओर उन्मुख किया। लाहौर में डी.ए.वी. कालेज में बी.ए. में अध्ययन करते समय उन्हें किसी क्रांतिकारी संगठन से वीर सावरकर के ऐतिहासिक ग्रन्थ '1857 का स्वातन्त्र्य समर' की प्रति हाथ लग गई। इस ग्रन्थ को पढ़कर तो वे वीर सावरकर के परम भक्त बन गये। सन् 1919 में अमृतसर में हुए जलियांवाला काण्ड में राष्ट्रभक्त जनता के नरसंहार की घटना ने 24 वर्षीय रामसिंह का हृदय अंग्रेजों के प्रति पूरी तरह विक्षोभ से भर डाला। उन्हीं दिनों 'रोलट एक्ट' तथा 'मार्शल ला' की आड़ में भारतीय जनता का

उत्पीड़न किया जा रहा था। इस वातावरण ने रामसिंह को स्वाधीनता आन्दोलन में सक्रिय हो जाने को विवश कर डाला।

वे लाहौर में अपने युवा क्रांतिकारी साथियों के साथ सभाएं करके विदेशी शासन के विरुद्ध विषवमन करने लगे। उनके ओजस्वी भाषण को सुनकर नेशनल कॉलेज के राष्ट्रभक्त प्रधानाचार्य आचार्य युगलकिशोर तथा आचार्य उदयवीर शास्त्री ने कहा था– 'यह युवक भविष्य में देश के अग्रणी वक्ताओं में ख्याति प्राप्त करेगा।'

उनके ओजस्वी भाषणों ने लाहौर के अंग्रेज अधिकारियों की नींद उड़ा डाली। रामसिंह को पंजाब से निष्कासित कर दिया गया।

दिल्ली कार्यक्षेत्र बना

पंजाब से निष्कासित होने के बाद रामसिंह ने दिल्ली पहुँचकर वहाँ स्वाधीनता आन्दोलन में भाग लेना शुरू कर दिया। विख्यात राष्ट्रभक्त श्री दीनबन्धु एन्ड्रूज ने उनसे प्रभावित होकर उन्हें 'नेशनल कॉलेज' का प्रधानाचार्य नियुक्त कर दिया। दिल्ली के प्रमुख कांग्रेसी नेता हकीम अजमल खाँ तथा देशबन्धु गुप्ता आदि उनकी सक्रियता से बहुत प्रभावित हुए। प्रो. रामसिंह को दिल्ली प्रदेश कांग्रेस कमेटी का मंत्री मनोनीत कर दिया गया। वे कांग्रेस के नेता के रूप में विदेशी सत्ता के विरुद्ध अभियान में पूरी शक्ति के साथ जुड़ गये।

सन् 1932 में ब्रिटिश प्रधानमंत्री ने 'कम्युनल अवार्ड' की घोषणा की। कांग्रेस के नेता मुस्लिम नेताओं की धमकी से डरकर 'मुस्लिम तुष्टीकरण' में लग गये। हिन्दू महासभा के नेता भाई परमानन्द जी तथा डॉ. बालकृष्ण शिवराम मुंजे ने इसके घातक परिणामों से हिन्दू जनता को सावधान करने का बीड़ा उठाया। उस समय कांग्रेस की मुस्लिम तुष्टीकरण की घातक नीति को देखते हुए देश के हजारों कांग्रेसियों ने कांग्रेस से त्याग-पत्र देकर हिन्दू महासभा में प्रवेश किया था। महन्त श्री दिग्विजयनाथ (गोरखपुर), बिशनचन्द्र सेठ (शाहजहांपुर) तथा सन् 1935-36 में प्रो. रामसिंह (दिल्ली) ने उसी समय कांग्रेस छोड़कर अपना जीवन हिन्दू

महासभा को समर्पित करने की घोषणा की। "हिन्दू साप्ताहिक" का सम्पादन किया।

सन् 1939 में हैदराबाद के नवाब द्वारा हिन्दुओं के धार्मिक अधिकारों पर प्रतिबन्ध लगाये जाने के विरोध में आर्य-समाज तथा हिन्दू महासभा ने व्यापक आन्दोलन चलाया। हिन्दू महासभा व आर्य-समाज ने दिल्ली में युवा शक्ति को संगठित कर सैकड़ों युवकों को हैदराबाद के सत्याग्रह में भेजा। अग्रवाल समाज के आर्य-समाजी युवा विद्वान श्री क्षितीज वेदालंकार तथा अन्य अनेक युवक हैदराबाद आन्दोलन में भाग लेने गये। प्रो. रामसिंह ने जगह-जगह पहुँचकर सभाओं का आयोजन कर हैदराबाद आन्दोलन की सफलता के लिए वातावरण का निर्माण किया।

स्वातन्त्र्य वीर सावरकर को अण्डेमान (कालापानी) की जेल से रिहाकर रत्नगिरि (महाराष्ट्र) में नजरबन्द कर दिया गया था। सन् 1938 में सावरकर जी की नजरबंदी से मुक्ति हुई तो उन्होंने हिन्दू महासभा का नेतृत्व संभाला। प्रो. रामसिंह सावरकर जी के अत्यन्त निकट आये तथा उन्होंने उनके साथ देश का भ्रमण किया। भारतीय युवक सेना में भरती होकर प्रशिक्षण प्राप्त करें, वीर सावरकर के इस प्रयत्न को कार्यान्वित करने के लिए प्रो. रामसिंह ने हरियाणा के सैकड़ों हिन्दू युवकों को सेना में भर्ती कराया।

प्रत्येक आन्दोलन में अग्रणी

सन् 1941 में भागलपुर में आयोजित हिन्दू महासभा के अधिवेशन पर ब्रिटिश शासन ने प्रतिबंध लगा दिया। वीर सावरकर तथा अन्य नेताओं को भागलपुर जाते समय गिरफ्तार कर लिया गया। प्रो. रामसिंह को भी गिरफ्तार कर जेल भेज दिया गया।

शेख अब्दुल्ला ने जम्मू-कश्मीर को भारत से अलग करने का षड्यन्त्र रचा तो हिन्दू महासभा, जनसंघ तथा रामराज्य परिषद ने मार्च सन् 1951 में इसके विरुद्ध अभियान छेड़ दिया। हिन्दू महासभा के निर्मलचन्द्र चटर्जी, जनसंघ के डॉ. श्यामप्रसाद मुखर्जी तथा रामराज्य परिषद के पं.

नंदलाल शास्त्री दिल्ली में सत्याग्रह करते हुए गिरफ्तार किये गये। प्रो. रामसिंह ने भी विशाल जत्थे के साथ सत्याग्रह कर गिरफ्तारी दी।

प्रो. रामसिंह दिल्ली विधान सभा के सदस्य भी चुने गये। प्रो. साहब ने गोआ मुक्ति आन्दोलन, काशी विश्वनाथ मुक्ति आंदोलन, गोरक्षा आन्दोलन आदि में सक्रिय भाग लिया। गोरक्षा आंदोलन में तो उनकी परम तपस्वी व विद्वान धर्मपत्नी श्रीमती सौभाग्यवती प्रभाकर भी सत्याग्रह कर तिहाड़ जेल गई थीं।

सन् 1973 में प्रो. रामसिंह हिन्दू महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष चुने गये। इलाहाबाद में आयोजित हिन्दू महासभा के अधिवेशन के जुलूस पर सरकार ने प्रतिबंध लगाया तो प्रोफेसर साहब इसका विरोध करते हुए गिरफ्तार किये गये। उन्होंने गोरक्षपीठाधीश्वर महन्त श्री दिग्विजयनाथ जी महाराज तथा श्री बिशनचन्द्र सेठ आदि के साथ हिन्दू महासभा के मंच से हिन्दुत्व के मान बिन्दुओं की रक्षा के लिए सतत् संघर्ष किया।

प्रो. साहब ने शिक्षा तथा समाज सुधार के क्षेत्र में भी अविस्मरणीय योगदान किया। वे गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के उप कुलाधिपति तथा पंजाब आर्य प्रतिनिधि सभा के वर्षों तक अध्यक्ष रहे। शिक्षण संस्थाओं की स्थापना के माध्यम से शिक्षा के प्रचार में उनका भारी योगदान रहा।

प्रोफेसर साहब एक गंभीर वैदिक विद्वान थे। वे जब वेदों की सुमधुर कथा कहते थे तो श्रोता झूम उठते थे। राजधानी दिल्ली में उन्होंने 'साप्ताहिक केसरी' का सम्पादन कर अपनी कुशल पत्रकारिता की भी धाक जमाई।

अग्रवाल समाज की विभूति

अग्रवाल सभा तथा अन्य सामाजिक संगठनों के माध्यम से प्रोफेसर साहब ने श्री बशेशरनाथ गोटेवाले के साथ मिलकर समाज सेवा के क्षेत्र में भी उल्लेखनीय योगदान किया। समाज के पिछड़े लोगों की कन्याओं के विवाह में चुपचाप सहायता कराने में आप विशेष रुचि लेते थे। दहेज पीड़ित कन्याओं की सहायता के लिए वे सदैव तत्पर रहे। उनके द्वारा

स्थापित अग्रवाल सभा के विधवा कोष, शिक्षा कोष एवं विवाह ब्यूरो से हजारों अग्रवंशियों ने लाभ उठाया।

'अग्रोहातीर्थ' के प्रति प्रोफेसर साहब की विशेष श्रद्धा रही। वे अग्रोहा के विकास को देखकर गद्‌गद् हो जाते थे। 'अग्रोहा विकास ट्रस्ट' के संस्थापक महासचिव लाला रामेश्वरदास गुप्त तथा अन्य पदाधिकारियों से प्रोफेसर साहब को विशेष स्नेह था। लाला रामेश्वर जी कहा करते हैं– "प्रो. रामसिंह जैसी विभूति बहुत कम होती है, जिन्होंने अपना सर्वस्व राष्ट्र व समाज के लिए समर्पित किया।"

इस बात का गर्व है कि प्रोफेसर साहब स्व. भक्त रामशरदास जी के अनन्य सहयोगी मित्रों में थे। वे समय-समय पर पिलखुवा पधार कर मार्ग-दर्शन करते रहते थे। अग्रवाल समाज को ऐसी पूर्ण समर्पित राष्ट्रभक्त विभूति पर हमेशा गर्व रहेगा। 2 जुलाई 1983 को आपके निधन से समाज तथा राष्ट्र की जो हानि हुई है उसकी पूर्ति होना कठिन है।

—*—

* अग्रसेन स्तुति *

अग्रसेन महाराज आपको बारम्बार प्रणाम है
जीवन भर मानवता के हित में किया आपने काम है
बारम्बार प्रणाम है.......

महाप्रतापी महादानी तुम, ज्योति प्रभा थे प्रतिभा के
समाजवाद के कुशल चितेरे, प्रकाश पुंज थे आभा के
गौरव देकर के समाज को, किया यहां सत्काम है
बारम्बार प्रणाम है.......

एक ईंट और एक रूपये का, दिया आपने मंत्र महान,
जनक आप हैं वैश्य जनों के, हम सब हैं प्यारी सन्तान
फैल रही है कीर्ति तुम्हारी, दशों दिशायें अभिराम है,
बारम्बार प्रणाम है.......

अग्रवंश की महान् विभूति

अवतारी बाबा गंगाराम

युग प्रवर्तक एवं महान् कालदृष्टा महाराज अग्रसेन ने सदियों से स्थापित गौरवमयी आदर्शों एवं परम्पराओं को पुनर्जीवित करते हुए जिस समाज की स्थापना की थी, वह आज अपने अतीत को देखकर गौरवान्वित हुए बिना नहीं रह सकता। अवतारी महापुरुषों, विचारकों एवं विद्वानों का जो समृद्ध इतिहास इस समाज में रहा है, वह निश्चय ही प्रेरणादायक है। इसी अग्रवंशीय वैश्य परिवार में आज से करीब 100 वर्ष पूर्व श्री बाबा गंगाराम का प्राकट्य हुआ।

राजस्थान के प्राचीन मत्स्य प्रदेश एवं मरुभूमि के झुन्झुनू नगर में वि.सं. 1952 श्रावण शुक्ला दशमी को बाबा गंगाराम अवतरित हुए। इनकी माता का नाम लक्ष्मीबाई व पिता का नाम झूथाराम था। अग्रवंशीय गोयल गोत्र में जन्म लेने से पूर्व ही इनकी लीलाओं की झलक मिलने लगी थी। युवा होते बाबा के उद्गारों एवं चमत्कारों की चर्चा आम हो चली थी। उनके मुख से निकली हुई कोई भी वाणी निष्फल नहीं होती थी। बाबा के कुछ ही क्षणों के सानिध्य से लोगों के कष्ट दूर होने लगे। परिवार की समृद्धता एवं हवेली की ऊँची-ऊँची दीवारें भला उनको कब तक रोक पाती। बाबा गंगाराम झुन्झुनू में धार्मिक वातावरण एवं भगवद्भक्ति का प्रसारण करते हुए उत्तर प्रदेश के कौशल प्रदेश में पधारे

एवं बाराबंकी जनपद के सफदरजंग नामक स्थान में कल्याणी नदी के तट को अपनी कर्मभूमि बनाया।

उसी समय की बात है, एक बार जब बाबा कल्याणी के पावन जल में स्नान व तर्पण आदि से निवृत्त होकर बाहर निकल रहे थे तो उनके साथ ही स्नान कर रहे कुछ सन्तों एवं भगवद्भक्तों ने जल में बाबा की परछाई देखी। जब यह बात धीरे-धीरे फैली तो परिजन आश्चर्यचकित एवं किंकर्त्तव्यविमूढ़ हो गये। परन्तु प्रभु अपनी माया का संवरण कुछ ही क्षणों में कर लेते हैं अन्यथा आगे की लीला कैसे सम्भव है।

शास्त्रों में वर्णित है, "परोक्षप्रियाः हि देवाः प्रत्यक्षद्विषः" कि देवता छिपकर ही लीला करते हैं। बाबा भी मात्र 42 वर्ष की आयु में वि.स. 1994 पौष शुक्ला चतुर्थी को कल्याणी के तट पर वटवृक्ष के नीचे स्वधाम प्रयाण कर गये। कहते हैं महाप्रयाण के समय वटवृक्ष में एक अद्भुत कम्पन्न हुआ जो बहुत देर तक होता रहा। आज सफदरगंज भक्तों के हृदय में तीर्थ रूप स्थान पा चुका है। भक्तगण वहां की भूमि का दर्शन करने जाते हैं। वहाँ स्वप्रतिष्ठित राधाकृष्ण मन्दिर, पुण्यतोया कल्याणी नदी, देहोत्सर्ग वटवृक्ष, श्री लक्ष्मीकूप एवं समीप ही श्री कुन्तेश्वर महादेव और पौराणिक काल का अद्भुत पारिजात वृक्ष आदि दर्शनीय स्थान हैं।

बाबा का मन्दिर निर्माण सम्बन्धी आदेश : श्री बाबा गंगाराम के विष्णु लोक प्रयाण के तुरन्त बाद से ही समय-समय पर कई आदेश इनके भक्तों को होते रहे एवं इनके चमत्कारों की विशिष्ट तेजस्विता सामूहिक रूप से लोगों में फैलती गई। स्वधाम गमन के पश्चात् बाबा मन्दिर निर्माण सम्बन्धी आदेश स्वप्न द्वारा अपने परम् भक्त-पुत्र श्री देवकीनन्दन मोदी को दिया।

पावनधाम : श्री पंचदेव मन्दिर झुन्झुनू : सीकर लोहारू राजमार्ग पर एक विस्तृत भूभाग पर फैले हुए इस देवस्थान में प्रवेश करते ही प्राकृतिक हरितिमा से आच्छादित मनोहारी वातावरण एवं मन्दिर के आध्यात्मिक परिवेश से मन में एक दिव्य आनन्द की अनुभूति होती है। विशुद्ध शेखावटी शैली में निर्मित मन्दिर के तीन ऊँचे-ऊँचे शिखर हैं, जो

दूर-दूर से दिखाई देते हैं। मन्दिर के मुख्य गर्भगृह में स्थापित है बाबा गंगाराम का श्री विग्रह। बाबा की प्रतिमा अत्यन्त आकर्षक एवं दिव्य तेजोमय है। इसके बाद और दो अलग-अलग मन्दिरों में भगवती दुर्गा एवं आन्जनेय हनुमान की विशाल प्रतिमाएं स्थापित हैं। दाहिनी ओर महालक्ष्मी एवं शिव परिवार की मूर्तियाँ स्थापित हैं। इस प्रकार इन पांच देव मन्दिरों को मिलाकर ही इस मन्दिर का नाम पंचदेव मन्दिर पड़ा। बाबा के धाम में यूं तो पूरे वर्ष भर ही उत्सव आयोजन होते रहते हैं एवं भक्तगण अपनी श्रद्धा अर्पित करने, मुण्डन संस्कार एवं विवाहादि की जात देने आते रहते हैं, परन्तु मुख्य समारोह गंगा दशहरा को स्थापना पर्व के रूप में मनाया जाता है। इसके अलावा श्रावण शुक्ला दशमी को बाबा की जयन्ती एवं बैशाख बदी चतुर्थी को भक्त शिरोमणि देवकीनन्दन आशीर्वचन दिवस धूमधाम से मनाया जाता है। मन्दिर परिसर में ही सत्संग भवन, धर्मशाला, यज्ञशाला, प्याऊ, बगीचे, कुएं इत्यादि स्थित हैं। बाबा के दरबार में सच्चे मन से की गई कोई भी प्रार्थना निष्फल नहीं जाती है। चमत्कार को नमस्कार का सदियों पुरानी कहावत यहाँ सही रूप से चरितार्थ हुई है। यही कारण है कि आज बाबा के भक्तों की संख्या दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही है।

बाबा के परमभक्त : श्री भक्त शिरोमणि देवकीनन्दन

मुख्य मन्दिर के दक्षिण की ओर मन्दिर के संस्थापक भक्त शिरोमणि देवकीनन्दन की पावन समाधि है। मन्दिर स्थापना के पश्चात् ये बाबा की भक्ति में इस प्रकार लीन हो गये थे कि उन्होंने सांसारिक अग्नि परीक्षाओं से गुजरते हुए भी अपना सर्वस्व मन्दिर की सेवा में समर्पित कर दिया, जो आज के इस भौतिक युग में स्वयं एक उदाहरण बन गया है। प्रभु के चरणों की सेवा करते हुए वैशाख बदी चतुर्थी सं. 2049 में उन्होंने अपने नश्वर शरीर को छोड़ दिया।

महाराज अग्रसेन के वंश में त्याग तपस्या एवं भक्ति का जो यह अनोखा संगम प्रस्तुत हुआ है वह सिर्फ अग्रवाल समाज ही नहीं वरन् सभी धर्मवत्सल, भगवत्प्रेमी सज्जनों के लिए गौरव की बात है।

—*—

विधिवेत्ता अग्र-गौरव प्रभुदयाल हिम्मत सिंहका

सुविख्यात सोलीसीटर एवं विधि-वेत्ता तथा कुशल सांसद, भारतीय संविधान निर्मात्री सभा के सदस्य श्री प्रभुदयाल हिम्मत सिंहका सदैव याद किये जाते रहेंगे। आप बंगाल विधान सभा के तीन बार सदस्य तथा सन् 1952 से 1972 तक लगातार लोक सभा एवं राज्य सभा के सदस्य रहे।

आप स्वाधीनता संग्राम के सेनानी थे। सन् 1914 में कलकत्ता में होड़ा कम्पनी सशस्त्र डकैती कांड के समय आपने विदेशों से आए सरकारी कारतूसों और राइफलों को पार कर क्रांतिकारियों के पास पहुँचा दिया था। इस सशस्त्र डकैती कांड में आप तथा आपके तीन साथी भाई हनुमानप्रसाद पोद्दार, फूलचन्द चौधरी तथा ओंकारमल सर्राफ को राजद्रोह के अपराध में बंदी बनाकर नजरबंद रखा गया था।

ब्रिटिश शासन के उत्थान-पतन से लेकर गांधी, नेहरू, लालबहादुर शास्त्री, श्रीमती इंदिरा गांधी, मोरारजी देसाई, राजीव गांधी युग के एक मात्र साक्षी तथा कलकत्ता के जन-जीवन को आठ-दशक तक प्रभावित करने वाले विद्वान-विधिवेत्ता-कुशल राजनीतिज्ञ व प्रशासक को अग्रवाल समाज सदैव याद रखेगा।

स्वाधीनता सेनानी कवि हृदय सियाराम शरण गुप्त

श्री सियाराम शरण गुप्त जी राष्ट्रकवि मैथिलीशरण जी के छोटे भाई थे। इनका जन्म चिरगांव, जिला झांसी में 1895 में हुआ था। आप पर अपने भ्राता का पूर्ण असर था। आप में भी साहित्य और काव्य रचना की असीम विद्वता थी। आप भी राष्ट्रीय आन्दोलनों से अछूते नहीं रहे। सक्रिय रूप से अपनी कलम की आवाज से स्वाधीनता संग्राम में प्राण डाले। आपकी पत्नी की असामयिक मृत्यु और यातनाओं से निरन्तर श्वांस कष्ट से पीड़ित हो गये। यही तत्व उनके काव्य में दृष्टिगोचर होते गए। इनके काव्य का स्वर करुणामय और विषादपूर्ण रहा। उनकी मृत्यु सन् 1963 में हुई।

अग्रविभूति-स्वाधीनता सेनानी-पत्रकार

विश्वंभरसहाय प्रेमी

श्री विश्वंभरसहाय प्रेमी देश की उन विभूतियों में अग्रणी थे जिन्हें महात्मा गाँधी, लाला लाजपतराय, हनुमान प्रसाद पोद्दार, महामना पं. मदनमोहन मालवीय, राजर्षि पुरुषोत्तमदास टंडन जैसी महान् राष्ट्रीय विभूतियों का आशीर्वाद समय-समय पर मिलता रहा। वे एक कर्मठ स्वाधीनता सेनानी, साहित्यकार, पत्रकार, शिक्षा सेवी तथा समाज सेवी थे।

प्रेमी जी का जन्म 19 जुलाई 1899 को मोदीनगर के निकट फरीदनगर नामक कस्बे में ला. बाबूराम सिंहल के घर हुआ था। मिडिल तक की शिक्षा कस्बे के ही विद्यालय में प्राप्त की। इसके बाद वे मेरठ चले गये तथा वहाँ आगे की शिक्षा ग्रहण करने लगे।

1920 में जब वे हाईस्कूल के छात्र थे तो महात्मा गाँधी ने छात्रों को आह्वान किया कि वे अंग्रेजों की शिक्षा को त्यागकर राष्ट्रीय आंदोलन में सक्रिय हो जाएं। प्रेमी जी तथा इनके सहयोगी शिब्बनलाल गोयल ने पढ़ाई छोड़ दी तथा अपना जीवन अपनी मातृभूमि की स्वाधीनता के लिए समर्पित कर दिया।

मेरठ उन दिनों स्वाधीनता आन्दोलन का प्रमुख केन्द्र था। प्रेमी जी ग्रामीणों में राष्ट्रीय चेतना जागृत करने गांवों में जाते तथा लोगों को स्वदेशी, खादी, राष्ट्रभाषा हिन्दी तथा स्वाधीनता के महत्त्व से अवगत कराते। वे गुप्त रूप से राष्ट्रीय जागरण के अभियान में लगे रहे।

पत्रकारिता के क्षेत्र में : प्रेमी जी पंजाब केसरी लाला लाजपत राय, लाला हरदेवसहाय तथा लोकमान्य तिलक के विचारों से प्रभावित रहे।

वे राष्ट्रीय भावनाओं से ओत-प्रोत साहित्य तथा पत्र-पत्रिकाओं का अध्ययन करते थे। पत्रकारिता की ओर उनकी शुरू से ही रुचि थी। सन् 1923 में उन्होंने हिन्दी साप्ताहिक 'मातृभूमि' का सम्पादन प्रकाशन किया। बाद में 1933 में मासिक पत्रिका 'तपोभूमि' का प्रकाशन किया।

'तपोभूमि' लगभग तीन वर्ष तक चली और फिर धनाभाव के कारण बन्द हो गयी। उक्त पत्र का भारतीय सभ्यतांक मानवीय तथा संग्रहणीय सामग्री से परिपूर्ण था। अनेक साहित्य तथा पत्र-पत्रिका प्रदर्शनियों के लिए इस विशेषांक की मांग हुई। लगभग तीन वर्ष की अवधि में पत्रिका को बड़े-बड़े कवियों, साहित्यकारों तथा विचारकों की रचनाओं को प्रकाशित करने का अवसर मिला।

राष्ट्रकवि श्री मैथिलीशरण गुप्त के काव्य ग्रंथ 'साकेत' की पं. अलगूरायजी शास्त्री लिखित आलोचना पत्र के कई अंकों में धारावाहिक रूप में प्रकाशित हुई। स्वयं गुप्त जी इस आलोचना को बहुत ध्यान से पढ़ते थे और उन्होंने प्रेमी जी को अपने एक पत्र में लिखा था– "मैंने समालोचक तो बहुत देखे पर स्पष्ट आलोचक बहुत कम देखने को मिले हैं।" इस आलोचना के जवाब में एक प्रत्यालोचना श्री ब्रजमोहनलाल ने लिखी। यह भी तपोभूमि में धारावाहिक रूप में प्रकाशित हुई।

तपोभूमि एक शुद्ध सात्विक पत्रिका थी। इसके पाठक न केवल भारत ही में थे, अपितु मारीशस, डरबन, नैटाल आदि अनेक स्थानों में इसके प्रत्येक अंक का स्वागत होता था।

आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी ने 'तपोभूमि' के प्रति अपनी शुभकामना व्यक्त करते हुए लिखा था– 'तपोभूमि' की दूसरी संख्या के दर्शन हुए। अत्यानन्द हुआ। मैं इस सदानुष्ठान में आपकी सफलता चाहता हूँ। ईश्वर आपको सिद्धि प्रदान करे।"

'तपोभूमि' के भारतीय सभ्यतांक के लिए अपना सन्देश देते हुए कविवर श्री मैथिलीशरण गुप्त ने लिखा था–

"आर्य सभ्यता का सदा रहा यही परिणाम,
जीने में बस ज्योति हो, मरने में निर्वाण।"

श्रीमती महादेवी वर्मा ने अपनी शुभकामना में लिखा था– "तपोभूमि के भारतीय सभ्यतांक में अंतरङ्ग और बहिरङ्ग दोनों ही सुन्दर हैं। निकट भविष्य में वह त्यागभूमि के रिक्त स्थान की पूर्ति कर सकेगी, ऐसी आशा है।"

स्वाधीनता के लिए जेल : प्रेमी जी की धर्मपत्नी श्रीमती रमावती प्रेमी 1942 में पति से पहले महिलाओं के जत्थे का नेतृत्व करते हुए जेल गईं।

प्रेमी जी यद्यपि राष्ट्रीय आन्दोलन में 1920 में ही आ गए थे, जबकि उन्होंने मिशन स्कूल छोड़ दिया था।

विभिन्न आन्दोलनों में अधिकांश प्रचार सामग्री प्रेमी जी अपने ही प्रेस में छापते थे। इस कार्य के लिए स्वयं प्रेमी जी और उनके दो बड़े पुत्र लगा करते थे। कभी-कभी प्रेस का नाम डालकर जो सामग्री छापी गई वह आपत्तिजनक ठहरा दी गई और प्रेस को जुर्माना देना पड़ा, या जमानत दाखिल करनी पड़ी। अधिकांश में वह बिना नाम डाले ही इस प्रचार सामग्री को छापा करते थे। इसी आधार पर 1942 में उन्हें भारत रक्षा कानून के अंतर्गत नजरबन्द किया गया था।

प्रेमी जी ने अपने जेल जीवन के जो संस्मरण लिखे हैं उनमें 26 जनवरी 1943 को जेल में मनाए गए समारोह का बड़े मार्मिक ढंग से उल्लेख किया गया है। आजादी के प्रतिज्ञा-पत्र और तिरंगे झंडे दोनों की व्यवस्था प्रेमी जी ने ही की थी।

सन् 1932 में उनके फूटा कुंआ स्थित मकान की तलाशी इस सूचना पर ली गई थी कि प्रेमी जी के घर में अवैध शस्त्रों का भण्डार मिलेगा। इसी प्रकार एक बार जब बुरहानपुर (तत्कालीन सी.पी.) में वह

आर्य समाज के एक महत्त्वपूर्ण सम्मेलन में भाग लेने के लिए गये तो मेरठ से बुरहानपुर तक और वापसी में सी.आई.डी. द्वारा उनका बराबर पीछा किया जाता रहा।

प्रेमी जी ने श्री मैथिलीशरण गुप्त, डॉ. वासुदेवशरण अग्रवाल, श्री हनुमानप्रसाद पोद्दार तथा लाला लाजपतराय जैसी विभूतियों से प्रेरणा ली। उन्होंने भी प्रेमी जी को भरपूर स्नेह प्रदान किया।

प्रेमी जी ने हिमालय में भारतीय संस्कृति, भारत के तीर्थ हमारी एकता के केन्द्र, राष्ट्र निर्माण, भारत गीतांजलि, भगवान के पुत्र, क्रांति चिरंजीवी हो, कृष्ण का संधि संदेश, हिन्दुत्व की रक्षा का महान् प्रश्न, भारत की स्वर्णिम विजय, पाकिस्तान भारत का दुश्मन क्यों? भारत और मुस्लिम भावनाओं का रूप, भारत के सप्त दुर्ग, गोलकुण्डा, चित्तौड़ जैसी अनेक पुस्तकें लिखकर हिन्दी साहित्य की श्रीवृद्धि में योगदान किया।

मुस्लिम तुष्टीकरण को चेतावनी : प्रेमी जी कांग्रेस के प्रबल समर्थकों में रहे। कांग्रेस के अनेक आन्दोलनों में सक्रिय भाग लेकर जेल गए। अपनी लेखनी के माध्यम से राष्ट्रीय आन्दोलन को उन्होंने बल प्रदान किया। किन्तु हिन्दी एवं हिन्दुत्व के प्रश्न पर भारतीय संस्कृति पर आघात होने पर उन्होंने कभी भी कांग्रेस से समझौता नहीं किया। उन्होंने जब देखा कि कांग्रेसी नेता मुस्लिम तुष्टीकरण की नीति पर चलकर देश के विभाजन के लिए तैयार हैं तो तुष्टीकरण का डट कर विरोध किया। राष्ट्र-विरोधी गतिविधियों के प्रति वह सदैव सजग रहते थे।

स्वाधीनता मिली किन्तु मुस्लिम नेताओं के राष्ट्रद्रोह के परिणामस्वरूप देश के अंग-भंग खण्ड-खण्ड हो गये। भारत विभाजन के बाद उर्दू पत्रों व मुस्लिम संस्थाओं ने पाकिस्तान परस्ती व अलगाव की मनोवृत्ति जारी रखी। प्रेमी जी पहले निर्भीक पत्रकार थे, जिन्होंने उर्दू पत्रों की विषाक्त मनोवृत्ति का भण्डाफोड़ करने के लिए लेखनी उठायी। 'अलजमीयत' जैसे राष्ट्रवादी कहे जाने वाले पत्र ने 'वन्देमातरम्' के विरुद्ध लेख लिखे तो प्रेमी जी ने उन्हें हिन्दी में उद्धृत कर राष्ट्रीय नेताओं को

चेतावनी दी। उन्होंने "मुस्लिम भावनाओं का एक रूप" पुस्तक लिखकर इस प्रकार के ज्वलन्त उद्धरण प्रस्तुत कर देश को 'घर में छिपे गद्दारों' से सावधान रहने का आह्वान किया।

प्रेमी जी हिन्दुत्व के अनन्य उपासक थे। उन्होंने अनुभव किया कि विदेशी ईसाई मिश्नरी, मुस्लिम लीग मनोवृत्ति के मुसलमान, नास्तिक व रूस-चीन भक्त कम्युनिस्ट सभी हिन्दुत्व को मिटा डालने का प्रयास कर रहे हैं। उन्होंने "हिन्दुत्व की रक्षा का एक महान् प्रश्न" पुस्तक लिखकर इस प्रकार के षड्यन्त्रों का भण्डाफोड़ कर हिन्दू समाज को संगठित होने का आह्ववान किया। इस पुस्तक को 'कल्याण' सम्पादक भाई हनुमान प्रसादजी पोद्दार, तथा प्रो. रामसिंह जी जैसे प्रसिद्ध नेताओं ने सामयिक प्रकाशन बताकर उन्हें बधाई दी थी।

उर्दू के गड़े मुर्दे उखाड़ने का विरोध : प्रेमी जी हिन्दी के दीवाने थे। उन्होंने हिन्दी सेवा को जीवन का ध्येय बनाया था। इसीलिए हिन्दी के मासिक व साप्ताहिक पत्रों का सम्पादन किया। मेरठ में हिन्दी साहित्य सम्मेलन का अधिवेशन कराया। मेरठ में पुरुषोत्तमदास टण्डन हिन्दी भवन की स्थापना का महत्त्वपूर्ण कार्य किया।

उन दिनों उत्तर प्रदेश सरकार चुनावों में मुस्लिम मत प्राप्त करने के लिए उर्दू के गढ़े मुर्दे को कब्र से बाहर निकालने का प्रयास कर रही थी। प्रत्येक स्कूल में उर्दू अध्यापक रखे जाने की घोषणा की गयी थी। प्रेमी जी अस्वस्थ थे तथा रुग्णशैया पर पड़े हुए थे। उन्होंने कहा "हिन्दी के गढ़ उत्तर प्रदेश से हिन्दी को उखाड़ने का षड्यन्त्र रचा जा चुका है। कांग्रेस तथा अन्य विपक्षी दल मुसलमानों को तुष्ट करने में होड़ लगा रहे हैं। इसी कारण उर्दू का बखेड़ा किया जा रहा है। इस घातक नीति का कड़ा विरोध किया जाना चाहिए।"

उन्होंने अपना कड़ा वक्तव्य लिखाया। 'पंचायती राज' में सम्पादकीय लिखकर उत्तर प्रदेश सरकार की कड़ी भर्त्सना की। वे निर्भीक पत्रकार थे। अतः जब कभी भी हिन्दी पर आंच आई उन्होंने हिन्दी की रक्षा के लिए हर सम्भव प्रयास किया।

प्रेमी जी महान् समाज सुधारक थे। उन्होंने अग्रवाल तथा समस्त वैश्य समाज को जाग्रत कर उन्हें कुरीतियों से मुक्त होने की प्रेरणा दी। वे कहा करते थे–

"वैश्य समाज ने धर्मप्राण भारत को जगद्गुरु के पद पर पहुँचाने में जो योगदान किया है उसकी उपेक्षा नहीं की जानी चाहिए। धर्म, संस्कृति, साहित्य तथा आर्थिक विकास जैसे सभी क्षेत्रों में वैश्य समाज अग्रणी रहा है।"

यह प्रसन्नता की बात है कि 19 जुलाई 1999 को इस अग्रविभूति के शताब्दी समारोह के लिए भेजे संदेश में प्रधानमंत्री श्री अटलबिहारी वाजपेयी ने लिखा–

"प्रेमी जी जैसी विभूतियाँ युगों बाद जन्म लेती हैं। उनका व्यक्तित्व बहुआयामी था।"

—*—

* महाराजा अग्रसेन वंदना *

हे दिव्य पुरुष तुम अग्रगण्य, हे सूर्यवंश आलोक प्रखर
क्षत्रिय कुलभूषण ज्योतिर्मय, हे दिग्विजयी तुम वीर प्रखर।
कितनी ही विजय प्राप्त करके, युद्धोन्माद से मुख मोड़ा
अपनाया दया अहिंसा को, बन वैश्य क्षात्र पद को छोड़ा।
तुम लोकतंत्र के सूत्रधार, राजर्षि लोकप्रिय जननायक
गणराज्य बना था अग्रोहा, शासक थे, उसके गणनायक।
तुमने ही जग को सर्वप्रथम, दी थी शिक्षा समाजवादी
विख्यात हो गई जगती में, रुपयों ईंट की परिपाटी।
समता भ्रातृत्व भाव अनुपम, अपने पुत्रों को सिखलाया
अब डेढ़ कोटि तव संतति ने, उन आदर्शों को बिसराया।
हमको संबल दो आदिपिता, हे पथदर्शक पथ दिखलाओ
जागे स्वजाति में स्वाभिमान, वरदान हमें प्रभु ऐसा दो।
हे दिव्य पुरुष तुम अग्रगण्य, हे सूर्यवंश आलोक प्रखर
क्षत्रिय कुलभूषण ज्योतिर्मय, हे दिग्विजयी तुम वीर प्रखर।

अग्ररत्न मास्टर लक्ष्मी नारायण अग्रवाल

मास्टर लक्ष्मीनारायण अग्रवाल समाज की एक ऐसी विभूति तथा मूक साधक थे, जिन्होंने अपना सर्वस्व ही अग्रवाल समाज की एकता तथा प्रगति के लिए समर्पित किया था। अग्रवालों की पुण्यभूमि अग्रोहा के विकास का सबसे पहले बीड़ा उठाने वाले मास्टर जी ही थे। अग्रवाल समाज ही नहीं, सम्पूर्ण वैश्य समाज उनकी सेवाओं को हमेशा याद रखेगा। मास्टर लक्ष्मीनारायण अग्रवाल का जन्म 10 जून सन् 1900 में ग्राम जौनती दिल्ली निवासी लाला प्रभुदयाल बंसल जी के यहाँ हुआ था। इनके बाबा जी का नाम लाला चेतराम था। उन्होंने अपना जीवन एक शिक्षक के रूप में शुरू किया तथा इसी कारण वे 'मास्टरजी' के नाम से विख्यात हुए।

"कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन्" की उक्ति को चरितार्थ करने वाले समत्व भाव के धनी मास्टर लक्ष्मीनारायण जी ने समाज सेवा का बीड़ा उठाया। तब कौन जानता था कि उनके द्वारा रोपित सामाजिक चेतना का बीज एक ऐसे विशाल वट वृक्ष का रूप ले लेगा, जो भविष्य में सामाजिक सुरक्षा, प्रेम, सहयोग एवं संगठन का सम्बल बनेगा। अग्रोहा का विकास एवं मन्दिर का निर्माण, जयन्तियों के संक्षिप्त आयोजन, वैश्य बैंक का छोटा सा संगठन, अग्रवाल भवनों के निर्माण की प्रेरणा, हरिद्वार में अग्रसेन आश्रम निर्माण की योजना, सहायता शिविर, सांस्कृतिक कार्यक्रमों के आयोजन आदि बीज रूप में प्रारम्भ होकर आज विशालतम रूप प्राप्त कर चुके हैं।

कार्यस्थल को वे कभी नही पूछते वह है कहाँ?
कर दिखाते हैं असम्भव को वही सम्भव यहाँ॥

किसी कार्य को कैसे, कब और क्या करना है उसके अनुरूप साथियों एवं स्थान का चयन, आने वाली बाधाओं का निराकरण कर असम्भव को सम्भव बनाना स्व. मास्टर जी की अपनी विशेषता थी।

सन् 1948 में सेठ जमनालाल बजाज द्वारा स्थापित 'अखिल भारतीय अग्रवाल महासभा' के मन्त्री के रूप में उन्होंने समाज को जागृति और चेतना प्रदान की। इस महासभा का रजिस्ट्रेशन मास्टर जी के कार्यकाल ही में हुआ था। देशभर में प्रतिवर्ष महाराजा अग्रसेन की जयन्ती एवं इस अवसर पर आयोजित समारोहों के आयोजनों की प्रेरणा एवं मार्गदर्शन सर्वप्रथम मास्टर जी से ही प्राप्त हुआ।

सन् 1948 के लगभग मास्टरजी लाला बशेशरनाथ गोटेवाले, मास्टर चंदगी राम तथा ला. ताराचन्द जी के साथ दिल्ली के मौहल्लों व बस्तियों में जाते थे तथा वहाँ ढोलक पर भजन कराकर लोगों को इकट्ठे करते थे तथा सामाजिक कुरीतियों के उन्मूलन की प्रेरणा देते थे। इस प्रकार पूरी राजधानी में उन्होंने वैश्य समाज को जागृत करने का महान् अभियान चलाया था।

बैंक की स्थापना– उन्होंने केवल 14 सदस्यों के सहयोग से सन् 1939 में दिल्ली में 'वैश्य को-आपरेटिव कमर्शियल बैंक लि.' (नई सड़क दिल्ली) की स्थापना की थी, जिसकी सदस्य संख्या आज लगभग 6000 से ऊपर है। मास्टर जी 40 वर्षों तक बैंक के अवैतनिक मन्त्री रहे। इस अवधि में उन्होंने हजारों गरीब एवं असहाय बन्धुओं को कम ब्याज पर बैंक से आर्थिक सहायता दिलवाकर मकान बनाने एवं व्यवसाय चालू कर अपने पैरों पर खड़े होने के लिए समर्थ बनाया। गरीब कन्याओं के हाथ पीले करने में बहुत बड़ा योगदान दिया। इस प्रकार मास्टरजी ने सहकारिता की नींव रखी। मास्टर लक्ष्मीनारायण अग्रवाल जी ने समाज सेवार्थ "शिक्षा तथा विधवा सहायता कोष" की स्थापना कर इसके

माध्यम से हजारों बच्चों को उच्च शिक्षा में सहायता दी तथा विधवा सहायता के लिए सिलाई मशीनें दिलवाई और गरीबों की मदद करने में सहायता की। समाज सेवा के इन कार्यों को करने वाले महापुरुष, समाज चिन्तक एवं दूरदर्शी पुरुष को समाज कैसे भूल सकता है।

अग्रवाल भवन की स्थापना– सन् 1957 में उनके प्रयत्न और अथक लगन के बल पर ही दिल्ली के समृद्ध एवं अग्रवालों के गढ़ शक्ति नगर में अग्रवाल भवन की स्थापना की गई और यह भवन दिल्ली के अग्रवाल बन्धुओं के लिए प्रेरणा स्रोत बना। अब दिल्ली के अनेक क्षेत्रों में अग्रवाल भवन और धर्मशालाओं का निर्माण निरन्तर हो रहा है। भवन के प्रांगण में प्रतिवर्ष महाराज अग्रसेन जयन्ती का आयोजन कर अग्रवाल समाज को जागृत करना, समाज सेवार्थ वर्ष में दो बार नेत्र चिकित्सा शिविर के आयोजन करना मास्टरजी की ही देन है।

अग्रोहा निर्माण–अग्रवालों की जन्मभूमि अग्रोहा को पुनः बसाने के लिये तथा अग्रवालों को उनका प्राचीन गौरव स्मरण कराने के लिए उन्होंने भरसक प्रयत्न किये। इस हेतु आपने देशभर में घूम-घूम कर अग्रवालों को प्रेरित किया और उनकी सहायता से 300 बीघा (3 लाख वर्ग गज) भूमि अग्रोहा की थेह के निकट खरीद कर बहुत बड़ा कार्य किया। सन् 1965 में मास्टर जी ने राजधानी के प्रसिद्ध समाजसेवी एवं पूर्व महानगर पार्षद व तत्कालीन बड़ी पंचायत वैश्य बीसे अग्रवाल के सचिव श्री प्रेमचन्द गुप्ता के साथ हरियाणा प्रान्त के सभी जिलों का दौरा किया और तत्कालीन संयुक्त पंजाब के मुख्यमंत्री कारमेड रामकिशन एवं महामण्डलेश्वर स्वामी गणेशानन्द जी महाराज (जीन्द) को अग्रोहा में आमन्त्रित कर एक सम्मेलन आयोजित किया। उस समय पंजाब व हरियाणा के पुर्नगठन का संक्रमण काल था। उस समय उनके मस्तिष्क में 'श्री अग्रसेन इंजीनियरिंग टेक्नीकल कॉलेज' की स्थापना की योजना थी। बाद में अखिल भारतीय अग्रवाल सम्मेलन एवं अग्रोहा विकास ट्रस्ट का गठन हो जाने पर उसी में से 23 एकड़ भूमि महाराज अग्रसेन के मन्दिर

निर्माण एवं अग्रोहा को तीर्थ स्थल बनाने हेतु दी गई, जिस पर आज भव्य मन्दिर का निर्माण हो रहा है, जो एक विराट तीर्थ स्थल एवं पांचवें धाम का स्थान ग्रहण कर चुका है। यहॉं प्रतिवर्ष शरद पूर्णिमा के अवसर पर महाकुम्भ का आयोजन किया जाता है। अग्रोहा धाम का यह स्थल अग्रवाल समाज के लिये प्रकाश स्तंभ बन कर रहेगा। जहाँ आज विशाल महाराजा अग्रसेन, कुलदेवी महालक्ष्मी, विद्यादायनी सरस्वती आदि के मंदिर, अप्पू घर, शक्ति सरोवर, हनुमान जी की 90 फुट ऊँची प्रतिमा, माँ वैष्णो देवी के भव्य मंदिर तथा अतिथि गृह, धर्मशाला आदि निर्मित हैं।

मेडिकल कालेज– स्वर्गीय मास्टर जी का स्वप्न था कि अग्रोहा में "महाराजा अग्रसेन इंजीनियरिंग टेक्नीकल कॉलेज" की स्थापना की जाये। लेकिन उसके स्थान पर मेडिकल कॉलेज की आयोजना बनी और उसके लिए उसी भूमि में से 10 एकड़ जमीन मेडिकल कॉलेज को निर्माणार्थ दी, जिस पर आज भव्य मेडिकल कॉलेज एवं अस्पताल चल रहा है। यह सब कार्य मास्टर जी के दूरदर्शिता और महाराजा अग्रसेन तथा उनकी नगरी अग्रोहा के प्रति समर्पित भावना का प्रतीक है। "पेड़ न खाये अपना फल, नदी न पिये अपना जल" इसी भावना से प्रेरित अग्रवाल समाज के इस महान् सपूत ने जनहित भावना से धर्मशाला, मन्दिर, आश्रम और कॉलेज निर्माण के लिए समाज को प्रेरित किया।

सन् 1968 में "अग्रोहा तीर्थ" मासिक पत्रिका का प्रकाशन मास्टर जी ने सामाजिक संगठन, कुरीति निवारण एवं पारस्परिक सहयोग के उद्देश्य को लेकर किया। जो जन्मभूमि अग्रोहा से अग्रवालों को परिचित करावे, उनमें अपनी मातृभूमि के पुनरुद्धार की भावना भरने तथा अग्रसेन, अग्रोहा, अग्रवाल का देश-विदेश में प्रचार करने की दृष्टि से अनुपम कार्य था। यह पत्रिका सफलतापूर्वक अग्रोहा निर्माण के पावन यज्ञ में अपनी आहूति देती रही है।

आपके दिल में हर समय अग्रवाल समाज के लिए कुछ न कुछ

माध्यम से हजारों बच्चों को उच्च शिक्षा में सहायता दी तथा विधवा सहायता के लिए सिलाई मशीनें दिलवाई और गरीबों की मदद करने में सहायता की। समाज सेवा के इन कार्यों को करने वाले महापुरुष, समाज चिन्तक एवं दूरदर्शी पुरुष को समाज कैसे भूल सकता है।

अग्रवाल भवन की स्थापना– सन् 1957 में उनके प्रयत्न और अथक लगन के बल पर ही दिल्ली के समृद्ध एवं अग्रवालों के गढ़ शक्ति नगर में अग्रवाल भवन की स्थापना की गई और यह भवन दिल्ली के अग्रवाल बन्धुओं के लिए प्रेरणा स्रोत बना। अब दिल्ली के अनेक क्षेत्रों में अग्रवाल भवन और धर्मशालाओं का निर्माण निरन्तर हो रहा है। भवन के प्रांगण में प्रतिवर्ष महाराज अग्रसेन जयन्ती का आयोजन कर अग्रवाल समाज को जागृत करना, समाज सेवार्थ वर्ष में दो बार नेत्र चिकित्सा शिविर के आयोजन करना मास्टरजी की ही देन है।

अग्रोहा निर्माण–अग्रवालों की जन्मभूमि अग्रोहा को पुनः बसाने के लिये तथा अग्रवालों को उनका प्राचीन गौरव स्मरण कराने के लिए उन्होंने भरसक प्रयत्न किये। इस हेतु आपने देशभर में घूम-घूम कर अग्रवालों को प्रेरित किया और उनकी सहायता से 300 बीघा (3 लाख वर्ग गज) भूमि अग्रोहा की थेह के निकट खरीद कर बहुत बड़ा कार्य किया। सन् 1965 में मास्टर जी ने राजधानी के प्रसिद्ध समाजसेवी एवं पूर्व महानगर पार्षद व तत्कालीन बड़ी पंचायत वैश्य बीसे अग्रवाल के सचिव श्री प्रेमचन्द गुप्ता के साथ हरियाणा प्रान्त के सभी जिलों का दौरा किया और तत्कालीन संयुक्त पंजाब के मुख्यमंत्री कारमेड रामकिशन एवं महामण्डलेश्वर स्वामी गणेशानन्द जी महाराज (जीन्द) को अग्रोहा में आमन्त्रित कर एक सम्मेलन आयोजित किया। उस समय पंजाब व हरियाणा के पुर्नगठन का संक्रमण काल था। उस समय उनके मस्तिष्क में 'श्री अग्रसेन इंजीनियरिंग टेक्नीकल कॉलेज' की स्थापना की योजना थी। बाद में अखिल भारतीय अग्रवाल सम्मेलन एवं अग्रोहा विकास ट्रस्ट का गठन हो जाने पर उसी में से 23 एकड़ भूमि महाराज अग्रसेन के मन्दिर

निर्माण एवं अग्रोहा को तीर्थ स्थल बनाने हेतु दी गई, जिस पर आज भव्य मन्दिर का निर्माण हो रहा है, जो एक विराट तीर्थ स्थल एवं पांचवें धाम का स्थान ग्रहण कर चुका है। यहाँ प्रतिवर्ष शरद पूर्णिमा के अवसर पर महाकुम्भ का आयोजन किया जाता है। अग्रोहा धाम का यह स्थल अग्रवाल समाज के लिये प्रकाश स्तंभ बन कर रहेगा। जहाँ आज विशाल महाराजा अग्रसेन, कुलदेवी महालक्ष्मी, विद्यादायनी सरस्वती आदि के मंदिर, अप्पू घर, शक्ति सरोवर, हनुमान जी की 90 फुट ऊँची प्रतिमा, माँ वैष्णो देवी के भव्य मंदिर तथा अतिथि गृह, धर्मशाला आदि निर्मित हैं।

मेडिकल कालेज– स्वर्गीय मास्टर जी का स्वप्न था कि अग्रोहा में "महाराजा अग्रसेन इंजीनियरिंग टेक्नीकल कॉलेज" की स्थापना की जाये। लेकिन उसके स्थान पर मेडिकल कॉलेज की आयोजना बनी और उसके लिए उसी भूमि में से 10 एकड़ जमीन मेडिकल कॉलेज को निर्माणार्थ दी, जिस पर आज भव्य मेडिकल कॉलेज एवं अस्पताल चल रहा है। यह सब कार्य मास्टर जी के दूरदर्शिता और महाराजा अग्रसेन तथा उनकी नगरी अग्रोहा के प्रति समर्पित भावना का प्रतीक है। "पेड़ न खाये अपना फल, नदी न पिये अपना जल" इसी भावना से प्रेरित अग्रवाल समाज के इस महान् सपूत ने जनहित भावना से धर्मशाला, मन्दिर, आश्रम और कॉलेज निर्माण के लिए समाज को प्रेरित किया।

सन् 1968 में "अग्रोहा तीर्थ" मासिक पत्रिका का प्रकाशन मास्टर जी ने सामाजिक संगठन, कुरीति निवारण एवं पारस्परिक सहयोग के उद्देश्य को लेकर किया। जो जन्मभूमि अग्रोहा से अग्रवालों को परिचित करावे, उनमें अपनी मातृभूमि के पुनरुद्धार की भावना भरने तथा अग्रसेन, अग्रोहा, अग्रवाल का देश-विदेश में प्रचार करने की दृष्टि से अनुपम कार्य था। यह पत्रिका सफलतापूर्वक अग्रोहा निर्माण के पावन यज्ञ में अपनी आहूति देती रही है।

आपके दिल में हर समय अग्रवाल समाज के लिए कुछ न कुछ

करने की इच्छा कुलबुलाती रहती थी। 1977 में आपने हरिद्वार में महाराजा अग्रसेन आश्रम निर्माण कराने का संकल्प लिया और 300 वर्गगज भूमि क्रय कर एक विशाल अग्रसेन भवन का निर्माण कराया, जो आधुनिक सुख-सुविधाओं से युक्त हरिद्वार के मुख्य स्थल भारत माता मंदिर मार्ग पर स्थित है।

आपने अग्रवालों को संगठित करने हेतु कुंभ के मेलों पर भी विशाल सम्मेलनों का आयोजन किया।

मास्टर जी की समाजसेवा से प्रभावित अनेक संस्थाओं द्वारा उनको समय-समय पर सम्मानित किया गया। अ.भा. अग्रवाल सम्मेलन ने अपने वाराणसी अधिवेशन में 23 जनवरी 83 को अग्रोहा निर्माण में किये गये महत्त्वपूर्ण कार्यों के उपलक्ष्य में उन्हें ताम्रपत्र एवं शाल भेंट कर सम्मानित किया। मास्टर जी के अस्वस्थ होने के कारण वाराणसी में उनकी ओर से उनके पुत्र श्री चन्द्रमोहन गुप्ता ने भेंट व सम्मान ग्रहण किया। इसी प्रकार दक्षिण दिल्ली अग्रवाल समाज तथा देश की अन्य अग्रवाल संस्थाओं की ओर से मास्टर जी को सम्मान मिलता रहा है।

स्व. मास्टर जी द्वारा अग्रवाल जाति के लिये ऐसे उल्लेखनीय कार्य प्रस्थापित हुए हैं, जो चिरकाल तक उनके कीर्ति स्तम्भ माने जाते रहेंगे।

अग्रवाल महासभा का 20 वाँ अधिवेशन सन् 1968 में दिल्ली में सुप्रसिद्ध उद्योगपति श्री जे.आर. जिंदल की अध्यक्षता में हुआ। मास्टर लक्ष्मीनारायण जी इसके महामंत्री निर्वाचित हुए। इसका 21 वाँ अधिवेशन भी 1972 में दिल्ली में ही सम्पन्न हुआ।

नगर निगम द्वारा दिल्ली में आपके घर तक जाने वाली सड़क का नाम "मास्टर लक्ष्मीनारायण अग्रवाल मार्ग" किया गया है।

पूरे 60 वर्ष तक वैश्य समाज की सेवा करते-करते मास्टरजी 3 दिसम्बर 1983 को गोलोकवासी हो गये। उनकी समाज सेवाओं को कभी भी विस्मृत नहीं किया जा सकता। वे ऐसे ठोस कार्यों को मूर्तरूप दे गये हैं, जो चिरस्मरणीय रहेंगे।

संक्षेप में आपने अपने जीवन में अग्रोहा निर्माण एवं समाज सेवा के ऐसे आदर्श प्रस्तुत किये हैं जिससे आने वाली शताब्दियों में अग्रवाल समाज को नई प्रेरणा मिलती रहेगी। आपकी स्मृति में 10 जून 1999 से जून 2000 तक आपका जन्म शताब्दी समारोह भव्यतापूर्वक मनाया गया। ऐसी महान् कर्मठ अग्रविभूति को मरणोपरान्त शताब्दी वर्ष में सेठ द्वारकाप्रसाद सर्राफ राष्ट्रीय पुरस्कार समिति, अग्रोहा विकास ट्रस्ट, अग्रोहा द्वारा पुरस्कार स्वरूप मास्टर लक्ष्मीनारायण जी के पुत्र श्री चन्द्रमोहन गुप्ता को 51,000 रु. की राशि के अतिरिक्त शाल, श्रीफल स्मृति चिन्ह आदि भेंटकर समारोह में सम्मानित किया गया।

अग्रगौरव मास्टर जी को शत्-शत् नमन्।

पापी से नहीं, पाप से घृणा करो

एक समय ईसा मसीह अपने कुछ शिष्यों के साथ एक व्यक्ति अल्फियरता के घर भोजन करने गए। उस व्यक्ति ने अपने ही जैसे अपने मित्रों को भी उस भोज में आमंत्रित किया। वे लोग बदनाम और बुरे थे।

जब ईसा मसीह के अन्य शिष्यों को इस भोजन का समाचार मिला तो वह नाराज होकर बिगडने लगे। ईसा मसीह को कहा आपको बुरे व्यक्ति अल्फियरता के घर में भोजन करने नहीं जाना था।

ईसा मसीह ने विरोध करने वालों को बुलाया और कहा– 'आप ही बताईये कि चिकित्सक बीमारों के घर जाता है या स्वस्थ लोगों के? सभी ने एक स्वर में उत्तर दिया बीमारों के। ईसा मसीह ने समझाया कि फिर क्या कारण है कि बुरे स्वभाव या विचारों के लोगों के घर नहीं जाना चाहिए। संतो, मनीषियों का उपदेश है कि– पापी या बुरे से नहीं, पाप या बुराई से घृणा करो। पाप रूपी बीमारी का परिष्कार करने के लिए हमें पापी के निकट आना ही होगा। उसके प्रति संवेदनशील होकर ही उसे उसकी बुराई का अहसास कराया जा सकता है और सहज में उसके चित्त को निर्विकार बनाया जा सकता है। उसकी उपेक्षा, तिरस्कार, घृणा या बहिष्कार द्वारा नहीं।

स्वतंत्रता सेनानी-इतिहासकार

अग्र-गौरव – श्री रघुकुल तिलक

श्री रघुकुल तिलक उन स्वतंत्रता सेनानियों में थे जिन्होंने अग्रवाल समाज को गौरव प्रदान किया। 7 जनवरी 1900 को मेरठ में एक सद्भ्रान्त अग्रवाल परिवार में आपका जन्म हुआ। आपकी शिक्षा इलाहाबाद तथा कलकत्ता में हुई। इतिहास उनका मुख्य विषय रहा। 1924 में आपने खुर्जा के स्नातकोत्तर कॉलेज में शिक्षक के रूप में कार्य आरम्भ करके कुछ समय बाद वह उत्तर प्रदेश (तब संयुक्त प्रान्त) की विधान सभा के पुस्तकालयाध्यक्ष के पद पर 1932 तक कार्य करते रहे।

आप इसी कार्यकाल में राजनीति की ओर झुके तथा राष्ट्रीय आन्दोलनों के सूत्रधारी राजनेताओं से उनकी जान-पहचान बनी। असहयोग आन्दोलन में भाग लेने के कारण 1932 में उन्हें प्रथम बार जेल जाना पड़ा। तब उन्होंने 6 माह की कारावास-अवधि लखनऊ तथा फैजाबाद की जेलों में बितानी पड़ी। 1933 में सत्यागृह आन्दोलन में पुनः 6 माह का कारावास तथा पुनः एक वर्ष का कारावास भुगतना पड़ा। भारत छोड़ो आन्दोलन 1942 में 2 वर्ष पर्यन्त मेरठ, लखनऊ तथा बरेली की जेलों में रहे। 1939 में वह विधान सभा के सदस्य चुने गये। दोबारा 1946 में विधायक बने तथा इस बार उन्हें संसदीय सचिव बनाया गया।

1958 में राजस्थान लोक सेवा आयोग के चेयरमैन रहे फिर राजस्थान रेलवे बोर्ड के अध्यक्ष। उत्तर प्रदेश में शिक्षा मंत्री और 1971 से 1974 तक काशी विद्यापीठ के उपकुलपति पदों को सुशोभित किया।

1977 में राजस्थान के राज्यपाल रहे। आपने अपनी विद्वता से लेखन और पत्रकारिता में असीम योग्यता प्राप्त की। आपने "आधुनिक इंग्लैण्ड का इतिहास" व "भारतीय प्रजातंत्र तथा लोकतंत्र" आदि अनेक ग्रंथों की रचना की। जो शिक्षा के क्षेत्र में विश्वविद्यालयों में पढ़ाई जा रही है। आप एक कुशल शिक्षाविद्, गाँधीवादी सिद्धान्तों के प्रबल पक्षधर तथा स्वातंत्र्य युद्ध के अमर सेनानी व कुशल राजनीतिज्ञ थे।

आपका निधन दि. 26.12.1989 को कार दुर्घटना में हो गया। इस देश के सपूत पर अग्रवाल समाज को गर्व है।

—*—

* शांति की खोज *

शांति की खोज मनुष्य के जीवन में अनादिकाल से चली आ रही है। कर्मकांड, तपस्या, अध्यात्म और अनेकानेक अनुष्ठान लोग मन की शांति के लिए करते रहे हैं। अतः कहा जा सकता है कि यह मनुष्य की सनातन इच्छा तो है लेकिन इसे पाने का सरलतम उपाय बहुत कम लोग ही करते हैं। स्वामी विवेकानंद जहां भी जाते थे वहीं पर अनेक लोग अपनी-अपनी शंकाओं के समाधान के लिए उनके पास आते रहते थे। ऐसे ही एक प्रवास में एक युवक उनके पास आया और बोला, 'मैं बहुत-से ज्ञानियों, महात्माओं के पास गया, अनेक धर्माचार्यों से भी मिला, पर मुझे कहीं भी शांति नहीं मिली। क्या आप मुझे शांति का मार्ग दिखा सकते हैं?' स्वामी जी ने उसी वक्त से जानना चाहा कि उसने शांति प्राप्त करने के लिए स्वयं क्या प्रयास किए। इस पर युवक ने बताया कि मिलने वाले महापुरुषों से जो भी उपाय मिलते गए मैं उनका अनुसरण करता गया। पूजा, ध्यान इत्यादि सभी प्रकार के प्रयोजन करके देख लिए, लेकिन मन की शांति नहीं पा सका, इसलिए आपके पास आया हूं। स्वामीजी ने स्नेह से उसके सर पर हाथ रखकर कहा, 'अपने मन की कोठरी का द्वार खोलो और अपने आसपास के अभावग्रस्त, दुखी व भूखे लोगों को ढूंढो, यथाशक्ति उनकी सहायता करो, तुम्हें शांति अवश्य प्राप्त होगी।' युवक ने शंका की कि अगर किसी रोगी की सेवा करते-करते मैं स्वयं बीमार पड़ गया तो? विवेकानंद ने उत्तर दिया, 'तुम्हारी इस आशंका से प्रतीत होता है कि तुम हर अच्छे कार्य में बुराई खोजते हो, इसी कारण तुम्हें शांति नहीं मिलती।' **"शुभ कार्य में कभी कमी मत खोजो। यही शांति का मार्ग है।"**

महान् स्वाधीनता सेनानी एवं पत्रकार

लाला देशबन्धु गुप्ता

महान स्वाधीनता सेनानी, सुविख्यात राजनीतिज्ञ एवं पत्रकार तथा आर्य समाज के पुनर्जागरण आन्दोलन के प्रखर प्रहरी लाला देशबन्धु गुप्ता का जन्म दि. 14 जून 1901 ई. को हरियाणा प्रदेश के ऐतिहासिक नगर पानीपत में एक साधारण अग्रवाल गर्ग गौत्र परिवार में हुआ था। इनका मूल नाम रतिराम था। उनके पिता लाला शादीराम ईमानदार और सत्यनिष्ठ अर्जीनवीस थे। आप वैदिक सिद्धान्तों के उद्‌भट विद्वान थे। कई वर्षों तक आप आर्य समाज पानीपत के प्रधान रहे। इनके लेख "आर्य मुसाफिर" "तेज" "इन्द्र" आदि पत्र-पत्रिकाओं में छपते रहे। जिनमें "इल्में हिन्दसा का मम्बा वेद है" कृति आर्य जगत की ख्याति प्राप्त रचना है।

पिताजी के सद्‌गुण-सत्यनिष्ठा, वाणी में ओजस्विता तथा पत्रकारिता देशबन्धु को विरासत में मिले। स्थानीय मदरसे में उर्दू-फारसी पढ़ना शुरू किया और माध्यमिक परीक्षा पास की। 1916 में मैट्रिक प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण की। भारतीय सिविल सर्विस की परीक्षा हेतु सेंट स्टीफन कॉलेज, दिल्ली में प्रवेश लिया। इस कॉलेज के प्राचार्य श्री एस.के. रुद्र गाँधी जी के परम मित्र थे, जो अपने छात्रों को गाँधी दर्शन से अवगत कराते रहते थे। राष्ट्रीय एवं सामाजिक गातिविधियों में देशबन्धु भाग लेने लगे।

इन्हीं दिनों जन-प्रिय नेता लोकमान्य तिलक दिल्ली आये। देशबन्धु का उनसे साक्षात्कार हुआ। दिल्ली में 30 मार्च 1919 को "रोलेट एक्ट"

के प्रतिरोध में आन्दोलन हुआ। दिल्ली में गोलियों से चौदह व्यक्ति शहीद हो गये। घायलों की सेवा में देशबन्धु अग्रणीय थे। इन शहीदों का स्मारक बनाने के लिए धन-संग्रह के लिए देशबन्धु ने काफी प्रयास किया।

सन् 1920 में गाँधी जी द्वारा घोषित असहयोग आन्दोलन के अवसर पर 22 अक्टूबर 1920 को भिवानी में राजनीतिक सम्मेलन में महात्मा गाँधी, श्रीमती कस्तूरबा आदि राष्ट्रीय नेता आये। देशबन्धु जी ने गाँधी जी के प्रथम दर्शन किये। उनकी सादगी, सौम्यता और संतों जैसा व्यक्तित्व देखकर इतने प्रभावित हुए कि उसी समय गाँधी जी के पद-चिन्हों पर चलने का संकल्प कर लिया और विदेशी का बहिष्कार कर भारत में उत्पन्न रुई, ऊन व हाथ से बने वस्त्र पहनने की प्रतिज्ञा कर ली। भिवानी से लौटकर सीधे कॉलेज आये और अध्ययन से मुक्ति ले ली।

कॉलेज छोड़कर देशबन्धु लोकमान्य तिलक की स्मृति में लाला लाजपतराय द्वारा स्थापित "तिलक स्कूल ऑफ पालिटिक्स" में प्रवेश ले लिया। लाला लाजपतराय स्वयं प्रशिक्षण देते थे। 20 वर्षीय देशबन्धु में उन्होंने कर्त्तव्य-परायणता तथा कर्मनिष्ठा, लेखनी और वाणी में ओजस्विता देखी। लाला जी ने अपने पत्र "वन्दे मातरम्" का लेखन व सम्पादन कार्य सौंप दिया।

धार्मिक सद्भावना सुदृढ़ करने के उद्देश्य से दिल्ली प्रदेश में हिन्दू-मुस्लिम महिलाओं की एकता-सभा का आयोजन हुआ, जिसमें मुख्य वक्ता देशबन्धु गुप्ता थे। लाला लाजपतराय ने इन्हें करनाल जिले में भेजा। जहाँ आपने पानीपत, करनाल, कैथल, कुरुक्षेत्र, लाड़वा और शाहबाद आदि स्थानों की यात्रायें कीं। सभायें की, व्याख्यान दिये। देशबन्धु जी ने महात्मा गाँधी की नीतियों, चरखा तथा खादी की उपयोगिता, मद्य निषेध, दलितोद्धार आदि पर व्याख्यान दिये। जनता ने इसे स्वीकार किया। काफी जागृति आयी।

1924 में देशबन्धु ने दलितोद्धार के लिए एक अनूठी योजना बनाई। "अखिल भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा" का गठन किया गया और अनेकों सहयोगियों के साथ दलितों के मोहल्ले में उनके साथ बैठकर

भोजन-जलपान किया। इस तरह के सम्पर्क अभियानों से कांग्रेस का खूब प्रचार हुआ। शुद्धि सभा के 27 सम्मेलन हुए और 1,83,000 विधर्मियों को शुद्ध किया गया।

इन्हीं दिनों गाँधी जी का "सविनय अवज्ञा" आन्दोलन आरम्भ हो चुका था। दिल्ली में "प्रिंस आफ वेल्स" की भारत यात्रा के बहिष्कार के लिए हड़ताल रखी गई थी। हड़ताल में दंगे भड़क उठे। पुलिस ने खुलकर गोलियाँ चलाईं, हजारों घायल हुए और सैकड़ों मारे गये। लाला लाजपतराय आदि नेताओं सहित चालीस हजार पुरुष-महिलाओं ने गिरफ्तारी दी। अंग्रेजी सरकार ने दलितों को फुसलाने का प्रयत्न किया। स्वामी श्रद्धानन्द आदि सहित देशबन्धु जी ने आर्य समाज और हिन्दू-सभा को सक्रिय कर दलितों को समझाया– "महात्मा गाँधी अस्पृश्यता को जड़ से उखाड़ने के लिए कृतसंकल्प है और यह तभी सम्भव है कि दलितों को साथ रखकर स्वराज प्राप्ति के लिए प्रयत्न किये जायें।" फलतः असहयोग आन्दोलन के तहत् प्रिंस की यात्रा का विरोध रहा। प्रिंस आये, शहर में हड़ताल थी। उनके जुलूस को काले झण्डे दिखाये गये। इस सारे घटनाक्रम के सूत्रधार देशबन्धु जी की राजनीतिक कौशल की चर्चा हुई और इससे आल्हादित स्वामी श्रद्धानन्द जी ने उन्हें रतिराम नाम के स्थान पर "देशबन्धु" के नाम से अलंकृत किया। प्रदेश कांग्रेस के प्रचार-मंत्री नियुक्त हुए। सरकार उक्त घटना से क्रोधित थी। दि. 5.1.1922 को उन्हें गिरफ्तार कर इन पर मुकदमा चलाया और एक वर्ष की कैद सुनाई गई। इन्हें पंजाब की मियांवाली जेल में रखा गया।

जेल में अनेक क्रांतिकारी व सत्याग्रही मिले। इन्हीं दिनों स्वामी श्रद्धानन्द को भी इसी जेल में बंदी बनाया गया। गुरु-चेला एक साथ हो गये। उन्होंने समय का लाभ उठाकर "कल्याण पथ का पथिक" आत्मकथा की संरचना की। जेल से मुक्त होकर उन्होंने दिल्ली को स्थाई निवास कर लिया।

1923 में स्वामी श्रद्धानन्द जी ने आर्य समाज तथा राष्ट्रीय आन्दोलन के प्रचार के उद्देश्य से दैनिक उर्दू पत्र "तेज" शुरू किया। इसके

प्रबंध-सम्पादक श्री देशबन्धु जी को बनाया जो जीवन भर रहे। देशबन्धु जी ने सत्य और स्पष्टवादिता की नीति से उग्र-राष्ट्रीयता से परिपूर्ण लेख प्रकाशित किये। सरकार ने इन्हें प्रेस एक्ट के तहत् गिरफ्तार कर पुनः एक वर्ष के लिए दिल्ली जेल में बंद कर दिया। 23 दिसम्बर 1926 को स्वामी श्रद्धानन्दजी के बलिदान के बाद तो "तेज" के संचालन का पूरा दायित्व देशब्रन्धु जी पर आ गया। देश में व्याप्त पाखंड, अनाचार, छुआछूत, बाल-विवाह, दहेज आदि कुरीतियों के विरुद्ध खुलकर लिखा। लाहौर छावनी में यांत्रिक बूचड़खाने की योजना रद्द कराने के लिए खूब लिखा।

जुलाई 1924 में पुनः दिल्ली में साम्प्रदायिक दंगे हुए। दंगों की आग शान्त करने के लिए देशबन्धु जी ने प्रयास किये। गाँधीजी के 21 दिन के उपवास पर बैठने पर ही दंगे शान्त हुए। साम्प्रदायिक दंगे हरियाणा में भी हुए। लाला जी ने शान्त करवाये।

असहयोग आन्दोलन के दौरान देशबन्धु जी ने अनुभव किया कि मुसलमान अराष्ट्रीय गतिविधियों में लिप्त स्वदेशी का पालन नहीं करते, जिनसे वह हिन्दू संगठन की अनिवार्यता महसूस करने लगे और हिन्दू महासभा में प्रवेश लिया। यह सभा कांग्रेस के साथ मिलकर राष्ट्रीय संघर्ष में पूरा सहयोग करती रही। गोहत्या पर प्रतिबन्ध के लिए अहिंसात्मक आन्दोलन जारी रखा। मई 1924 में हिन्दू सभा के प्रयाग अधिवेशन में देशबन्धु जी ने शुद्धि आन्दोलन, हिन्दू समाज में व्याप्त जातिगत भेदभाव तथा दहेज प्रथा के निवारण पर प्रभावी व्याख्यान दिये। जून 1925 में दिल्ली में हिन्दू महासभा का अधिवेशन हुआ। इन्होंने पूरी सक्रियता निभाई।

1928 में "साइमन कमीशन" के विरोध में पूरा देश हड़ताल पर था। इसी के विरोध स्वरूप लाला लाजपतराय का बलिदान लाहौर में हुआ। दिल्ली में जबर्दस्त विरोध प्रदर्शन करने के लिए जुलूस निकला। नई दिल्ली स्टेशन पर लाला देशबन्धु की अगुवाई में अनेक प्रभावशाली नेताओं सहित साठ हजार जनता शामिल थी। संगीनों के साये में ही कमीशन के सदस्यों को पुलिस राज भवन ले जा पाई।

1930 में महात्मा गाँधी ने ऐतिहासिक "दांडीयात्रा" नमक आन्दोलन जिसे "सविनय अवज्ञा आन्दोलन" की संज्ञा भी दी गई थी। इस 241 मील की लम्बी पद यात्रा को चौबीस दिन में तय कर नमक बनाया और सरकारी कानून की धज्जियाँ उड़ा दीं। दिल्ली में भी देशबन्धु जी ने नमक मोर्चा संभाला और नमक बनाया। चुने हुए पचास व्यक्ति गिरफ्तार कर लिए गए। लाला जी को 6 माह की सजा हो गई।

1931 में "गाँधी-इरविन एक्ट" के अन्तर्गत "गोलमेज परिषद के सम्मेलन" लंदन में कोई समझौता नहीं हुआ। नये वायसराय लार्ड विलिंगटन ने फौजी कानून लागू कर दमनचक्र चला दिया। गाँधीजी ने 3.1.1932 से "अवज्ञा आन्दोलन" पुनः आरम्भ कर दिया। गाँधीजी जेल में बंद कर दिये गये। आन्दोलन में तीस हजार से अधिक लोग जेलों में चले गये।

दिल्ली में भी पुरुषों के अतिरिक्त राष्ट्रभक्त महिलाओं ने भी आन्दोलन में बढ़ चढ़कर भाग लिया। इनमें लाला देशबन्धु गुप्ता की धर्मपत्नी श्रीमती सोनादेवी ने 3 फरवरी 1932 को सविनय अवज्ञा आन्दोलन के जत्थे का नेतृत्व किया। सभी राष्ट्र सेविकाओं को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया। श्रीमती सोना देवी के हाथ में तिरंगा और गोद में डेढ़ वर्षीय बालिका निर्मला थी। इन्हें तीन महीने की सजा हुई।

24 अप्रेल 1932 को सविनय अवज्ञा आन्दोलन के तहत लाला देशबन्धु 38 सत्याग्रहियों के साथ जुलूस निकाल रहे थे। पुलिस ने गिरफ्तार कर मुलतान जेल में एक वर्ष के लिए बंद कर दिया।

9 दिसम्बर 1932 को मुलतान जेल से लाला जी ने पृथक हरियाणा प्रदेश की माँग से सम्बद्ध अपना वक्तव्य भेजा। पंजाब-हरियाणा का विलय उचित नहीं है। हरियाणा की भाषा, संस्कृति, इतिहास, परम्परा, जातिभेद, और जीवन पद्धति पंजाब से कतई भिन्न है। ब्रिटिश सरकार ने इस माँग पर कोई ध्यान नहीं दिया। 1947 में देश के बंटवारे पर भी लाला जी ने पंजाब से पृथक हरियाणा प्रदेश की माँग रखी। लाला जी के नवम्बर 51 में निधन हो जाने के बाद भी मांग चलती रही और 1

नवम्बर, 1966 को लाला जी का स्वप्न साकार हुआ और हरियाणा अलग प्रदेश बना।

1935 में ब्रिटिश सरकार ने प्रान्तों में स्वायत शासन की स्थापना के लिए अधिनियम बनाया। पंजाब के हरियाणा क्षेत्र में कांग्रेस के लाला देशबन्धु गुप्ता सदस्य चुने गये और विधायक बनाये गये। कांग्रेस संगठन को बढ़ाने, मजबूत करने के प्रयास होने लगे। विधायक के दायित्व भी लगन से निभाये। विधान सभा में उन्होंने समय-समय पर कई महत्त्वपूर्ण विषय प्रस्तुत किये। मेंहदीपुर मेले में लूट, पानीपत में जगन्नाथ यात्रा पर रोक और होली के मौके पर गोलाबारी, लाहौर छावनी में सरकारी बूचड़खाने की योजना आदि विषय प्रस्तुत किये। राजबन्दियों को मुक्त करने के प्रस्ताव रखे गये इत्यादि।

31 मई 1934 को क्वेटा में प्रलयंकारी भूकम्प आया, जिसमें 15,000 नागरिक मारे गये और लाखों घायल हो गये। लाला जी ने युवकों की सहायता से राहत सामग्री पहुँचाने और मृतकों की अन्त्येष्ठी करने का कार्य किया। विस्थापितों को दिल्ली में शरण दिलाई। उन्हें घर बसाने व गृहस्थी का सामान दिलाने में मदद की।

लालाजी आर्य हिन्दू-वैदिक धर्म के शाश्वत सिद्धान्तों को मानते थे। पुनर्जन्म के सिद्धान्त में भी उनकी दृढ़ आस्था थी। देशबन्धु जी ने "तेज" के 1936 के अंक में शान्ती देवी की पुनर्जन्म की चमत्कारिक घटना को प्रकाशित कर सिद्ध कर दिया था।

1937 में लाहौर छावनी में सरकार की ओर से बूचड़खाना लगाने की योजना का घोर विरोध किया। 19 अगस्त को दिल्ली के गाँधी मैदान में देशभर के गो-भक्तों का विशाल सम्मेलन लाला जी ने आयोजित कराया। लाला देशबन्धु ने अध्यक्षीय भाषण दिया और सरकार को योजना वापिस लेनी पड़ी।

1939 में हैदराबाद के निजाम द्वारा हिन्दुओं पर सामाजिक-धार्मिक स्वतंत्रता पर तरह-तरह के प्रतिबन्ध लगाये गये थे। लाला जी देशबन्धु

जी ने घोर विरोध किया। वे हैदराबाद गये और गाँधीजी के सहयोग से प्रतिबन्ध हटाने में कामयाब हुये।

द्वितीय विश्व युद्ध के समय गाँधीजी ने "व्यक्तिगत सत्याग्रह" आरम्भ किया। लाहौर में देशबन्धु जी को भी आव्हान किया। भा.द.वि. की धारा 34 तथा 38 के तहत बंदी बना लिये गये और एक वर्ष की कैद की सजा सुना दी। गुजरात जेल में बंद रहे।

1942 में "अंग्रेजो, भारत छोड़ो" प्रस्ताव पारित कर आन्दोलन चलाया। 7 अगस्त को मुम्बई में अखिल भारतीय कांग्रेस समिति की बैठक बुलाई। लाला देशबन्धु वापिस लौट आये और आन्दोलन के प्रसार-प्रचार के लिए भूमिगत हो गये। दिल्ली में आन्दोलन तीव्र हो गया। इस "अगस्त क्रांति" के तहत् मजदूर, छात्र, किसान, व्यापारी और छोटे कर्मचारी "करो या मरो" के इरादे से अंग्रेज राज से टक्कर लेने में जुट गए। दिल्ली में भी डाकखाने फूंक दिये गये, रेल की पटरियाँ उखाड़ दी गईं। पुलिस ने गोली चलाई, सैंकड़ों लोग शहीद हो गये। इस सब का दोषी लाला देशबन्धु आदि को ठहराया। इनके पकड़े न जाने पर इन्हें फरार घोषित कर दिया गया। लाला जी दो वर्ष तक भूमिगत रहे और आन्दोलन का संचालन करते रहे। लाला जी को प्रताड़ित करने के लिए इनके पन्द्रह वर्षीय बड़े पुत्र विश्वबन्धु को गिरफ्तार किया गया।

लाला जी कुछ समय बाद पकड़े गये और दो साल की सजा जेलों में बिताई। इसी दौरान उन्हें पीलिया हो गया और रिहा कर दिये गये।

लाला जी प्रेस की स्वतंत्रता के प्रबल प्रवक्ता थे। इन्होंने "अखिल भारतीय समाचार-पत्र सम्पादक संघ" की स्थापना की। "तेज" की 7.11.1948 को रजत जयन्ती मनाई गई।

अक्टूबर 1949 में लाला जी ने अंग्रेजी दैनिक पत्र "इण्डियन न्यूज क्रांनिकल" का संचालन भी किया। नवम्बर 1951 में लाला जी के निधन के बाद इनके अनुज धर्मपाल गुप्ता, सुपुत्र विश्वबन्धु गुप्ता तथा रमेशबन्धु गुप्ता ने समस्त प्रेस-प्रकाशन कार्य संभाला।

भारत की स्वतंत्रता का स्वरूप एक गहन समस्या थी। सोची समझी

नीति के अन्तर्गत ब्रिटिश सरकार ने 3 जून 1947 को भारत विभाजन की घोषणा कर दी और देश दो राष्ट्रों भारत और पाकिस्तान में बंटना तय हो गया।

14 जुलाई 1947 को संसद भवन दिल्ली में भारतीय संविधान सभा का अधिवेशन हुआ इसमें राज्यों की स्वायत्तता का मुद्दा भी सामने आया। दिल्ली की स्वायत्तता के पक्षधर लाला जी देशबन्धु गुप्ता थे। दिल्ली राज्य को "केन्द्र शासित" ही रखा गया। लाला जी ने विश्वभर के स्वतंत्र राज्यों के संविधान प्राप्त किये और उनका अध्ययन किया तथा तथ्यपूर्ण तर्कों से सदन में और सदन से बाहर दिल्ली की स्वायत्तता के लिए आन्दोलन छेड़ दिया। उनके महत्त्वपूर्ण प्रयत्नों से दिल्ली को स्वायत्तता मिली। आप दिल्ली क्षेत्र से संसद में सदस्य के रूप में लिये गये थे।

लाला जी स्वतंत्रता संग्राम के जुझारू सेनानी थे। सन् 21 से 42 तक सात बार जेल गये। जवानी का सारा समय लोह-शिकंजों में ही बिता दिया। पानीपत लाला जी की जन्मभूमि, लेकिन दिल्ली थी कर्मभूमि। लाला जी का व्यक्तित्व प्रभावशाली था। सरल सीधा स्वभाव, वेश-भूषा में सादगी, पूर्ण निरामिष थे। ये एक ऐसे महापुरुष थे जिनका जन्म ही दूसरों के उपकार हेतु हुआ। दीन-दुखियों की सेवा, शिक्षण संस्थाओं तथा सामाजिक संगठनों को पूर्ण सहयोग व मार्गदर्शन देते रहे।

लाला देशबन्धु जी को अखिल भारतीय पत्रकार सम्मेलन के वार्षिक अधिवेशन में कलकत्ता जाना था। दि. 21 नवम्बर 1951 को (50 वर्ष की आयु में ही) विमान दुर्घटना में उनकी मृत्यु हो गई। उन्हें दिल्ली लाया गया और राजकीय सम्मान से उन्हें अंतिम विदाई दी गई। लोग तथा नेता कह रहे थे "दिल्ली अनाथ हो गई।"

श्री देशबन्धु गुप्ता स्वाधीनता संग्राम की एक महान् विभूति के साथ-साथ एक महान् समाज सेवी और कर्मयोगी थे। अग्रवाल समाज को ऐसी विभूति पर हमेशा गर्व रहेगा।

श्री गुप्ता जी को शत् शत् नमन्।

—*—

अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त विद्वान

डॉ. रघुवीर

इस परिवर्तनशील संसार में न जाने कितने प्राणी आते हैं और ओझल हो जाते हैं, किन्तु उनमें कुछ ऐसे भी होते हैं, जो इतिहास में अपने पदचिह्न अंकित कर जाते हैं। ऐसे ही थे डॉ. रघुवीर, जिन्हें पाकर माँ भारती धन्य हो गई। भारतीय संस्कृति और अस्मिता के अद्वितीय उपासक और उन्नायक डॉ. रघुवीर अद्वितीय मेधा के धनी थे।

आचार्य रघुवीर का जन्म 30 दिसम्बर, सन् 1902 को पश्चिमी पंजाब के रावलपिंडी नगर में एक प्रतिष्ठित अग्रवाल परिवार में हुआ था। आपके पिता श्री मुन्शी जी अग्रवाल निर्भीक तथा सदाचारी शिक्षक थे। प्राचीन धार्मिक ग्रंथों से आपको विशेष अनुराग था। डॉ. रघुवीर ने लाहौर में पंजाब विश्वविद्यालय से एम.ए. की परीक्षा उत्तीर्ण की। तत्पश्चात् आपने लंदन विश्वविद्यालय से पी.एच.डी तथा हालैंड के यूट्रेक्ट विश्वविद्यालय से डी. लिट् किया। वे अनेक भारतीय और यूरोपियन भाषाएँ जानते थे तथा अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त विद्वान, हिन्दी के अनन्य उपासक और राष्ट्रवादी भारतीय नेता थे। उन्होंने 1934 में भारतीय संस्कृति की अंतरराष्ट्रीय अकादमी "संस्कृति विहार" नामक संस्था स्थापित की और चीन, जापान, थाईदेश, मंगोलिया, जावा, बाली, कम्बोज आदि अनेक देशों का भ्रमण किया। अपनी इन यात्राओं से उन्होंने

अनेक दुर्लभ ग्रंथों तथा वस्तुओं का संकलन करने में सफलता प्राप्त की। एशिया में भारतीय संस्कृति के वे सर्वमान्य और प्रतिष्ठित विद्वान माने जाते हैं। इस विषय पर उन्होंने अनेक पुस्तकें लिखीं। इनमें चीनी भाषा की रामायण का अंग्रेजी अनुवाद तथा एक चीनी पुस्तक का अनुवाद, जिसमें भारतीय भौगोलिक परिभाषाओं का संकलन है, विशेष रूप से महत्त्वपूर्ण है। उन्होंने कई वेदों के भी सुसंपादित संस्करण निकाले। उन्होंने सब मिलाकर 88 ग्रन्थों की रचना की।

जब हिन्दी भारत की राष्ट्रभाषा घोषित हुई तो प्रशासनिक सेवा में शब्दों के हिन्दी पर्यायवाची शब्दों की आवश्यकता अनुभव हुई और इसी प्रकार ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में भी पर्यायवाची शब्दावली की नितान्त आवश्यकता अनुभव की गई तो डॉ. रघुवीर आगे आए और उन्होंने रात-दिन परिश्रम करके चार लाख शब्दों का एक शब्दकोष तैयार कर हिन्दी को राज्यभाषा के पद पर प्रतिष्ठित कराने का अनुकरणीय प्रयास किया। इस कोष को बनाकर उन्होंने हिन्दी की अद्वितीय सेवा की। इसी एक कृति से हिन्दी भाषा साहित्य के इतिहास में उनका नाम सदैव अमर रहेगा। उनका दृढ़ विश्वास था कि देश का वास्तविक कल्याण तभी होगा जब हिन्दी भारत की राज्य भाषा ही नहीं अपितु राष्ट्रभाषा भी हो जायेगी। जब ससंद में 1965 के बाद भी अंग्रेजी को राजभाषा के रूप में चलाते रहने का विधेयक आया तो उन्होंने डॉ. लोहिया के साथ मिलकर इस विधेयक का विरोध किया।

आप अपनी विदेश यात्राओं में वहाँ से अनेक ग्रन्थों, मूर्तियों और चित्रों का बहुत बड़ा संग्रह लाए, वहाँ बहुत सारे ऐसे ग्रन्थ प्राप्त किये जो भारत से सर्वथा लुप्त हो चुके थे। आपने तिब्बती लिपि के साथ देवनागरी लिपि में पुस्तकें छापने के लिए विशेष टाईप भी बनवाये। आपके द्वारा संचालित सरस्वती विहार का यह विशाल संग्रहालय आज भारत ही नहीं, प्रत्युत् विश्व के पुराविदों के लिए स्मरणीय तीर्थ बन गया है। 1956 में इसके भवन का शिलान्यास तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद के कर

कमलों से संपन्न हुआ। डॉ. रघुवीर के कार्यों की प्रशंसा करते हुए राष्ट्रपति जी ने कहा कि, "पूर्व की प्राचीन विचारधारा तथा ज्ञान-विज्ञान की खोज का कार्य कुछ और भी संस्थाएँ कर रही हैं, किन्तु दक्षिण-पूर्वी एशिया, सुदूर केन्द्रीय एशिया के विभिन्न स्थलों का जितना बिस्तृत अनुसंधान कार्य 'सरस्वती विहार' ने किया है, उतना अभी तक दूसरी संस्थाओं द्वारा नहीं हो सका है।"

डॉ. रघुवीर ने हिन्दी भाषा को सम्पूर्ण भारतवासियों की सर्वमान्य राष्ट्रभाषा बनाने का भी सार्थक प्रयास किया और इस हेतु जुलाई, 1962 में समस्त भारतीय भाषाओं के साहित्यकारों का एक सम्मेलन दिल्ली में आयोजित किया। इसमें दक्षिण की सभी भाषाओं के साहित्यकार सम्मिलित हुए और उन्होंने एक स्वर से अपना विचार प्रकट किया कि उनका राष्ट्रभाषा हिन्दी से कोई विरोध नहीं है और वे यह भी नहीं चाहते कि उनकी राष्ट्रभाषा और मातृभाषा का स्थान अंग्रेजी ले। डॉ. रघुवीर का दृढ़ मत था कि भारत में अंग्रेजी जानने वाले केवल 2 प्रतिशत हैं, 98 प्रतिशत लोग अंग्रेजी नहीं जानते। प्रजातंत्र में 98 प्रतिशत की बात चलनी चाहिए, न कि 2 प्रतिशत की।

डॉ. रघुवीर साहित्यिक क्षेत्र में ज्ञान पुंज थे। उनकी योग्यता से प्रभावित होकर स्व. पं. रविशंकर शुक्ल ने उनको मध्य प्रदेश की ओर से संविधान सभा में भिजवा दिया था। वे बाद में मध्य प्रदेश की ओर से राज्य सभा के सदस्य भी रहे किन्तु जब तिब्बत के विषय में प्रश्न आया और भारत सरकार ने इस पर चीन का आधिपत्य स्वीकार किया तो डॉ. रघुवीर ने प्राचीन पुस्तकों के भण्डार को तत्कालीन प्रधान मंत्री जवाहर लाल नेहरू के समक्ष रखकर सप्रमाण निवेदन किया कि सांस्कृतिक, भौगोलिक व धार्मिक दृष्टि से तिब्बत भारत का अंग है, चीन का इससे कोई लेना-देना नहीं है। परन्तु डॉ. रघुवीर की तर्कसंगत बात को जब अनसुनी कर दिया गया तो तत्काल इस राष्ट्रवादी पुरुष ने कांग्रेस के साथ-साथ राज्य सभा की सदस्यता से भी त्याग-पत्र दे दिया और

1963 में जनसंघ की सदस्यता ग्रहण कर अन्यायपूर्ण विधेयक का प्रबल विरोध किया और देश में एक गैर-कांग्रेसी सरकार की स्थापना हेतु डॉ. लोहिया से मिलकर प्रयास प्रारंभ किए। जनसंघ को एक अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति का महान् विद्वान् प्राप्त होने से उसमें नई चेतना का संचार हुआ।

परन्तु दुर्भाग्य से डॉ. लोहिया की चुनाव सभा में सम्मिलित होने के लिए 14 मई, 1963 को कानपुर से फरूखाबाद जाते समय सड़क दुर्घटना में उनका निधन हो गया। वास्तव में वे वैश्य समाज के ही नहीं सम्पूर्ण राष्ट्र के गौरव थे।

—*—

खाली हाथ कैसे लोटा दें ?

महाराजा अग्रसेन कहीं जा रहे थे कि सामने से एक पत्थर का टुकड़ा आकर उन्हें लगा। उनकी रक्षा के लिए चल रहे सिपाहियों ने चारों तरफ देखा तो एक बुढ़िया दिखलाई पडी। सिपाही इस बुढ़िया को बन्दी बनाकर महाराज के सामने ले गए।

बुढ़िया महाराज को देखते ही कांप उठी। बोली, "सरकार मेरा बच्चा कल से भूखा था, घर में खाने को कुछ था नहीं। पेड़ पर पत्थर मार रही थी कि कुछ बेर झड़ें तो बच्चे को खिलाऊँ। वह पत्थर भूल से आपको जा लगा। मैं निरपराध हूँ, मुझे क्षमा कीजिए।"

महाराज बुढ़िया की बात सुनकर विचारने लगे। थोडी देर बाद उन्होंने हुक्म दिया कि बुढ़िया को एक हजार रुपये तथा वर्षभर के लायक खाने-पीने का सामान देकर ससम्मान छोड़ दिया जाय।

कर्मचारियों ने आश्चर्य से पूछा, "महाराज, जिसे दण्ड मिलना चाहिए उसे रुपये और अन्न का पुरस्कार?

महाराज बोले, "हाँ, यदि बेर का वृक्ष पत्थर मारने पर मीठा फल देता है तो अग्रोहा का महाराजा खाली हाथ कैसे लौटा दे? मैं बेर की झडी से गया बीता क्यों साबित करूँ अपने आपको।'

कर्मचारीगणों के मुंह से वाह-वाह निकल पड़ा।

पदम भूषण राय बहादुर सेठ गूजरमल मोदी

श्री गूजरमल मोदी, मोदी नगर के निर्माता एवं देश-विदेशों में एक सुपरिचित व्यक्तित्व के रूप में प्रसिद्ध रहे हैं। एक प्रसिद्ध उद्योगपति व कुशल व्यवसायी के अतिरिक्त समाज, राष्ट्र व मानव-मात्र के प्रति आपकी सेवाएं अविस्मरणीय रही हैं।

आपके पिताजी मुल्तानीमल मोदी पटियाला के प्रसिद्ध व्यापारी थे। भारत की इस भूतपूर्व पटियाला रियासत के ग्राम 'कानोड' में आपका जन्म 9 अगस्त, 1902 को हुआ। यह कानोड नगर राजस्थान की सीमा पर स्थित है। भारत के स्वतंत्र होने पर यह पंजाब के अंतर्गत रहा। आजकल यह हरियाणा राज्य में "महेन्द्रगढ़" के नाम से प्रसिद्ध है।

आपके जीवन पर, अपने जन्म क्षेत्र राजस्थान के महापुरुषों तथा वीर-वीरांगनाओं के उच्च आदर्शों का, विशेष प्रभाव पड़ा। इसके फलस्वरूप आपके व्यक्तित्व में उच्च आदर्श, वीरता, दानशीलता तथा ईश्वर के प्रति समर्पण एवं भक्ति के भाव कूट-कूट कर भरे हुए थे।

जन्म के बाद बालक मोदी अभी सात दिन के ही थे कि आपकी माता जी का स्वर्गवास हो गया। अतः आपका पालन-पोषण करने के लिए एक धाय की व्यवस्था की गई। आपका जन्म नाम रामप्रसाद था। परन्तु आपका पालनपोषण एक गूजरी धाय के गोद में होने के कारण आपको सभी व्यक्ति गूजरमल के नाम से पुकारने लगे।

बचपन से ही साहसी

श्री गूजरमल मोदी जी बचपन से ही साहसी रहे। अपने बाल्यकाल

में एक बार सन् 1917 में जब आप विद्यालय में पढ़ते थे तो आपकी कक्षा के छात्रों को गणित के अध्यापक श्री चौपड़ा जी ने पिकनिक का सुझाव दिया। इस पर सब छात्र तैयार हो गए और तुरन्त चल पड़े। दूसरे दिन विद्यालय के प्रधानाचार्य ने श्री चौपड़ा को बुलाकर बिना आज्ञा के पिकनिक जाने को अनुचित बताया और उसकी शिकायत उच्चाधिकारी से की। उन्होंने इसे छात्रों की अनुशासनहीनता करार दी, और छात्रों को माफी मांगने का आदेश दिया। छात्रों द्वारा श्री गूजरमल मोदी के नेतृत्व में इस आदेश का विरोध किया गया। इस पर यह मामला महाराजा के पास पहुँचा। महाराजा के समक्ष श्री गूजरमल मोदी ने जिस प्रकार छात्रों का पक्ष प्रस्तुत किया, उसके फलस्वरूप निर्णय छात्रों के पक्ष में हुआ। इससे छात्र नेता श्री मोदी जी की धाक सारे विद्यालय में जम गई। आपके जीवन में ऐसी अनेक घटनाएँ घटित हुईं जिनसे आपके अपूर्व साहस का परिचय मिलता है।

30 वर्ष की आयु में वे हापुड़ में व्यापार करने वाले अपने चचेरे भाई श्री सालिगराम मोदी तथा श्री ताराचन्द्र मोदी के पास आ गए। वहीं योजना बनी कि इसी क्षेत्र में कोई बड़ा उद्योग स्थापित किया जाए। अन्त में बेगमाबाद में चीनी मिल लगाने का निर्णय किया गया। मिल का काम शुरू कर दिया गया तथा 15 सितम्बर 1933 को 'मोदी शुगर मिल्स' बनकर तैयार हो गई। सन् 1939 में मोदी जी ने वनस्पति घी का उत्पादन शुरू किया। सन् 1940 में 'मोदी सोप वर्क्स' कारखाने का शुभारंभ किया गया।

मोदी जी को उनके अनुज श्री केदारनाथ मोदी का सक्रिय सहयोग मिलने लगा था। उन्होंने मोदीनगर में 'कपड़ा फैक्ट्री' लगाने का निर्णय लिया। मशीनरी का ज्ञान प्राप्त करने के लिए केदारनाथ मोदी को इंग्लैण्ड भेजा तथा स्वयं भी कई बार विदेश गये। मोदीनगर में एक के बाद एक नए-नए उद्योग स्थापित होते गए। मोदीनगर में एक दर्जन से अधिक विशाल उद्योग स्थापित किए गए। लाखों श्रमिकों को रोजगार प्राप्त हुआ।

मोदी परिवार अपने पूर्वज महाराजा अग्रसेन की तरह पूर्ण धार्मिक

संस्कारों से युक्त है, इसीलिए मोदी परिवार ने मोदी नगर में भव्य मंदिर का निर्माण कराया। हिमालय के संत स्वामी कृष्णाश्रमजी महाराज को 3 फरवरी 1963 के दिन उद्घाटन के लिए बुलाया गया। आनन्दमयी माँ तथा हरिबाबा जैसी दिव्य विभूतियों की उपस्थिति में विधि-विधान से मंदिर की मूर्तियों की प्राण प्रतिष्ठा की गई। श्री गूजरमल मोदी सन् 1965 में "फैडरेशन आफ इंडस्ट्रीज" के अध्यक्ष निर्वाचित किये गए।

अंग्रेजों से मुकाबला

श्री गूजरमल मोदी अपने जीवन के आरम्भ से ही स्वतंत्र एवं निर्भीक प्रवृत्ति के रहे। साथ ही उन दिनों चल रहे स्वाधीनता संग्राम का प्रभाव भी आप पर पड़ा। इसका परिचय भी आपने अपने कार्य व्यवहार में अनेक बार दिया। एक बार सन् 1926 में पटियाला में कुछ वस्तुओं की नीलामी हो रही थी। श्री मोदी ने इस नीलामी में महाराजा की कारों के गैरेज के अंग्रेज प्रबंधक श्री टर्नर के मुकाबले में ऊँची बोली लगा दी। इस पर यह अंग्रेज आग बबूला हो गया। उसने श्री मोदी को सम्बोधित करते हुए कहा, 'यू इडियट इंडियन'। मोदी जी ने इन शब्दों को भारतीयता का अपमान समझा और उन्होंने तुरन्त ही उस अंग्रेज को चपत मारकर वहीं गिरा दिया।

भारत पर उन दिनों अंग्रेजों का शासन था। खासतौर पर रियासतों में राजा-महाराजा अंग्रेजों की दया पर ही निर्भर थे। ऐसी स्थिति में इस घटना के परिणामों की कल्पना आसानी से की जा सकती है। आखिर एक सप्ताह बाद महाराजा ने श्री गूजरमल मोदी को अपने समक्ष बुलवाया। महाराजा ने श्री मोदी से कहा कि यह जानते हुए भी कि टर्नर एक अंग्रेज है, और हमें उसकी इज्जत करनी चाहिए, आपने उसे क्यों पीटा? इस पर श्री मोदी ने कहा कि महाराजा साहब? मैं पटियाला रियासत में रहता हूँ और मेरा यह मानना है कि रियासत में राजा से बड़ा कोई नहीं रहता है। अतः जब महाराजा के मामूली नौकर ने स्वयं महाराजा को गाली दी तो मैं यह कैसे बर्दाश्त कर सकता था। महाराजा के यह पूछने पर कि टर्नर ने क्या कहा? श्री मोदी ने बताया कि उसके शब्द थे 'यू इडियट इंडियन'। महाराजा साहब क्या आप इंडियन नहीं हैं? महाराजा ने श्री मोदी

की बात ध्यान से सुनी और यह माना कि इनकी बात उचित थी। किन्तु दूसरे दिन महाराजा ने श्री मोदी जी के पिताजी श्री मुल्तानीमल मोदी को बुलाकर उनसे कहा कि "आप इस नवयुवक का ध्यान रखें । कहीं ऐसा न हो कि यह क्रांतिकारी बन जाये। कुछ भी हो एक दिन यह साहसी बालक मोदी वंश की शान में चार चाँद लगाएगा।"

स्वाधीनता प्राप्ति के बाद

इसके बाद 15 अगस्त, 1947 को भारत स्वतंत्र हुआ। देश का बंटवारा हुआ और बहुत ही बड़ी संख्या में लोग पाकिस्तान से हिन्दुस्तान की ओर आये। इन शरणार्थियों को बसाने की समस्या गंभीर रूप से भारत सरकार के सामने उभर कर आई। श्री मोदी जी ने इस समस्या को हल करने में, सरकार को सहयोग देने के लिए अपनी सेवाएं अर्पित कीं और इस प्रकार अपनी देशभक्ति का परिचय दिया।

इस अवसर पर श्री मोदी ने यह उचित समझा कि शरणार्थियों के रहने के लिए एक बस्ती का निर्माण कर दिया जाये जिससे शरणार्थियों को बसाने की समस्या का कुछ हल हो सकेगा। राज्य सरकार ने उनकी सेवाएं स्वीकार कीं और उन्हें बस्ती बसाने का कार्य दे दिया। इस बस्ती के निर्माण की आधार-शिला उत्तर प्रदेश के तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री गोविन्द बल्लभ पंत द्वारा दिनांक 29 जून, 1949 को रखी गई। श्री मोदी जी ने इस बस्ती को बसाने में हर संभव प्रयास, तन-मन-धन से पूर्ण योगदान दिया।

पदम-भूषण श्री मोदी जी

भारत सरकार ने श्री गूजरमल मोदी द्वारा मोदीनगर की स्थापना तथा अन्य औद्योगिक व सामाजिक कार्यों की मान्यता हेतु 26 जनवरी, 1968 को गणतंत्र दिवस के शुभ अवसर पर आपको 'पदम भूषण' की उपाधि प्रदान की।

श्री मोदी जी ने मोदी शुगर मिल, मोदी वनस्पति, मोदी सोप, मोदी पेंट्स तथा वार्निस, मोदी कपड़ा मिल (ए), मोदी कपड़ा मिल (बी), मोदी कपड़ा मिल (सी), मोदी गैस तथा केमिकल, मोदी लालटेन, मोदी रेयन

तथा सिल्क, मोदी डिस्टलरी, मोदी टार्च, मोदी हौजरी, मोदी आर्क इलेक्ट्रोड, मोदी स्टील, मोदी धागा मिल, मोदी पान, मोदी रबर आदि की स्थापना की। आपने अपने कर्मचारियों के लिए चिकित्सालय और धार्मिक मंदिर आदि भी बनवाये। आपने अपने सहयोगी मजदूरों के लिए अधिक से अधिक सुख सुविधायें जुटाने का प्रयत्न किया।

मोदीनगर के श्रमिकों तथा समीपवर्ती ग्रामों के व्यक्तियों के लाभ के लिये एक सर्वांगीण स्नातकोत्तर कॉलेज, दो इण्टरमीडिएट कॉलेज, एक जूनियर हाई स्कूल, एक महिला प्रशिक्षण कॉलेज तथा कई प्राथमिक स्कूलों की स्थापना की है जो आठ हज़ार विद्यार्थियों को शिक्षा प्रदान कर रहे हैं। आपने अनेक धर्मार्थ ट्रस्ट स्थापित किये हैं और विभिन्न केन्द्रों पर तीर्थ यात्रियों के लिये धर्मशालाओं का निर्माण कराया है। श्री मोदी ने एक उद्योगपति की हैसियत से समाज कल्याण के लिये अत्यधिक सेवायें की हैं।

बम्बई के नागरिकों ने 25 अप्रैल 1965 ई. को इनके अभिनन्दन के लिये सभा आयोजित की। इस अवसर पर वहाँ के मेयर महोदय ने महानगर की ओर से बधाई दी और उद्योग क्षेत्र में आपके द्वारा की गई सेवाओं की प्रशंसा की।

श्री मोदी जी को सरकार की ओर से अन्य अनेक सम्माननीय पदों पर भी मनोनीत किया गया। उन्हें इन्टरनेशनल आरबिट्रेशन काउन्सिल का अध्यक्ष, भारत योजना आयोग का परामर्शदाता, सैन्ट्रल एक्साइज एडवाइजरी बोर्ड का सदस्य तथा उ.प्र. योजना आयोग का सदस्य मनोनीत किया गया। मोदी जी की धर्मपत्नी श्रीमती दयावती मोदी ने उनके साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर जनसेवा तथा धार्मिक कार्यों में योगदान किया।

मोदी जी ने मेरठ के पास 'मोदीपुरम्' बसाने की योजना बनाई। जहाँ बाद में 'मोदी रबर लि.' के नाम से कारखाना लगाया गया।

श्री मोदी जी एक साहसी और दृढ़ निश्चयी व्यक्ति

अपने जीवन में सच्ची लगन व अनन्य परिश्रम की एक अमिट छाप सभी के दिलों में छोड़ी है। बेगमाबाद के जंगल का भू-भाग आज भी भारत की एक सजग उद्योग नगरी के रूप में मोदीनगर के नाम से संसार

में प्रसिद्ध है। आपके प्रयासों से वहाँ के लोगों का जीवन खिल उठा और वहाँ के ग्रामीणों के मुँह पर मुस्कान छा गई। आज दिल्ली से मेरठ जाने वाले मार्ग पर मोदीनगर सर्व सम्पन्न औद्योगिक नगर के रूप में जन-जन के लिए रोजगार का केन्द्र बना अपनी यश-गाथा गा रहा है।

दिल्ली में भी विशाल अस्पताल का निर्माण

अपने जीवन काल में श्री गूजरमल मोदी की यह भावना रही कि देश की राजधानी दिल्ली में भी मुम्बई के यशलोक अस्पताल जैसा एक उच्चस्तरीय तथा सभी साधनों से युक्त बहुत विशाल अस्पताल निर्मित किया जाये किन्तु यह कार्य उनके जीवन काल में संभव न हो सका।

अब उनके लघु भ्राता श्री केदारनाथ मोदी, उनके सुपुत्रगण इस कार्य के लिए पूरी लगन के साथ प्रयत्नशील हैं।

श्री गूजरमल मोदी के नाम पर भारत की राजधानी दिल्ली में बनने वाला अस्पताल अपने ढंग का एक आदर्श चिकित्सालय एवं स्वास्थ्य संस्थान है।

इस अस्पताल में असहाय व निर्धन व्यक्तियों के इलाज के लिए विशेष प्रबन्ध है तथा चिकित्सा के नवीनतम आधुनिक उपकरणों की व्यवस्था है।

गूजरमल जी भगवान श्री कृष्ण तथा भगवान श्रीराम दोनों के परम उपासक थे। गंगा तथा गौमाता के प्रति भी उनकी अनन्य निष्ठा थी। जब वे बीमार हुए तो निरन्तर भगवान राम नाम का जाप करते रहे। मुम्बई के यशलोक अस्पताल में 22 जनवरी 1976 को वे गोलोकवासी हो गए तथा इनका अंतिम संस्कार मोदीनगर में किया गया।

आज भी उनके सुपुत्र डॉ. भूपेन्द्रकुमार मोदी तथा परिवारजन औद्योगिक क्षेत्र में अग्रणी हैं। वस्तुतः श्री मोदी जी केवल एक नगर निर्माता तथा प्रसिद्ध उद्योगपति एवं कुशल व्यवसायी ही नहीं रहे, वरन् उन्होंने एक कर्तव्यनिष्ठ, लग्नशील तथा कर्मठ व्यक्ति की तरह देश, समाज व मनुष्य मात्र की सेवा में अपना सम्पूर्ण जीवन समर्पित कर दिया।

—*—

ज्ञानमूर्ति : डॉ. वासुदेवशरण अग्रवाल

डॉ. वासुदेवशरण अग्रवाल इस शताब्दी के अग्रणी वैदिक विद्वानों में से एक थे। उन्होंने वैदिक व पौराणिक साहित्य के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ पुरातत्व एवं कला के क्षेत्र में जो अनूठा कार्य किया वह सदैव अविस्मरणीय रहेगा।

उन्होंने महाभारत, गीता एवं पुराणों की सांस्कृतिक मीमांसा कर यह सिद्ध किया कि हमारे महान् धर्मशास्त्र पूरी तरह इतिहास तथा विज्ञान पर आधारित हैं। भारतीय संस्कृति की शाश्वतता को संसार में कोई भी चुनौती नहीं दे सकता। उन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन ही धर्म, संस्कृति, भारतीय धर्मशास्त्रों तथा जनपदीय साहित्य के प्रचार-प्रसार के लिए समर्पित किया हुआ था।

इस महान् विभूति का जन्म पिलखुवा (गाजियाबाद) क्षेत्र के छोटे से गांव खेड़ा में 7 अगस्त 1904 को गांव के जमींदार लाला झब्बामल के पौत्र के रूप में हुआ था। उन्हें बचपन से ही अपने दादा लाला झब्बामल तथा दादी से धार्मिक संस्कार मिले। दादा उनकी अंगुली पकड़कर गांव के बाहर स्थित शिव मन्दिर ले जाते तथा उन्हें भगवान शंकर को प्रणाम करने तथा उनके समक्ष दीप जलाने की प्रेरणा देते। दादा स्वयं श्रीमद्भागवत के श्रवण में रुचि रखते थे। वे स्वयं भी अपने मित्रों को भागवत की रोचक कहानियां सुनाकर प्रभु भक्ति की प्रेरणा दिया करते थे।

उनके पिता लाला गोपीनाथ जी लखनऊ नगर पालिका में

ओवरसियर पद पर नियुक्त हुए तो उन्होंने अपने पुत्र को लखनऊ बुला लिया तथा वहाँ के अमीनाबाद हाईस्कूल में दाखिला दिला दिया। वे छठी कक्षा के छात्र थे कि उनका कवित्व जाग उठा तथा उन्होंने गांव पर एक कविता लिखकर सभी को आश्चर्यचकित कर डाला था।

वासुदेवशरण को बचपन से ही धार्मिक वांङ्मय का अध्ययन करने के लिए संस्कृत भाषा में विशेष रुचि थी। उनकी रुचि को देखते हुए पिता ने लखनऊ में संस्कृत का अध्यापन करने वाले पंडित जगन्नाथजी को उन्हें संस्कृत पढ़ाने का कार्य भार सौंप दिया। चार-पांच वर्ष में ही वासुदेवशरणजी संस्कृत भाषा के महान ज्ञाता हो गये।

असहयोग आन्दोलन में सक्रिय

सन् 1921 के दिन थे। महात्मा गांधी के आह्वान पर पूरे देश में असहयोग आन्दोलन की लहर दौड़ रही थी। लखनऊ के विद्यालय में अध्ययनरत वासुदेवशरण भी इस आह्वान से अछूते नहीं रहे। उन्होंने अपने विदेशी वस्त्र उतार दिये तथा खादी पहनने का दृढ़ संकल्प ले लिया। इतना ही नहीं उन्होंने विद्यालय भी छोड़ दिया।

लखनऊ में उन दिनों श्री चन्द्रभानु गुप्त कांग्रेस के ओजस्वी तथा तेजस्वी युवा कार्यकर्ता थे। वासुदेवशरण ने उनके साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर असहयोग आन्दोलन के प्रचार में भाग लिया।

वासुदेवशरण जी के पूरे परिवार ने 'स्वदेशी' का व्रत लिया था। उन्हीं दिनों स्वदेशी अभियान के दौरान 1922 में उनके भाई श्री कृष्णमुरारी का जन्म हुआ था। उन्हें 'खद्दर बाबू' नाम से पुकारा जाने लगा।

उन्होनें असहयोग आन्दोलन के कारण विद्यालय छोड़ दिया था। फिर भी वे घर पर ही संस्कृत, साहित्य तथा संस्कृति से सम्बन्धित ग्रन्थों का अध्ययन करते रहे।

महामना पं. मदनमोहन मालवीय जी महाराज इस प्रतिभाशाली युवक से आकृष्ट हुए तथा उन्होंने लखनऊ से काशी बुलाकर उन्हें हिन्दू विश्वविद्यालय में प्रवेश दिला दिया।

सन् 1923 में विद्याध्ययन के दौरान ही उनका विवाह गाजियाबाद के प्रमुख हिन्दू महासभाई नेता लाला हरशरणदास अग्रवाल की सुपुत्री विद्यावती देवी के साथ कर दिया गया। सन् 1927 में काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से उन्होंने प्रथम श्रेणी में बी.ए. की उपाधि प्राप्त की। उस समय महामना पं. मदनमोहन मालवीय जी महाराज ने उनकी पीठ थपथपाते हुए आशीर्वाद दिया था 'तुम धर्म तथा संस्कृत की सेवा के लिए हमेशा समर्पित रहोगे।'

साइमन कमीशन का विरोध

सन् 1927 में वे काशी से लखनऊ वापस लौट आए तथा लखनऊ विश्वविद्यालय में एम.ए. एल.एल.बी. में दाखिला ले लिया। उन्होंने प्रख्यात इतिहासकार डॉ. राधाकुमुद मुखर्जी के श्री चरणों में बैठकर गहन अध्ययन किया।

उन्हीं दिनों साइमन कमीशन भारत आया तो जगह-जगह उसका विरोध किया गया। वासुदेवशरण जी ने भी 'साइमन- वापस जाओ' के नारे लगाते हुए इस विरोध प्रदर्शन में भाग लिया।

डॉ. राधाकुमुद मुखर्जी की प्रेरणा पर उन्होंने वकालत न करके पुरातत्व विभाग में कार्य करना स्वीकार किया। 1931 में वे 'मथुरा संग्रहालय' में कार्यरत हुए। उन्होंने वहीं रहकर ब्रज की प्राचीन संस्कृति, मूर्तिकला तथा अन्य प्राच्य ग्रन्थों का अध्ययन-संग्रह किया। वे मथुरा में ब्रज साहित्य के मर्मज्ञ प्रभुदयाल मित्तल तथा बाबू वृन्दावनदास जैसी विभूतियों के संपर्क में भी आए। उन्होंने इस दौरान वेद-विद्या विषय पर अपनी पहली पुस्तक 'उरु-ज्योति' का सृजन किया।

अनेक ग्रन्थों का सृजन

दिल्ली में राष्ट्रपति भवन के कक्ष में 'राष्ट्रीय पुरातत्व संग्रहालय' की स्थापना की गई तो उसका कार्यभार डॉ. वासुदेवशरण जी को सौंपा गया। 1946 से 1951 तक वे दिल्ली रहे। इसी दौरान उन्होंने 'भारत सावित्री', 'मार्कण्डेय पुराण– एक सांस्कृतिक अध्ययन', हर्ष चरित्र एक

सांस्कृतिक अध्ययन', कादम्बरी– एक सांस्कृतिक अध्ययन', 'पदमावत–संजीवनी व्याख्या', 'शिव महादेव', द ग्रेट गॉड, 'पाणिनीकालीन भारतवर्ष', 'मत्स्य पुराण– ए स्टडी', 'वामन-पुराण– ए स्टडी', 'गीता नवनीत', 'उपनिषद नवनीत', 'वेद रश्मि' जैसे महत्त्वपूर्ण ग्रन्थों का सृजन किया। बाद में उनके निबन्धों के दर्जनों संग्रह प्रकाशित हुए जिनमें 'कल्पवृक्ष', वेदविद्या, उरु ज्योति, मातृभूमि, भारत की मौलिक एकता, प्राचीन भारतीय लोक धर्म आदि बहुत लोकप्रिय हुए।

वासुदेवशरण जी की विद्वता से राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्रप्रसाद तथा पं. जवाहरलाल नेहरू बहुत प्रभावित थे। इनसे वेदों तथा उपनिषदों के महत्त्व पर चर्चा करते थे। आप अंग्रेजी के भी महान् विद्वान थे। गोरक्षा, राष्ट्रभाषा हिन्दी, स्वदेशी तथा भारतीयता की भावना के वे मूर्तिमान स्वरूप थे।

राष्ट्रभाषा हिन्दी के संवर्धक

आधुनिक युग के पाणिनी आचार्य वासुदेवशरण अग्रवाल भारतीय लोक भाषाओं की शब्दावलि से हिन्दी को समृद्ध बनाने के पक्षधर थे। उन्होंने सहस्रों लोक शब्दों को साहित्य में लाकर उनका उद्धार किया। आचार्य की यह मान्यता थी कि लोक शब्द भाषा को रसीला बनाते हैं।

लोक शब्दों का संकलन करने में आचार्य बड़े भावुक थे। बुंदेलखंड, अवध, मेरठ, हरियाणा, राजस्थान, गुजरात, आदि कहीं से भी सुन पड़ने वाला कोई शब्द काम का मिला, उसे झट डायरी में नोट कर लिया। उनकी इस प्रवृत्ति को देखकर प्रयाग संग्रहालय के संस्थापक श्री ब्रजमोहन व्यास ने कहा था–

'पहले नरपति दास गए कवित्त सुनत कछु देत,
अबके नरपति अस भए कवित्त सुनत लिख लेत।'

आचार्य अग्रवाल की असंख्य रचनाओं में भिड़ंत, लठमार, ऊल-जलूल, चोखी, दलिद्दर, बचाखुचा, टांड, झंझट, टुटपुंजिया, बखेड़ा, मरोड़दार, खरी, गड़बड़झाला, टटा, रिट्ट-पिट्ट, मुंहफट, मूठल आदि लोक शब्द दिखाई पड़ते हैं। उनकी अवधारणा थी कि जनपदीय भाषाओं

से लगभग 50 हजार शब्द ऐसे लिये जा सकते हैं, जो वास्तविक अर्थ को अभिव्यक्त करने की क्षमता रखते हैं और जिनसे राष्ट्रभाषा की अपार वृद्धि हो सकती है। उन्होंने ऐसे साहित्यकारों के प्रति अप्रसन्नता प्रकट की जो इन शब्दों को गंवारु तथा महत्त्वहीन समझकर छोड़ देते हैं।

सादा जीवन उच्च विचार

डॉ. वासुदेवशरण जी ने जीवन में सादगी को प्राथमिकता दी थी। शुद्ध खादी में उनका रोम-रोम बसता था। शुद्ध खादी का कुर्ता-बनियान, धोती-टोपी– यही उनका पहनावा था। उनके बिस्तर के सब कपड़े शुद्ध खादी के होते थे। जिस तख्त पर बैठकर या लेटकर वे अध्ययन करते थे– दरी, गद्दा, तकिया, बैडशीट सभी शुद्ध खादी की होती थी। उनके अध्ययन के कमरे में पड़ा सोफा, पर्दे सभी शुद्ध खादी के थे। माताजी (उनकी धर्मपत्नी) ने भी सदा जीवन पर्यन्त शुद्ध खादी के ही कपड़े पहने। उनकी सुपुत्री सुदक्षणा भी सदा शुद्ध खादी के कपड़े पहनती थी।

प्रख्यात कलामर्मज्ञ डॉ. रायकृष्णदास, उनके पुत्र, पुत्र-वधु प्रायः उनसे मिलने आते थे। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के वंशज जो कि कला के क्षेत्र में प्रकाण्ड विद्वान थे तथा विश्वविद्यालय में भी कुलपति से नीचे का स्थान प्राप्त था, सप्ताह में दो-तीन बार साहित्यिक चर्चा करने आते थे। प्रातः से सायं तक एम.ए और पी. एचडी. के छात्र उनसे मार्गदर्शन के लिए आते रहते थे। याददाश्त इतनी कमाल की थी कि छात्रों से कहते थे 'अमुक रैक में से, अमुक स्थान से, अमुक पुस्तक निकालकर, अमुक पृष्ठ खोलो, देखो अमुक स्थान पर क्या लिखा है। पढ़ो और नोट करो।

उनके पिताजी तथा परिवार के अन्य सदस्यों ने लखनऊ में हैवेट रोड पर 'वैश्य बैंक' की स्थापना की थी, जो घाटे में चला गया। उसका ऋण उन्होंने मृत्यु से 1 वर्ष पूर्व तक उतारा। ऋण मुक्ति के बाद ही घर में गोदरेज का फ्रिज आया।

सन् 1965 में लाला श्रीराम अग्रवाल पिलखुवा से बनारस आए थे। तब वे डॉ. साहब से मिलने गये थे। डॉ. साहब ने उनसे कहा– 'गांव

खेड़ा में हमारा जो पैतृक मकान है उसकी मरम्मत करवा दीजिए तथा पुताई वगैराह करवा दीजिए। साथ ही उन्होंने 3000 रु. का चैक काट कर दे दिया। लाला श्रीराम जी ने खेड़े के मकान की मरम्मत आदि करवाई, पुताई करवाई तथा जो बाकी धन बचा, ड्राफ्ट द्वारा वापस भेज दिया। बड़ा मन प्रसन्न हुआ था डॉ. साहब का। अपने पूर्वजों के प्रति उनका आखिरी श्राद्ध था।

डॉ. वासुदेवशरण जी अध्ययन, मनन तथा लेखन में इतने तल्लीन रहते थे कि कभी उन्होंने अपने स्वास्थ्य की ओर ध्यान नहीं दिया। "मधुमेह" (डायबिटीज़) के कारण उनका शरीर रोगों से घिर गया था फिर भी वे ज्ञान गंगा को अपनी लेखनी से प्रवाहित करने में हीं लगे रहते थे।

डॉ. साहब भगवान महादेवजी के अनन्य भक्त थे। गायत्री तथा शिवस्तोत्र का नियमित पाठ करते थे।

26 जुलाई सन् 1966 को काशी में सर सुन्दरलाल अस्पताल में भगवान शिव लोक को प्रस्थान कर गये। उनके अनुज श्रीकृष्ण मुरारी जी उनके साहित्य का प्रकाशन कर उनकी स्मृति बनाये रखने में प्रयत्नशील हैं। ऐसे ज्ञानमूर्ति अग्रविभूति पर अग्रवाल समाज गौरवान्वित है और उनके सद्-साहित्य से लाभान्वित भी है।

—*—

उन्हें मत सराहो
जिनने
अनीतिपूर्वक सफलता पाई
और
सम्पत्ति कमाई

राजस्थान के स्वाधीनता सेनानी

लाला खूबराज सर्राफ और अमर शहीद सत्यनारायण सर्राफ

राजस्थान वीरों की भूमि रही है। यहाँ के अग्रवाल सेठ साहूकारों ने व्यवसाय एवं उद्यम के साथ आजादी के आंदोलन में भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है और उच्चकोटि की राष्ट्र भक्ति का परिचय दिया है।

राष्ट्रीय स्वाधीनता संग्राम के महान् स्तंभ जमनालाल बजाज, सीताराम सेक्सरिया, भागीरथ कानोड़िया आदि मूल रूप से राजस्थान के ही थे, जिन्होंने स्वाधीनता संग्राम में उल्लेखनीय भूमिका निभाई और जिनके बिना आजादी के आंदोलन की कल्पना ही नहीं की जा सकती। आज व्यापारी समाज पर तरह-तरह के आरोप लगाये जाते हैं किन्तु आजादी को प्राप्त करने तथा उसके बाद देश की स्वाधीनता को सुरक्षित रखने के लिए हमारे समाज के इन राष्ट्रभक्त बलिदानियों को किस-किस प्रकार से जोर जुल्म से टक्कर लेनी पड़ी और उन्होंने देश की आजादी के लिए किस प्रकार से अपने आपको झोंक दिया था, इसकी गाथा अत्यन्त ही रोमांचक है।

यहाँ हम वीर राजस्थान की धरा पर जन्मे ऐसे ही दो चाचा भतीजे की गाथा दे रहे हैं, जिन्होंने बीकानेर राजशाही एवं ब्रिटिश दासता से लड़ते हुए अपने जीवन को झोंक दिया था।

ये दोनों स्वाधीनता सेनानी थे **लाला खूबराज सर्राफ** और **सत्यनारायण सर्राफ**। दोनों राजस्थान के श्री गंगानगर जिले की भादरा

तहसील (वर्तमान हनुमानगढ़ जिला) के निवासी थे और चाचा भतीजा थे। युवावस्था में ही उनका सम्पर्क महात्मा गाँधी, लाला लाजपतराय, मदनमोहन मालवीय, हरिभाउ उपाध्याय, जयनारायण व्यास आदि नेताओं से हो गया था।

27 अगस्त, 1904 को जन्मे सत्यनारायण सर्राफ ने लाहौर में शिक्षा प्राप्त की थी और वहीं के डी.ए.वी. कॉलेज से उन्होंने विधि (एल.एल.बी.) की परीक्षा उत्तीर्ण की थी। अतः उनका लाला लाजपतराय, महात्मा हंसराज आदि नेताओं से सम्पर्क हो गया था। महात्मा हंसराज उस समय डी.ए.वी. छात्रावास के अधीक्षक थे और अपने युग के सुविख्यात राष्ट्रभक्तों में एक थे। लाला लाजपतराय भी उस समय "बाल-पाल-लाल" की त्रिवेणी के रूप में भारत के स्वाधीनता संग्राम में देदीयमान हो रहे थे, अतः उनका प्रभाव पड़ना अवश्यम्भावी था।

श्री सत्यनारायण लाहौर से डिग्री प्राप्त करने के बाद हिसार में रह कर वकालत करने लगे किन्तु बीकानेर स्टेट के प्रतिष्ठित लोगों ने आप से आग्रह किया कि वे बीकानेर स्टेट पधारें और सामंतशाही से पीड़ित जनता को राहत दिलायें तो उनके प्रबल आग्रह को देखते हुए आपने अपना कार्यक्षेत्र राजगढ़, रतनगढ़ तथा भादरा को बना लिया।

चाचा भतीजा दोनों में ही देशभक्ति की भावना बुलबुला रही थी। उस समय महाराजा गंगासिंह के राजस्व मंत्री तथा दाहिने हाथ श्रीमान् धातासिंह के अत्याचार जनता पर चरम सीमा पर थे। अधिकारी लोग राजस्व वसूली के लिए मनमानें ढंग से जनता का उत्पीड़न कर रहे थे। चाचा भतीजा ने अपने क्षेत्र की गरीब जनता के कष्टों से बीकानेर महाराजा को परिचित कराना चाहा और पत्र लिखे तो राजशाही के कानों पर जूं रेंगने के स्थान पर उन्होंने चाचा भतीजे के लोकहितैषी प्रयासों को ही राजद्रोह मान लिया। आपने स्टेट के तत्कालीन प्रधानमंत्री सर मनु भाई मेहता से भी सम्पर्क साध कर सम्पूर्ण स्थिति से अवगत कराने का प्रयत्न किया किन्तु आपके प्रयास विफल ही रहे। निराश हो चाचा भतीजे ने

"हिन्दी मिलाप", "विशाल भारत" आदि पत्रों के माध्यम से राजशाही के उत्पीड़न के खिलाफ लेख लिखने प्रारम्भ कर दिये क्योंकि अब उनके पास यही विकल्प बचा था। आपके इन लेखों ने रियासत की जनता में जागृति उत्पन्न करने में अभूतपूर्व कार्य किया। राज्य सरकार का आक्रोश उन पर और बढ़ गया तथा राज्य सरकार के गुप्तचर विभाग की निगरानी उन पर बढ़ा दी गई।

दिसम्बर 1931 में लंदन में गोलमेज कांफ्रेस का आयोजन हुआ। इस कांफ्रेंस में देशी रियासतों में होने वाले अत्याचारों से अवगत कराने के लिए अनेक प्रतिनिधिमंडल भारत से सम्मिलित हुए। इनमें बीकानेर के प्रतिनिधिमंडल का प्रयत्न था कि महाराजा गंगासिंह के प्रशासन की वास्तविक स्थिति और उनके द्वारा प्रजा पर किए जाने वाले उत्पीड़न को गोलमेज के समक्ष प्रस्तुत कर दिया जाये। इसके लिए एक पम्पलैट तैयार किया गया, जिसमें महाराजा द्वारा किए जाने वाले जनविरोधी कार्यों का विवरण था। इसके लिए आवश्यक सामग्री श्री खूबराज सर्राफ और श्री सत्यनारायण सर्राफ ने ही तैयार की थी। इस पम्पलैट में महाराजा व उनके निरंकुश तानाशाह अधिकारियों के अत्याचारों का खुला चिट्ठा था।

इस पम्पलैट को उस समय बांटा गया और महात्मा गाँधी को सौंपा गया, जबकि बीकानेर के महाराजा गंगासिह अपने राज्य की प्रशंसा में तारीफों के पुल बांधने में संलग्न थे। महात्मा गाँधी ने उस पत्रक की एक प्रति उसी समय लार्ड सेकी को सौंपी और वायसराय ने उस पत्रक का जवाब उसी समय महाराजा से देने को कहा।

रियासत के निरंकुश शासन की कलई खोलने वाले इस पत्रक को पढ़कर महाराजा आपे से बाहर हो गये। स्वास्थ्य खराब होने का बहाना बनाकर वे सम्मेलन के बीच से ही लौट आये। उन्होंने इसका प्रतिशोध लेने के लिए प्रजा परिषद् के कार्यकर्त्ताओं पर दमनचक्र ओर जोरों से प्रारम्भ कर दिया। इस दमनचक्र का प्रमुख आधार श्री लाला खूबचन्द, सत्यनारायण सर्राफ और स्वामी गोपालदास को बनाया गया तथा उन पर

राजद्रोह का आरोप लगाकर मुकदमा चलाया गया। यह मुकदमा भारत के इतिहास में बीकानेर षड्यंत्र केस 1932 के नाम से चर्चित हुआ और उसकी ख्याति दूर-दूर तक फैली। इस मामले के 8 अभियुक्तों में से 4 राज्य के व्यापारी वर्ग से सम्बन्धित थे।

महाराजा गंगासिंह ने सबक सिखाने की दृष्टि से लंदन से लौटते ही 13 जनवरी, 1931 को लाला सत्यनारायण को रतनगढ़ तथा लाला खूबराय को भादरा से गिरफ्तार कर लिया। उनकी गिरफ्तारी आधी रात को उस समय की गई, जब वे सोए हुए थे। पूरे तीन माह तक इनको जेल में रखा गया। उन्हें तरह-तरह से यातनाएँ दी गईं। उन्हें राज्य सरकार के पक्ष में करने के लिए हर तरह के प्रलोभन तथा आतंकित करने के लिए तरह-तरह के हथकण्डे अपनाए गए। लेकिन चाचा भतीजे को कोई भी प्रलोभन या आतंक उनके पथ से नहीं हटा सका। वे चट्टान की तरह अपने लक्ष्य पर अटल रहे।

तीन माह तक पुलिस हिरासत में रहने के बाद इनके खिलाफ 13 अप्रैल 1932 को अदालत में इस्तगासा पेश किया गया और उन पर राजद्रोह का आरोप लगाया गया। दोनों चाचा भतीजे पर आरोप लगाया गया कि उनका भारतीय राज्य लोक परिषद् से गहरा सम्बन्ध था, जो बीकानेर में महाराजा के खिलाफ भयंकर प्रचार में रत थी। उन पर भी आरोप लगाया गया कि उन्होंने उक्त संस्था को 500 रु. की आर्थिक मदद की तथा उसके सदस्यों के साथ राजद्रोह फैलाने वाला पत्र व्यवहार किया। सन् 1928 में अजमेर में होने वाले राजपूताना प्रजा परिषद के अधिवेशन तथा करांची के कांग्रेस अधिवेशन में भाग लेने तथा बीकानेर राज्य के निवासियों को स्वतंत्रतापूर्वक लिखने, बोलने और सम्मेलन करने, प्रत्यक्ष चुनाव द्वारा राज्य के प्रतिनिधियों को आम सभाओं में भेजने तथा सर्वोच्च न्यायालय में राज्य निवासियों को अपील करने का अधिकार दिलाने हेतु उकसाने का आरोप भी आप पर लगाया गया था। उन पर बिजोलिया

किसान आंदोलन को सहायता पहुँचाने तथा लंदन के गोलमेज सम्मेलन में बांटे गये पत्रक पर हस्ताक्षर कराने का आरोप भी लगाया गया।

यह मुकदमा लगभग 21 माह तक चला और 1933 में लाला सत्यनारायण सर्राफ को धारा 377, 124 व 120 के अन्तर्गत साढ़े चार वर्ष तथा खूबराज सर्राफ को साढ़े तीन वर्ष की सजा सुनाई गई। मुकदमें के दौरान सर्राफ बंधुओं ने एक दो को छोड़ अधिकांश आरोपों को स्वीकार कर महान् दिलेरी का परिचय दिया। इस मुकदमें में राज्य से बाहर के किसी वकील को करने पर पाबन्दी लगा दी गई और न्याय का झूठा पाखंड रचा गया।

इस केस की संपूर्ण भारत में चर्चा हुई तथा भारत के अधिकांश बड़े-बड़े नेताओं ने न केवल इसकी आलोचना की अपितु सभी बड़े-बड़े व्यापारियों ने इसके विरुद्ध सरकार विरोधी भाषण दिए। कलकत्ता में सेठ मूलचन्द अग्रवाल व प्रभुदयाल हिम्मत सिंहका की अध्यक्षता में बीकानेर दिवस मनाया गया, जिसमें सैकड़ों सेठ साहूकार और प्रतिष्ठित नागरिक सम्मिलित हुए। पंडित जवाहरलाल नेहरू, सेठ जमनालाल बजाज जैसे नेताओं ने अपने हस्ताक्षरों से युक्त लम्बी-लम्बी अपीलें निकालीं।

जेल जीवन में चाचा भतीजे को असह्य यातनाएं दी गईं। उन्हें बजरी मिला हुआ खाना दिया गया। उनकी गिरफ्तारी के बाद पुलिस उनकी दुकान से बहिखातों को उठा कर ले गई। इससे उनका व्यापार चौपट हो गया। किन्तु चाचा भतीजे दोनों ने जुल्म से टक्कर लेने की मुहिम का अद्भुत नेतृत्व किया और बनियों पर कायरतापन के आरोप को बहादुरी से धो डाला।

लम्बी जेल काटने के बाद जब चाचा भतीजे बाहर आए तो उन्होंने और अधिक शक्ति से राजशाही का प्रतिरोध प्रारम्भ कर दिया। प्रजा परिषद् की गतिविधियों में खुलकर भाग लेने लगे। समाचारपत्रों को राजशाही विरुद्ध लेख भेजने पुनः प्रारम्भ कर दिये। रियासती सरकार उनसे पहले ही चिढ़ी हुई थी। इन लेखों ने जलती हुई अग्नि में घृत डालने का काम

किया। परिणामस्वरूप महाराजा ने कुपित हो उन्हें 17 मार्च 1937 को राज्य से अनिश्चितकाल के लिए निर्वासन कर दण्ड दे दिया और पुलिस की कड़ी निगरानी में उन्हें राज्य की सीमाओं से बाहर ढकेल दिया गया।

निष्कासन के बाद श्री सत्यनारायण अपने पुराने स्थान हिसार लौट आए। उनके पत्रों से प्रभावित हो नेहरू जी ने वस्तुस्थिति जानने के लिए बीकानेर नरेश को पत्र लिखा किन्तु नरेश जब किसी संतोषजनक उत्तर देने में असमर्थ रहे तो आपने 26 जून 1937 को खुले वक्तव्य द्वारा बीकानेर शासन की खुली भर्त्सना की। समस्त समाचार-पत्रों ने इस वक्तव्य को प्रमुखता से छापा। श्री नेहरू ने बाद में अ.भा. देशी राज्य परिषद् के उदयपुर अधिवेशन में भी बीकानेरी राजशाही के विरुद्ध खुल कर विचार व्यक्त किए और कहा कि जहाँ शादी की कुमकुम पत्रिका भी राज्य से सेंसर करानी पड़ती हो तथा पद की ओट में यह भीषण अत्याचार किए जाते हों, उस राज्य के शासक इंसान नहीं, हैवान हैं।

इस प्रकार आपके प्रयत्नों से बीकानेर राज्य के अत्याचार सार्वजनिक रूप से सामने आए। राज्य से निर्वासन की अवधि में भी सर्राफ बंधुओं का अभियान बन्द नहीं हुआ। स्वतन्त्रता युद्ध के सेनानी रूप में वे अब विदेशी सत्ता, ब्रिटिशशाही तथा राज्य के निरंकुश शासन दोनों से समान रूप से लोहा लेने में रत रहे। श्री सत्यनारायण की सेवाओं को देखते हुए आल इण्डिया पीपुल्स कांफ्रेंस की स्थायी समिति के वे सदस्य बनाये गये, जिसके अध्यक्ष स्वयं पंडित नेहरू थे।

उसी समय देश में 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन की चिनगारियाँ सम्पूर्ण देश में फूट उठी थीं। श्री सत्यनारायण सर्राफ को भारत छोड़ो आन्दोलन के पहले दिन ही गिरफ्तार कर अनिश्चितकाल के लिए जेल में डाल दिया गया। श्री खूबराज इस अवसर पर मुंबई में आयोजित कांफ्रेंस में भाग लेने गए और उन्होंने ज्योंही बीकानेर की धरती पर वापसी पाँव रखा, आपको 14 अगस्त, 1942 को गिरफ्तार कर भारत सुरक्षा कानून के अन्तर्गत बीकानेर जेल में डाल दिया गया। जेल में वे बुरी तरह

अस्वस्थ हो गए और 15 मार्च 1943 को बीकानेर राज्य में स्वतन्त्रता आन्दोलन की प्रेरक इस महान् अग्रविभूति का अन्त हो गया।

श्री सत्यनारायण सर्राफ लगभग तीन वर्ष तक जेल में रहे। शाहपुरा और अम्बाला जेलों में भयंकर यातनाओं के मध्य उन्होंने जेल की इन यातनाओं को हंसते-हंसते सहन किया किन्तु उफ तक न की। जेल से छूटने के बाद आजादी के आन्दोलन में उन्होंने अपने आपको और अधिक तेजी से खपा दिया।

लालाजी जैसे असंख्य क्रांतिकारियों के बलिदान स्वरूप जब देश को आजादी प्राप्त हुई और उन्होंने देखा की सत्ता के भूखे भेड़िये देश की जनता को लूटने में लगे हैं तो उन्होंने स्वाधीन भारत की सरकार को भी नहीं बख्शा और "पटका", "पछाड़" और "लाश की चीर फाड़" जैसी पुस्तकों के द्वारा सत्ता के पद में चूर तथाकथित शासकों को सचेत करने का प्रयत्न किया और जन अधिकारों के लिए संघर्ष करते-करते अपनी बलि दे दी।

अंतिम मरते समय तक उन्हें इस बात की वेदना रही कि जिस आजादी की लड़ाई के लिए कोटि-कोटि स्वाधीनता सेनानियों ने अपना तन मन ही नहीं सब कुछ अर्पित कर दिया, उस स्वतंत्रता का लाभ देश के केवल कुछ नेताओं तक ही सीमित रहा और देश की अधिकांश जनता उसके प्रकाश से वंचित है तथा सत्ता के लोलुप जनता के खून के प्यासे आज पुनः गद्दियों पर आसीन हो गए हैं।

चाचा भतीजे इन दोनों अग्रबंधुओं के महान् त्याग बलिदान और राष्ट्रप्रेम की यह अमर गाथा आने वाले युगों में भी अग्रवाल समाज के गौरव को देदीप्यमान रखेगी और आने वाली पीढ़ियाँ उनसे प्रेरणा ग्रहण कर शक्तिशाली भारत का निर्माण कर सकेगी, यही आशा है।

—*—

पत्रकारों के पितामह

विश्वम्भर सहाय विनोद जी

श्री विश्वंभर सहाय विनोद न केवल पुरानी पीढ़ी के सिद्धांतनिष्ठ मिशनरी पत्रकार थे अपितु उनका देश की स्वाधीनता के लिए जन जागृति करने में भी कम योगदान नहीं रहा। उनका जीवन राष्ट्र, समाज तथा अपने देश की हिन्दू संस्कृति के लिए पूर्ण रूपेण समर्पित था। वे जीवन के अंतिम क्षणों तक हिन्दी, हिन्दू तथा हिन्दुस्तान के हितों के लिए संघर्षरत रहे। समाज सुधार के लिए वैश्य समाज को कुरीतियों से मुक्ति दिलाने के पुनीत कार्य में भी उनका सदैव योगदान रहा।

मेरठ जनपद के बागपत-बड़ौत क्षेत्र के एक छोटे से गांव में गर्ग गोत्रीय अग्रवाल परिवार में 15 फरवरी 1905 को जन्मे विनोद जी का परिवार आर्य समाजी था। आर्य समाज के संस्कारों ने उन्हें समाज सुधार की प्रेरणा दी। लोकमान्य तिलक के 'केसरी' तथा वीर सावरकर, भाई परमानंद जी, स्वामी श्रद्धानंद जी आदि राष्ट्रभक्तों के राष्ट्रभक्ति के कार्यों से उन्हें राष्ट्रभक्ति की प्रेरणा मिली। इन्हीं महान् राष्ट्रभक्तों की प्रेरणा से उन्होंने अपना जीवन राष्ट्रीय चेतना उत्पन्न करने के लिए पत्रकारिता के लिए समर्पित कर दिया।

गणेशशंकर विद्यार्थी से प्रेरणा : गाँव मेरठ में प्रारंभिक शिक्षा के बाद आर्य समाज के संस्कार के कारण ही उन्हें कानपुर के डी.ए.वी. कालेज में भर्ती कराया गया। वहाँ वे जहाँ अनेक आर्य समाजी नेताओं

के सम्पर्क में आये, वहीं पत्रकार शिरोमणि श्रद्धेय गणेश शंकर 'विद्यार्थी' के भी निकट आये। उन्हीं से पत्रकारिता की प्रेरणा मिली।

सन् 1926 में गोहाटी में आयोजित कांग्रेस के राष्ट्रीय सम्मेलन की उन्होंने रिपोर्टिंग की थी। कानपुर के कांग्रेसी तथा आर्य समाजी नेता स्व. अलगूराय शास्त्री ने उन्हें बहुत प्रोत्साहित किया। श्री लालबहादुर शास्त्री तथा अग्रविभूति ला. लाजपतराय से भी उनके निकट के सम्बन्ध रहे।

सन् 1926 में वे लखनऊ चले गये तथा उस समय की एक मात्र राष्ट्रीय संवाद समिति 'फ्री प्रेस ऑफ इन्डिया' के संवाददाता बन गये। बाद में डॉ. सम्पूर्णानन्द जी के प्रेरणा पर वे उनके द्वारा सम्पादित 'आज' के अंग्रेजी संस्करण 'टुडे' के उप सम्पादक रहे। काशी में डॉ. सम्पूर्णानन्द जी से उन्हें पत्रकारिता के गुर सीखने का सौभाग्य मिला।

'हिन्दुस्तान टाइम्स' में : दो वर्ष बाद ही सन् 1930 में दिल्ली में 'हिन्दुस्तान टाइम्स' में रिपोर्टर का नियुक्ति पत्र उन्हें मिल गया। उन्होंने अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त 'मेरठ षड्यंत्र केस' की कुशलता के साथ रिपोर्टिंग की। अगले ही वर्ष उन्होंने अपनी जन्मस्थली मेरठ में 'प्रेस' लगाया तथा अंग्रेजी में 'मेरठ टाइम्स' के नाम से साप्ताहिक पत्र शुरू किया। बाद में उसका नाम 'सन्डे टाइम्स' हो गया। सन् 1944 में हिन्दी 'प्रभात' शुरू किया, जो आज तक उ.प्र. का प्रमुख हिन्दी दैनिक बना हुआ है।

विनोद जी ने एक जागरूक पत्रकार के रूप में जब कांग्रेस की नीतियों का अध्ययन किया तो उन्हें लगा कि कांग्रेस की मुसलमानों के प्रति तुष्टिकरण की नीति देश के टुकड़े-टुकड़े कर डालेगी। स्वातंत्र्यवीर सावरकर, भाई परमानन्द, महामना पंडित मदनमोहन मालवीय जी आदि उन दिनों इस नीति का विरोध कर रहे थे।

वीर सावरकर जी से प्रभावित : विनोद जी को सावरकर जी के व्यक्तित्व, कृतित्व और विचारधारा ने प्रभावित किया। गोरक्षपीठाधीश्वर महंत दिग्विजयनाथ जी तथा श्री विशनचन्द सेठ भी इसी कारण कांग्रेस छोड़कर हिन्दू महासभा में शामिल हुये थे।

विनोद जी जीवन के अन्तिम क्षणों तक कट्टर 'सावरकरवादी' बने रहे। हिन्दुत्व के प्रश्न पर कभी उन्होंने समझौता नहीं किया। निधन से एक माह पूर्व उन्होंने कहा कि मेरा दृढ़ मत है कि भारत को हिन्दू राष्ट्र घोषित करके ही संसार की बड़ी शक्तियों के बराबर पहुँचाया जा सकता है।

वामपंथियों तथा अन्य राजनीतिक दलों द्वारा वोटों के लिए अल्पसंख्यकों की नाजायज मांगों का समर्थन किया जाता तो विनोद जी की लेखनी और हृदय दोनों मचल उठते थे। वे अल्पसंख्यकों के प्रति तुष्टीकरण की नीति को ही भारत विभाजन का कारण मानते थे। अग्रविभूति लाला लाजपतराय के विचारों ने भी उन्हें अत्यधिक प्रभावित किया।

कांग्रेस की इस घातक नीति के विरोध करने के कारण सन् 1945 में स्व. मदन गोपाल सिंहल तथा वैद्य गजाधर तिवारी आदि के साथ विनोद जी को भी गिरफ्तार कर मेरठ जेल में बन्द कर दिया गया। इसके बाद पाकिस्तान समर्थक राष्ट्रद्रोही तत्वों के खिलाफ लिखे गये सम्पादकीय लेखों तथा समाचारों को भी आपत्तिजनक करार देकर 'प्रभात' पर मुकदमा चलाया गया। उसके विज्ञापन तक बन्द कर दिये गये। इन तमाम संकटों के बावजूद विनोद जी को निर्भीक पत्रकारिता तथा हिन्दुत्व के मार्ग से डिगाया नहीं जा सका। वे अपने प्रेरक वीर सावरकर जी की तरह निरन्तर जूझते रहे।

गोवा मुक्ति आन्दोलन में : सन् 1955 में गोवा की मुक्ति के लिये सत्याग्रह शुरू हुआ तो मेरठ से भी हिन्दू महासभा का जत्था भेजा गया। श्री विनोद जी, पंडित गजाधर तिवारी वैद्य तथा अग्रवंशी श्री महावीर प्रसाद शशि (पत्रकार), रामनिवास गोयल आदि के साथ गोवा गये। मुम्बई से रवाना होने से पूर्व सभी लोग वीर सावरकर जी से आशीर्वाद लेने गये तो सावरकर जी ने कहा था– "निहत्थे बनकर विदेशियों की गोली से मरने का मार्ग मैं पसंद नहीं करता। सरकार को सेना भेजकर गोवा को

मुक्त कराना चाहिये, किन्तु शुभ काम में जा रहे हो, मेरा आशीर्वाद साथ है।"

गोआ में उन्होंने पुर्तगाली सैनिकों के सामने सीना तानकर साहस का प्रदर्शन किया था।

विनोद जी की धर्मपत्नी श्रीमती सुवीरा विनोद भी उन्हीं की तरह आर्य समाजी विचारधारा की परम विदुषी महिला थीं। वे वर्षों तक मेरठ महिला आर्य समाज की प्रधान रहीं। सन् 1967 में गोरक्षा आन्दोलन में उन्हें भी सत्याग्रह करते हुये गिरफ्तार किया गया तथा कई महीने तक दिल्ली की तिहाड़ जेल की यातनायें सहनी पड़ीं।

वैश्य समाज के सूत्रधार : विनोद जी समाज सुधार के क्षेत्र में हमेशा अग्रणी रहे। सन् 1948 में उन्होंने बागपत के वैश्य सम्मेलन में भाषण देते हुए कहा था "अग्रवाल वैश्य समाज को दहेज, दिखावे, तथा भौंडे प्रदर्शन की प्रवृत्ति से बचाया जाना चाहिए। स्त्री शिक्षा की ओर विशेष ध्यान देना चाहिए। वैश्यों की जाति-उपजातियों में ऊंच नीच का व्यवहार नहीं होना चाहिए।"

अग्रवाल समाज की महान् विभूति प्रो. रामसिंह जी, अग्रविभूति देशबन्धु गुप्त, महान गोभक्त लाला हरदेवसहाय जी, आध्यात्मिक विभूति तथा साहित्यकार श्री मदनगोपाल सिंहल, भक्त रामशरणदास पिलखुवा, विश्वंभरसहाय प्रेमी, स्वाधीनता सेनानी रतनलाल गर्ग, श्री रघुकुल तिलक आदि से विनोद जी के निकट के सम्बन्ध रहे। इन सभी के साथ वे समाज सुधार तथा राष्ट्रीय चेतना अभियान में सक्रिय रहे।

एक बार श्री विनोद जी की इच्छा अपने महान पूर्वज महाराजा अग्रसेन जी के पावन धाम अग्रोहा के दर्शनों की हुई। वे प्रो. रामसिंह जी के साथ अग्रोहा गये तथा वहाँ के खण्डहरों में छिपे इतिहास से प्रभावित होकर लौटे। अग्रोहा पर उन्होंने एक लेख भी लिखा था।

श्री विनोद जी ने युवा पीढ़ी के अनेक पत्रकारों को पत्रकारिता का प्रशिक्षण देकर उनका मार्ग प्रशस्त किया। बाल साहित्य के जाने माने

लेखक अग्रवंशी श्री जयप्रकाश भारती (सम्पादक 'नंदन') ने लिखा है– 'श्रद्धेय श्री विनोद जी तथा उनका दैनिक 'प्रभात' मेरी पत्रकारिता के प्रेरणा स्रोत हैं।'

श्री विनोद जी का नाम केवल उत्तर प्रदेश नहीं अपितु पूरे देश के पुरानी पीढ़ी के अग्रणी पत्रकारों की श्रेणी में माना जाता है। उनके अनुज श्री हरिशचन्द्र जी, पुत्र प्रमोद कुमार तथा सुबोध कुमार विनोद, भतीजे न्यायाधीश दिनेश मोहन आर्य ने भी लेखन के क्षेत्र में ख्याति अर्जित की।

31 दिसम्बर 1988 को विनोद जी अस्वस्थ रहने के कारण दिवंगत हो गये। ऐसी निर्भीक, तेजस्वी, समाज सुधारक, स्वाधीनता सेनानी विभूति पर अग्रवाल समाज को हमेशा गर्व रहेगा।

—*—

* उठो देश के अग्र बन्धुओं *

उठो देश के अग्र बन्धुओं, निज गौरव का ध्यान करो।
स्वाभिमान से जीने खातिर, लड़ने का आह्वान करो।
बहुत बड़ी संख्या अपनी, मगर एकता धार नहीं।
देश की सत्ता शासन पर है, क्या अपना अधिकार नहीं
हक अधिकार को पाने खातिर, आओ कुछ बलिदान करो।
उठो देश.......।

रीढ़ है अर्थव्यवस्था के हम, शासन अपने ही दम पर।
कमी पड़े राजस्व में जब भी, लादे जायें कर हम पर।
नहीं उपेक्षा सहेंगे अब हम, अपने अस्तित्व का ध्यान करो।
उठो देश.......।

अग्रसेन महाराज, जमनालाल और महात्मा गांधी,
जिनके बलिदानों से आई, युग परिवर्तन की आंधी
उनके पद चिन्हों पर चलकर, उनके प्रति सम्मान करो।
उठो देश.......।

जन्म 18 दिसम्बर 1906- देहावसान-17 सितम्बर 1995
लोक-अग्रवाल (?) ग्रन्थ 2006 पेज 213

राष्ट्र के महान् हास्य कवि

काका हाथरसी

महाकवि काका हाथरसी का मुख्य नाम श्री प्रभुदयाल गर्ग था। इनका जन्म एक अग्रवाल परिवार में श्री शिवलाल मुनीम के घर में तहसील इंगलास जिला अलीगढ़ में दिनांक 18.12.1906 को हुआ था। आप बाद में हाथरस में बस गये। 1926 में 21 वर्ष की आयु में आपका विवाह हुआ। बचपन से ही आपको हास्य-व्यंग्य की कविताएँ लिखने का अभ्यास पड़ गया था। आप सामाजिक और राजनीतिक क्षेत्र में तथा समाज सुधार के लिए व्यंग्यात्मक शैली में हास्य कविताएँ और रचनाएँ रचते और सुनाते रहे हैं। आपको सुनने के लिए लाखों की भीड़ जमा हो जाती है। व्यंग्य ऐसे करते हैं कि सटीक प्रभाव छोड़ते हैं। हँसते-हँसते लोग लोट-पोट हो जाते हैं। 1930 में आपने हाथरस में संगीत संस्थान की स्थापना की और 150 उत्कृष्ट पुस्तकों का प्रकाशन किया। "संगीत" पत्र के आप सम्पादक थे। आपने "काका हाथरसी पुरस्कार" की योजना चलाई है, जिसके अन्तर्गत हास्य और व्यंग्य क्षेत्र में विशेष उपलब्धि की उपाधि से सम्मानित किया जाता है। इस पुरस्कार प्राप्त करने वालों को प्रतिवर्ष 15 हजार रुपया नकद व 'हास्य रत्न' की उपाधि से सम्मानित किया जाता है।

—*—

मास्टर आदित्येन्द्र

राजस्थान के प्रमुख स्वतंत्रता सेनानी, सादा जीवन-उच्च विचारों के धनी मास्टर आदित्येन्द्र का जन्म 24 जून 1907 में भरतपुर के थून गाँव में एक भरे-पूरे वैश्य परिवार में हुआ था। इनके पिता लाला शंकरलाल एक निष्ठावान आर्य समाजी थे, वे आर्य समाज के सिद्धान्तों का पालन ही नहीं वरन् उनका प्रचार भी किया करते थे। अतः मास्टर साहब की दिनचर्या में भी इनका प्रभाव पड़ना स्वाभाविक था।

इनकी प्रारम्भिक शिक्षा गांव में, तत्पश्चात् नगर व डीग में हुई तथा 1923 में भरतपुर के सदर हाई स्कूल से इन्होंने मैट्रिक किया। इनकी बुद्धि बहुत तीव्र थी, यहाँ तक कि गणित व अंग्रेजी आप आगे की कक्षा के छात्रों को भी पढ़ाया करते थे। मास्टर साहब ने बी.एस.सी. आगरा के सैन्ट जॉन्स कॉलेज से सन् 1928 में किया। इस अंग्रेजी से परिपूर्ण व फैशन परस्त कॉलेज में भी सादगी और सरलता आपके जीवन के हर पहलू में समाहित थी। घर से खर्च के लिए जो 46 रु. मिलते थे, उसमें से भी अधिकांश रुपये आप दूसरों की सहायतार्थ खर्च कर देते थे।

अध्ययन के दौरान ही आप गाँधी जी के द्वारा चलाये जा रहे आन्दोलन व उनके विचारों से बहुत प्रभावित हुए और आपने उसी समय से पूर्णतया खादी को अपना लिया तथा आगे की पढ़ाई न कर आन्दोलन से जुड़ने का मानस बना लिया। अपने उद्देश्य की पूर्ति हेतु बी.एस.सी. के बाद पढ़ाई छोड़कर ये भरतपुर आ गये। पढ़ाई छोड़ने पर आपको घरवालों का विरोध का भी सामना करना पड़ा।

भरतपुर पहुंचते ही सरकार के तत्कालीन शिक्षामंत्री घमण्डीसिंह जी तथा गृहमंत्री कुंवर हीरासिंह जी द्वारा आपसे आग्रह किया गया कि भरतपुर जिले के एक मात्र सदर हाई स्कूल में विज्ञान विषय के अध्यापन का कार्य प्रारम्भ करें, क्योंकि जिले में ये ही एक मात्र विज्ञान स्नातक थे और इस कारण इन्हें अन्य शिक्षकों से 5 रुपये अधिक कुल 55 रुपये वेतन दिया गया।

मास्टर जी ने इस आग्रह को स्वीकार कर लिया क्योंकि इन्होंने सोचा अध्यापन के साथ-साथ छात्रों को आन्दोलन के लिए भी प्रोत्साहित किया जा सकेगा। आप जब कक्षा में जाते प्रारम्भिक 10-15 मिनट आन्दोलन की गतिविधियों को सुनने के लिए छात्र उत्सुक रहते थे। इस तरीके से भरतपुर में छात्रों के माध्यम से आपने आन्दोलन को गति देना प्रारम्भ कर दिया। यहाँ भी आप अपने वेतन से अधिकांश भाग गरीब छात्रों की फीस देने, उन्हें आन्दोलन के लिए तैयार करने में खर्च कर देते थे। 1930 में सविनय अवज्ञा आन्दोलन तथा नमक सत्याग्रह आन्दोलन के प्रभाव से स्वतंत्रता आन्दोलन में ये और अधिक सक्रिय हो गये।

मास्टर जी की इन आन्दोलनकारी गतिविधियों पर सरकार की निगाह थी, परन्तु साधारण स्थिति में आपके विरुद्ध कड़ा कदम उठाना उचित नहीं समझा गया क्योंकि इससे छात्रों में उत्तेजना फैलने की सी भावना थी। छात्रों में धीरे-धीरे आप अति लोकप्रिय व श्रद्धा के पात्र होते जा रहे थे। आपके कहने पर छात्र कुछ भी करने को तैयार थे। मास्टरजी ने अब छात्रों को ब्रिटिंश भारत के नगरों में खासकर अजमेर भेजना प्रारम्भ किया। वहाँ वे छात्र कानून तोड़कर गिरफ्तार होते थे, जिन्हें कई बार केवल कोड़े मारकर छोड़ दिया जाता था। इन कार्यवाहियों से आपके विरुद्ध कड़ा कदम उठाना आवश्यक हो गया। सन् 1932 में पॉलिटिकल ऐजेन्ट की रिपोर्ट के आधार पर सरकार ने आपके विरुद्ध तलाशी के वारंट जारी कर दिये। उस समय विद्यार्थियों ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई, आपत्तिजनक दस्तावेज घर से हटा दिये तथा आप गिरफ्तारी से बच गये। इस पर पॉलिटिकल

ऐजेन्ट ने कहा "बदमाश बच निकला"। परन्तु फिर भी आप पर दबाव बनाये रखा गया, घर के चारों तरफ सी.आई.डी लगा दी गई, घरवालों को परेशान व प्रताड़ित किया गया तथा जमीन-जायदाद कुर्क करने के आदेश निकाल दिये गये। परन्तु छात्रों में जो आन्दोलन की आग आप भड़का चुके थे वह कम नहीं हुई वरन् तीव्र होती गई। छात्रों को खादी पहनने व गाँधी टोपी लगाने के लिए उत्साहित किया गया और आपने भी गाँधी टोपी पहनना शुरू कर दिया, सरकारी नौकरी में ऐसा करना कानूनी जुर्म था। इन पाबन्दियों से अब छुटकारा पाने के लिए मास्टर जी ने 1932 में नौकरी से त्याग-पत्र दे दिया और खुलकर राजनीति में आने का निश्चय किया। मास्टर जी ने अब अपनी राजनीतिक गतिविधियाँ तेज कर दीं। कबई व अन्य गाँवों में इस दौरान कई हरिजन पाठशालायें खोली।

तत्पश्चात् 4 मार्च, 1938 में आपने अन्य सत्याग्रहियों के सहयोग से प्रजामण्डल की स्थापना की, परन्तु इसी समय भरतपुर में "जाब्ता फौजदारी कानून" लागू हो गया था इसके अन्तर्गत राजनीतिक संगठनों की स्थापना व उनकी ओर से आन्दोलनों पर कठोर पाबन्दी लगा दी गई। सरकार द्वारा प्रजामण्डल को गैरकानूनी घोषित कर दिया गया। अब आन्दोलन को चलाना बहुत कठिन कार्य हो गया, ये दिन आपके लिए बहुत कष्टदायक रहे, भूमिगत होकर ही आन्दोलन का संचालन करना पड़ता था। कई-कई दिन भूखे-प्यासे रह कर पुलिस से बचते हुए जगह-जगह घूम कर सत्याग्रही बनाना, आन्दोलन का प्रचार करना, धन इकट्ठा करना ये कार्य बहुत सर्तकता व पुलिस से बचते हुए करने पड़ते थे।

कई-कई दिन मास्टर साहब घर पर नहीं जा पाते थे, कभी-कभी रात को मीलों पैदल चलकर छिपते हुए जाते और कुछ देर रुक कर ही वापस चल देते। आन्दोलन को और तेज करने के उद्देश्य से सभायें करने व गिरफ्तारियाँ देने की योजना बनाई गई। आदित्येन्द्र जी से आग्रह किया गया वे जेल न जायें और बाहर रहकर आंदोलन का संचालन करें क्योंकि यह बहुत कठिन कार्य था। 13 मई 1939 को उत्तरदायी शासन की मांग

को लेकर लक्ष्मण मंदिर पर एक विशाल जनसभा का आयोजन किया गया। सरकार ने सभा को गैरकानूनी घोषित कर धरपकड़ शुरू कर दी और लोगों पर निर्ममता से डंडे बरसाये गये तथा गिरफ्तार कर जेल में डाल दिया गया।

मास्टर साहब व अन्य तीन व्यक्ति पूर्व में बनाई गई योजना के अनुसार पुलिस से बच कर मीटिंग में से खिसक गये। अंधेरी रात में पुलिस से बचते हुए ऊबड़-खाबड़ जगहों, खेतों-खलिहानों को पार करते हुए सुबह होने से पहले अछनेरा पहुंच गये। आपका पूरा शरीर लहुलुहान हो गया था। वहाँ पहुँच कर आप द्वारा प्रजामण्डल का शिविर स्थापित किया गया।

भरतपुर में तीन आंदोलन मुख्य माने जाते हैं :- 1939 का सत्याग्रह आंदोलन, 1942 का भारत छोड़ो आन्दोलन तथा 1947 का स्वतंत्रता आन्दोलन व बेगार विरोधी आन्दोलन।

ये तीनों ही आन्दोलन मास्टर साहब के नेतृत्व में हुये। यद्यपि इसमें बहुत से लोगों का महत्त्वपूर्ण योगदान था। 1939 में ही इनकी पत्नी अनार देवी भी आन्दोलन में कूद पड़ी। महिलाओं के जत्थे में अग्रणी भूमिका निभाते हुये, सरकार के खिलाफ नारे लगाते हुए जब इनका जुलूस जा रहा था तो इन्हें गिरफ्तार कर लिया गया और जेल में डाल दिया गया। 5 वर्ष के लड़के को घर पर छोड़कर तथा सवा साल की लड़की को साथ लेकर ये जेल में करीब चार महीनों तक रहीं।

आदित्येन्द्र जी को फरार घोषित कर दिया गया था और गिरफ्तारी के वारन्ट जारी कर दिये गये थे। इस समय भरतपुर में आन्दोलन तीव्र गति से चल रहा था। 1939 को सरकार व प्रजामण्डल में समझौता हुआ, हस्ताक्षरकर्ताओं में मास्टर आदित्येन्द्र, गोपीलाल यादव, पं. रेवतीशरण, ठा. देशराज व गोकुलजी वर्मा ये पांच लोग थे। अब प्रजामण्डल का मान्यता प्राप्त हो गई और इसका नाम बदल कर "प्रजा परिषद्" कर दिया गया।

1942 का भारत छोड़ो आन्दोलन जब पूरे देश में प्रारम्भ हुआ

मास्टर साहब के नेतृत्व में भरतपुर में भी 'करो या मरो' का नारा गूंज उठा। जुलूस निकालने, सभायें करने का तांता लग गया। भरतपुर व आसपास की शिक्षण संस्थाओं में छात्रों ने बाहर निकल कर 'महात्मा गाँधी की जय', 'अंग्रेजो भारत छोड़ो' और 'इन्कलाब जिन्दाबाद' के नारों से आकाश प्रतिध्वनित कर दिया। रेल लाइनें उखाड़ने, डाकखानों में आग लगाने व विदेशी कपड़ों की होली जलाने की घटनाओं ने उग्र रूप धारण कर लिया। इसी समय मास्टर साहब को भी गिरफ्तार कर लिया गया। जेल की कठोर यातनाओं के बीच आपने समय गुजारा, जेल में सांप बिच्छू निकलना आम बात थी। जेल में भी आगे की योजनाओं की चर्चायें चलती रहती थीं।

दीवान के.पी.एस.मेनन के जिनका मास्टर साहब पर बड़ा भरोसा था, व मास्टर साहब के साथ समझौता वार्ता का दौर प्रारम्भ हुआ। यह वार्ता 19 दिन तक चली। आप जेल से ही रोज वार्ता के लिए जाया करते थे। सरकार से समझौता कराने में आपकी महत्त्वपूर्ण भूमिका रही। समझौते के फलस्वरूप सत्याग्रह आन्दोलन स्थगित कर दिया गया, बन्दियों को जेल से रिहा कर दिया गया तथा एक सलाहकार मण्डल बनाने व "ब्रज जया प्रतिनिधि समिति" के चुनाव कराने के बारे में भी सहमति हुई।

भरतपुर में इसके पश्चात् भी आन्दोलन की आंधी नहीं रुकी। सरकार ने आंदोलन को पूरी तरह कुचलने का मानस बना लिया था।

1947 में भरतपुर में स्वतंत्रता का अन्तिम संघर्ष लड़ा गया। बीकानेर महाराज शार्दुलसिंह व वायसराय लार्ड वेवल के भरतपुर आगमन और उनके द्वारा मुर्गावियों के शिकार करने और उसमें जाटवों से बेगार लिये जाने के विरोध में जबरदस्त आन्दोलन हुआ। इस समय आप प्रजापरिषद् के प्रधान थे। मास्टर साहब के नेतृत्व में काले झण्डे दिखाकर उनका बहिष्कार किया गया। किले पर धरना दिया गया, सभी सरकारी दफ्तरों में लोगों को सत्याग्रहियों ने जाने से रोकने के लिए जबरदस्त आन्दोलन चलाया। इस आन्दोलन को सरकार द्वारा निर्ममता से कुचलने का प्रयत्न किया गया और सत्यागृहियों को जेल में डाल दिया गया।

मास्टर साहब को भी इस समय कठोर जेल यातनायें सहनी पड़ीं। सारे भरतपुर में पूरी राजपूताना की सबसे लम्बी 19 दिन की हड़ताल चली। मास्टर साहब को महाराजा बृजेन्द्रसिंह ने वार्ता के लिए बुलाया, उनको कई तरह की धमकियाँ भी दी गईं, परन्तु अन्त में उनकी निर्भीकता, दृढ़ निश्चय के सामने सरकार को झुकना पड़ा और 5 अगस्त को सत्याग्रहियों को रिहा कर दिया गया। इस समय भी चार महीने जेल में रहे थे।

स्वतंत्रता आन्दोलन के साथ-साथ मास्टर साहब रचनात्मक कार्यों से भी जुड़े रहे, खास कर हरिजनोद्धार के लिए छात्रों को भी हरिजनों के साथ भोजन करवाते और बाद में आपने पंडितों, हरिजनों व अन्य लोगों को कई बार साथ भोजन करवाने के लिए बड़े आयोजन किये।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् 1948 में भरतपुर राज्य में लोकप्रिय मंत्रिमण्डल में मंत्री बने। भरतपुर, अलवर एवं करौली को मिलाकर मत्स्य राज्य की स्थापना हुई तब 27 जून 1948 को आप मत्स्य कांग्रेस के अध्यक्ष बने। सन् 1949 से 1960 तक राजस्थान प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष पद पर कार्य किया। आप 1954 से 1960 तक राज्य सभा के सदस्य तथा 1955 से 1958 तक ऑल इण्डिया कांग्रेस कार्यकारिणी के राजस्थान और मध्यप्रदेश से एक मात्र प्रतिनिधि के रूप में सदस्य रहे। सन् 1967 से 1972 तक विधायक रहे। जुलाई सन् 1975 में सत्रह महीने आपातकाल के दौरान आप जेल में रहे। 1977 से 1980 तक आप राजस्थान सरकार में वित्त, राजस्व व देवस्थान विभाग के मंत्री रहे।

सन् 1979 में सम्पूर्ण राजस्थान में नशाबन्दी लागू करने के संकल्प की पूर्ति न होने के कारण आपने मंत्री पद त्याग दिया। उसके पश्चात् स्वयं को रचनात्मक कार्यों में ही लगा दिया। अन्त समय तक भी आज राजस्थान हरिजन सेवक संघ, राजस्थान नशाबन्दी मण्डल, भरतपुर खादी समिति के अध्यक्ष एवं भारत की प्रमुख शिक्षा संस्था महिला विद्यापीठ, भुसावर के संस्थापक थे, तथा कई वर्षों तक अध्यक्ष रहे। स्वतंत्रता सेनानियों को दी जाने वाली पेंशन इन्होंने कभी नहीं ली।

—*—

अग्रगौरव, महान मनीषी एवं स्वतंत्रता सेनानी

श्री राधाकृष्ण अग्रवाल

इस परिवर्तनशील संसार में न जाने कितने प्राणी आते और काल कवलित हो जाते हैं किन्तु उनमें से कुछ ही ऐसे होते हैं, जो धरा के वक्ष पर अपने पदचिन्ह अंकित करने में समर्थ होते हैं। ऐसी ही महान् विभूतियों में से एक थे– अग्रगौरव श्री राधाकृष्ण अग्रवाल।

आप एक महान स्वतंत्रता सेनानी, प्रख्यात राजनीतिज्ञ, उच्चकोटि के देशभक्त, समाजसेवी एवं शिक्षाविद् थे। आपका जन्म उत्तर प्रदेश की सुप्रसिद्ध नगरी हरदोई के एक सुप्रतिष्ठित अग्र परिवार में 1 अक्टूबर 1907 को हुआ। पिताश्री वेणीमाधव जी अपने समय की एक विभूति थे।

श्री अग्रवाल बचपन से ही मेधावी थे। आपने राजनीति शास्त्र में एम.ए. और विधि में स्नातक परीक्षा लखनऊ विश्वविद्यालय से उत्तीर्ण की।

जब वे क्राइस्ट चर्च कालेज, कानपुर में अध्ययन कर रहे थे, तभी उन्होंने देशभक्ति का पहला पाठ सीखा। वहाँ वे गांधीवादी अर्थशास्त्री प्रो. जे.के. मेहता के सम्पर्क में आए और उनके विद्यार्थी रहे। प्रो. एफ.टी. फिशर तो उनसे इतने प्रभावित थे कि अपने को श्री अग्रवाल का चेला कहने में गौरव अनुभव करते थे।

1932 में उन्होंने कानून की उपाधि प्राप्त की और वकालत का कार्य प्रारम्भ कर दिया। वकालत में उनकी सत्यनिष्ठा इतनी प्रचलित थी कि कोई भी झूठा मुकदमा उनके पास नहीं आता था।

गाँधीजी ने अपने युग में ऐसे असंख्य लोगों की कतार खड़ी कर दी थी, जो इतने सिद्धान्तवादी थे कि बड़े से बड़ा प्रलोभन उपस्थित होने पर भी भीड़ के साथ बह जाना जिनकी नियति नहीं थी।

श्री राधाकृष्ण अग्रवाल भी कुछ ऐसी ही मिट्टी के बने थे। वे अपने सम्पूर्ण राजनीतिक एवं सामाजिक जीवन में स्फटिक मणि की तरह उज्ज्वल रहे। उनकी कार्यप्रणाली सदैव स्वच्छ नैतिक मूल्यों पर आधारित रही। आपकी राष्ट्रीयता की भावना बड़ी प्रखर थी।

1928 में जिस दिन साइमन कमीशन ने भारत की धरती पर पैर रखा, आपने विदेशी एवं मिल के वस्त्रों को त्याग दिया। आजीवन खादी पहनने की प्रतिज्ञा की और पूरे जीवन उसका पालन किया।

साइमन कमीशन के लखनऊ आने पर उसका विरोध किया और लाठियाँ खाईं।

विद्यार्थी जीवन में ही वे उत्तर प्रदेश के लौह पुरुष चंद्रभानु गुप्त के सम्पर्क में आए और जीवन-पर्यन्त उनसे साथ निभाया।

1940 में आप अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के सदस्य नियुक्त हुए और सत्याग्रह आंदोलन में भाग लिया। आपकी गिरफ्तारी हुई और आपको एक वर्ष के कठोर कारावास तथा 800/- रुपये अर्थदण्ड की सजा मिली। एक अक्टूबर 1941 को आप जेल से मुक्त हुए। किन्तु जेल की यातनाएं और कष्ट भी आपको आंदोलन से विमुख नहीं कर सके और आप भारत छोड़ो आंदोलन में भाग लेते हुए 1942 में पुनः गिरफ्तार कर लिए गए। इस प्रकार उन्होंने देश के लिए बार-बार गिरफ्तारियाँ दीं और नजरबंद भी रहे। उन्होंने उत्तर प्रदेश कांग्रेस कमेटी के महामंत्री के रूप में भी उल्लेखनीय कार्य किया।

1946 में वे प्रांतीय विधान सभा के सदस्य चुने गये। तीन वर्ष की समाप्ति के बाद उन्हें पुनः इसी पद के लिए चुना गया। 1952 में वे उत्तर प्रदेश विधान सभा के विधायक बने और 1957 तक विधायक के रूप

में तथा उसके पश्चात् कर्मठ जनसेवी के रूप में प्रदेश तथा राष्ट्र के चहुंमुखी विकास में उल्लेखनीय योगदान दिया।

उनकी लोकप्रियता के फलस्वरूप उन्हें दिसंबर 1955 में उत्तर प्रदेश लोकसेवा आयोग का सदस्य बनाया गया। उन्होंने आयोग के सदस्य के रूप में 5 वर्ष तक तथा उसके पश्चात् 6 वर्ष तक अध्यक्ष के रूप में सेवा की। इसी बीच में इलाहाबाद की सांस्कृतिक, साहित्यिक, शैक्षणिक गतिविधियों में भी उनका पूरा योगदान रहा। उन्होंने उत्तर प्रदेश लोकसेवा आयोग के अध्यक्ष के रूप में कभी अपने कुटुम्बीजनों की सिफारिश न की और असंख्य गरीब, प्रतिभावान, बेरोजगार युवकों को रोजगार प्रदान कर पद का सदुपयोग किया।

राजनेता एवं प्रशासक के रूप में ख्याति प्राप्त करने के साथ-साथ उन्होंने शिक्षा के क्षेत्र में भी महत्त्वपूर्ण उपलब्धि अर्जित की। आप एक उच्चकोटि के शिक्षाविद् थे। 15 जुलाई, 1969 को आप कानपुर विश्वविद्यालय के सर्वोच्च कुलपति पद पर नियुक्त हुए और आपने तीन वर्ष तक इस पद पर रहते हुए विश्वविद्यालय में शैक्षणिक सुधार तथा प्रशासनिक भवन के निर्माण की दिशा में उल्लेखनीय कार्य किये। कानपुर विश्वविद्यालय में कुलपति के रूप में आपका कार्यकाल ऐतिहासिक रहा।

आप उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा आयोग के अध्यक्ष, रूड़की विश्वविद्यालय सिण्डिकेट एवं सीनेट के सदस्य, वाराणसी संस्कृत विश्वविद्यालय, लखनऊ एवं गोरखपुर विश्वविद्यालय की कार्य परिषद एवं कोर्ट तथा आगरा एवं इलाहाबाद विश्वविद्यालयों की कोर्ट के सदस्य रहे और आपने हर स्थान पर अपनी प्रतिभा की छाप अंकित की। मदनमोहन मालवीय इंजीनियरिंग कॉलेज, गोरखपुर की संचालन परिषद् सदस्य के रूप में भी आपकी विशिष्ट भूमिका रही। आप अनेक शैक्षणिक संस्थाओं के संस्थापक एवं सदस्य भी रहे।

अनेकानेक जनसेवी संगठनों एवं शिक्षण संस्थाओं की स्थापना के

लिए वे कार्यरत रहे। उन्होंने अपने पिताश्री के नाम से '**श्री वेणीमाधव अग्रवाल सेवासदन**' की स्थापना की। बच्चों की शिक्षा के लिए 'बाल विहार' खोला, जिसने आगे जाकर उच्च शिक्षण संस्था का रूप धारण कर लिया। मोतीलाल मेमोरियल सोसायटी के अध्यक्ष, भारत सेवा संस्थान के संस्थापक सदस्य, वेणीमाधव विद्यापीठ के मुख्य संरक्षक, खादी ग्रामोद्योग मण्डल के अध्यक्ष, संस्कृत परिषद् के संरक्षक के रूप में उनकी सेवाएं उल्लेखनीय रहीं। जीवन के अंतिम क्षणों तक वे दीनहीन जनों, नेत्रहीनों, विकलांगों तथा पिछड़े लोगों के लिए समर्पित रहे। विद्यादान, ज्योतिदान तथा कृत्रिम अंगदान जैसे उनके जीवन का लक्ष्य ही बन गया था। उन्होंने अपनी मृत्यु के तीन दिन पूर्व ही अपनी आंखों की वसीयत करके सच्चे समाजसेवी के रूप में अनुकरणीय छाप छोड़ी। दो नवयुवकों को जीवन के अंतिम समय में नेत्र एवं ज्योति दान उनके जीवन का ऐसा कृत्य है, जिससे पता चलता है कि वे विकलांगों एवं नेत्रहीनों के लिए कितने चिंतित थे। उनके जीवन का कण-कण अनासक्त एवं निर्लिप्त सेवाभाव के लिए समर्पित था।

इस प्रकार निरन्तर देश सेवा में रत रहते हुए उनका 80 वर्ष की अवस्था में 14 अक्टूबर, 1986 को देहावसान हो गया।

वृद्धावस्था में भी उनमें तरुणों जैसा उत्साह, स्फूर्ति और सक्रियता रही। उच्च पदों पर रहने के बावजूद अहमन्यता उन्हें छू तक नहीं पाई। वास्तव में उनका जीवन देश और समाज के लिए समर्पित रहा। उन्होंने एक मुहिम के रूप में देश सेवा का व्रत लिया और जीवन के अंतिम समय तक वे उसमें संलग्न रहे। ऐसी महान् अग्रविभूति को शत-शत नमन्।

—*—

गर्व से सभी कहें, बन्धू हम एक हैं।
जाति, पन्थ, ज्ञान, स्नेह, सूत्र हमारा एक है।।

साहित्यिक विभूतिः श्री मदन गोपाल सिंहल

श्री मदन गोपाल सिंहल एक ऐसी महान् विभूति थे जिन्होंने साहित्य तथा पत्रकारिता के क्षेत्र में जहाँ अनेक मानदण्ड स्थापित किये थे वहीं समाज सेवा, धर्म तथा संस्कृति के प्रचार-प्रसार में भी उनका अविस्मरणीय योगदान रहेगा। सिंहल जी द्वारा रचित साहित्य से आज भी देश-विदेश के करोड़ों भारतीय, भारतीय संस्कृति, सनातन धर्म तथा समाज सुधार की ओर उन्मुख होने की प्रेरणा लेते हैं।

श्री मदन गोपाल सिंहल का जन्म सम्वत् 1965 को मेरठ के साहित्यसेवी तथा प्रमुख व्यवसायी लाला शिवसरनदास के घर हुआ था। उन्हें अपने पिताश्री से जहाँ सनातन धर्म तथा भारतीय संस्कृति के संस्कार प्राप्त हुए वहीं समाज सेवा की भी प्रेरणा मिली।

उन दिनों मेरठ में प्रख्यात सनातनधर्मी विद्वान पंडित मोहन लाल अग्निहोत्री की धूम मची हुई थी। वे कुशल शास्त्रार्थ महारथी तथा साहित्यिक महापुरुष थे। सिंहल जी बालक ही थे कि उनके प्रवचन से प्रभावित होकर उनका सत्संग करने लगे। उन्हीं की प्रेरणा पर सिंहल जी ने अपना जीवन धर्म और हिन्दू संस्कृति की सेवा तथा प्रचार-प्रसार में लगाने का संकल्प ले लिया।

मालवीय जी से प्रेरणा ली

सिंहल जी महान् विभूति महामना पंडित मदन मोहन मालवीय जी महाराज के राष्ट्रवादी तथा धार्मिक विचारों से बहुत प्रभावित हुए। वे काशी पहुंचे तथा महामना का आशीर्वाद प्राप्त किया। मालवीय जी महाराज ने सन् 1923 में सरगोधा (पंजाब) में 'सनातन धर्म महावीर दल' की

स्थापना की। इस दल की उत्तर प्रदेश में पहली शाखा मेरठ में स्थापित की गई तथा सिंहल जी को इसका नायक मनोनीत किया गया।

सन् 1927 तक मेरठ के काली मंदिर में नवरात्र के दिनों में पाँच सौ से ज्यादा बकरों की बलि दी जाती थी। सिंहल जी के नेतृत्व में महावीर दल के स्वयं सेवकों ने इस नृशंस कुप्रथा के विरुद्ध मोर्चा लगाया तथा अन्धविश्वासी पुजारी को बलि बन्द करने को विवश होना पड़ा।

सन् 1928 में सिंहल जी ने देवालयों में स्वदेशी वस्तुओं के उपयोग का अभियान चलाया। उन्होंने विदेशी वस्त्रों को त्यागने तथा स्वदेशी खादी के वस्त्र पहनने की भी लोगों को प्रेरणा दी।

मेरठ का अंग्रेज कमिश्नर सिंहल जी से चिढ़ गया। 1933 में एक दिन उनके घर छापा मारकर तलाशी ली गई तथा पुलिस उनके घर से लोकमान्य तिलक तथा अन्य राष्ट्रभक्तों की पुस्तकें तथा क्रान्तिकारी साहित्य उठाकर ले गई।

सन् 1939 में जब वीर सावरकर "1857 के स्वातन्त्र्य समर की पावन भूमि मेरठ" की तीर्थ यात्रा पर आये तो सिंहल जी ने उनसे भेंट की तथा उनकी प्रेरणा से अपना समस्त जीवन हिन्दू हितों के लिए समर्पित करने का संकल्प ले लिया। वे वर्षों तक हिन्दू महासभा के माध्यम से हिन्दू समाज के संगठन कार्य में सक्रिय रहे। वे मेरठ छावनी बोर्ड के सदस्य भी चुने गये।

सन् 1944 में मेरठ में अ.भा. वैश्य महासभा का वार्षिक अधिवेशन हुआ तो सिंहल जी उसके मंत्री बनाये गये।

वे मेरठ की सनातनधर्मी संस्थाओं के प्राण थे। किन्तु जब कभी आर्य समाज तथा सनातनियों के बीच विवाद उठा कि उन्होंने बीच में पड़कर शास्त्रार्थ नहीं होने दिया। वे हिन्दू समाज के संगठन के सदैव हामी रहे।

देश के स्वाधीन होने के साथ-साथ जब 1946 में बंगाल में हिन्दुओं का नर संहार किया गया तो सिंहल जी ने बंगाली हिन्दू

शरणार्थियों की सहायता के लिए सनातनधर्म सभा (मेरठ) की ओर से धन एकत्रित कर डॉ. श्यामाप्रसाद मुखर्जी के पास भिजवाया।

सिंहल जी महान् विख्यात सन्त स्वामी कृष्णबोधाश्रम जी महाराज (जो ज्योर्तिमठ के शंकराचार्य बने) तथा स्वामी करपात्री जी महाराज से बहुत प्रभावित रहे तथा "धर्मसंघ" के तत्वावधान में चलाये गये भारत विभाजन विरोधी तथा गोहत्या बन्दी आंदोलन में जेल भी गये।

सन् 1947 में उन्होंने मेरठ से दैनिक 'राम राज्य' का सम्पादन किया। उन्होंने इस पत्र में भारत विभाजन के लिए कांग्रेसी नेताओं को जिम्मेदार ठहराया तथा हिन्दुओं के नरसंहार की कड़ी भर्त्सना की। परिणामस्वरूप सिंहल जी को उनके अनन्य सहयोगी श्री वि.स. विनोद (सम्पादक प्रभात) के साथ गिरफ्तार कर जेल में डाल दिया गया।

सन् 1948 में अ.भा. हिन्दी साहित्य सम्मेलन का छत्तीसवाँ वार्षिक अधिवेशन मेरठ में हुआ तो सिंहल जी उसके उप स्वागताध्यक्ष बनाये गये।

सिंहल जी ने मेरठ की अनेक शिक्षण संस्थाओं की भी स्थापना की। सनातन धर्म स्कूल, सनातन-धर्म कन्या पाठशाला, बिल्वेश्वर संस्कृत विद्यांलय, मूक-बधिर विद्यालय आदि के विकास में उनका सक्रिय योगदान रहा।

'वैश्य हितकारी' का सम्पादन

सिंहल जी एक यशस्वी पत्रकार भी रहे। उन्होंने अ.भा. वैश्य महासभा के मुख्यपत्र 'वैश्य हितकारी' के साथ-साथ 'आदर्श', 'संकीर्तन', 'बालवीर' (बाल पत्रिका), 'अमरवाणी' तथा 'साप्ताहिक सन्मार्ग' का कुशलतापूर्वक सम्पादन किया।

सिंहल जी एक राष्ट्रवादी-ओजस्वी कवि तथा सक्षम निबन्ध लेखक थे। उनकी 'कौन बनोगे', 'बड़ों का बचपन' तथा कुछ अन्य बाल साहित्य की पुस्तकों को जहाँ सरकार द्वारा पुरस्कृत किया गया वहीं, 'हमारे बालक, हमारी बालिकाएँ, क्रांतिकारी बालक, बच्चों के नेता कन्हैया, बालक सुभाष, ओ बच्चे तुम्हें सुनाएं' (भगवान श्री राम की काव्यमय

कथा), धर्मवीर हकीकत, झाँसी की रानी, वीर मंदिर, 1857, सोमनाथ, झेलम का मोर्चा, हल्दीघाटी, हिन्दू एशिया, गोरे पादरियों के काले कारनामें, क्या सारा हिन्दुस्तान दारूल इस्लाम बनेगा जैसी दर्जनों प्रेरक पुस्तकें लिखकर हिन्दी साहित्य की अभिवृद्धि में उल्लेखनीय योगदान भी किया। उन्होंने सनातन-धर्म, हमारे मंदिर, गंगाजल, तुलसी, अवतार, श्राद्ध, गाय आदि छोटी-छोटी पुस्तिकाएँ भी लिखीं, जिनसे पाठक भारतीयता तथा धर्म का महत्त्व समझ सकें।

सिंहल जी राष्ट्रीयता के मुखर स्वर थे। उन्होंने अपनी 'चित्रकार' कविता में आह्वान किया था :–

रे चित्रकार! रे चित्रकार!
क्या विचित्र करता है पागल!
सरिता का यह सुन्दर तीर।
वृक्षावलि पर कलरव करते,
मोर, चकोरी, मैना, कीर।।
वासंती ऋतु की बहार। रे चित्रकार!......
समय हो चुका इन चित्रों का,
अब न चाहियें ऐसे चित्र।
चित्रित कर यदि कर सकता है,
वीर भाव के चित्र विचित्र।
समर क्षेत्र और रक्तधार।
रे चित्रकार!......

चित्रकार को सम्बोधन करके हमारे कवि ने जो पंक्तियाँ कही हैं उनमें ओज है, जीवन है और प्रेरणा है। इस प्रकार की प्रेरक पंक्तियाँ कवि ने कितनी ही कविताओं में लिखी हैं। कवि को सम्बोधन करते हुए उन्होंने कहा है–

अरे कवि! लिख जाग्रति का गान
सुनकर जिसे त्याग दे निद्रा भारत की सन्तान।

और गायक से कहते हैं :-

गादे, गादे, गायक! गादे
वह जाग्रति का अमरगीत जो जीवन ज्योति जगा दे।
मुर्दों में जीवन ला दे।।

सिंहल जी की वाणी में एक आवाज है, ऐसी आवाज जो बढ़ने का सन्देश देती है। अपने क्षेत्र में आगे बढ़ते हुए सिंहल जी ने बार-बार दूसरों को भी आगे बढ़ने के लिए उकसाया है।

हिन्दू और हिन्दू वीरों की ऐतिहासिक चेतना सिंहल जी की वाणी से बार-बार बरसी है। आपकी 'कलिका' पुस्तक कुछ कविताओं और 'शिवा' काव्य में इन्हीं भावों का प्रतिबिम्ब है।

हिन्दू संस्कृति का स्वरूप उन्हीं के शब्दों में देखिये :-

स्वयं भी जीओ और दूसरे को जीने दो,
यही सिद्धान्त था, मेरी दिव्य संस्कृति का।
इसके अनुयायियों ने, भारत के हिन्दुओं ने,
विश्व को दिया था ज्ञान, वाणी के द्वारा ही।
हाथों में वेद और वाणी में वेद घोष
वैदिक का चिन्ह था।
धर्म और ज्ञान के प्रकाश के प्रदान में
हमने न हाथों में खड्ग कभी थामी थी,
हमने तो संस्कृति की पावन सुवेदी पर
मरना ही सीखा था।

उन्होंने लिखा था :-

अतः कर्त्तव्य है हमारा यह सर्वप्रथम
अपनी इस संस्कृति का भूतल पर प्रसार करें।
जग को दिखलायें, बतलायें और समझायें
इसकी महत्ता दिव्य।
जिससे अशान्तिमय जगति में शान्ति हो

छूट कर गिर पड़ें
भूतल के हाथों से।
घातक सभी अस्त्र-शस्त्र
कालरूप 'एटम बम'।

कितनी उदार और महान् है संस्कृति यह। हिन्दू की ही नहीं मानवता की संस्कृति है यह। इसी की रक्षा के लिये, मानवता के हित के लिए हिन्दू को जगाना चाहते थे सिंहल जी। हिन्दू के सो जाने से इसी के नाश हो जाने का भय था उन्हें। यदि हिन्दू सोता है तो मानवता सोती है, हिन्दू जागता है तो मानवता जागती है। इसी से वे हिन्दू को पुकार कर कहते हैं :-

तेरे इस सोने सोने में,
वह नष्ट हुई संस्कृति महान्।
जिसके प्रकाश में देता था,
तू सारे जग को ज्ञान दान।

इसी हिन्दुपन के, हिन्दू संस्कृति के अविराम गायक हैं सिंहल जी।

सिंहल जी सिद्धान्त हीन ढुलमुल हृदय के कवि नहीं थे। उनका अपना एक ध्येय था। ध्येय के प्रति निष्ठा थी, एक लक्ष्य था, एक मार्ग था और यही वस्तु है जो उन्हें अपने पथ से विचलित नहीं होने देती। उनके सामाजिक एवं कवि जीवन का एक ही मूल मंत्र है :-

तू एक मार्ग अपनाले
पन्थी! एक मार्ग अपनाले
एक लक्ष्य रख सम्मुख, चल पड़ उस पर पथिक सयाने!
सुख-दुःख, नन्दन-रौरव, पथ के जाने अनजाने॥
देख न सम्मुख खड़ी दानवी,
देवी, या नर वाले। पन्थी........

और यही रहस्य है, उनके एक निश्चित मार्ग पर सतत् चलते रहने का। वे जब तक लक्ष्य को नहीं पा लेते तब तक मार्ग बदलने का कोई प्रश्न ही नहीं उठता। जिसके पथिक को यह घूंटी पिला दी गई है, कि-

मर-मर जीना बढ़ते जाना
जब तक लक्ष्य न पा ले। पन्थी......

यह लक्ष्य तक पहुंचने से पूर्व अपने मार्ग से तिल भर भी किस प्रकार हट सकता है। एक महान् जीवन का, अध्यवसायी जीवन का वस्तुतः यही आदर्श है। सिंहल जी इसी आदर्श को सामने रख कर चलने वाले पथिक थे। उनका कवि एक निश्चित ध्येय के लिये कविता के क्षेत्र में उतरा है। उसका एक ही लक्ष्य है :-

'युग-युग से सोया है हिन्दू मैं उसे जगाने आया हूँ'
इसके जो बच्चे चुने गये यवनों द्वारा दीवारों में।
इसकी जो बच्ची राख हुई जल जौहर के अंगारों में॥
इसके अपने जिन लालों के सर बहे खड्ग की धारों में
जिनके शरीर का मांस नुचा चिमटों से कारागारों में॥
उन सबने जो सन्देश दिये, मैं वही सुनाने आया हूँ।
सदियों से सोया है हिन्दू मैं उसे जगाने आया हूँ।

इस प्रकार सिंहल जी की कविताओं से लाखों युवक प्रेरणा लेकर राष्ट्र-धर्म के मार्ग के पथिक बने।

सन् 1965 में अग्रवंश की यह महान् विभूति केवल 55 वर्ष की आयु में दिवंगत हो गई थी। उनका साहित्य, पत्रकारिता तथा समाज सेवा के इतिहास में हमेशा नाम अमर रहेगा।

—*—

> भगवान की स्मृति मंगल स्वरूप है। भगवान का स्मरण करते ही सारी प्रतिकूलता अनुकूल हो जाती है, विष अमृत हो जाता है, शत्रु मित्र बन जाते हैं और जीवन में आनन्द ही आनन्द छा जाता है।

महान् वैज्ञानिक डॉ. आत्माराम

डॉ. आत्माराम भारत के महानतम अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त वैज्ञानिकों में प्रमुख है। उनका जन्म 12 अक्टूबर 1908 को जिला बिजनौर के पिलाना गांव में अग्रवाल परिवार में हुआ। कानपुर से बी.एस.सी. करने के बाद उन्होंने इलाहाबाद से एम.एस.सी. और डाक्टरेट की डिग्री ली।

भारत की प्रथम चार प्रयोगशालाओं की स्थापना हुई तो कलकत्ता में काँच व ताम्रचीनी की केन्द्रीय प्रयोगशाला स्थापित करने का काम डॉ. आत्माराम को ही सौंपा गया। पूरे देश में घूमकर उन्होंने पाया कि देशी बोतलों की किस्म अच्छी न होने से अच्छी बोतलें बाहर से आयात की जाती हैं। अपने अनुसंधान से यह दोष सुधार कर उन्होंने देश में ही अच्छी बोतलों के निर्माण का मार्ग खोल दिया। इसके बाद ताँबे के आक्साइड से सेलीनियम का विकल्प खोजकर उन्होंने फिरोजाबाद के चूड़ी उद्योग की समस्या हल की।

देश को डॉ. आत्माराम की प्रमुख उपयोगी देन है – चश्मों, सूक्ष्मदर्शी यंत्रों, दूरबीनों आदि के लिए ऑपटिकल ग्लास। यहाँ शुद्ध काँच बनाकर उन्होंने भारत को संसार के अग्रिम देशों की पंक्ति में खड़ा कर दिया। 1952 से 1966 तक वह सेंट्रल ग्लास एंड सिरेमिक रिसर्च इंस्टीट्यूट के निदेशक रहे, फिर तत्कालीन शिक्षा मंत्री श्री छागला उनके काम से प्रसन्न हो उन्हें महानिदेशक बनाकर दिल्ली ले आए। ब्रिटेन के

प्रसिद्ध वैज्ञानिक लार्ड ब्लैन्कट ने तो उनकी प्रशंसा में यहाँ तक कहा, 'काश ब्रिटेन में हमारे पास भी एक आत्माराम होता।'

इसके बाद तो उस गाँधी टोपीधारी सीधेसादे देहाती वैज्ञानिक पर विदेशों से सम्मानों की वर्षा होने लगी। भारत में अन्य पुरस्कार के अलावा उन्हें एक लाख रुपये के पहले अणुव्रत पुरस्कार से भी सम्मानित किया गया, जो उन्होंने मंच पर ही आचार्य तुलसी को जनसेवा के लिए अर्पित कर दिया। देश के गौरव डॉ. आत्माराम भारत के प्रमुखतम वैज्ञानिकों में से एक थे। उनकी गणना विश्व के अग्रणी काँच प्रौद्योगिकी अनुसंधान परिषद के महानिदेशक और भारत सरकार के सचिव पद से अवकाश ग्रहण करने के बाद भी उन्होंने कई महत्त्वपूर्ण पदों पर कार्य किया। वह राष्ट्रीय विज्ञान व प्रौद्योगिकी समिति के अध्यक्ष और परमाणु उर्जा आयोग के सदस्य भी रहे।

एक महान् वैज्ञानिक के साथ महान् चिंतक के रूप में भी उन्होंने राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय ख्याति अर्जित की। वे भारतीय दर्शन और आध्यात्मिकता से ओत-प्रोत थे। ऐसे महापुरुष पर अग्रवाल समाज को गर्व है।

—*—

जो मिलने पर सदैव खुशी दे वह सज्जन है, जो मिलने पर दुःख दे वह दुर्जन है, संसार से जाना ऐसा हो कि अपनों की आंखों में आँसू हो।

* * *

जिस आदमी की आदत सबके साथ प्यार करने की, अच्छा व्यवहार करने की है, उसे सारे अच्छे लोग मिलेंगे, बुरा कोई मिलेगा ही नहीं।

अग्रविभूति लाला देसराज चौधरी

श्री देसराज चौधरी का जन्म 16 सितम्बर, 1909 को पटियाला रियासत के बमाल नामक गाँव में लाला दीनानाथ जी के घर हुआ था। आपकी प्रारम्भिक शिक्षा गांव् की पाठशाला में ही हुई। तदनन्तर लुधियाना के आर्य हाई स्कूल में दसवीं तक शिक्षा प्राप्त की। आप हमेशा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण होते रहे। आपकी प्रतिभा से प्रभावित होकर आपको उसी स्कूल का प्रबन्धक नियुक्त किया गया। इस स्कूल में आर्य समाज के यशस्वी नेता स्वामी श्रद्धानंद सरस्वती के धार्मिक विचारों का गहरा प्रभाव पड़ा। वहाँ महात्मा गाँधी जी से प्रेरित होकर देश की स्वतंत्रता और उसके बाद लोकतांत्रिक मूल्यों की रक्षा के लिए जीवन के अंतिम क्षणों तक सतत् संलग्न रहे। इसके उपरान्त दिल्ली आकर आपने कमर्शियल कॉलेज में दाखिला लिया और चैम्बर ऑफ कामर्स की एकाउंटेंसी और अर्थशास्त्र की उच्चतर परीक्षाएँ प्रथम श्रेणी में पास की। अपने सभी कार्य स्वयं करने को वे अधिमान देते थे। यही कारण है कि आपने शार्ट हैंड, टाइपिंग, बुक कीपिंग, एकाउंटेंसी, बिजनेस मैथड्स, कॉमर्शियल प्रेक्टिस आदि विषयों पर महारत हासिल की। आपने सन् 1922 से खादी पहनने का व्रत लिया तो उसे आजीवन निभाया।

श्रद्धेय श्री देसराज चौधरी वास्तव में एक महामानव थे। महामानव इसलिए क्योंकि उन्होंने अपने जीवन में जो कुछ भी किया वह सबके समक्ष खुली किताब की तरह प्रकट रखा। अपने परिवार के लिए (उसके निर्माण के लिए) भी अवश्य कुछ समय दिया, परन्तु जीवन के तीन-

चौथाई भाग को उन्होंने देश की आजादी के लिए तथा समाज कल्याण के कार्यों में लगाया। विशेषकर देश की राजधानी दिल्ली के लिए तो उन्होंने एक शिल्पकार की भाँति इसको सुन्दर से सुन्दर रूप देने, इसकी समस्याओं को सुलझाने के लिए अपना जीवन ही समर्पित कर दिया। सन् 1947 में भारत विभाजन के कारण आये शरणार्थी भाइयों को बसाने के लिए आपने अथक परिश्रम किया। आनरेरी मजिस्ट्रेट होने के नाते उनकी सुरक्षा की व्यवस्था कीं। दिल्ली की नगर पालिका से लेकर दिल्ली नगर निगम के क्रमशः वाइस चेयरमैन एवं उपमहापौर आदि पदों को उन्होंने जहाँ अलंकृत किया, वहीं इन पदों की गरिमा को बढ़ाया भी, जिसके कारण दिल्लीवासी उनकी सेवाओं को कभी भुला नहीं सकेंगे।

चौधरी जी ने अपनी छात्र अवस्था से ही बापू (पूज्य गाँधी जी) के चरण चिह्नों पर चलने का व्रत लिया, जो आजीवन पूरी निष्ठा से निभाया। जेल यातनाएँ सहीं और अपने अनुजों को इसी मार्ग पर चलने की प्रेरणा दी। दिल्ली में कांग्रेस के टिकट पर आजादी के पूर्व नगर पालिका के सबसे पहले सदस्य निवार्चित हुए। भूमिगत बैठकों का संचालन किया जिससे दिल्ली में अंग्रेजी शासन को बहुत बड़ा धक्का लगा। कर्मठ कार्यकर्त्ताओं में कोई ऐसा नहीं जिसका मार्ग निर्देशन न किया हो एवं जनसेवा की राह पर चलने का सबक न दिया हो। कई प्रान्तों के भू. पू. मुख्यमंत्रियों ने दिल्ली आकर चौधरी साहब के ही चुनाव में भाग लेकर चुनाव जीतने का अनुभव प्राप्त किया। राष्ट्रीय कांग्रेस दिल्ली के प्रधान चौधरी साहब का कार्यक्षेत्र इतना विस्तृत था कि वह राष्ट्रीय कांग्रेस दिल्ली के प्रधान, उप-प्रधान एवं केन्द्रीय सभा के प्रधान, सार्वदेशिक सभा, आर्य प्रतिनिधि सभा के अंतरंग प्रतिष्ठित सदस्य बने रहे।

चौधरी जी राष्ट्रीय जीवन में जहाँ गांधीवादी थे वहीं धर्मनिष्ठ, सदाचार, अनुशासन एवं परोपकार-प्रियता की भावना को उन्होंने स्वनामधन्य स्वामी श्रद्धानंद जी महाराज के सान्निध्य में रहकर अपने जीवन में उतारा तथा जीवन भर निभाया। हिन्दुओं में आई रूढ़िवादिता का घोर

विरोध किया एवं सनातन वैदिक धर्म की पुनर्स्थापना का सूत्रपात किया। इस कार्य की प्रेरणा उन्हें निश्चय ही उनकी सहधर्मिणी श्रीमती चन्द्रावती चौधरी के प्रिय भजन द्वारा मिली होगी जिसे वे प्रायः गुनगुनाया करती थीं। जीवन में अगर वह किन्हीं संस्थाओं के सदस्य थे, तो केवल दो ही संस्थाएँ उनके लिए श्रद्धास्पद थीं– आर्य समाज और राष्ट्रीय कांग्रेस, जिनके वे आजीवन सदस्य रहे।

दिल्ली की लगभग तमाम सामाजिक, राजनीतिक एवं धार्मिक विभूतियों से उनका निकट सम्पर्क था। राष्ट्रीय स्तर पर पं. जवाहर लाल नेहरू, पं. गोविन्दबल्लभ पंत, डॉ. राजेन्द्र प्रसाद, श्री गुलजारी लाल नंदा, श्री लाबहादुर शास्त्री, सुश्री राजकुमारी अमृतकौर, श्री कैलाशनाथ काटजू, श्रीमती ललिता शास्त्री, श्री वी.वी. गिरी, श्री मोरारजी देसाई, श्री यशवन्तराव चव्हाण और श्रीमती इंदिरा गाँधी का स्नेह और समादर आपको प्राप्त हुआ। सन् 1973 में श्रीमती इंदिरा गाँधी जी ने एक विशेष अभिनन्दन समारोह कर श्री देसराज चौधरी को वरिष्ठ स्वतंत्रता सेनानी के रूप में सम्मानित किया था।

चौधरी जी पूर्ण ईश्वरभक्त एवं पूर्ण याज्ञिक रहे। पंच-यज्ञों को अपने जीवन में मूर्त रूप दिया। ईश्वर भक्त के साथ-साथ वह सच्चे मातृ-पितृ भक्त भी थे। अतिथि सत्कार में तो उनका कोई सानी न था। अछूतोद्धार के कार्यों में उनकी सहज अभिरुचि थी। अनाथ बालक-बालिकाओं को वे देश की अमूल्य धरोहर समझते थे। उन्होंने कभी ऐसे बच्चों को अनाथ नहीं कहने दिया। इसलिए 40 वर्ष तक आर्य अनाथालय के प्रधान रहे। आर्य अनाथालय की बहुमुखी उन्नति का श्रेय उनको जाता है। आर्य बाल गृह, आर्य कन्या सदन, छात्रावास, चन्द्र आर्य विद्या मंदिर, चन्द्रावती चौधरी आश्रय गृह के वे संस्थापक थे तथा इन्हीं कार्यों के लिए तन-मन-धन उन्होंने न्यौछावर कर दिया।

चौधरी जी को सहस्रों दीन-दुःखी अपने जीवन में सदा याद रखते हैं जिनको उन्होंने स्वावलम्बी बनाकर सद्गृहस्थ एवं अच्छे नागरिक

बनाया। अपने परिवार का पालन करने वाले संसार में 99 प्रतिशत व्यक्ति होते हैं, परन्तु असहायों, निर्बलों, मातृ-पितृहीन बालक-बालिकाओं के प्रति माता-पिता का कर्त्तव्य निभाने वाले दिल्ली में ही नहीं शायद देश में वह अकेले व्यक्ति थे। वास्तव में वे सेवा की प्रतिमूर्ति थे।

उनके बनाये हुए स्मारक सदैव समाज सेवियों के लिए ज्योति स्तम्भ बनकर मार्गदर्शन करते रहेंगे। उन्होंने जो भी धन जिस मद में प्राप्त किया उसी मद में तुरन्त व्यय कर दिया और उनके कार्य पूरे होते गये। जनता का सबल सहयोग उन्हें मिलता रहा। वे अपने निकट मित्रों को सदैव कहा करते थे कि जनता के धन को समाज के कार्यों में तुरन्त ही आहूत कर देना चाहिए, अन्यथा वह धन सर्वनाश करने वाला बन जाता है। कोई व्यक्ति जीवन में स्वयं संस्था का रूप बनकर कोई मूर्त उदाहरण प्रस्तुत कर सकता है, तो वह चौधरी जी ही थे।

वे जीवन के अंतिम समय तक कुरीतियों के विरुद्ध लड़ते रहे। दहेज-प्रथा के तो वे घोर विरोधी थे। अपने विवाह में आपने जिस सादगी का परिचय दिया उसका यह प्रमाण है कि ससुराल वालों के पक्ष से मात्र एक घड़ी ही पत्नी को उपहारस्वरूप लेने दी। वे वैश्य समाज को कुरीतियों से मुक्त देखने के आकांक्षी थे।

वे कांग्रेस के गिरते हुए स्तर से हमेशा चिन्तित रहते थे। स्पष्टवादी, निर्भीक व संवेदनशील होने के कारण वे समय-समय पर चाटुकार कांग्रेसियों के प्रति अपना विरोध प्रकट करते रहे। परिणामतः 1975 के आपातकाल की प्रथम रात्रि को 103 डिग्री बुखार में उन्हें उठाकर जेल में डाल दिया गया। वे कांग्रेस में रहकर भी दलगत व क्षुद्र राजनीति से ऊपर थे और राष्ट्रहित को सर्वोपरि मानते थे।

त्रिकालदर्शी चौधरी जी को अपने जीवन के सम्बन्ध में कितनी आयु शेष है इसका आभास कई वर्षों पूर्व हो गया था। जो कार्य वह पूर्ण करना चाहते थे रोग शैया पर पड़े रहकर भी उसकी पूर्ति में संलग्न रहे। संस्था के वार्षिकोत्सव पर उन्होंने उपराज्यपाल श्री जगमोहन जी के समक्ष खुले

शब्दों में कहा– अब मेरा शरीर बहुत दिन तक साथ न दे सकेगा। जनता जनार्दन की सहायता से जो कुछ भी जनता की सेवा कर सकता था, उसके परिणामस्वरूप ये संस्थाएँ आपके सामने हैं। इनको जीवित रखना, इनको प्रगति के पथ पर अग्रसर करना अब मेरे वश का नहीं रहा। जो मैं कर सकता था वह किया, अब ईश्वर की इच्छा है कि मैं चिरशांति को प्राप्त करूँ। अतः प्रयाण करके ईश्वर की शरण लूं। मुझे आज्ञा दीजिए और अन्तिम संस्थाओं का दायित्व आप सब संभालिये। वे 11 नवम्बर, 1983 को प्रातः आठ बजे अपने जीवन को विराम देकर स्थायी शान्ति प्राप्त कर गये।

चौधरी जी का भौतिक शरीर भले ही हमारे बीच नहीं है परन्तु उनका यशरूपी शरीर तो सदा हम सबके साथ है। उस अमर शरीर का कीर्ति-स्तवन उनके अनुयायी अपने मन-मंदिर में नित्य करते रहेंगे। उनके बताये मार्ग पर चलते हुए उनके अधूरे कार्यों को पूर्ण करने में स्वयं यज्ञरूप होने में सफल होंगे।

—*—

ईमानदार होने का अर्थ है– हजार मनकों में अलग चमकने वाला हीरा।

★ ★ ★

सज्जन अमीरी में गरीब जैसे नम्र और गरीबी में अमीर जैसे उदार रहते हैं।

★ ★ ★

गृहस्थ एक तपोवन है, जिसमें संयम, सेवा और सहिष्णुता की साधना करनी पड़ती है।

श्री केदारनाथ अग्रवाल

हिन्दी के प्रगतिवादी काव्य के स्तंभ, सोवियत लैण्ड नेहरू पुरस्कार, साहित्य अकादमी पुरस्कार आदि से सम्मानित श्री केदारनाथ अग्रवाल का जन्म 1 अप्रैल, 1911 को बांदा के एक सामान्य परिवार में हुआ। आपने प्रारम्भिक शिक्षा गाँव में, बी.ए. परीक्षा इलाहाबाद विश्वविद्यालय तथा विधि परीक्षा डी.ए.वी. कॉलेज, कानपुर से उत्तीर्ण की। आपने वकालत को व्यवसाय के रूप में अपनाया किन्तु साहित्य में रुचि होने के कारण 1931 में ही कविताओं का लिखना प्रारम्भ कर दिया था। आपने प्रारम्भिक रचनाएँ बालेंदु के नाम से लिखी। कानपुर में रहते हुए आपका सम्पर्क सुप्रसिद्ध लेखक डॉ. रामविलास शर्मा से हुआ, परिणामस्वरूप आप हिन्दी में प्रगतिवादी लेखन की ओर उन्मुख हुए और आपकी गणना हिन्दी के प्रमुख कवियों में होने लगी।

वैसे तो आपने 1931 में ही लिखना प्रारम्भ कर दिया था किन्तु आपकी सबसे पहली कृति 'युग की गंगा' 1947 में छपी। तब से लेकर अब तक केदारनाथ अग्रवाल ने 18 कविता संग्रह लिखे, जिनमें प्रमुख हैं– फूल नहीं, रंग बोलते हैं, छात्र का आइना, शुभ मेहन्दी, बोलो बोल, अबोल, कोयल कुहकी, पंख और पतवार, मार, प्यार और थापें, कहे केदार खरी-खरी, आत्मगंध, नींद के बादल, देश-देश की कविताएँ आदि उनका अनूदित संकलन है।

कविताओं के अलावा केदारनाथ जी ने अनेक समीक्षाएँ, लेख, निबंध, यात्रा-संस्मरण आदि भी लिखे जिनमें समय-समय पर, विचार बोध, विवेक विवेचन प्रमुख हैं। 'बस्ती खिले गुलाबों की' में आपके रूस यात्रा के संस्मरण हैं, आपके और श्री रामविलास शर्मा के मध्य हुए पत्र-व्यवहार को लेकर 'मित्र संवाद' के नाम से एक पत्र संकलन भी प्रकाशित हुआ है।

श्री केदारनाथ जनसामान्य के कवि थे। आपने श्रमिकों, किसानों एवं आम आदमी के जीवन को लेकर विपुल साहित्य का सृजन किया और उसे सहज तथा सरल रूप से अभिव्यक्ति देकर काव्य के उच्च शिखर पर पहुँच गए। आप आजीवन प्रगतिशील लेखक संघ-से जुड़े रहे और उसकी गतिविधियों में विपुल योगदान दिया। बाद में इस संघ के बिखरने पर आपने 1969 में हिन्दी में प्रगतिशील लेखकों का एक सम्मेलन बांदा में बुलाया, जो बांदा सम्मेलन के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

आपने विभिन्न देशों एवं कवियों की रचनाओं का हिन्दी में अनुवाद किया। इसी प्रकार आपकी रचनाओं का भी दुनिया की अनेक भाषाओं में अनुवाद हुआ, जिनमें रूसी, जर्मन, चैक, अंग्रेजी भाषाएँ प्रमुख हैं।

उच्च कोटि के काव्य लेखन एवं साहित्य सृजन के कारण श्री अग्रवाल को समय-समय पर अनेक उच्च पुरस्कार प्राप्त हुए। 1973 में उन्हें सोवियत लैण्ड, नेहरू पुरस्कार से सम्मानित किया गया। साहित्य अकादमी ने उन्हें 'अपूर्वा' कृति पर पुरस्कार प्रदान किया। इनके अलावा उन्हें हिन्दी साहित्य सम्मेलन, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान की ओर से भी सम्मानित किया गया। मध्य प्रदेश सरकार ने उन्हें मैथिलीशरण गुप्त सम्मान से सम्मानित किया। बुंदेलखण्ड विश्वविद्यालय ने आपको अपनी सर्वोच्च उपाधि डी.लिट् उन्हें मानद रूप से प्रदान की। 70 वर्ष की अवस्था पूर्ण करने पर हिन्दी के साहित्यकारों की ओर से उनका सामूहिक रूप से भोपाल में अभिनन्दन किया गया।

इस प्रकार उन्होंने अनेक उच्च कोटि के पुरस्कार प्राप्त कर हिन्दी साहित्य का मान बढ़ाया। वे वास्तव में प्रगतिवादी काव्यधारा के प्रतिनिधि कवि थे। श्री केदारनाथ अग्रवाल का 22 जून को 89 वर्ष की अवस्था में देहावसान हो गया। उनके जाने से अग्रवाल समाज का एक महान् लेखक, कवि और साहित्यकार ही नहीं, हिन्दी जगत का एक यशस्वी पुरोधा भी चला गया। उनके निधन से अग्रवाल समाज एक गौरवपूर्ण स्तम्भ से वंचित हो गया।

—*—

स्वतंत्रता सेनानी कप्तान श्री दुर्गाप्रसाद चौधरी

श्री दुर्गाप्रसाद चौधरी राजस्थान के सशक्त पत्रकारों में विशिष्ट स्थान तो रखते ही हैं किन्तु संग्राम में भी उनकी भूमिका एक सामान्य स्वयं सेवक से लेकर सर्वाधिकार सम्पन्न डिक्टेटर तक के रूप में बड़ी ही उल्लेखनीय रही है। आप राजस्थान प्रदेश के डूंगरपुर जिले के ग्राम खेड़लाई भील के अग्रवाल परिवार के थे। 1930 में वे कांग्रेस सेवादल के कप्तान बने और स्वतंत्रता प्राप्ति तक निरन्तर 17 वर्ष तक इस पद पर रहते हुए पद की मर्यादा और गौरव को बढ़ाया। इसीलिए उनकी ख्यांति कैप्टन के रूप में अधिक है। एक साधन विहीन सामान्य परिवार में जन्म लेकर आपने राष्ट्र-सेवा और पत्रकारिता के क्षेत्र में जो आदर्श उपस्थित किये हैं, वे वरेणय हैं, अभिनन्दनीय हैं। अपने बड़े भ्राता श्री रामनारायण चौधरी के माध्यम से वे देश सेवा के क्षेत्र में आये और 1930 में घर बार छोड़ आजादी के सक्रिय सेनानी हो गये।

आपका पूरा जीवन विदेशी दासता और अन्याय के विरुद्ध संघर्ष की अविरल गाथा है। उनकी समाज सेवा भी किसी से कम नहीं। अनेक वर्षों तक हटूडी के गांधी आश्रम में रहकर सेवा की, साबरमती और सेवा ग्राम में रह कर गांधीजी के रचनात्मक कार्यों को बल प्रदान किया। डूंगरपुर के आदिवासी क्षेत्रों में रहकर मानव सेवा का उच्च आदर्श प्रस्तुत किया है। सेवाभाव आपको विरासत में मिला है और ऐसा लगता है कि आपका सम्पूर्ण जीवन ही सेवा के लिए समर्पित है।

देश के लिए जेल जाने वालों में आप कभी पीछे नहीं रहे। आपको इसी संदर्भ में 6-6 माह की दो बार, 2 वर्ष की एक बार और 3 वर्ष की एक बार सजा हुई और आपने जेल यातनाओं को हंसते-हंसते सहन कर अपनी देशभक्ति का परिचय दिया। आपकी पत्नी विमला देवी भी इस क्षेत्र में सक्रिय सहयोगिनी रही हैं। 1945 में अनेक स्वतंत्रता सेनानियों को रिहा कर दिया गया किन्तु आपको जेल में बन्द ही रखा गया क्योंकि ब्रिटिश सरकार की दृष्टि में आप सबसे खतरनाक व्यक्तियों में थे। सन् 1930 से 1947 तक अजमेर नगर कांग्रेस के मंत्री रूप में भी आपने स्वतन्त्रता संग्राम में उल्लेखनीय भूमिका निभाई।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद आपने "दैनिक नवज्योति", नवज्योति हैरल्ड आदि पत्रों के माध्यम से राष्ट्र की ठोस सेवा की हैं। इस रूप में अपने अस्तित्व को बनाये रखने के लिए यद्यपि उन्हें परिस्थितियों से कठोर संघर्ष करना पड़ा है किन्तु अग्रवाल समाज इस बात पर गौरव का अनुभव कर सकता है क्रि पत्रकारिता के इस लम्बे काल में राष्ट्रीयता के इस ध्वज वाहक ने अपनी गौरव गरिमा और छवि को ज्यों का त्यों बनाये रखा था।

आपके यशस्वी पुत्र श्री दीनबन्धु चौधरी भी राजस्थान के सब से पुराने समाचार-पत्र दैनिक नवज्योति के प्रबंध सम्पादक हैं। श्री दीनबन्धु जी ने "कप्तान दुर्गाप्रसाद चौधरी अभिवादन और अभिनन्दन" पुस्तक आप पर लिखी है। जो अग्रवाल समाज ही नहीं समूचे मानव समाज के लिए पठनीय तंथा अनुकरणीय कृति है।

—*—

अच्छी पुस्तकें जीवन्त देव प्रतिमाएँ हैं। उनकी आराधना से तत्काल प्रकाश और उल्लास मिलता है।

महान् गौभक्त शिरोमणि : श्री सीताराम खेमका

अग्रवाल समाज ने हर क्षेत्र की ऐसी-ऐसी अग्रणी विभूतियों को जन्म दिया जिन्हें इतिहास में उल्लेखनीय स्थान प्राप्त हुआ है। समाज सेवा, धर्म सेवा, अध्यात्मिक साधना तथा गौ सेवा के क्षेत्र में अपनी अग्रणी भूमिका अदा करने वाले श्री सीताराम खेमका उन्हीं दिव्य विभूतियों में थे।

श्री सीताराम जी का जन्म 20 जनवरी 1911 को मुंगेर (बिहार) के एक संस्कारी सनातनी अग्रवाल परिवार में हुआ था। इनके पूर्वज पितामह लाला बच्छराज जी ने फतेहपुर शेखावटी (राजस्थान) से मुंगेर आकर वस्त्र व्यवसाय शुरू किया था। उन्हीं के पुत्र श्री पूर्णमल जी के घर सीताराम जी का जन्म हुआ। पिता पूर्णमल तथा माता मोहरी देवी से उन्हें ईश्वर निष्ठा, परोपकार तथा सेवा भावना के संस्कार मिले। पितामह श्री रामकृष्णदास तथा पिता श्री पूर्णमल गौ-ब्राह्मणों के परम भक्त थे। सीताराम जी को गौ-ब्राह्मण भक्ति उत्तराधिकार में प्राप्त हुई।

भूकम्प में सेवा

14 जनवरी सन् 1934 को बिहार में एक भूकम्प आया। मुंगेर के असंख्य मकान ध्वस्त हो गये। खेमका परिवार का मकान भी गिर गया, किन्तु परिवार की ठाकुरवाड़ी जहाँ भगवान शंकर तथा शालिग्राम जी विराजमान थे पूरी तरह सुरक्षित रहे। इस चमत्कारी घटना ने सीताराम जी के हृदय में भगवद् भक्ति की भावना और पुष्ट कर दी। सीताराम जी मुंगेर में भूकम्प पीड़ितों की सेवा में जी-जान से जुट गये। इस संकट के समय उनकी पूर्ण रूपेण समर्पित भाव से की गई सेवा को देखकर सभी चकित

थे। श्री सीताराम जी स्वातंत्र्यवीर सावरकर आदि राष्ट्रभक्तों के संघर्षपूर्ण जीवन से प्रभावित हुये तथा 1942 के आंदोलन में उन्होंने सक्रिय भाग लिया। वीर सावरकर, पं. मदनमोहन मालवीय जी तथा डॉ. श्यामाप्रसाद मुखर्जी के सम्पर्क में आकर हिन्दू महासभा में शामिल हो गये। उन्हें हिन्दू महासभा की केन्द्रीय कार्यकारिणी में शामिल किया गया।

नोआखाली में हिन्दुओं की रक्षा

1947 में देश के विभाजन की घोषणा की गई, तो हिन्दू महासभा तथा धर्मसंघ ने भारत विभाजन का घोर विरोध किया। स्वामी करपात्री जी महाराज तथा स्वामी कृष्णबोधाश्रम जी महाराज के आह्वान पर 'भारत अखण्ड हो' का नारा लगाते हुए खेमका जी गिरफ्तार किये गये।

नोआखाली (पूर्वी बंगाल) में हिन्दुओं का नरसंहार किया गया तो हिन्दू महासभा ने खेमका जी के नेतृत्व में एक शिष्टमंडल नोआखाली भेजा। उन्होंने हिन्दू महिलाओं पर अमानवीय अत्याचार किये जाने के लोमहर्षक काण्ड के चित्र खींचे तथा केन्द्र सरकार को वहाँ की स्थिति से अवगत कराया।

नोआखाली से लौटने के बाद श्री खेमका जी को गिरफ्तार कर दो माह के लिए भागलपुर जेल में बन्द कर दिया गया। सन् 1950 में खेमका जी को पुनः गिरफ्तार कर मुंगेर जेल में बन्द कर दिया गया। दादा साहब आप्टे तथा हिन्दू महासभा व राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के अनेक कार्यकर्ता और नेता आपके साथ जेल में बंद थे। खेमका जी का गौदुग्ध तथा गंगाजल पान का नियम था। जब उन्हें जेल में गंगाजल उपलब्ध कराने से इन्कार कर दिया गया तो उन्होंने पांच दिन बिना अन्न-जल ग्रहण किये बिताए। तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्रप्रसाद खेमका जी के त्याग-तपस्यामय जीवन से सुपरिचित थे। उन्होंने राष्ट्रपति भवन से बिहार के मुख्यमंत्री डॉ. श्रीकृष्ण सिंह को फोन कर उन्हें स्नान तथा पीने के लिए गंगाजल तथा गौदुग्ध व फल उपलब्ध कराये जाने का आदेश दिया।

श्री खेमका जी का नियम था कि वे जेल के धन से प्राप्त किसी

वस्तु का उपयोग नहीं करते थे। गौदुग्ध तथा फलों का मूल्य अपने पास से अदा करते थे। कुछ दिन बाद उन्हें मुंगेर जेल से बक्सर जेल में भेज दिया गया। श्री सीताराम जी के ज्येष्ठ भ्राता श्री मनसुखराम खेमका जी ने अपने अनुज के अध्ययन के लिए गीता, भागवत, पुराण, मनुस्मृति आदि ग्रंथ जेल में भेज दिये। पूरे साढ़े चार माह तक श्री खेमका जी ने बक्सर जेल में साधना और अध्ययन कर कारागार को तपःस्थली बना दिया।

गौरक्षा आंदोलन के सेनापति

सन् 1955 में धर्मसम्राट स्वामी करपात्रीजी महाराज तथा स्वामी कृष्णाबोधाश्रम जी महाराज के आह्वान पर धर्मसंघ ने कलकत्ता, मुंबई, दिल्ली एवं अहमदाबाद में गौहत्याबंदी आंदोलन चलाने की घोषणा की। अखिल भारतवर्षीय गौहत्या विरोधी अहिंसात्मक धर्मयुद्ध समिति का खेमका जी को प्रधान मंत्री नियुक्त किया गया। उन्होंने कलकत्ता पहुँचकर 'माखन खाओ-गाय बचाओ' का उद्घोष करते हुए मुख्यमंत्री डॉ. विधानचन्द्र राय से भेंट की। शंकराचार्य स्वामी स्वरूपानंद सरस्वती जी के साथ सत्याग्रह करते हुए गिरफ्तार किये गये तथा जेल यातनाएं सहन कीं। कलकत्ता में रहकर उन्होंने कई महीने तक गौहत्या बंदी सत्याग्रह चलाया। स्वामी करपात्री जी महाराज को गिरफ्तार कर लिया गया तो उनके आदेश पर श्री खेमका जी साधु के भेष में गुप्त रूप से आंदोलन को गति देते रहे तथा पुलिस के हाथ नहीं आये। श्री खेमका जी ने महान् गौभक्त लाला हरदेवसहाय, संत प्रभुदत्त ब्रह्मचारी तथा आध्यात्मिक विभूति भाई हनुमानप्रसाद पोद्दार के साथ मिलकर पूरे देश में गौ-हत्या बंदी की भावना पुष्ट करने में सक्रिय भूमिका निभाई।

सन् 1957 में लोकसभा के चुनाव हुए तो संत प्रभुदत्त ब्रह्मचारी जी, स्वामी करपात्री जी तथा लाला हरदेवसहाय आदि के आदेश पर श्री खेमका जी गौ-हत्या बंदी के प्रश्न को मुद्दा बनाकर इलाहाबाद के फूलपुर संसदीय क्षेत्र से नेहरू जी के विरुद्ध चुनाव मैदान में डट गये। उन्होंने संत

महात्माओं के साथ गाँव-गाँव पहुँचकर गौ-हत्या बंदी की आवाज मतदाताओं तक पहुँचाई। नेहरू जी जैसे लोकप्रिय व सशक्त नेता के विरुद्ध उन्होंने 85 हजार वोट प्राप्त किये तो पूरा देश स्तब्ध रह गया। सन् 1966 में देश के सभी सम्प्रदायों के धर्माचार्यों तथा विभिन्न संस्थाओं ने सर्वदलीय गौरक्षा महाअभियान समिति की स्थापना कर गौ-हत्या के लिए व्यापक अभियान चलाने का निर्णय लिया। श्री खेमका जी को इस समिति का मंत्री बनाया गया। आध्यात्मिक विभूति स्वामी करपात्री जी महाराज, शंकराचार्य स्वामी कृष्णबोधाश्रम जी महाराज, पुरी के शंकराचार्य स्वामी निरंजनदेव तीर्थ जी महाराज, भाई हनुमानप्रसाद पोद्दार एवं संत प्रभुदत्त ब्रह्मचारी प्रभृति धार्मिक विभूतियों ने इस आंदोलन का मार्गदर्शन किया। पुरी के शंकराचार्य, संत प्रभुदत्त ब्रह्मचारी, महात्मा रामचन्द्र वीर तथा आचार्य श्री धर्मेन्द्र महाराज ने अनशन किये। इस अभियान की कुशल आर्थिक व्यवस्था का श्रेय श्री खेमका जी को तथा श्री जयदयाल डालमिया जी को था।

इस आंदोलन में सक्रिय रहने के बाद उन्होंने अपना शेष जीवन काशीवास तथा धर्मसेवा में लगाने का संकल्प ले लिया था। श्री खेमका जी की धर्मपत्नी श्रीमती मणिदेवी अपने पति की तरह परम धार्मिक तथा सति-साध्वी महिला थीं। इसी प्रकार उनके एकमात्र सुपुत्र श्री राधेश्याम खेमका (सम्पादक 'कल्याण') धर्म, साहित्य, संस्कृति तथा गौ-सेवा के लिए पूर्णरूपेण समर्पित विभूति थे।

श्री खेमका जी अग्रवाल वैश्य समाज को जागरूक कर धर्म तथा संस्कृति की सेवा की ओर उन्मुख करने का समय-समय पर प्रयास करते थे। गौ-सेवा, दरिद्रनारायण (गरीबजनों) की सेवा तथा विशेषकर असहाय महिलाओं की सेवा की, वे सभी को प्रेरणा देते थे। 87 वर्ष की आयु में यह दिव्य विभूति काशीवास करते हुये श्रावण कृष्ण षष्ठी 2054 को शिवलोक प्रयाण कर गई।

—*—

स्वाधीनता सेनानी राष्ट्रपुरुष

डॉ. श्रीमन् नारायण अग्रवाल

सुप्रसिद्ध गाँधीवादी नेता, गांधीवादी सिद्धान्तों के सच्चे पालक, भाष्यकार तथा स्वाधीनता आन्दोलन में सक्रिय भागीदार डॉ. श्रीमन् नारायण अग्रवाल देश के शीर्षस्थ शिक्षा-सेवी तथा विद्वान थे। उनका जन्म जुलाई 1912 को इटावा में हुआ था। वे युवावस्था में ही महात्मा गाँधी से प्रभावित होकर स्वाधीनता संग्राम में कूद पड़े थे। उन्होंने अनेक बार जेल यातनाएँ सहीं। सेठ जमनालाल बजाज ने उनकी सादगी तथा राष्ट्रभक्ति से प्रभावित होकर अपनी पुत्री मदालसा का उनके साथ विवाह किया।

आप स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् सन् 1952 में लोक सभा सदस्य बने। 1964 में आपने नेपाल में भारत के राजदूत का पद सम्हाला। सन् 1967 से 1973 तक गुजरात के राज्यपाल रहे और बाद में योजना आयोग के सदस्य बने। आपका निधन 3 जनवरी 1978 को हो गया।

—*—

किसी का सुधार उपहास से नहीं, उसे नये सिरे से सोचने और बदलने का अवसर देने से होता है।

कुशल राजनीतिज्ञ अग्र गौरव

बाबू बनारसी दास जी (बुलन्दशहर)

बाबू श्री बनारसी दास का जन्म लाला रामजी लाल जी अग्रवाल के घर में दिनांक 8 जुलाई, 1912 को गाँव अटरावली जिला बुलन्दशहर में हुआ था।

आपने सन् 1930 से भारतीय स्वतंत्रता सेनानी के रूप में अंग्रेजों का विरोध प्रारंभ कर दिया। एक अंग्रेज को गुलावठी में गोली मार दी गई। हत्या के आरोप में श्री बनारसीदास भी गिरफ्तार हो गये। उस समय आप हाई स्कूल के छात्र थे। आपने डीडवाना में बम बनाने का प्रशिक्षण प्राप्त किया। सन् 1920, 1931 तथा 1942 के स्वाधीनता आन्दोलनों में सक्रिय भागीदारी के कारण आपको सजाएँ भुगतनी पड़ी। 1939 में आपने कांग्रेस के बड़े नेताओं को अपने मकान में ठहराया और अंग्रेजों के कोप के भाजन बने। सन् 1946 में आप उत्तर प्रदेश विधानसभा के सदस्य रहे। 1962-67 में उत्तर प्रदेश में कैबिनेट मंत्री बने। 1972 में राज्य-सभा के लिए निर्वाचित हुए। 1977 में उत्तर प्रदेश सरकार में मुख्यमंत्री बने।

आपके पुत्र श्री अखिलेश दास सांसद हैं तथा लखनऊ के मेयर भी रहे हैं। दूसरे पुत्र श्री हरेन्द्र अग्रवाल (मेरठ) राज्य सभा के सदस्य हैं।

श्री बनारसीदास का आकस्मिक निधन दिनांक 3 अगस्त, 1985 को हो गया। आपको आज भी बड़े सम्मान के साथ याद किया जाता है। आपकी कथनी और करनी एक ही थी। अग्रवाल समाज आप पर गौरवान्वित है।

—*—

अग्रविभूतिः वैदिक विद्वान
डॉ. लाडलीनाथ 'रेणु'

विदेशियों ने सुनियोजित षड्यन्त्र के तहत यह प्रचार किया था कि आर्य भारत में बाहर से आये तथा भारत में आकर बस गये। आर्य लोग शुरू में कच्चा मांस खाते थे, जंगली थे आदि-आदि।

यह सुनियोजित प्रचार यह सिद्ध करने के लिए था कि भारत हिन्दुओं का देश न होकर एक धर्मशाला या सराय है, जो बाहर से यहाँ आया बस गया। जिस प्रकार अंग्रेज व मुसलमान विदेशी थे, उसी प्रकार आर्य भी विदेशी थे। अंग्रेज आर्य व द्रविड़ का बखेड़ा खड़ा कर हिन्दुओं को आपस में बांटना भी चाहते थे।

अंग्रेजों के इस निराधार दुष्प्रचार का निराकरण अनेक विद्वानों ने किया तथा यह सिद्ध किया कि आर्य (हिन्दू) भारत के मूल निवासी हैं। हमारी वैदिक संस्कृति सबसे महान् है तथा भारत के मूल निवासियों, ऋषि-मुनियों ने ही संसार को सभ्यता व संस्कृति का पाठ पढ़ाया। उन्हें जंगली बताना इतिहास को झुठलाना है। इस दिशा में डॉ. लाडलीनाथ 'रेणु' द्वारा लिखित Indian Ansectors of Vedic Aryans शोधपूर्ण पुस्तक ने पूरे संसार के बुद्धिजीवियों को भारत की प्राचीनता स्वीकार करने को बाध्य किया। भारतीय विद्या भवन (मुम्बई) द्वारा प्रकाशित डॉ. रेणु के साहित्य के विदेशी भाषाओं में भी अनुवाद किये जा रहे हैं।

अग्रवाल समाज की महान् विभूति डॉ. लाडनीनाथ 'रेणु' का जन्म 31 दिसम्बर सन् 1914 को मेरठ में प्रतिष्ठित एडवोकेट लाला

रघुवरदयाल अग्रवाल के घर हुआ था। वे बचपन से ही असाधारण प्रतिभा सम्पन्न छात्र रहे। इलाहाबाद विश्वविद्यालय से उच्च शिक्षा प्राप्त करने के बाद लघु उद्योग विकास अधिकारी औद्योगिक सहकारिता विभाग के निदेशक, खादी एवं ग्रामोद्योग विभाग के मुख्य अधिशासी अधिकारी, जैसे उच्च पदों पर रहने के उपरान्त भारत, वैदिक साहित्य तथा संस्कृत भाषा के महत्त्व पर खोजपूर्ण ग्रन्थ लिखने में सक्रिय हैं। टाटा स्कूल (मुम्बई) में अध्ययन के दौरान सन् 1940 में उन्होंने परम विदुषी श्रीमती इन्दिरा रेणु से विवाह किया। श्रीमती इन्दिरा रेणु ने जर्मनी आदि देशों में जाकर अपनी असाधारण प्रतिभा का डंका बजाया था। वे दिल्ली के बाल न्यायालय में मजिस्ट्रेट भी रहीं तथा तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी के साथ अनेक समितियों में रहीं।

डॉ. लाडलीनाथ रेणु तथा श्रीमती इन्दिरा रेणु दोनों ने खादी पहनने का संकल्प लिया था, जिसका वे अभी भी निर्वाह कर रहे हैं।

इस महान् साहित्यिक विभूति के पिता लाला रघुबरदयाल (गोयल) एडवोकेट का जन्म ग्राम दुहाई (गाजियाबाद) के प्रतिष्ठित परिवार में हुआ था। उनके छोटे पुत्र कामेश्वरनाथ भी एक अध्ययनशील व विद्वान हैं तथा मेरठ में निवास करते हैं।

डॉ. रेणु ने अनेक शोधपूर्ण ग्रंथों द्वारा यह सिद्ध किया है कि आर्य भारत के मूल नागरिक थे। पश्चिमी देशों के लेखकों का यह कथन सर्वथा निराधार है कि आर्य मध्य एशिया से भारत आये। आर्य 'नस्ल' नहीं है अपितु आर्य संस्कृति है। हिन्दुओं को ही श्रेष्ठ होने के कारण 'आर्य' कहा जाने लगा। डॉ. रेणु के खोजपूर्ण ग्रन्थों की प्रख्यात विद्वान तथा पूर्व राज्यपाल डॉ. कन्हैयालाल माणिकलाल मुंशी, डॉ. वासुदेवशरण अग्रवाल तथा अन्य विद्वानों ने भी मुक्त कंठ से प्रशंसा की थी। डॉ. रेणु मुम्बई में निवास कर प्राचीन भारतीय संस्कृति, संस्कृत भाषा तथा वेदों के प्रचार-प्रसार में 84 वर्ष की आयु में भी सक्रिय हैं। इस महान् विभूति पर देश-विदेश के समस्त अग्रवाल समाज को गर्व है।

—*—

धर्म और संस्कृति के अनन्य साधक :
भक्त रामशरणदास

गाजियाबाद के छोटे से कस्बे पिलखुवा में स्थित भक्तजी का अद्भुत संग्रहालय सनातन धर्म के सिद्धान्तों का अकाट्य समर्थन करता हुआ परिलक्षित होता है। राष्ट्रीय एकता एवं अनवरत कार्य क्षमता की सार्थकता का भी यह संग्रहालय जीता जागता प्रमाण है। सन् 1925 से लेकर 1981 तक की प्रमुख पत्र-पत्रिकाओं, प्राचीन साहित्य तथा ऐसा कोई भी धार्मिक प्रकाशन नहीं होगा, जो इस संग्रहालय की शोभा नहीं बढ़ा रहा हो। धर्म, जाति जैसे बंधनों में जकड़े समाज के लिए भक्त रामशरणदास के इस अनोखे प्रयोग को मिसाल के तौर पर प्रयुक्त किया जा सकता है। इस आलेख में भक्त जी के कार्यों, लगन एवं दर्शन को तो समेटने का प्रयास किया ही गया है, साथ ही उनके संग्रहालय पर भी तथ्यपरक जानकारी उपलब्ध कराई गई है।

गाजियाबाद जनपद का छोटा सा कस्बा पिलखुवा अपनी दो विशेषताओं के लिए विशेष रूप से जाना-पहचाना जाता है। व्यवसाय में खादी के उद्योग के लिए और धार्मिक जगत में प्रख्यात सनातनधर्मी एवं भारतीय संस्कृति के सर्वांगीण स्वरूप के सिद्ध-साधक स्वर्गीय श्री भक्त रामशरणदास जी एवं उनके अनूठे संग्रहालय के कारण।

भक्त जी का जन्म 5 मार्च 1915 को गाजियाबाद के कस्बा पिलखुवा में लाला नारायणदास अग्रवाल (बझैड़े वाले) के घर हुआ था।

उन्हें धार्मिक संस्कार अपनी माता श्रीमती जगन्नदेई से मिले। बचपन में ही वे महान् विख्यात सन्त श्री उड़िया बाबा के सत्संग से प्रभावित हुए तथा उनके साथ उन्होंने गंगातट पर सैकड़ों मील तक पद यात्रा की। बाद में वे स्वामी कृष्णबोधाश्रम जी, स्वामी करपात्री जी,- सन्त प्रभुदत्त ब्रह्मचारी आदि महान् पुरुषों के निकट सम्पर्क में आये।

साधु-संन्यासियों की सेवा एवं धर्म परायणता में अपना सर्वस्व होम कर देने वाले भक्तजी ने इस संग्रहालय की नींव सन् 1933 के आसपास रखी थी। तब उनका मुख्य ध्येय देश के प्रख्यात धर्म गुरुओं के चित्र एवं उनसे संबंधित सामग्री एकत्र करना भर था। कालांतर में उन्होंने इसे विस्तृत स्वरूप प्रदान किया एवं भिन्न-भिन्न भांति की दुर्लभ व भारतीय संस्कारों से जुड़ी सामग्री का संग्रह करना भी शुरू कर दिया।

भक्तजी हिन्दू परिवारों में सर्वाधिक पढ़ी जाने वाली पत्रिका 'कल्याण' के नियमित लेखक तो थे ही, अतः 'कल्याण' के अनेक महत्त्वपूर्ण एवं अप्राप्य विशेषांक इस संग्रहालय में आज भी सुरक्षित हैं। वहीं 'चांद' का फांसी अंक (जिसे अंग्रेज सरकार द्वारा जब्त कर लिया गया था), 'गीता संदेश', 'ऋषि जीवन', 'परमार्थ', 'ब्राह्मण सर्वस्व', 'संकीर्तन', 'सरस्वती' एवं 'ईश्वर प्राप्ति' के अनेक अंक भी इस संग्रहालय में सुशोभित हैं। संग्रहित समाचार पत्रों में भी अनेक ऐसे हैं जो मील के पत्थर साबित हुए हैं तथा इतिहास की शिला पर अपने चिन्हों को अंकित कर काल के ग्रास बन चुके हैं। ये अखबार भी संग्रहालय में बड़ी सुरक्षा से रखे हुए हैं। इनमें प्रमुख हैं– 'भारत-मित्र' (5 सितम्बर 1934 का अंक), 'मारवाड़ी ब्राह्मण' (8 अगस्त 1936 का अंक), 'पंडित पत्र' 26 अगस्त 1935 का अंक) एवं 'नवभारत टाइम्स', 'हिन्दुस्तान' तथा अन्य अनेक पत्रों के दुर्लभ व महत्त्वपूर्ण अंक।

एक बार भक्त जी को देश की पवित्र नदियों का जल एकत्र करने की धुन सवार हुई। गंगा, यमुना, नर्मदा, कावेरी आदि नदियों का जल मिल गया तो सिंधु नदी के जल के लिए 1941 में लाहौर की यात्रा भी

कर डाली। 1936 में लाया गया गंगा जल संग्रहालय में अभी भी ज्यों का त्यों रखा हुआ है। यह चमत्कारिक शक्ति ही मानी जाएगी कि इतना पुराना जल अभी भी पूर्णतः सुरक्षित है, अन्यथा अन्य नदियों के जल में कुछ अन्तराल के पश्चात् ही कीड़े पड़ जाते हैं।

कुछ समय बाद भक्त जी ने संग्रहालय में देशभक्तों, शहीदों, महापुरुषों की जन्म स्थली की रज जमा करने का संकल्प लिया और देखते ही देखते संग्रहालय रज-मय हो गया। भगवान श्री कृष्ण से संबंधित सभी स्थानों की रज उन्होंने एकत्र की तो 1945 में यात्रा कर चारों धामों की पवित्र धूलि जुटायी। सन् 1944 में उन्होंने देश के वीरों से जुड़े स्थानों की यात्रा कर चित्तौड़, हल्दीघाटी की रज संग्रहालय में इकट्ठी की।

पटना के हरमंदिर साहब तथा मेवाड़ से अनेक महापुरुषों की स्मृतियाँ संबद्ध हैं, यथा– मीराबाई, गुरु गोविन्द सिंह, पद्मिनी, महाराणा प्रताप आदि। ऐसे में वहाँ भी जा पहुँचे और वहाँ की रज भी संग्रहालय में ले आए। उनकी लगन देखने लायक होती थी। जिस कार्य का बीड़ा उठा लिया, उसे पूर्ण किये बिना आराम से नहीं बैठते थे। वीर शिवाजी की जन्मस्थली का स्मरण हुआ तो महाराष्ट्र में ही पैर थमे और आदि शंकराचार्य की स्थली की रज हेतु उनके स्थान तक की खाक छानी। नाथद्वारा से लाया गया पीपल के पत्ते पर बना भगवान श्रीकृष्ण का चित्र संग्रहालय को अपनी सजीवता एवं मोहकता से वशीभूत किये हुए है।

पंजाब के सिख-गुरुओं की बलिदान स्थली सरहिंद और ननकाना जाने का भी भक्त जी मोह संवरण नहीं कर पाए। गुरु अर्जुन सिंह की बलिदान-स्थली की रज के लिए वे 1944 में क्रान्तिकारी भाई परमानंद जी को साथ लेकर पंजाब तथा रावी के तट पर भी जां पहुँचे। यहीं से शहीदे-आजम सरदार भगतसिंह की फांसी वाली जगह की रज संजो कर संग्रहालय में प्रतिष्ठित की।

भक्त जी की इस निष्ठा एवं लगन पर टिप्पणी करते हुए राष्ट्रपति द्वारा पुरस्कृत म.म. डॉ. शशिधर शर्मा ने एक बार कहा था–

'विशेषविद् दुर्लभ प्रयत्न नूत्नाऽर्थ
सार्थजातेः कृत संग्रहोऽपि
न तूपदेशे गिरममदिदेश यः
कस्ततोऽन्योऽत्र बभार धर्मम्।।''

(वैश्य होने के कारण भक्त जी ने संग्रह तो जीवन में अवश्य किया, किन्तु धन सम्पत्ति का नहीं, अपितु राष्ट्रीय और धार्मिक दृष्टि से संग्रहणीय दुर्लभ वस्तुओं का संग्रह किया।)

भक्त जी की इस लगन और कर्मठता का यह परिणाम निकला कि शीघ्र ही यह संग्रहालय इतना प्रसिद्ध हो गया कि 'कल्याण' जैसी पत्रिका के विशेषांकों "भक्त चरितांक", "हिन्दू संस्कृति" अंक के लिए अनेक दुर्लभ चित्र और संदर्भ सामग्री इस संग्रहालय से मंगवाई गई।

भक्त जी का जीवन तो परमार्थ को समर्पित था ही, अतः साधु-संन्यासियों का सान्निध्य उन्हें खूब मिला। 1936 में उड़िया बाबा भक्त जी के आतिथ्य बने तो अगले वर्ष (1937) में स्वामी कृष्णबोधाश्रम भी संग्रहालय के दर्शनार्थ पिलखुवा पधारे जो बाद में बद्रीकाश्रम के शंकराचार्य बने।

सन् 1947 में प्रख्यात सन्त स्वामी करपात्री जी महाराज की कृपा एवं प्रेरणा से भक्त जी ने पुनर्जन्म व लोक परलोक सम्बन्धी घटनाओं का गहन अध्ययन एवं अन्वेषण किया। मुजफ्फरनगर की एक परकाया प्रवेश वाली घटना 'कल्याण' में छपी तो अमेरिका तक के पत्रों ने उसे उद्धृत किया।

भक्त जी के इस अत्यंत महत्त्वपूर्ण कार्य पर टिप्पणी करते हुए शास्त्रार्थ पंचानन श्री प्रेमाचार्य शास्त्री जी ने एक बार कहा था, 'परलोक विद्या पर जितनी खोज भक्त जी ने की है उतनी खोज आजकल के तथाकथित शोधकर्त्ताओं के बूते से बाहर की बात है। यही कारण है कि पूज्य पितृचरण शास्त्रार्थ महारथी पं. श्री माधवाचार्य शास्त्री जी ने जब 'पुराण दिग्दर्शन' नामक अपना प्रसिद्ध ग्रन्थ लिखा तो पुराणों में वर्णित सभी बातों को प्रत्यक्ष सिद्ध करने वाली घटनाओं, चित्रों तथा समाचारों

का भरपूर सहयोग भक्त जी ने ही दिया। इसी के आधार पर उक्त ग्रन्थ का 'प्रत्यक्षाध्याय' लिखा गया है। दस खंडों में विभाजित 'सनातन धर्मालोक' नामक वृहद् ग्रन्थ के यशस्वी प्रणेता विद्यावागीश पं. श्री दीनानाथ शास्त्री सारस्वत जी ने भी अपना पुराणों से सम्बन्धित प्रकरण भक्त जी के सहयोग से ही तैयार किया।

भक्त जी की पुनर्जन्म सम्बन्धी अवधारणा के महत्त्व को रेखांकित करते हुए प्रख्यात साहित्यकार एवं 'नवभारत टाइम्स' के पूर्व प्रधान सम्पादक श्री अक्षय कुमार जैन ने एक बार कहा था, "पुनर्जन्म सम्बन्धी बहुत से मामलों में उन्होंने पूर्ण रुचि लेकर उनकी छानबीन की और उन पर, तथ्यों पर आधारित लेख लिखकर पुनर्जन्म की हमारी आस्था को और दृढ़ कर दिया और उन लोगों को एक चुनौती भी दी जो पुनर्जन्म में विश्वास नहीं करते। आज तो अमेरिका और सोवियत संघ दोनों में ही परामनोविज्ञान एक आधुनिक और विकसित विज्ञान है और जहाँ-जहाँ इस प्रकार के पुनर्जन्म के मामले आते हैं उनकी खोजबीन की जाती है। भक्त जी ने पुनर्जन्म सम्बन्धी सैकड़ों घटनाओं की जांच की तथा इस सम्बन्ध में शोधपूर्ण लेख तथा पुस्तकें लिखीं।"

सन् 1925 से लेकर 1981 तक की प्रमुख पत्र-पत्रिकाओं, प्राचीन साहित्य अथवा ऐसा कोई भी धार्मिक प्रकाशन नहीं होगा, जो इस संग्रहालय की शोभा नहीं बढ़ा रहा हो। गुरुमुखी का गुरुग्रन्थ साहब है तो, प्राचीन जैन ग्रन्थ भी इसमें हैं। पुरातत्व की दृष्टि से तो यह संग्रहालय उपयोगी है ही, प्राचीन एवं मौजूदा संस्कृति व मूल्यों पर शोध करने वालों के लिए भी यह संग्रहालय अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है।

इस संग्रहालय का यश ही कुछ ऐसा गुंजायमान हुआ कि दर्शनार्थियों की अनवरत भीड़ लगी रही। मैथिलीशरण गुप्त, बनारसी दास चतुर्वेदी, क्रान्तिकारी भाई परमानन्द, पं. क्षेमचन्द्र सुमन, वि.स. विनोद, दीनदयाल उपाध्याय, नानाजी देशमुख, माँ आनन्दमयी, उड़िया बाबा, हरि बाबा, प्रख्यात इतिहासकार चंद्रगुप्त वेदालंकार, स्वामी शिवानंद, चारों पीठों के शंकराचार्य, स्वामी करपात्री जी, प्रभुदत्त ब्रह्मचारी, पंडित परमानंद, राजा

महेन्द्र प्रताप, ला. हरदेवसहाय, ललिता शास्त्री, सेठ गोविन्द दास, अक्षय कुमार जैन, जगदीश प्रसाद चतुर्वेदी, मनोहर श्याम जोशी, आचार्य किशोरीदास वाजपेयी, बांकेबिहारी भटनागर, अटलबिहारी वाजपेयी, डॉ. वेदप्रकाश वैदिक, जयप्रकाश भारती जैसी विभूतियाँ पिलखुवा पधार कर इस संग्रहालय के दर्शन कर चुकी हैं।

इस संग्रहालय के संस्थापक भक्त श्री रामशरणदास जी अब गोलोकवासी हो चुके हैं, लेकिन उनके सुपुत्र प्रसिद्ध पत्रकार, साहित्यकार श्री शिवकुमार गोयल तथा अनिरुद्ध गोयल की देखरेख में यह संग्रहालय अभी भी अपना यश फैलाए हुए है। देश की सैकड़ों पत्र-पत्रिकाओं में छपे भक्त जी के लेखों की दस हजार से ऊपर कतरनों के समुचित प्रकाशन की व्यवस्था कर पुस्तकाकार रूप देने का प्रयास किया जा रहा है।

भक्त जी का यह संग्रहालय सनातन धर्म के सिद्धान्तों का अकाट्य समर्थन करता हुआ ही परिलक्षित नहीं होता बल्कि राष्ट्रीयता, एकता एवं अनवरत कार्य क्षमता के श्रम की सार्थकता को भी कहता हुआ प्रतीत होता है। भक्त रामशरणदास जी एवं इस संग्रहालय के संदर्भ में प्रख्यात कवि कृष्ण मित्र की पंक्तियाँ याद आ रही हैं–

भक्त थे या भक्ति के आधार थे,
साधनामय सन्त तुम साकार थे।
आत्म सम्वेदन भरी अनुरक्ति में,
या सनातन धर्म की उस भक्ति में।
सात्विकी संकल्प में ही रत रहे,
धर्म के सिद्धान्त से परिचित रहे॥
चित्र जो तुमने समेटे थे यहाँ,
संकलित की थीं जो अनगिनत मिट्टियां।
सागरों के नीर एकत्रीकरण,
अनगिनत चित्रों से भरा है संस्मरण।
संग्रहालय है कि सारा देश है,
है धरोहर, भक्ति का संदेश है॥

—✻—

भामाशाह सेठ श्री धौंकल जी लड़ीवाला

अग्रवाल समाज में ऐसे-ऐसे दानवीर व अनमोल रत्न, वीर पुरुष हुए हैं, जिन्होंने समाज की निःस्वार्थ भाव से सेवा करके अपने परिवार की ख्याति ही नहीं बढ़ायी है, अपितु समस्त अग्रवाल समाज को गौरवान्वित किया है।

दानवीर सेठ स्व. श्री धौंकल जी लड़ीवाला का जन्म 1915 में जयपुर में सेठ साहब श्रीमान् नारायण लाल जी के यहाँ हुआ। सेठ साहब ने अपना जीवन बड़ी ही सादगी के साथ, अहंकार रहित बिताया। इन्होंने अशिक्षित होते हुए भी शिक्षा के क्षेत्र में बहुत ही योगदान दिया, जिसका कि ज्वलंत उदाहरण अग्रवाल स्कूल के रूप में हम सभी के समक्ष एक विशाल स्वरूप उपलब्ध है। सेठ साहब बहुत ही सरल स्वभाव के व्यक्ति थे तथा सदैव दूसरों के हित में संलग्न रहना ही अपना परम कर्तव्य समझते थे। इन्होंने बहुत से युवकों को जवाहरात के कार्य का शिक्षण देकर उन्हें योग्य बनाया। आपने समाज के अन्दर व्याप्त कुरीतियों को मिटाकर समाज को सुधार की तरफ अग्रेसित किया। आपने "अग्रवाल समाज सभा" की स्थापना की थी, जिसके आप जीवन पर्यन्त अध्यक्ष रहे। आपने सदैव सार्वजनिक कार्यों में भी अत्यन्त रुचि लेते हुए अपने जीवन काल में पिंजरापोल गौशाला का निर्माण कराया, घाट की सड़क पर शुकरखाने के पास वाली बगीची सार्वजनिक उपयोग हेतु दान दी, इनके अलावा घाट दरवाजे श्मशान घाट स्थल पर बगीची का निर्माण कराया। इनके अतिरिक्त आपने धनवन्तरी

औषधालय, अनाथालय तथा अन्य धार्मिक व सार्वजनिक कार्यों के लिए मुक्त हस्त से दान देकर चौधरी लड़ीवाला परिवार का गौरव बढ़ाया।

आप जाति सुधारक व सार्वजनिक कार्यों के रूप में आजीवन समाज सेवा में संलग्न रहे, यश पूर्ण जीवन व्यतीत करते हुए तथा खानदान का गौरव बढ़ाते हुए परलोक सिधारे।

आपकी यश पताका पर समाज अपने आपको गौरवान्वित महसूस करता है।

—*—

भले आदमी की तलाश

एक धनी व्यक्ति ने एक मन्दिर बनवाया। मंदिर की देख-रेख के लिए एक व्यक्ति की आवश्यकता हुई।

बहुत से लोग उस धनी व्यक्ति के पास आये, लेकिन उसने सभी को यह कहकर लौटा दिया कि मुझे एक भले आदमी की तलाश है।

वह धनी व्यक्ति नित्य मन्दिर में आने जाने वाले लोगों को देखता रहता था। एक दिन एक व्यक्ति जो दर्शन कर वापस जा रहा था, रास्ते में गड़े पड़े ईंट के टुकड़ों को हटाने लगा। सेठ धनी व्यक्ति ने उसे अपने पास बुलाया और उसे मंदिर की व्यवस्था संभालने का आग्रह करने लगा। उस व्यक्ति ने कहा मैं कोई ज्यादा पढ़ा-लिखा नहीं हूँ, कैसे कार्य कर सकता हूँ। धनी व्यक्ति ने कहा मुझे विद्वान पुरुष नहीं चाहिए, मुझे तो भला आदमी चाहिए। मैं कई दिनों से देख रहा था कि रास्ते में ईंट के टुकड़े से लोग ठोकर खाकर गिरते थे, पर किसी ने उसे हटाने का सोचा तक नहीं और आपने देखा और तुरन्त भूमि खोदकर ईंट के टुकड़े निकाल फेंके और भूमि बराबर कर दी। उस व्यक्ति ने कहा यह तो खास बात नहीं हुई। रास्ते में पड़े कंकड, पत्थर आदि को हटाना तो हर मनुष्य का कर्तव्य है। वह धनी व्यक्ति बोला– अपने कर्तव्य को जानने और उसे पालन करने वाले लोग ही भले होते हैं और उन्होंने उस व्यक्ति को मन्दिर का प्रबन्धक बना दिया।

समाज सेवी बाबू बनारसी दासजी गुप्त

श्री बनारसी दास जी गुप्त आज वैश्य समाज के सिरमौर माने जाते हैं। सन् 1975 से अखिल भारतीय अग्रवाल महासम्मेलन के अध्यक्ष पद ग्रहण कर आप संस्थापक सदस्य के रूप में समाज सेवा में समर्पित हुए, वर्तमान में आप संरक्षक हैं। आप में नेतृत्व क्षमता व समाज के प्रति अक्षुण्य प्रेम परिलक्षित है।

आपका जन्म 5 नवम्बर, 1917 को ग्राम मानहेरू जिला दादरी रियासत जींद में श्री रामस्वरूप दास गुप्त के सद्भ्रान्त अग्रवाल परिवार में हुआ। दो पुत्र चार पुत्रियों के पिता रामस्वरूप दास व्यापार और कृषि में पूर्ण दक्ष थे। श्री बनारसी दास गृह नगर की प्रा. पाठशाला से लेकर पिलानी के बिड़ला कॉलेज की पढ़ाई तक आप सामाजिक कुरीतियों, अश्पृश्यता की बुराई से लड़ते रहे। सन् 1938 में लुधियाना में पं. जवाहर लाल नेहरू की ओजस्वी वाणी से प्रेरित होकर आप स्वतंत्रता समर के सत्याग्रही बन गए। सन् 1941 की 28 फरवरी को आपका शुभ विवाह सौ. कां. द्रोपदी बाई पुत्री लाला किरोड़ीमल ग्राम तिगडाना के साथ सम्पन्न हुआ। तुरन्त बाद सन् 1941 में जींद रियासत की निरंकुशता के विरोध में संघर्ष करने के कारण वे गिरफ्तार किये गये। चरखी दादरी तथा संगरुर की जेलों में इन्हें घोर यातनाऐं दी गई। जींद के राजा को हार मानकर सुधारों की घोषणा करनी पड़ी और राज्य में चुनी हुई असेम्बली की स्थापना करनी पड़ी। जींद में प्रजामण्डल की स्थापना में आपका महत्त्वपूर्ण योगदान रहा। स्वदेशी, हिन्दी तथा मद्यनिषेध के लिए भी आप जीवनभर संघर्षशील रहे।

1942 में "भारत छोड़ो" अन्दोलन में भाग लेने के कारण आपको

मुलतान जेल में रहना पड़ा। 6 मास की जेल, पैरों में बेड़ियों के घाव लेकर घर लौटे तो पिताजी ने कहा हमसे दुःख नहीं सहा जाता। युवा बनारसी दास ने पत्नी से परामर्श कर घर छोड़ दिया। पत्नी सहित भिवानी आये, जहाँ मित्र हरीकृष्ण गुप्त ने अपने मकान में आश्रय दिया। टी.आई.टी. मिल भिवानी के स्कूल में अध्यापन के साथ-साथ प्रभाकर की परीक्षा पास की। श्री बनारसीदास गुप्त ने आर्य समाज से प्रभावित होकर "सत्यार्थ प्रकाश" आदि का अध्ययन किया। खादी, हिन्दी, हिन्दुत्व का पोषण एवं छुआछूत का विरोध प्रारम्भ से ही किया। ट्रेड यूनियन पत्रकारिता से भी जुड़े रहे। नुमायंदा एसेम्बली के चुनाव में आप विजयी रहे। सन् 1946 में फिर जींद में विधान सभा सदस्य बने।

देशी रियासतों की समस्या, प्रजा मंडल का सत्याग्रह सभी में आप सक्रिय रहे। हरियाणा में श्री गुप्त विधानसभा के अध्यक्ष, सिंचाई, विद्युत, कृषि, सहकारिता, वित्तमंत्री, उप मुख्यमंत्री और मुख्यमंत्री दो बार रहे हैं। वर्ष 1975 और 1990 में हरियाणा के मुख्यमंत्री रहे हैं।

विभिन्न पदों पर रहते हुए आपने स्थानीय पानी, बिजली, शिक्षा, चिकित्सा के क्षेत्र में काफी कार्य किया। वहीं टेक्सों की माफी, व्यापारियों को उत्पीड़न से बचाने का कार्य किया।

सन् 1977 में जब कांग्रेस पराजित हुई तो आपको मुख्यमंत्री का पद त्याग करना पड़ा। दूसरी बार देवीलाल के उप प्रधानमंत्री बनने पर आप पुनः मुख्यमंत्री बने। दिल्ली में विशाल स्वागत समारोह हुआ। परंतु उस समय भी श्री ओमप्रकाश चौटाला के पक्ष में आपको हटना पड़ा। इसके बाद आप कांग्रेस में पुनः चले गये। श्री भजनलाल के मुख्यमंत्री काल में आप राज्य सभा के लिये चुने गये और 6 वर्ष तक राज्यसभा सदस्य रहे।

श्री बनारसीदास जी की उपलब्धि राज्यसभा सदस्यता या मुख्यमंत्री पद तक सीमित नहीं रही। आपके प्रयास से अग्रोहा में अग्रसेन मेडीकल कॉलेज की स्थापना हुई। सरकार एवं समाज के बीच अद्भुत समझौता हुआ, खर्च एक प्रतिशत समाज का परन्तु गठन 99 प्रतिशत रहा। श्री बंशीलाल जब पुनः मुख्यमंत्री बने तो उन्होंने अग्रोहा मेडीकल कॉलेज की

सहायता बंद कर दी। इससे श्री बनारसीदास गुप्ता व्यथित हुए। सम्मेलन ने स्थान-स्थान पर धरना प्रदर्शन किया। अपनी करनी का फल भोगते हुए बंशीलाल पदच्युत हुए।

इसी समय हरियाणा के मुख्यमंत्री श्री ओमप्रकाश चौटाला बने। और शपथ ग्रहण के मात्र 1 घंटे बाद श्री चौटाला अग्रोहा पहुँचे और पुनः सहायता की घोषणा की। अग्रोहा विकास ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री नंदकिशोर गोयन्का ने आत्मविभोर होकर कहा कि "हजारों वर्ष रहे श्री ओमप्रकाश चौटाला", आज श्री ओमप्रकाश चौटाला हरियाणा के मुख्यमंत्री हैं। उन्होंने कुरुक्षेत्र के महाधिवेशन (अग्रवाल सम्मेलन) में घोषणा की कि अग्रोहा के मेडीकल कॉलेज के निर्माण एवं संचालन में मैं पूरी सहायता करूँगा। इस अवसर पर श्री बनारसीदास गुप्ता ने कहा कि अग्रोहा-महाराज अग्रसेन की पुण्य स्थली, कर्म स्थली है।

अग्रोहा के पुनर्निर्माण का स्वप्न 1975 में देखा था। 1976 में इन्दौर अधिवेशन में अग्रोहा की हुंडी जारी की गई। अग्रोहा मंदिर पर 17 कमरों का निर्माण तिलकराज अग्रवाल ने 6 मास में करा दिया। इसके बाद किशोरीलाल, जी.डी. गोयल, चानन मल बंसल, देवीसहाय जिंदल आदि आये, परन्तु अग्रोहा का सर्वांगीण विकास श्री नंदकिशोर गोयन्का, सुभाष गोयन्का के त्याग तपस्या से पूर्ण हुआ। नींव में श्री बनारसीदास गुप्ता द्वारा पूजित ईंटें पुकार-पुकार कर बनारसीदास गुप्ता को यशस्वी सहस्र वर्ष जीवी की कामना करती है।

श्री बनारसी दास गुप्ता लोह पुरुष हैं परन्तु उनमें लोह की कठोरता नहीं, वे स्वर्ण पुरुष हैं परन्तु स्वर्ण में सुगंध नहीं, वे चांदी के समान श्वेत हैं, परन्तु वे चांदी के समान निर्जीव नहीं, लाखों-करोड़ों बंधुओं के मार्गदर्शक श्री बनारसीदास गुप्ता महाराजा अग्रसेन की प्रतिमूर्त्ति हैं।

कोई भी सम्मेलन, सभा, अधिवेशन, कार्य समिति की बैठक तब तक सफल नहीं मानी जाती जब तक बाबू बनारसीदास गुप्ता उपस्थित नहीं हों। हर श्रोता की आँखें इनको खोजती हैं कि वह है श्री बनारसीदास जी गुप्ता।

अग्रवाल समाज धन्य है ऐसे समाज के कर्णधार पर।

—*—

कैप्टन कमल किशोर बंसल
(एक परिचय)

कैप्टन कमलकिशोर बंसल अग्रवाल वैश्य समाज के उन शोधकर्ताओं में विशिष्ट स्थान रखते हैं जिन्होंने त्याग, शौर्य, पराक्रम, राष्ट्र रक्षा एवं कर्तव्यपरायणता के क्षेत्र में अग्रवाल/वैश्य समाज की अद्वितीय, अनुपम योगदान का उद्‌घाटन कर सम्पूर्ण वैश्य समाज को गौरवान्वित किया है। उनका 'वीरता की विरासत' एक ऐसा महत्त्वपूर्ण, मौलिक शोधग्रंथ है जो अग्रवाल/वैश्य सम्प्रदाय के इतिहास में अनुपमेय है जिसकी जोड़ का कोई ग्रंथ इस प्रकार के अछूते विषय पर नहीं लिखा गया। सामान्यतः यह माना जाता है कि राष्ट्र रक्षा का कार्य केवल मार्शल जातियों तक सीमित है और अग्रवाल या वैश्य समुदाय के लोग उद्योग-व्यवसाय से सम्बन्धित होने के कारण युद्ध भूमि में शौर्य का प्रदर्शन नहीं कर सकते किन्तु प्रस्तुत शोध ग्रंथ में कैप्टन कमलकिशोर ने अग्रवाल/वैश्य समुदाय के विगत 5000 वर्षों के इतिहास का सप्रमाण विश्लेषण करते हुए प्रतिपादित किया है कि किस प्रकार अग्रकुल संस्थापक महाराजा अग्रसेन तथा अन्य वैश्यवंशी सम्राटों ने अपने बाहुबल से इतिहास के महान् स्वर्णिम युग-गुप्तकाल, वर्धन, नाग, पुष्यवंश आदि की स्थापना कर तथा सेना में उच्च पदों को प्राप्त कर न केवल उच्चकोटि की सैनिक एवं प्रशासनिक क्षमता का परिचय दिया है अपितु युद्ध भूमि में हंसते-हंसते अपने प्राणों की आहुति देकर राष्ट्र रक्षा के क्षेत्र

में असाधारण त्याग एवं बलिदान का आदर्श भी प्रस्तुत किया है तथा वह उद्योग और व्यवसाय के क्षेत्र में ही नहीं, शौर्य एवं पराक्रम के क्षेत्र में भी किसी भी जाति से होड़ लेने की स्थिति में हैं। आपने प्रतिपादित किया है कि प्राचीन काल में जब नियमित सेना का प्रचलन नहीं था, तब वैश्य लोग ही संकटकाल में कृषि-वाणिज्य के साथ सैनिक बनकर मातृभूमि की रक्षा करते थे। श्री बंसल ने अपने शोधग्रन्थ में ब्रिटिश शासनकाल एवं स्वाधीनता संग्राम के उन असंख्य अग्रवीरों का उल्लेख किया है जिन्होंने देश की आजादी के लिए अपना तन-मन-धन सर्वस्व अर्पित कर दिया और जो देश के लिए मर मिटे। आपने ब्रिटिश सेवा में मेजर जनरल, लेफ्टिनेंट जनरल, ब्रिगेडियर, मेजर जैसे उच्च सैनिक पदों पर आसीन तथा विक्टोरिया क्रास, मिलिट्री क्रास, डिस्टिंग्विश सर्विसिज आर्डर से सम्मानित तथा द्वितीय विश्व युद्ध में उच्च कोटि की वीरता को प्रदर्शित करने वाले अनेक अग्रवीरों का उल्लेख किया है।

यही नहीं, कैप्टन कमलकिशोर ने अपने शोध द्वारा यह प्रमाणित करने में भी सफलता प्राप्त की है कि इतिहास का प्राचीन तथा मध्यकाल ही नहीं, वर्तमान काल भी अग्रवंशियों के शौर्य से गौरवान्वित हुआ है। आपने स्वतंत्र भारत की सशस्त्र सेनाओं एवं पुलिस में सम्मिलित उन 160 अग्रवीरों की सूची प्रस्तुत की है जिन्होंने भारतीय सेना एवं पुलिस में उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय देते हुए महावीर चक्र, कीर्ति चक्र, शौर्य चक्र, अतिविशिष्ट सेवा मैडल, युद्ध सेवा मैडल, सेना मैडल, नौ सेना मैडल, वायु सेना मैडल तथा दो-दो, तीन-तीन से अधिक पुरस्कार प्राप्त कर सेना में प्रथम होने तथा उज्ज्वल कीर्तिमान स्थापित करने में सफलता प्राप्त की है। निसंदेह श्री बंसल ने सैन्य एवं वीरता के संदर्भ में अग्रवाल समाज की उपलब्धियों को प्रकाश में लाकर तथा मौलिक अनुसंधान कर एक महान् ग्रंथ सम्पादित किया है।

श्री कमलकिशोर व्यवसाय से पायलेट एवं प्रशिक्षक हैं। वर्तमान में वे हरियाणा नगर विमानन (Haryana Civil Aviation) के करनाल

हवाई अड्डे पर मुख्य पायलट प्रशिक्षक के पद पर कार्यरत हैं। आप हिसार के सुप्रसिद्ध समाजसेवी स्व.श्री लक्ष्मणदास के सुपुत्र हैं। आप 5 भाई तथा 1 बहिन हैं। आपका सारा परिवार धार्मिक एवं सामाजिक कार्यों में बढ़-चढ़ कर भाग लेता है। आपकी बहिन श्रीमती सुनीता गर्ग (सोनीपत) अग्रवाल महिला संगठन, सोनीपत की अध्यक्षा तथा राष्ट्रीय अग्रवाल महिला संगठन अग्रोहा विकास ट्रस्ट की राष्ट्रीय कार्यकारिणी की सदस्या हैं तथा अग्रसेन, अग्रोहा, अग्रवाल तत्सम्बन्धी प्रचार-प्रसार में बढ़-चढ़ कर भाग लेती हैं। 10 सितम्बर 1986 को एक प्रशिक्षण उड़ान के मध्य आपका विमान दुर्घटनाग्रस्त हो गया और आप गंभीर रूप से घायल हो गये, परन्तु आप दृढ़ इच्छाशक्ति के कारण अल्पावधि वें पूर्णतया: स्वस्थ होकर विमान परिचालन करने लगे, जो विमानन के क्षेत्र में एक उज्ज्वल कीर्तिमान है।

वन्य जीवन के संरक्षण में आपकी गहन रुचि है और आप अग्रवाल/वैश्य समाज के इसी प्रकार के अछूते विषयों पर गहन अनुसंधान कर अग्रवाल समाज को प्रतिष्ठा के सर्वोच्च शिखर पर प्रतिष्ठित करने की महती आकांक्षा रखते हैं। अग्रोहा में ऐतिहासिक महत्त्व की पुरातत्व वस्तुओं का संकलन कर एक श्रेष्ठ अग्रसेन संग्रहालय स्थापित करने की भी आपकी योजना है और उसके लिए प्रयत्नशील हैं। अग्रोहा, अग्रसेन आपके रोम-रोम में बसे हैं और आप अग्रोहा तीर्थ धाम की अनेक बार यात्रा कर चुके हैं। विशेष उल्लेखनीय है कि श्री बंसल ने इस महान् शोधकार्य को अग्रोहा विकास ट्रस्ट को बिना किसी मानदेय (पारिश्रमिक) के प्रकाशनार्थ प्रदान कर उच्चकोटि की सदाशयता का परिचय दिया है। "वीरता की विरासंत" जैसे शोधपूर्ण ग्रंथ का प्रकाशन अग्रवाल वैश्य समुदाय की सेवा एवं वीरता के क्षेत्र में असाधारण उपलब्धियों को सर्वप्रथम प्रकाश में लाने वाले अग्रवाल समाज के गौरव पायलेट कमलकिशोर बंसल को शरद पूर्णिमा पर अग्रोहा में आयोजित अग्रोहा मेले के अवसर पर दिनांक 13.10.2000 को भव्य समारोह में सेठ

द्वारिकाप्रसाद सर्राफ राष्ट्रीय पुरस्कार प्रदान किये गये। पुरस्कार के अन्तर्गत 51000/- रुपये "स्मृति फलक, प्रशस्ति पत्र, शाल, श्रीफल आदि प्रदान किये गये।

इससे समाज के युवाओं को सैन्य, वीरता तथा राष्ट्र रक्षा के क्षेत्र में आगे बढ़ने तथा इस शृंखला में अपने शोध द्वारा अग्रवाल इतिहास के गौरवपूर्ण पृष्ठों को उद्घाटित करने की प्रेरणा मिलेगी।

वृद्धों की सेवा करो, सुख पाओगे

आज प्रायः घरो में वृद्धों को उपेक्षित भाव से देखा जाता है इसका कारण बड़ों के प्रति श्रद्धा का अभाव। प्रत्येक वर्ष आश्विन मास में पन्द्रह दिन तक मृतकों के प्रति श्राद्ध करते हैं लेकिन जीवित वृद्धों की उपेक्षा करते है यह कहां तक उचित है? सही मायने में "श्राद्ध" शब्द "श्रद्धा" से बनता है। "श्रद्धा" जीवितों पर की जाती है आज के जीवित वृद्ध कल के मृतक बनेंगे। जीवितों के प्रति श्रद्धा का व्यवहार न करके ब्राह्मणों को भोज कराते हैं और जब वे जीवित थे तब उनके प्रति श्रद्धायुक्त दो शब्द भी नहीं कहे जाते। जीवितों के प्रति हमारे हृदय में अपार प्रेम और श्रद्धा के भाव होंगे तो वे वृद्ध भी हमारे प्रति स्नेह और कृपा करके शुभ आर्शीवाद देंगे। जिनसे उत्साहित होकर हम यश के भागी बनेंगे। आज के जो वृद्ध हैं वे कभी हमारी तरह ही जवान थे, कल हमें भी वृद्ध होना है। आज हम वृद्धों की सेवा नहीं करते हैं तो कल वृद्ध होने पर हमारी सेवा कौन करेगा? विद्वानों का कहना है कि जिन घरों में बाल और वृद्धों को सन्तुष्ट रखा जाता है वे घर हमेशा फलते और फूलते हैं इसलिये वृद्धों को किसी प्रकार का अभाव नहीं होने देना चाहिये और सुबह शाम उनके पास थोड़ी देर बैठकर उनके सुख-दुःख की पूछ लेनी चाहिये। इसी में वे सन्तुष्ट हो जाते हैं। संतुष्ट नहीं होंगे तो वे वृद्धाश्रमों में जाने की सोचते है, इसलिये अपने बड़ों की सेवा कीजिये और उनके अनुभवों से हर प्रकार का लाभ उठाते हुए अपने घर को सुख और शान्ति द्वारा स्वर्ग का द्वार बनाइये।

स्वाधीनता सेनानी : श्री शिवशरण अग्रवाल

बरेली के महान् स्वाधीनता सेनानी तथा अग्रवाल समाज के वरिष्ठ नेता श्री शिवशरण अग्रवाल पुरानी पीढ़ी की ऐसी महान् विभूति हैं जिनका जीवन पूरे समाज के लिए एक आदर्श रहा है। उनके आदर्श जीवन से हम आज भी पग-पग पर प्रेरणा ले सकते हैं।

श्री शिवशरण अग्रवाल का जन्म 6 मार्च सन् 1921 को बरेली में एक मध्यम वर्गीय एवं सम्मानित अग्रवाल परिवार में हुआ। आपकी माता जी आपको 8 वर्ष की छोटी अवस्था में ही छोड़कर परलोक सिधार गई। आपके पिताजी ला. राममोहन लाल का जन्म सन् 1876 में हुआ तथा उनका देहान्त उत्तराखंड (वर्तमान उत्तरांचल राज्य) में गंगोत्री-जमनोत्री की तीर्थयात्रा के मध्य जून 1948 में हो गया।

पिताजी कांग्रेस के सक्रिय नेता, सदैव खादी के वस्त्र पहनने वाले कार्यकर्ता तथा नगर कांग्रेस कमेटी के कोषाध्यक्ष थे। वह जाने माने स्वतंत्रता सेनानी थे। सन् 1940-41 में महात्मा गाँधी ने उन्हें व्यक्तिगत सत्याग्रह के लिए चुना तथा ला. राममोहन लाल जी ने सैदपुर हाकन्स ग्राम में प्रातः 8 बजे सत्याग्रह सभा को सम्बोधित करना था परन्तु ब्रिटिश शासन ने उनका वारंट, बिना सत्याग्रह सभा किये ही प्रातःकाल 5 बजे उनके निवास स्थान पर भेज दिया। सूचना पाते ही कार्यकर्त्तागण उनके निवास पर ही इकट्ठा होना शुरू हो गये।

पूजा पाठ से निवृत्त होते ही पुलिस उनको उनके साहूकारा निवास से थाना किला ले जाकर जिला जेल तक पैदल ही ले गई। बस फिर क्या था, जुलूस बन गया तथा 'इन्कलाब जिन्दाबाद' 'महात्मा गाँधी की जय' 'भारत माता की जय' 'स्वतंत्रता हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है', 'अंग्रेजों को लड़ाई में मदद मत दो' आदि नारों से आकाश गूंजने लगा तथा सैकड़ों लोग अपने प्रियजन के दर्शनों के लिए उमड़ पड़े तथा बहुत से लोग जुलूस में शामिल हो गये।

तत्कालीन शासन के दमन चक्र ने सत्याग्रह तो नहीं करने दिया परन्तु जेल जाते हुए सत्याग्रही को कोई न रोक सका और उद्देश्य पूरा हुआ।

जुलूस में सबसे आगे हाथ में तिरंगा-झण्डा लिये उनके सबसे छोटे पुत्र शिवशरण (आयु 19 वर्ष) नारे लगाते हुये साथ-साथ चल रहे थे। जनता का उत्साह नारों की गूंज से विदित था। स्थान-स्थान पर फूल मालाओं से उनका स्वागत हुआ। जब कचहरी से जेल रोड़ पर सत्याग्रही का जुलूस जा रहा था तब तत्कालीन अंग्रेज जिला कलेक्टर ने जुलूस रोककर राम मोहन लाल जी की फूल मालायें खींचकर तोड़ दी तथा शिवशरण जी का तिरंगा झंडा झपटकर छीन लिया और उनको कंधे से पकड़कर 'एरेस्टेड' कहते हुए गुस्से में लाल होते हुये कहा दोनों को जेल ले चलो। कलेक्टर ने उन दोनों (पिता-पुत्र) को स्वयं जेल के गेट तक पहुँचाया।

जेल के अन्दर पहुँचते ही राजनीतिक बन्दियों ने 'पिता-पुत्र' साथ-साथ आये हैं कहते हुए शिवशरण को गोद में उठाकर दोनों का हार्दिक स्वागत किया तथा जेल में नारों से नई उमंग गूंज उठी। ला. राम मोहन लाल जी का मुकदमा जेल के अन्दर ही किया गया, जिसमें उन्हें बिना कसूर 4 माह की सख्त कैद और 500 रुपये जुर्माना किया गया। शिवशरण के खिलाफ अंग्रेज कलेक्टर स्वयं गवाह (विटनेस) था, वह हिन्दुस्तानी मजिस्ट्रेट की अदालत में ट्रान्सफर किया गया। 2 माह तक जेल में उन्हें यों ही रखा गया तथा उसके बाद उन पर भी सजा व जुर्माना किया गया।

व्यक्तिगत सत्याग्रह की समाप्ति के बाद स्वतंत्रता आन्दोलन को तीव्रगति से शुरू करने के लिये आजादी के दीवानों में एक नया जोश जोर मार रहा था। इसी समय उनका सम्पर्क स्वर्गीय सेठ दामोदर स्वरूप से हुआ। 1 अगस्त 1942 को माननीय पं. गोविन्द बल्लभ पंत ने बरेली में कुछ प्रमुख कार्यकर्ताओं की गुप्त बैठक बुलाई, जिसमें आप भी सम्मिलित हुये तथा उसके पश्चात् उन्होंने पूर्ण रूप से कांग्रेस आन्दोलन में जीवन दान करने की ठान ली।

सन् 1942 में 'अंग्रेजो भारत छोड़ो आन्दोलन' (क्विट इन्डिया मूवमेंट) को निर्णायक रूप देने के लिए प्रदेशीय स्तर पर भूमिगत (अन्डर ग्राउन्ड) कार्यकर्ता चुने गये, उसमें आपको बरेली क्षेत्र से आन्दोलन में गुप्त रूप से कार्य करने के लिये चुना गया। इस समय बरेली के संचालक श्री सत्यप्रेमी जी (बाराबंकी निवासी) थे।

आन्दोलन का नेतृत्व

नौ अगस्त को प्रातः ही "भारत छोड़ो आन्दोलन" के प्रथम दिन वरिष्ठ साथियों की गिरफ्तारी के बाद बरेली क्षेत्र में आन्दोलन चलाने का कार्यभार मुख्य रूप से आपने संभाला। गाँधीजी ने 'अंग्रेजों भारत छोड़ो आन्दोलन' में भारतवासियों को 'करो या मरो' का आह्वान किया, बस, गर्म खून व नये जोश ने आपकी उग्रवादी विचारधारा जगा दी। आपको कुछ ज्वलनशील पदार्थ मिले और काफी मात्रा में विस्फोटक पदार्थ व हथियार भी इकट्ठे करके बांटे। आपके साथ तिलक इण्टर कॉलेज के मास्टर प्रतापनारायण वर्मा, ठा. धूमसिंह जी तहसील आंवला, श्री शिवकुमार पांठक सिंबौली, ठा. धर्मेन्द्र सिंह सरदारनगर, श्री गुलाबराय त्रिवेदी, ठा. कृष्णराज सिंह, जगन्नाथ मिश्र फरीदपुर आदि ने विशेष सहयोग दिया। धन की आवश्यकता होने पर श्री मनमोहनलाल माथुर एडवोकेट, श्री बनवारीलाल अग्रवाल एडवोकेट एवं श्री सतीश कुमार कपूर ने एवं विस्फोटक पदार्थों के लिए डॉ. श्यामबिहारी लाल गुप्ता का विशेष योगदान रहा। आन्दोलन को कंधे से कंधा मिलाकर सुचारू रूप से चलाने को

साहूकारा निवासी व उनके पड़ौसी श्री रामेश्वर प्रसाद उर्फ 'पाँडे जी' व श्री ब्रजगोपाल वैद्य व श्री मुरली मनोहर बीज वालों का विशेष सक्रिय सहयोग रहा। बरेली में इश्तहार तथा सामग्री की छपाई का प्रबन्ध किया गया। परन्तु जब तक छपाई का प्रबन्ध नहीं हुआ था, स्कूल के नन्हें मुन्ने विद्यार्थियों की मदद से हस्तलिखित पर्चे लिखना, बांटना व चिपकाना तय हुआ। इसमें आपके भतीजे प्रेमप्रकाश अग्रवाल व उनके सहपाठी ओम प्रकाश मेहरोत्रा, अमरनाथ अग्रवाल आदि ने पूरा-पूरा सहयोग दिया। फिर टाइपराइटर व साईक्लोस्टाइल से काम चलाया, कुछ ही समय में लीथों का प्रबन्ध हो गया। वह सब व्यवस्था इतनी गुप्तरूपेण हुई कि उस समय के ब्रिटिश अधिकारीगण आश्चर्यचकित ही नहीं वरन् परेशान थे।

एक साथी के विश्वासघात के कारण गुप्तचर अधिकारी को सूचना देते ही आपके घर की तलाशी हुई। दिनांक 25 अक्तूबर 1942 को उसमें साइक्लोस्टाइल हुआ एक इश्तहार जिसमें सैनिकों के नाम बगावत की अपील थी, वह पुलिस के हाथ लग गया। उस समय शिवशरण भूमिगत दौरे पर बाहर गये हुये थे, तब आपके बड़े भाई श्री जगदीश शरण बर्तन वालों को पुलिस पकड़कर ले गई। बरेली लौटते समय इज्जतनगर रेलवे स्टेशन पर आपको गिरफ्तार कर लिया गया। आपसे कोतवाली में गहन पूछताछ की गई और तरह-तरह की जोर जबरदस्ती भी की गई किन्तु आपसे कोई जानकारी पुलिस नहीं पा सकी। कोतवाली में ही आप पर मुकदमा चलाया गया जिसमें एक साल की सख्त कैद व 50 रुपये जुर्माना हुआ। आपके भाई साहब को उस समय छोड़ दिया गया। जुर्माना न देने पर छः माह की सजा बढ़ा दी गई।

जेल में यातनाएं

जेल में आपको तरह-तरह की कड़ी यातनायें दी गईं। चक्की चलाने की सजा दी गई, चक्की न चलाने पर दस दिन तक दिन में हथकड़ी पड़ी रहती थी। इसके बाद हथकड़ी बेड़ी की सजा दी गई और पिटाई की गई, जिससे कई जगह जख्म भी हो गये। बड़े भाई श्री जगदीश शरण को अगस्त 1943 में (भारत छोड़ो आन्दोलन की प्रमुख पुण्य तिथि के अवसर

पर) दुबारा गिरफ्तार किया गया और उन्हें 22 दिन तक जिला जेल में बन्द रखा। उनके मंझले भाई श्री ईश्वर शरण जी दिल्ली सर्विस में थे। दोनों भाइयों की गिरफ्तारी के कारण सर्विस छोड़कर घर की देखभाल करने बरेली वापस आ गये और आन्दोलन में भी अपना सक्रिय सहयोग देते रहे। वह आजीवन खद्दर पहनते रहे एवं कांग्रेस के सक्रिय कार्यकर्ता और नगर कांग्रेस कमेटी के सदस्य रहे। बाद में वह राष्ट्रीय हाउसिंग सोसाइटी के मंत्री रहे।

सन् 1945 में कांग्रेस प्रतिनिधि असेम्बली चुनी गई, इसमें सेठ सतीश चन्द्र, जनरल सक्रेटरी, जिला बरेली थे तथा शिवशरण जी उनके साथ सेक्रेटरी के पद पर रहे। सन् 1946 में जब श्री धर्मदत्त वैद्य नगर कांग्रेस कमेटी के सभापति चुने गये तब यह सेक्रेटरी चुने गये। सन् 1947-48 में श्री नौरंग लाल जी के सभापतित्व काल में वे संगठन मंत्री के पद पर रहे। सन् 1950 में श्री प्रतापचन्द्र जी आजाद के सभापतित्व में यह नगर कांग्रेस के जनरल सेक्रेटरी रहे। सन् 1952 में जनरल इलेक्शन में बरेली नगर से माननीय गोविन्द बल्लभ पंत ने कांग्रेस पार्टी की ओर से चुनाव लड़ा और उनकी शानदार जीत के पश्चात् जब उनको प्रान्त का मुख्यमंत्री चुना गया तब श्री पन्तजी ने उनकी सहायता व कार्य की समय-समय पर सराहना की। सन् 1952 में उनको नगर कांग्रेस कमेटी का सर्वसम्मति से प्रेसीडेंट चुना गया। सन् 1961-62 में फिर उनको प्रेसीडेंट चुना गया। वह उत्तर प्रदेश कांग्रेस कमेटी के कई बार सदस्य रहे। वह जिला प्लानिंग कमेटी व अन्तरिम जिला परिषद के सदस्य रहे। सन् 1962 में चीन की लड़ाई के समय नागरिक सुरक्षा संगठन में आपका सक्रिय योगदान रहा व बाद में आप डिप्टी चीफ वार्डेन बनाये गये। सामाजिक कार्यों में आपकी बचपन से ही रुचि रही तथा अनेक समाज सेवी कार्यों में आपकी धर्मपत्नी श्रीमती शान्ति देवी, साधारण गृहिणी होने के साथ सदैव आपका मनोबल उच्चतम बनाये रखती थी। आपको केन्द्रीय सरकार व प्रदेश सरकार ने ताम्र पत्र से सुशोभित किया।

—*—

अग्रोहाधाम पुनर्निर्माण के स्तम्भ अग्रविभूति

श्री नन्दकिशोर जी गोयन्का

अग्रोहा अग्रवालों की पितृ स्थली है। अग्रोहा के वैभव, पराभव तथा पुनर्निर्माण की पिछले पाँच हजार वर्षों से न जाने कितने उतार-चढ़ाव व संघर्षों की कहानियाँ बन चुकी हैं। लेकिन वर्तमान में अग्रोहा धाम के पुनर्निर्माण का दौर चरम सीमा पर है। इसके प्रणेता, कर्ता-धर्ताओं में से एक हैं अग्रगौरव श्री नंदकिशोर जी गोयन्का।

हिसार निवासी सेठ जगन्नाथ जी गोयन्का के पुत्र श्री नन्दकिशोर जी गोयन्का अपनी पितृभूमि अग्रोहा से ऐसे एकाकार हो गये हैं कि शायद ही कोई अपने निजी निवास या व्यवसाय से इतना लगाव रखता हो। श्री गोयन्का जी हिसार में वनस्पति चांवल उत्पादन और तिलहन प्रोसेसिंग व्यवसाय से जुड़े एक धनी परिवार के हैं। आपको अग्रोहा के पुनर्निर्माण तथा विकास और इसको पाँचवे धाम के रूप में प्रतिष्ठित करने का पूर्ण श्रेय जाता है। आपने अथक प्रयत्नों, निष्ठा, आत्म- समर्पण भाव से अग्रोहा के बंजर टीलों को समाप्त कर पूरी शान-शौकत के साथ अग्रसेन भवन, शक्ति सरोवर, महालक्ष्मी मंदिर, शील माता मंदिर, धर्मशाला, अप्पूघर, हनुमान मूर्ति आदि की स्थापना कराई है। सन् 1976 से अग्रोहा के पुनर्निर्माण का शुभारम्भ हुआ। आपके पुत्र श्री सुभाषचंद्र गोयन्का का भी आपको अथक सहयोग व समर्पण प्राप्त हुआ है वे भी अपने पिता से भी कहीं बढ़चढ़कर अग्रोहा धाम के निर्माण में सक्रिय है।

12 मई 1985 को श्री नंदकिशोर जी को अग्रोहा निर्माण समिति का अध्यक्ष तथा दि. 22.12.1985 को इनके पुत्र श्री सुभाष गोयल को अग्रोहा विकास ट्रस्ट का अध्यक्ष मनोनीत किया गया। श्री गोयन्का जी ने अग्रोहा की धर्मशाला की पहली मंजिल का निर्माण करने में अपना तन-मन-धन सब कुछ अर्पित कर दिया।

अग्रोहा में पानी की समस्या निपटाने के लिए शक्ति सरोवर तक नहर का पानी लाने के लिए तीन किलोमीटर लम्बे नाले का पक्का निर्माण कराया तथा दि. 18.10.1986 को शक्ति सरोवर का शुभारम्भ किया। शक्ति सरोवर के चारों ओर 136 कमरों का तिमंजिला भवन तैयार कराया। सरोवर में समुद्र-मंथन की भव्य एवं अद्भुत झांकी का निर्माण कराया। 1992 में माँ सरस्वती के मंदिर का निर्माण कराया तथा मंदिर का विशाल हाल जिसकी छत 165 फुट ऊँची विशाल गुम्बद से आच्छादित है, बनाई गई। 1992 में अग्रोहा में शक्तिशीला मंदिर का आध्यात्मिक एवं कलापूर्ण भवन तैयार कराया। आपने अग्रोहा धाम के तीर्थ-यात्रियों की सुविधाओं के लिए धर्मशाला की दूसरी मंजिल, रसोई घर, प्याऊ, कैन्टीन आदि का निर्माण कराया। आपने आगन्तुकों के मनोरंजन हेतु बाल-क्रीड़ा केन्द्र (अप्पू घर), नौका विहार, घाटों का निर्माण आदि कराया। माता वैष्णो देवी मंदिर, गुंबद के ऊपर 400 मीटर लम्बी गुफा का निर्माण कराया। रोपवे तथा बाबा भैरों मंदिर बनवाया। स्वचालित झांकियों का निर्माण, अमरनाथ गुफा, तिरुपति बालाजी के मंदिर, पाँच मंजिली लिफ्ट का निर्माण कराया।

दि. 14.10.2000 को श्री सत्यप्रकाश आर्य अग्रोहा विकास ट्रस्ट के अध्यक्ष निर्वाचित हुए और श्री नंदकिशोर गोयन्का पुनः अग्रोहा निर्माण समिति के अध्यक्ष मनोनीत किये गये। आप अग्रोहा में चलाये गये निर्माण कार्यों को पूरा करने का संकल्प पूरा करने में लगातार समर्पित रहे हैं।

इस प्रकार अग्रोहा अपने निर्माण के 30 वर्षों की अवधि में पाँचवे तीर्थ धाम के रूप में विकसित और पूरे देश के पर्यटन मानचित्र पर अपना विशिष्ट स्थान बना चुका है। इसके लिए अग्रोहा विकास ट्रष्ट असंख्य

निष्ठावान कार्यकर्त्ताओं, दानदाताओं, समर्पित समाज सेवियों के साथ श्री नंदकिशोर जी गोयन्का का विशेष रूप से आभारी है, जिन्होंने विगत 20 वर्षों से निर्माण हेतु अपने आपको तन-मन-धन से पूर्ण रूप से समर्पित कर रखा है। आज अग्रोहा में अनेक लोग हैं परन्तु गोयन्का जैसी विभूति एक ही है।

श्री नन्दकिशोर जी गोयन्का के द्वारा ट्रस्ट के तत्वावधान् में वर्ष भर में अनेक मेले, समारोह, गोष्ठियाँ विशाल रूप में अग्रोहा में आयोजित किये जा रहे हैं, जो अग्रोहा धाम के महत्व और महिमा को मंडित करने में सोने में सुहागा का काम कर रहे हैं। प्रतिवर्ष शरद् पूर्णिमा को अग्रोहा में विशाल समारोह करते हैं, जिसमें कार्यकर्त्ताओं, संस्थाओं को सम्मानित किया जा रहा है। गोयन्का जी का कहना है कि अग्रोहा विकास ट्रस्ट मेरे प्राण है तो अग्रवाल सम्मेलन मेरी देह (शरीर) है। इनके एकाकार होने से ही हमारी पुण्य भूमि, कर्म भूमि अग्रोहा का विकास सम्भव है यही हमारा धर्म है, ध्येय है, आदर्श और प्रेरणा है।

आपका उद्देश्य अग्र महापुरुषों की मूर्तियाँ स्थापित करने, महापुरुष स्मृति संस्थानों के निर्माण करने और स्मृति जीवनी ग्रन्थ प्रकाशन क़रने संबंधी अधिक से अधिक कार्यों को मूर्तरूप प्रदान करने का है। आप अग्रोहा धाम पत्रिका के लाखों सदस्यों को यही प्रेरणा देते हैं कि अग्र समाज एक हो और राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक बुलंदियों को पार करता रहे।

विश्व जागृति मिशन द्वारा दिल्ली के इन्दिरा गांधी स्टेडियम में "श्रद्धापर्व" महोत्सव में अग्र-विभूतियों में श्रद्धेय परम गोभक्त श्री नन्दकिशोर जी गोयन्का को सम्मान पत्र भेंट कर सम्मानित किया गया। आपने अग्रोहा धाम के विकास हेतु देश में ऐसा "अग्र-रथ" चलाया कि जिससे ट्रस्ट को भारी आय संचित हुई और अग्रोहा के स्थल व भवन आदि को भव्य रूप धारण करने में आशातीत प्रगति प्राप्त हुई।

ऐसे महान तपस्वी का यह योगदान सदैव स्मरणीय रहेगा।

—※—

मन-कर्म, वचन से न्यायप्रियं

श्री विरेन्द्र प्रसाद अग्रवाल

राजस्थान सरकार के महाधिवक्ता श्री विरेन्द्र प्रसाद अग्रवाल मन, कर्म, वचन से व्यावसायिक, सामाजिक एवं राष्ट्रीय कर्तव्यों के प्रति समर्पित हैं। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रांत संघ संचालक श्री अग्रवाल एक जीवंत संस्था हैं। संघ के एक अनुशासित और संस्कारित स्वयं सेवक की विशिष्टताओं की छाप आपके जीवन के हर पहलू में स्पष्ट रूप से देखने को मिलती है। कुशल संगठनकर्ता और विधिवेत्ता विरेन्द्र प्रसाद अग्रवाल का जन्म सन् 1925 में तत्कालीन जयपुर रियासत के नीम का थाना कस्बे में हुआ। आपकी शिक्षा-दीक्षा जयपुर, पिलानी, आगरा व कानपुर में हुई। वर्ष 1947 में अग्रवाल जयपुर हाईकोर्ट से प्लीडर नियुक्त हुए। इसके उपरान्त आपने प्रख्यात अधिवक्ता और "दी बार एसोसिएशन" जयपुर के शलाका पुरुष चिरंजीलाल अग्रवाल के सानिध्य में वकालत प्रारम्भ की।

वरिष्ठ अधिवक्ता विरेन्द्र प्रसाद अग्रवाल दी बार एसोसिएशन, जयपुर के अत्यन्त सम्मानित और प्रबुद्ध सदस्य हैं। वकालत के क्षेत्र में एक प्रखर विधिवेत्ता के रूप में छाप छोड़ने वाले अग्रवाल अपनी व्यक्तिगत विशेषताओं के कारण सर्वसाधारण में भी बेहद लोकप्रिय हैं। आपकी ओजस्वी वाणी और सरलता से आपसे मिलने वाला कोई भी व्यक्ति आपके व्यक्तित्व पर मुग्ध हुए बिना नहीं रह पाता।

आप सन् 1970 में दी बार एसोसिएशन जयपुर के अध्यक्ष बने। आपकी विलक्षण प्रतिभा के कारण राज्य सरकार ने आपको सन् 1990 से 1998 तक महाधिवक्ता के पद की जिम्मेदारी सौंपी। पद आप पर कभी हावी नहीं हुआ बल्कि अपनी कानूनी विद्वता और प्रतिभा से आपने जिस पद पर भी कार्य किया, उस पद की गरिमा में चार चाँद लगाए। सार्वजनिक जीवन में अग्रवाल की प्रतिबद्धता निर्विवाद है।

आपकी राजस्थान हाईकोर्ट की जयपुर बैंच की पुनर्स्थापना के ऐतिहासिक आन्दोलन में स्मरणीय भूमिका कदापि नहीं भूली जा सकती। आपकी वर्ष 1958 में जयपुर बैंच समाप्त होने के बाद शुरू हुए ऐतिहासिक आन्दोलन में महत्त्वपूर्ण भूमिका रही और आन्दोलन के सिलसिले में आप बीस दिन तक जेल में रहे। मार्च, 1967 में जयपुर में हुए गोलीकांड की घटना में आपके पैर में गोली लगी थी। इस गोलीकांड की न्यायिक जांच के लिए बने राजस्थान उच्च न्यायालय के न्यायाधीश न्यायमूर्ति बी.पी.बेरी के एक सदस्यीय आयोग के समक्ष आप पहले गवाह के रूप में पेश हुए। आपकी न्यायिक विद्वता के कारण आपको वर्ष 1973 में एक इंग्लिश कंपनी द्वारा एक केस के सिलसिले में पैरवी करने के लिए इंग्लैंड जाने का अवसर मिला। आपने फ्रांस, स्विटजरलैंण्ड, इटली आदि देशों की भी यात्रा की है।

एक जनप्रिय समाज सेवक होने के कारण अग्रवाल समाज के भी आप लम्बे समय तक अध्यक्ष रहे। आप राजस्थानी वनवासी कल्याण परिषद और भारतीय सेवा प्रतिष्ठान के अध्यक्ष हैं। आपका वनवासी क्षेत्र में काफी योगदान रहा है। इसमें गरीब बच्चों हेतु शिक्षण संस्था, होस्टल आदि का संचालन आपके मार्गदर्शन में हुआ है। अधिवक्ता परिषद राजस्थान के भी आप संरक्षक हैं।

—*—

विश्व हिन्दू परिषद के अग्रनेता
अग्रविभूति – श्री अशोक सिंहल

श्री अशोक सिंहल अग्रवाल समाज में जन्म लेने के बावजूद पूरे संसार के हिन्दू समाज की एक तेजस्वी विभूति के रूप में सम्मान अर्जित कर चुके हैं। अब से 78 वर्ष पूर्व श्री महावीर प्रसाद सिंहल तथा श्रीमती विद्यावती सिंहल के घर जन्मे अशोक जी ने प्रारम्भिक शिक्षा ग्रहण करने के समय ही संतों की आध्यात्मिक शक्ति से प्रभावित होकर निश्चय कर बैठे कि उन्हें कोई गृहस्थी नहीं बसानी है, न कोई रोजगार करना है।

यद्यपि आपको इंजीनियरिंग की पढ़ाई के लिए काशी भेजा गया, लेकिन आपकी रुचि नहीं रही। लेकिन आपको बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय तथा काशी नगरी में प्राचीन सांस्कृतिक संस्कारों तथा आध्यात्मिक साहित्य के अध्ययन का सुरुचिकर अवसर मिल गया। फिर भी आपने बी.एस.सी. धातु-विज्ञान से उत्तीर्ण कर ली। आपका रुझान 1942 से ही राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ से था। देश-विभाजन का समूचा चित्रण आपंके सामने था। गांधीजी की हत्या का दोषारोपण राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ पर किया गया। यह श्री अशोक जी को बहुत असत्य और बुरा लगा। कांग्रेस पार्टी के ऐसे दुष्प्रचार के विरोध में तथा सत्य के लिए आपने संघ प्रचारक बनने का संकल्प ले लिया।

सन् 1942 के आन्दोलन में आपने उत्साह पूर्वक भाग लिया, उसे सफल बनाने के लिए इलाहाबाद में स्कूल-कॉलेजों को बंद करवाकर आन्दोलन को सक्रिय बनाया। उन्होंने देखा कि इस आन्दोलन में मुसलमान

शामिल नहीं होते हैं। वे कक्षायें चलाते रहते हैं। देश को धोखा दे रहे हैं। कांग्रेसी नेता समझ नहीं रहे हैं। ऐसे में देश का दुर्भाग्य उनकी नजर में आने लगा था।

श्री अशोक जी के घर श्री रज्जू भैया जो एक राष्ट्रीय स्वयं सेवक थे, आया करते थे। उनके द्वारा प्रेरित अशोक जी, संघ शाखाओं से जुड़ गये। संघ के प्रचारक होने के कारण जब संघ पर प्रतिबन्ध लगाया गया तो उन्हें गिरफ्तार कर वर्ष 1949 में जेल में रहना पड़ा।

श्री अशोक जी पर वृन्दावन, ऋषिकेश आदि स्थानों के संतों का अत्यन्त प्रभाव था। इनके गुरुदेव श्री रामचन्द्र तिवारी थे। इन्होंने आपको संघ में रहते हुए साधना व शक्ति, वेदों का अध्ययन करने के प्रति उत्साहित किया। आप उनके सानिध्य में धार्मिक वृत्ति से परिपूर्ण होने लगे। इनकी योग्यता-साधना देखकर विश्व हिन्दू परिषद के भाऊराव जी ने परिषद का कार्य सौंप दिया। आप विश्व हिन्दू परिषद के माध्यम से "गो-रक्षा" का कार्य, हिन्दू संस्कृति की रक्षा, समाज संगठन व सेवा-सत्संग कार्यों को बढ़ावा देने में जुट गये। हिन्दुत्व-गौरव व हिन्दू-स्थलों, मंदिरों की सुरक्षा आदि की पुनर्स्थापना जैसे कार्यों को महत्व देकर मनुष्य के गिरते चरित्र को संवारने के कार्यों में लग गये।

आज श्री अशोक सिंहल ख्यातिप्राप्त विश्व हिन्दू परिषद के कार्यकारी अध्यक्ष हैं। राम-जन्म भूमि के मुक्ति यज्ञ में आपका जो योगदान है, उसकी तुलना मिलना कठिन है। आप काशी, मथुरा आदि के मंदिरों की मुक्ति के लिए भी निरन्तर संघर्षरत हैं।

आप में अदम्य उत्साह, निर्भीकता और कार्यों के प्रति पूर्ण समर्पण भाव है। ऐसे अग्रविभूति व्यक्तित्व के धनी के कारण ही आज हिन्दू समाज का अस्तित्व कायम रह सकता है। काश कोई इस बात को समझे तथा श्री सिंहल के विचारों के अनुकूल हिन्दू-संस्कृति की सुरक्षा के लिए सहयोगी बने।

—*—

समाजसेवी एवं राजनीतिज्ञ
श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल

राजस्थान के जनपद भरतपुर की तहसील नगर के अन्तर्गत ग्राम थून में जन्मे सतीश अग्रवाल एक मृदुभाषी कुशल राजनीतिज्ञ यशस्वी अधिवक्ता और समाजसेवी थे।

1928 में जन्मे सतीश अग्रवाल बचपन से ही मेधावी थे। आपने 1943 में हाई स्कूल, 1945 में इंटरमीडिएट की परीक्षा चम्पा अग्रवाल कालेज मथुरा से उत्तीर्ण की थी। इसके बाद आप वापस राजस्थान आ गए और 1947 में पिलानी के बिरला कॉलेज से बी.काम. की उपाधि प्राप्त की। आप बचपन से ही वकील बनना चाहते थे। अतः अपनी इस इच्छापूर्ति के लिए उन्होंने जयपुर कालेज में वकालत की पढ़ाई प्रारम्भ की। 1952 में एल.एल.बी. की प्रतिष्ठित उपाधि प्राप्त करने के बाद आप उसी वर्ष वकालत के पेशे से जुड़ गए। अपने परिश्रम और लगन से आप राजस्थान उच्च न्यायालय के सम्मानित एवं प्रतिष्ठित अधिवक्ताओं में से एक रहे। आप युवावस्था से ही सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध थे। बालविवाह, दहेजप्रथा, अन्य कुरीतियों को समाज से दूर करना चाहते थे। अपने इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए आपने वर्ष 1956 में श्री अग्रवाल नवयुवक मंडल की स्थापना की। यह उनका पहला सामाजिक कार्य था, जिसके बलबूते पर आपने अपने आपको विकसित किया और समाज को नई दिशा प्रदान की। आपकी लगनशीलता और कर्मठता से प्रेरित होकर कुछ लोगों ने आपको शिक्षा की दिशा में भी सुधार करने को प्रेरित किया। जिसके परिणामस्वरूप आपने अग्रवाल शिक्षा समिति ट्रस्ट जयपुर की

स्थापना की और उसके आजीवन ट्रस्टी रहे। वर्ष 1967 से 1970 तक आप अग्रवाल कालेज जयपुर के अध्यक्ष रहे।

राजस्थान में उच्चशिक्षा को प्राथमिकता देने के उद्देश्य से आपने अग्रसेन शिक्षण प्रशिक्षण केन्द्र की स्थापना जयपुर में की। इसके लिए आपने खुले दिल से 40 लाख रुपये देकर संस्थान की स्थापना की, जो एम.एड. कालेज के नाम से प्रसिद्ध है।

सामाजिक कार्यों के साथ-साथ आप राजनीति से भी जुड़े रहे और 1951 में आप राजस्थान जनसंघ के संस्थापक सदस्य बने। इसके बाद 1955 से 1958 तक जयपुर नगर पालिका के सदस्य रहे और आप जौहरी बाजार विधानसभा क्षेत्र से वर्ष 1957 से 1972 तक राजस्थान विधानसभा के सदस्य रहे। आपके कार्यों और प्रसिद्धि को देखते हुए जनसंघ ने वर्ष 1977 में लोकसभा के लिए चुनाव लड़ने को कहा। अतः आपने 1977 से 1984 तक लोकसभा में जयपुर का प्रतिनिधित्व किया।

प्रधानमंत्री मोरारजी भाई देसाई के मंत्रिमंडल में आप 1977 से 1979 तक वित्तराज्य मंत्री के पद पर रहे और इसके उपरान्त वर्ष 1981 से 1983 तक दो बार पब्लिक एकाउंट कमेटी के अध्यक्ष पद पर कार्य करके अपनी कुशलता का परिचय दिया।

सतीश अग्रवाल पहली बार जब केन्द्रीय मंत्री बनकर दिल्ली आए तो उनका सम्पर्क स्व. बशेशरनाथ गोटेवाले से हुआ। उन्होंने श्री गोटेवाले के साथ राष्ट्रीय सेवाओं के पश्चात् सामाजिक कार्यक्रमों में भाग लिया।

जब वे राज्य सभा के सदस्य निर्वाचित हुए तो महासंघ की एक बैठक में उनको राष्ट्रीय अध्यक्ष का पद भार सौंपा गया।

उन्होंने पद की गरिमा को बनाए रखते हुए लगातार सामाजिक कार्यों में सक्रिय रहे।

अप्रैल 1994 में आप राजस्थान से राज्य सभा के सदस्य निर्विरोध निर्वाचित किए गए। अपनी दूर दृष्टि, सामाजिक दृष्टिकोण, समस्याओं के प्रति जागरूक श्री सतीश अग्रवाल का हृदयगति रुक जाने से 10 सितम्बर, 1997 को जयपुर में देहान्त हो गया। ऐसे आदर्श पुरुष को शत् शत् नमन।

—*—

विश्व हिन्दू परिषद के अग्रनेता

अग्रविभूति – श्री अशोक सिंहल

श्री अशोक सिंहल अग्रवाल समाज में जन्म लेने के बावजूद पूरे संसार के हिन्दू समाज की एक तेजस्वी विभूति के रूप में सम्मान अर्जित कर चुके हैं। अब से 78 वर्ष पूर्व श्री महावीर प्रसाद सिंहल तथा श्रीमती विद्यावती सिंहल के घर जन्मे अशोक जी ने प्रारम्भिक शिक्षा ग्रहण करने के समय ही संतों की आध्यात्मिक शक्ति से प्रभावित होकर निश्चय कर बैठे कि उन्हें कोई गृहस्थी नहीं बसानी है, न कोई रोजगार करना है।

यद्यपि आपको इंजीनियरिंग की पढ़ाई के लिए काशी भेजा गया, लेकिन आपकी रुचि नहीं रही। लेकिन आपको बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय तथा काशी नगरी में प्राचीन सांस्कृतिक संस्कारों तथा आध्यात्मिक साहित्य के अध्ययन का सुरुचिकर अवसर मिल गया। फिर भी आपने बी.एस.सी. धातु-विज्ञान से उत्तीर्ण कर ली। आपका रुझान 1942 से ही राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ से था। देश-विभाजन का समूचा चित्रण आपके सामने था। गांधीजी की हत्या का दोषारोपण राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ पर किया गया। यह श्री अशोक जी को बहुत असत्य और बुरा लगा। कांग्रेस पार्टी के ऐसे दुष्प्रचार के विरोध में तथा सत्य के लिए आपने संघ प्रचारक बनने का संकल्प ले लिया।

सन् 1942 के आन्दोलन में आपने उत्साह पूर्वक भाग लिया, उसे सफल बनाने के लिए इलाहाबाद में स्कूल-कॉलेजों को बंद करवाकर आन्दोलन को सक्रिय बनाया। उन्होंने देखा कि इस आन्दोलन में मुसलमान

शामिल नहीं होते हैं। वे कक्षायें चलाते रहते हैं। देश को धोखा दे रहे हैं। कांग्रेसी नेता समझ नहीं रहे हैं। ऐसे में देश का दुर्भाग्य उनकी नजर में आने लगा था।

श्री अशोक जी के घर श्री रज्जू भैया जो एक राष्ट्रीय स्वयं सेवक थे, आया करते थे। उनके द्वारा प्रेरित अशोक जी, संघ शाखाओं से जुड़ गये। संघ के प्रचारक होने के कारण जब संघ पर प्रतिबन्ध लगाया गया तो उन्हें गिरफ्तार कर वर्ष 1949 में जेल में रहना पड़ा।

श्री अशोक जी पर वृन्दावन, ऋषिकेश आदि स्थानों के संतों का अत्यन्त प्रभाव था। इनके गुरुदेव श्री रामचन्द्र तिवारी थे। इन्होंने आपको संघ में रहते हुए साधना व शक्ति, वेदों का अध्ययन करने के प्रति उत्साहित किया। आप उनके सानिध्य में धार्मिक वृत्ति से परिपूर्ण होने लगे। इनकी योग्यता-साधना देखकर विश्व हिन्दू परिषद के भाऊराव जी ने परिषद का कार्य सौंप दिया। आप विश्व हिन्दू परिषद के माध्यम से "गो-रक्षा" का कार्य, हिन्दू संस्कृति की रक्षा, समाज संगठन व सेवा-सत्संग कार्यों को बढ़ावा देने में जुट गये। हिन्दुत्व-गौरव व हिन्दू-स्थलों, मंदिरों की सुरक्षा आदि की पुनर्स्थापना जैसे कार्यों को महत्व देकर मनुष्य के गिरते चरित्र को संवारने के कार्यों में लग गये।

आज श्री अशोक सिंहल ख्यातिप्राप्त विश्व हिन्दू परिषद के कार्यकारी अध्यक्ष हैं। राम-जन्म भूमि के मुक्ति यज्ञ में आपका जो योगदान है, उसकी तुलना मिलना कठिन है। आप काशी, मथुरा आदि के मंदिरों की मुक्ति के लिए भी निरन्तर संघर्षरत हैं।

आप में अदम्य उत्साह, निर्भीकता और कार्यों के प्रति पूर्ण समर्पण भाव है। ऐसे अग्रविभूति व्यक्तित्व के धनी के कारण ही आज हिन्दू समाज का अस्तित्व कायम रह सकता है। काश कोई इस बात को समझे तथा श्री सिंहल के विचारों के अनुकूल हिन्दू-संस्कृति की सुरक्षा के लिए सहयोगी बने।

—*—

समाजसेवी एवं राजनीतिज्ञ
श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल

राजस्थान के जनपद भरतपुर की तहसील नगर के अन्तर्गत ग्राम थून में जन्मे सतीश अग्रवाल एक मृदुभाषी कुशल राजनीतिज्ञ यशस्वी अधिवक्ता और समाजसेवी थे।

1928 में जन्मे सतीश अग्रवाल बचपन से ही मेधावी थे। आपने 1943 में हाई स्कूल, 1945 में इंटरमीडिएट की परीक्षा चम्पा अग्रवाल कालेज मथुरा से उत्तीर्ण की थी। इसके बाद आप वापस राजस्थान आ गए और 1947 में पिलानी के बिरला कॉलेज से बी.काम. की उपाधि प्राप्त की। आप बचपन से ही वकील बनना चाहते थे। अतः अपनी इस इच्छापूर्ति के लिए उन्होंने जयपुर कालेज में वकालत की पढ़ाई प्रारम्भ की। 1952 में एल.एल.बी. की प्रतिष्ठित उपाधि प्राप्त करने के बाद आप उसी वर्ष वकालत के पेशे से जुड़ गए। अपने परिश्रम और लगन से आप राजस्थान उच्च न्यायालय के सम्मानित एवं प्रतिष्ठित अधिवक्ताओं में से एक रहे। आप युवावस्था से ही सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध थे। बालविवाह, दहेजप्रथा, अन्य कुरीतियों को समाज से दूर करना चाहते थे। अपने इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए आपने वर्ष 1956 में श्री अग्रवाल नवयुवक मंडल की स्थापना की। यह उनका पहला सामाजिक कार्य था, जिसके बलबूते पर आपने अपने आपको विकसित किया और समाज को नई दिशा प्रदान की। आपकी लगनशीलता और कर्मठता से प्रेरित होकर कुछ लोगों ने आपको शिक्षा की दिशा में भी सुधार करने को प्रेरित किया। जिसके परिणामस्वरूप आपने अग्रवाल शिक्षा समिति ट्रस्ट जयपुर की

स्थापना की और उसके आजीवन ट्रस्टी रहे। वर्ष 1967 से 1970 तक आप अग्रवाल कालेज जयपुर के अध्यक्ष रहे।

राजस्थान में उच्चशिक्षा को प्राथमिकता देने के उद्देश्य से आपने अग्रसेन शिक्षण प्रशिक्षण केन्द्र की स्थापना जयपुर में की। इसके लिए आपने खुले दिल से 40 लाख रुपये देकर संस्थान की स्थापना की, जो एम.एड. कालेज के नाम से प्रसिद्ध है।

सामाजिक कार्यों के साथ-साथ आप राजनीति से भी जुड़े रहे और 1951 में आप राजस्थान जनसंघ के संस्थापक सदस्य बने। इसके बाद 1955 से 1958 तक जयपुर नगर पालिका के सदस्य रहे और आप जौहरी बाजार विधानसभा क्षेत्र से वर्ष 1957 से 1972 तक राजस्थान विधानसभा के सदस्य रहे। आपके कार्यों और प्रसिद्धि को देखते हुए जनसंघ ने वर्ष 1977 में लोकसभा के लिए चुनाव लड़ने को कहा। अतः आपने 1977 से 1984 तक लोकसभा में जयपुर का प्रतिनिधित्व किया।

प्रधानमंत्री मोरारजी भाई देसाई के मंत्रिमंडल में आप 1977 से 1979 तक वित्तराज्य मंत्री के पद पर रहे और इसके उपरान्त वर्ष 1981 से 1983 तक दो बार पब्लिक एकाउंट कमेटी के अध्यक्ष पद पर कार्य करके अपनी कुशलता का परिचय दिया।

सतीश अग्रवाल पहली बार जब केन्द्रीय मंत्री बनकर दिल्ली आए तो उनका सम्पर्क स्व. बशेशरनाथ गोटेवाले से हुआ। उन्होंने श्री गोटेवाले के साथ राष्ट्रीय सेवाओं के पश्चात् सामाजिक कार्यक्रमों में भाग लिया।

जब वे राज्य सभा के सदस्य निर्वाचित हुए तो महासंघ की एक बैठक में उनको राष्ट्रीय अध्यक्ष का पद भार सौंपा गया।

उन्होंने पद की गरिमा को बनाए रखते हुए लगातार सामाजिक कार्यों में सक्रिय रहे।

अप्रैल 1994 में आप राजस्थान से राज्य सभा के सदस्य निर्विरोध निर्वाचित किए गए। अपनी दूर दृष्टि, सामाजिक दृष्टिकोण, समस्याओं के प्रति जागरूक श्री सतीश अग्रवाल का हृदयगति रुक जाने से 10 सितम्बर, 1997 को जयपुर में देहान्त हो गया। ऐसे आदर्श पुरुष को शत् शत् नमन।

—※—

कर्मठ समाज सेवी श्री गोवर्धनदास मित्तल

राजस्थान की राजधानी जयपुर के अग्रवाल व्यवसायी परिवार में दि. 31 जून 1929 को जन्में श्री गोवर्धन दास मित्तल "बनाना किंग" के नाम से सुप्रसिद्ध हैं। आपने भारतीय भाषा के साथ उर्दू और फारसी का भी अध्ययन किया।

व्यापार के सिलसिले में सन् 1965 में आप बुरहानपुर (मध्यप्रदेश) गये और केले की आढ़त करने लगे। इन्होंने 1978 में केले व्यवसाय का भारत में सबसे बड़ी मण्डी का निर्माण कराया। जहाँ से 2000 ट्रक प्रतिदिन जिनका मूल्य तीन करोड़ है, केले की निकासी होती है। इन्होंने बुरहानपुर में सर्वप्रथम अखिल भारतीय ट्रांसपोर्ट आरम्भ किया और यूनियन का गठन किया। इन्होंने 1989 में जलगाँव, जामोद आदि में शाखायें खोली और केले की उन्नत किस्म की खेती कराई।

1992 में बहुमूल्य जड़ी-बूटी सफेद-मूसली की 14 एकड़ भूमि में कृषि आरम्भ कीं। धीरे-धीरे नई-नई तकनीक के माध्यम से सफेद-मूसली का उत्पादन चार हजार हैक्टर भूमि में करने लगे। श्री जी.डी. मित्तल को 'सफेद मूसली के पितामह" के रूप में जाना जाने लगा।

आप सामाजिक गतिविधियों में भी सक्रिय रूप से भाग लेते रहे हैं। मुम्बई के असामाजिक क्षेत्रों से 600 से अधिक स्त्रियों को आपने मुक्त कराया और उनका पुनर्वास करवाया। आप ब्रह्म कुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय से पिछले 45 वर्षों से जुड़े हुए हैं। आप विवाहों में दहेज प्रथा के पूर्णतया विरोधी हैं तथा अपने परिवार में भी इसका निर्वाह करते हैं। आपने अनेकों कन्याओं का विवाह आर्य समाज के माध्यम से केवल 500/- रुपये में कराये हैं।

ऐसे उद्योगपति, लगनशील, समाज सुधार के चिंतक के प्रति अग्रवाल समाज गौरवान्वित है।

डॉ. विष्णुचंद्र गुप्त

डॉ. विष्णुचन्द्र गुप्त अग्रवाल समाज के जाने माने लेखक, साहित्यकार, कवि एवं उत्साही सामाजिक कार्यकर्ता हैं। आप पंजाब विश्वविद्यालय से स्नातक और व्यवसाय से अध्यापक हैं। आपने 39 वर्ष राजकीय सेवा में अध्यापन करने के बाद 1994 में सेवानिवृत्ति प्राप्त की।

66 वर्षीय श्री विष्णुचंद्र गुप्त मूल रूप से दिल्ली के ग्रामीण क्षेत्र पल्ला के निवासी हैं। आपका पूरा जीवन अग्रसेन, अग्रोहा, अग्रवाल एवं सामाजिक संगठन हेतु समर्पित रहा है। आप 24 वर्ष की अवस्था में ही समाजसेवा के कार्यों में जुट गए और अपने द्वारा किए गए कार्यों से समाज पर विशेष छाप छोड़ते चले गए।

सन् 1962 में आपने वैश्य संगठन सभा, सदर बाजार, दिल्ली के गठन में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई और वर्षों तक उसके सहमंत्री, मंत्री पद पर कार्य करते हुए उसे बुलंदी तक पहुँचाया।

आप प्रारम्भ से ही युवा अग्रवालों के प्रेरणा स्रोत रहे और 1966 में श्री अग्रसेन मण्डल का गठन कर युवकों में सामाजिक जागृति लाने और दहेज तथा भंगड़ा आदि सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध वातावरण तैयार करने में उल्लेखनीय योगदान दिया। आपने इसी समय भारतीय स्वयं सेवक मंडल के गठन में सहयोग दिया तथा उसके सचिव पद से विभिन्न सामाजिक समारोहों के आयोजन तथा उस हेतु सेवा कार्य जुटाने में भूमिका निभाई। इसके अलावा श्री गुप्त ने मौहल्ला पंचायत सुधार समिति एवं अन्य समितियों के माध्यम से भी जनसेवा एवं सामाजिक सुधार की दिशा में अनेक कार्य किये।

—*—

न्यायमूर्ति श्री के.सी. अग्रवाल

मुख्य न्यायाधिपति

न्यायमूर्ति श्री के.सी.अग्रवाल का जन्म 15 जनवरी, 1934 को हुआ। एल.एल.बी. तक की शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात् 6 अगस्त, 1973 को इलाहाबाद उच्च न्यायालय में न्यायाधीश के रूप में आपकी नियुक्ति हुई। प्रतिभा सम्पन्न श्री अग्रवाल 39 वर्ष की अल्पायु में न्यायाधीश पद पर चयनित होने वाले एक विशिष्ट व्यक्ति हैं। इससे पूर्व आप इलाहाबाद उच्च न्यायालय में प्रख्यात अधिवक्ता रहे। आपकी विधि विशेषज्ञता को देखकर ही उत्तर प्रदेश सरकार ने आपको सिविल कार्य के लिए दिसम्बर, 1970 में मुख्य स्थायी अधिवक्ता के पद पर नियुक्त किया। आपने अपने बुद्धि-कौशल और तर्क-शक्ति से उत्तर प्रदेश सरकार की ओर से विभिन्न प्रकार के मामलों को सफलतापूर्वक निपटाया।

माननीय श्री के.सी. अग्रवाल ने इलाहाबाद एवं लखनऊ खण्डपीठों में न्यायाधीश के रूप में अपनी सेवाएँ दीं और 24 मई, 1989 से आपने इलाहाबाद उच्च न्यायालय में कार्यकारी मुख्य न्यायाधीश के रूप में कार्य किया। आप 15 अप्रेल, 1990 को राजस्थान उच्च न्यायालय में मुख्य न्यायाधीश के पद पर नियुक्त हुए।

—*—

साहित्य निधि

अग्र गौरव श्री चाँदबिहारी लाल गोयल 'साहित्यरत्न'

(समर्पण भाव से ही सच्ची सेवा)

– अशोक आमेरिया, प्रबंध सम्पादक

सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, साहित्यिक और शैक्षणिक क्षेत्र में समानरूप की क्रियाशीलता का संगम किसी एक व्यक्ति में होना नामुमकिन लगता है। लेकिन अग्रवाल समाज में एक ऐसी शख्सियत है जिसमें इन सभी का संगम है और विभिन्न क्षेत्रों के लोग इस संगम से लाभान्वित हो रहे हैं।

10 अगस्त, 1934 में अग्रवाल समाज के प्रतिष्ठित मावेवाला परिवार में स्व. श्री मदनलाल जी के घर में जन्में चांदबिहारी लाल गोयल ने सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, शैक्षणिक और साहित्यिक क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य किया है। स्नातकोत्तर तक की शिक्षा प्राप्त श्री गोयल "साहित्य रत्न" की उपाधि से भी अलंकृत हैं। आप राधावल्लभीय परम् वैष्णव हैं।

श्री गोयल ने शिक्षा प्राप्ति के साथ राज्य सेवा से अपना जीवन शुरू किया और वणिक बुद्धि का उपयोग कर व्यावसायिक कार्यों में भी अपने भाईयों का सहयोग किया। जनता की आवासीय समस्या के निदान हेतु आपने सूरजपोल गृह विकास सहकारी समिति बनाकर लक्ष्मीनारायणपुरी का निर्माण एवं विकास कराया। पिछले 40 सालों से आप इस बस्ती के महामंत्री हैं।

1979, 1992 तथा 2004 में गलता तीर्थ क्षेत्र में बनने वाले

बूचड़खानें का प्रबल विरोध करते हुए आपने "गलता तीर्थ बचाओ" संघर्ष समिति की स्थापना की और सफल हुये।

श्री गोयल का लगाव सामाजिक सेवा के साथ-साथ धार्मिक कार्यों में भी बराबर रहा है। गोयल ने अपनी बस्ती लक्ष्मीनारायणपुरी में जन-सहयोग से विशाल शिवमंदिर का निर्माण करवाया। अपने निवास पर भी श्री गोयल धार्मिक उत्सव व अनुष्ठान, अखण्ड नाम संकीर्तन और रामायण पाठ का आयोजन करते रहते हैं। इसके अलावा 108 कुंडीय महायज्ञों का भी आपने कई बार आयोजन किया है। आपने लक्ष्मीनारायणपुरी में वेदमाता गायत्री संस्थान की शाखा का गठन किया है जिसके महामंत्री के रूप में आपने अनेक शोभायात्राऐं व योग-साधना शिविर, गायत्री महायज्ञ, सत्संग प्रवचन के आयोजन कर समाज को लाभ पहुँचाने के कार्य किये हैं।

आपने लक्ष्मीनारायणपुरी और आस-पास के क्षेत्रों के लोगों की चिकित्सा सुविधा के लिए एक ट्रस्ट की स्थापना की और 1200 वर्गगज का एक भूखंड न्यास से खरीदकर उस पर जन सहयोग से भवन बनवाया और "श्रीरघुनाथदास कोयलेवाला राजकीय 'अ' श्रेणी चिकित्सालय" के नाम से उस भवन में 13 नवंबर 1976 से अस्पताल का शुभारम्भ करवाया। यह अस्पताल सम्पूर्ण सुविधाओं और 30 शैय्याओं से युक्त है, अस्पताल में कई रोगों के निदान के लिए शिविर लगते हैं। आप इस ट्रस्ट के महामंत्री हैं।

राजनीतिज्ञ एवं अनेक प्रांतों के राज्यपाल रह चुके पं. श्री रामकिशोर व्यास की स्मृति में श्री गोयल के प्रयासों से ही लक्ष्मीनारायणपुरी में 1982 में "श्रीरामकिशोर व्यास स्मृति संस्थान" की स्थापना हुई तथा 16 अप्रेल 1983 को "व्यास पार्क" में व्यासजी की प्रतिमा की प्रतिष्ठा कराई गई।

शिक्षा-प्रसार के प्रति भी श्री गोयल जागरूक एवं अग्रणी रहे हैं। अपने प्रयासों से श्री गोयल ने 1968 में "श्री राजू शिक्षा समिति" का गठन किया तथा "श्री इन्दिरा बाल विद्या मंदिर" (माध्यमिक विद्यालय, लक्ष्मीनारायणपुरी), "मोहन बाल भारती", "इन्दिरा शिक्षा निकेतन,

पालडी मीणा" आदि संस्थाओं का शुभारम्भ किया। आप इनके संस्थापक अध्यक्ष हैं।

साहित्य सृजन और साहित्यिक गोष्ठियों में भी श्री गोयल की गहरी रूचि है। "श्रीगुरु कमलाकर कमल स्मृति संस्थान" एवं "भारती मंदिर संस्थान" जयपुर के महासचिव के रूप में आपने बृहत कार्यों का समय-समय पर संपादन किया है। 11 अक्टूबर 1992 को "दीक्षांत समारोह" एवं 31 अक्टूबर 1993 को "विद्वानों का अभिनंदन" व उपाधि वितरण का आयोजन श्री गोयल के प्रयासों से ही संभव हुआ। इस आयोजन में आपको "साहित्य निधि की उपाधि" से अलंकृत किया गया। इसके अलावा 11 अक्टूबर 97 को सूर्य मानव सेवा समिति ने दशहरा महोत्सव पर श्री गोयल को उनकी उत्कृष्ट समाज सेवा के लिए प्रशस्ति पत्र एवं सम्मान चिन्ह देकर सम्मानित किया गया। 1991 में गणतंत्र दिवस के अवसर पर विशेष प्रतिभा व प्रशंसनीय सेवाओं के लिए राज्यपाल द्वारा "योग्यता पुरस्कार (मैरिट अवार्ड)" से आपको सम्मानित किया गया। अग्रवाल वैश्य समाज से आप आरंभ से जुडे हैं। सन् 1996 में श्री गोयल को "अग्रवाल समाज समिति उत्तरी क्षेत्र जयपुर" की कार्यकारिणी ने अध्यक्ष पद पर चुना। समिति के संविधान का आपने ही निर्माण किया, जो अद्वितीय है। अग्रवाल समाज के विभिन्न आयोजनों में उच्च प्रशासनिक अधिकारी होने तथा समाज के उत्कृष्ट सेवा कार्यों में सक्रिय भागीदारी के लिए 1984, 95 और 98 में आपको सम्मानित किया गया। श्री गोयल अनेकों सामाजिक संस्थाओं के पदाधिकारी हैं। मानव कल्याण समिति, राजस्थान व अग्रवाल सेवा योजना राजस्थान के संरक्षक हैं। इन संस्थाओं के माध्यम से महापुरुषों, स्वाधीनता सेनानियों इत्यादि की जयन्तियां व पुण्य तिथियों के आयोजन व प्रतियोगिताऐं अन्य संस्थाओं व स्कूलों में कराते हैं तथा प्रमुख वक्ता के रूप में उनकी जीवनी पर प्रकाश डालकर जानकारी देते हैं।

श्री गोयल "अग्रोहा विकास ट्रस्ट जयपुर इकाई" के उपाध्यक्ष, "अखिल भारतीय वैश्य महासम्मेलन की जयपुर जिला इकाई" के अति.

महामंत्री, "जयपुर महानगर एवं देहात जिला अग्रवाल सम्मेलन" के वैवाहिक प्रकोष्ठ के संयोजक है। आपने कई वैवाहिक परिचय सम्मेलन आयोजित कर समाज के अनेक युवक-युवतियों के रिश्ते तय करने में अभूतपूर्व कार्य सम्पादन किया है। अग्रवाल सेवा योजना के द्वारा प्रकाशित अग्रवाल ज्योति मैरिज ब्यूरो के त्रैमासिक प्रकाशन में आपका पूरा सहयोग है। आप अपने घर पर वैवाहिक रिश्ते तय कराने के कार्य में जुटे रहते हैं। समाज के संकल्प को पूरा करने के लिए आप सौ से अधिक अग्रवाल महापुरुषों के व्यक्तित्व-कृतित्व पर उनकी जीवनी लिख रहे हैं। यह ग्रन्थ शीघ्र ही प्रकाशित किया जा रहा है। आप कुशल लेखक, कवि, व्याख्याता हैं। सभा और समारोहों की व्यवस्था एवं संचालन में भी दक्ष हैं। आपके प्रस्ताव और उन पर निर्णय सर्व-मान्य होते हैं। आप "मशाल" और "अधिकार प्रेसों" में पत्रकारिता सम्पादन भी कर चुके हैं। संस्थाओं और विद्यालयों की स्मारिकाओं के प्रकाशन में आपका अप्रमेय सहयोग रहता है।

श्री गोयल अपने परम आराध्य ठाकुर श्री राधावल्लभ लाल के अनन्य सेवानिष्ठ हैं। श्री राधाबल्लभ समाज के आप संयोजक है। वर्षभर के सभी उत्सवों, राधाष्टमी, हितोत्सव, अखंण्ड नाम संकीर्तन, फूल व झूला महोत्सव व अन्य उत्सवों में आपकी पूर्ण रूप से भागीदारी रहती है। आप किसी भी उत्सव-सत्संग को नहीं छोड़ते हैं। वाणीजी-चौकी पर बैठकर भजन-सत्संग करते हैं, पूरा आनन्द लेते हैं। श्रद्धेय गुरुदेव गोस्वामी श्री प्रेमकुमार.जी महाराज के द्वारा प्रस्तुत श्रीमद्भागवत ज्ञान-कथा के बृहत आयोजनों का उत्तम संचालन करते हैं। वर्ष 2001 में "बृहत भागवत कथा" का आयोजन गोविन्ददेव मंदिर स्थित जयनिवास उद्यान में पुरूषोत्तम मास के अवसर पर आपने ही कर्मठता से व्यवस्था कर सफल बनाया और आगे भी सतत् कथा आयोजन की व्यवस्था में तल्लीन है। जयपुर में श्री हितराधाबल्लभ सत्संग भवन, वृन्दावन में जयपुर धर्मशाला के निर्माण में आपका पूर्ण सहयोग रहा है।

श्री गोयल वस्तुतः एक कर्मठ, सामाजिक कार्यकर्ता हैं लेकिन राजनीति क्षेत्र में भी पीछे नहीं है। राजतंत्र की कोई भी पार्टी हो आपका सभी से समभाव व पूर्ण सम्पर्क है। आपकी निःस्वार्थ कार्यभावना से सभी परिचित है आपको सभी मंचों पर सम्मान मिलता है। आपके द्वारा उठाया कोई कार्य अधूरा नहीं रहता। पूर्ण सफलता प्राप्त करके ही आप संतुष्ट होते हैं। आपका अपनी बस्ती लक्ष्मीनारायणपुरी के विकास के प्रति इतना लगाव है कि कोई भी विपदा या समस्या हो, आप उसमें सक्रिय होकर निपटाने में जुट जाते हैं।

आप अपने परिवार से बहुत स्नेह रखते हैं। आपको भी पूरे परिवार-रिश्तेदारों का स्नेह प्राप्त है। आपने पूरे शहर में अपनी पहचान बना रखी है। आपने भारत के चारों धामों की यात्राऐं तीन बार परिवार सहित पूरी की है। हरिद्वार, अयोध्या, वृन्दावन तो जैसे आपके घर ही हैं।

आपने राज्य सरकार की चालीस वर्ष तक विभिन्न पदों पर आसीन रहकर अत्यन्त गरिमा और पूर्ण कुशलता से सेवा की है। अपने साथियों का सदैव प्रत्येक रूप से सहयोग व मार्ग-दर्शन किया है। राज्य सेवा में भी आपने बहुत आयाम निश्चित किये। कार्य-संचालन पद्धति में नीतियाँ निर्धारण कर कार्य को आसान करने के तरीके निकाले। आपने राज्य सेवा में रहते हुये बहुत यात्राऐं की। अनेक सम्मेलनों, बैठकों में प्रतिनिधित्व किया। अनूठी योजना "युवा संसद" के आप जनक रहे। राजस्थान के समस्त जिलों में घूम-घूमकर सैंकड़ों विद्यालयों में संसद की प्रक्रियाओं के सफल आयोजन किये व पारितोषिक वितरण समारोह आयोजित कराये। यह कार्य आपकी लगन, विद्वता और कर्मठता का प्रतीक था।

गृह विभाग, शिक्षा विभाग, नगर आयोजना विभाग, सहकारिता विभाग अंत में विधि एवं संसदीय मामलात विभाग में आपने अदालती व वित्तीय हजारों मामलों के निस्तारण में अपनी योग्यता का परिचय दिया और राज्य के विकास में भागीदारी निभाई। आपको समय की पाबंदी और अनुशासन बहुत प्रिय है। जो भी कार्यक्रम निश्चित हो, सर्वप्रथम समय पर आपकी उपस्थिति निश्चित है। आप समय पर पहुँचने के प्रति बताते

हैं कि इससे अगले कार्यक्रमों की योजना का पूर्ण स्वरूप व व्यवस्था अपने हाथों में रहती है और सफलता मिलती है।

आपने अपने विविध समाजों व संस्थाओं के महानुभाव परिवारों के लिए भी अनेक गोष्ठियाँ, सहयोग यात्राऐं व प्रोग्राम सम्पन्न करवाये हैं। अयोध्या, वृन्दावन, अग्रोहाधाम, माता सती, ढ़ाढ़ण माता, शिवाड के शिवजी, खाटूश्यामजी, माता वैष्णव देवी, डिग्गी, बालाजी इत्यादि स्थानों पर पिकनिक मनाने, दर्शन कराने के लिए अपने संयोजन में यात्रा पर ले गये हैं। उनकी पूर्ण व्यवस्था की है। सामाजिक मंचों पर भी अखिल भारतीय स्तर पर होने वाले अधिवेशनों में मुरैना, दिल्ली, बैंगलोर, हैदराबाद, कुरुक्षेत्र, अलवर, भरतपुर, कोटा आदि के लिए भी आप ग्रुपों को ले गये हैं और प्रतिनिधित्व किया है। ये सभी कार्य श्री गोयल की कर्मठता, समाज के प्रति जागरूकता के प्रतीक हैं।

आप अन्य अनेक सामाजिक व धार्मिक संस्थाओं में भी सक्रिय भागीदार है। आप श्री राधागोविन्द मानव सेवा प्रन्यास संस्थान, राज. सचिवालय आर्फिसर्स एसोसियेशन, राजस्थान पेंशनर्स एसोसियेशन, श्री रामानन्द वैष्णव मण्डल, लालकोठी अवार्डीज एसोसियेशन इत्यादि में प्रतिष्ठापूर्ण पदों को सुशोभित कर रहे हैं। आप अनेक संस्थाओं के गठन कराने, उनके संविधान निर्माण करने तथा उनके चुनाव कार्यों में चुनाव अधिकारी के रूप में निस्वार्थ भाव से कार्य सम्पादन कर सहयोग देने में अग्रणी रहते हैं। आपकी सेवाऐं सभी क्षेत्रों में चर्चित हैं। आप एड्स इन्टरनेशनल, अग्रवाल मेडिकल रिलीफ सोसायटी के कार्यों में भी पूर्ण सहयोगी हैं।

श्री गोयल की समाज सेवा के प्रति रुचि, कार्यक्षमता, समर्पण, मृदुल स्वभाव और सहकारिता के गुणों को देखकर विभिन्न संस्थाऐं आपकी भागीदारी के लिए इच्छुक रहती है। आप भी अपने दायित्वों का निर्वाह पूर्ण-निष्ठा से करने में प्रयत्नशील रहते हैं। अग्रवाल समाज को आपसे अभी बहुत आशायें हैं।

—*—

सुविख्यात पत्रकार – वेद अग्रवाल

अपनी लेखनी से पत्रकारिता और फिल्म क्षेत्र में आयाम स्थापित करने वाले बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी श्री वेद अग्रवाल आठ फिल्मों के यशस्वी निर्माता रहे हैं। फिल्म पटकथा, संवाद, कहानी के साथ-साथ अनेक उपन्यासों का भी उन्होंने सृजन किया।

श्री वेद अग्रवाल बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। 9 जनवरी, 1935 को मेरठ में पुलिस स्ट्रीट स्थित मोरवाली कोठी में जन्में श्री अग्रवाल के पिता स्व. महेश प्रसाद और दादा स्व. श्री द्वारिका प्रसाद भारत के पहले जलकल अभियंता थे। स्वतंत्रता संग्राम और राष्ट्रप्रेम से समर्पित इस परिवार ने सामाजिक सेवाओं में भी योगदान दिया। अपनी दादी श्रीमती अनारों देवी की स्मृति में उन्होंने अपनी संपत्ति दान कर दी। मेरठ में दयानन्द पथ स्थित आर्य समाज भवन इसी में से एक है। 1952 में वह बम्बई चले गये और वहाँ उन्होंने फिल्मी लेखन प्रारम्भ किया। श्री अग्रवाल के भाई और प्रसिद्ध अभिनेता भारत भूषण पहले से ही वहाँ अपनी कला का प्रदर्शन कर रहे थे।

श्री अग्रवाल ने अपनी लेखनी का लोहा अंततः मनवाकर ही दम लिया। 'नवरंग', 'आजाद', 'बरसात की रात', 'चकोरी', आदि हिट फिल्मों का उन्होंने निर्माण किया। अपने भाई फिल्म अभिनेता भारत भूषण के साथ मिलकर उन्होंने करीब एक दर्जन हिन्दी फिल्मों का निर्माण और निर्देशन किया। स्वच्छन्द और स्वतंत्र लेखन पर जब बंदिशें लगने लगीं तो श्री अग्रवाल ने फिल्मी दुनिया को अलविदा कह दिया।

फिल्मी दुनियाँ से अलग होने के बाद श्री अग्रवाल ने पत्रकारिता को अपना मिशन बनाया। वह 'नवभारत टाइम्स' के मेरठ स्थित संवाददाता रहे। देश भर का शायद ही कोई प्रमुख अखबार रहा होगा, जिसमें श्री अग्रवाल ने लेखन न किया हो। धर्म, अध्यात्म, राजनीति, ज्योतिष आदि अनेकानेक विषयों में उन्होंने प्रचुर लेखन किया। मृत्यु पूर्व तक वह स्वतंत्रता आंदोलन

और हिन्दी वांङ्मय पर एक हजार पृष्ठीय शोध प्रबन्ध की रचना में जुटे थे। काल की ऐसी गति रही कि यह कार्य उनका अपूर्ण रह गया।

हिन्दी से उनका विशेष जुड़ाव था। पत्रकारिता का प्रारंभ अंग्रेजी से करने के बावजूद उन्होंने हिन्दी पत्रकारिता को आत्मसात किया। उनका मानना था कि हिन्दी, हिन्दू और हिन्दुस्तान एक-दूसरे के पूरक हैं। कोई भी काम जितना आसानी से हिन्दी में हो सकता है, वह अन्य किसी विदेशी भाषा में नहीं हो सकता। अनुवादीय संस्कृति के वह घोर विरोधी थे। वह कहते भी थे कि अंग्रेजी केवल लोर्ड मैकाले की संस्कृति की पोषक है। अगर भारत और भारतीय संस्कृति को जीवंत रखना है तो यह काम केवल हिन्दी ही कर सकती है। हिन्दी में जितनी सम्प्रेषणता और लोचकता है, वह किसी अन्य भाषा में हो ही नहीं सकती। राष्ट्र की मुख्य धारा के रूप में हिन्दी व्याकरण भी साहित्य का प्राण है। इसी तरह 'हिन्दू' को वह कोई धर्म नहीं वरन् भारतीय राष्ट्र का महाप्राण, मार्गदर्शक, युगदृष्टा, महाप्रेरक और अपने आध्यात्मिक और सांस्कृतिक पुनरुत्थान का प्रतीक मानते थे।

"पुरुषोत्तम दास टंडन हिंदी भवन" की साहित्य समिति ने उन्हें 1995 में सरस्वती सम्मान प्रदान कर सम्मानित किया। श्री अग्रवाल जीवन पर्यन्त आदर्शों में जीये और मरते दम तक उनका पालन किया। उनकी अंतिम इच्छा नेत्रहीन को स्वप्न ः ली दुनिया दिखाना था और अपनी दोनों आंखों का दान करके उन्होनें दो लोगों को नेत्र ज्योति प्रदान की। गुरु नानक आई सेन्टर, दिल्ली को ये आँखें प्रदान करके उन्होंने साबित कर दिया "सहितस्य भावः साहित्यम", अर्थात् समाज का कल्याण ही वास्तव में साहित्य और पत्रकारिता है, जिससे समाज का अहित होता हो वह साहित्य नहीं और जिस लेखन पर लोग विचार मंथन करने के लिए विवश न हों, वह पत्रकारिता नहीं। गीता में भी कहा गया है– "इस संसार में श्रेष्ठ कर्म करते हुए सौ वर्ष तक जीने की इच्छा करनी चाहिए। जो श्रेष्ठ कर्म करता है वह अल्पायु होते हुए भी सौ वर्ष से भी अधिक जीवित रहता है अर्थात् वह सदा-सदा के लिए अमर हो जाता है।"

—*—

चिकित्सा क्षेत्र के अग्र-गौरव

डॉ. एस.पी. सुद्रानियां

लेखक – अशोक आमेरिया

युवा-बाल-रोग चिकित्सा के क्षेत्र में अपनी प्रतिभा से राजस्थान में ही नहीं, विदेशों में भी ख्याति प्राप्त डॉ. स्वयंवर प्रसाद सुद्रानियाँ झुन्झुनू जिले के ग्राम सलामपुर में सेठ श्री चिरंजी लाल जी के यहाँ दि. 5.3.1936 को जन्म हुआ। प्रारंभिक शिक्षा ग्राम सलामपुर बगड़ एवं पिलानी में पूरी कर सन् 1962 में दरभंगा मेडिकल कालेज (बिहार) से एम.बी.बी.एस. तथा सन् 1966 में जयपुर मेडिकल कालेज से शिशु चिकित्सा शास्त्र में एम.डी. की उच्च डिग्रियाँ सर्वोत्तम श्रेणी से उत्तीर्ण कर योग्यता प्राप्त की। आपने राजस्थान में जयपुर, जोधपुर व बीकानेर के विभिन्न मेडिकल कालेज व अस्पतालों में व्याख्याता, सी.ए.एस, आचार्य एवं आर.एम.ओ. के उच्च पदों पर 32 वर्ष तक राज्य सेवा में रहकर अप्रतिम सेवाऐं देते रहे हैं।

इसी दौरान सन् 1976 से 1983 तक आप डेयुटेशन पर बेनगाजी (लिबिया), ट्रीपोली तथा मनीला मेडिकल युनिवर्सिटी में अध्यापन हेतु विदेश सेवा में रहे।

आप इलैक्ट्रो क्राई-ग्राम, पीडिया ट्रिक्स, माल-न्यूट्रिशन, न्यूरोलोजी, डरमेटो-ग्लाई फिक्स, रयूमैटिक फीवर, कुपोषण एवं वंशानुगत रोग विषयों से संबंधित कुशल शोधकर्ता एवं विशेषज्ञ हैं। इन पर शोध एवं प्रशिक्षण हेतु विदेशी विश्वविद्यालयों में आप अनेक बार आमंत्रित किये गये हैं।

आपने शिराज, फिंनलैण्ड, बर्लिन, बियाना, टोकियो, काहिरा, रियो (ब्राजील), यू.एस.ए, साउथ अमेरिका, अफ्रीका, यूरोप, स्टाकहोम, रोम, दुबई, कुवैत, जोर्डन, पाकिस्तान, बांग्लादेश, बर्मा, बैंकाक, हांगकांग, सिंगापुर आदि 29 देशों में लैक्चर ट्यूर पर गये हैं और अभूतपूर्व प्रशंसा अर्जित की है। वहाँ अनेक उपाधियों, प्रमाण-पत्र और पुरष्कारों से सम्मानित हुए हैं। आप आई.डी.एस.ए. के अन्तर्गत न्यूयार्क, डरहम (यू.एस.ए) में एड्स विषय पर शोध एवं अध्यापन हेतु बुलाये गये।

आपने अनेक विषयों पर रिसर्च कर चिकित्सा जगत में 40 से अधिक उपयोगी पत्रों की रचना की है। चिकित्सा क्षेत्र की 10 से अधिक संस्थाओं में अध्यक्ष व अन्य उच्च पदों पर पदासीन रहकर अपनी प्रतिभा की छाप छोड़ी है। इनमें मुख्य अखिल राजस्थान पीडियो ट्रिक्स एसोसियेशन, भारतीय पीडियो ट्रिक्स एकैडमी, भारतीय मेडिकल एसोसियेशन, लाइन्स इन्टरनेशनल इत्यादि हैं।

आप जयपुर मेडिकल कालेज के शिशु चिकित्सा केन्द्र के प्राचार्य पद से सेवा निवृत्त होकर अपनी सेवाऐं जन-जन को एक युवा के समान उपलब्ध कराने में लगे हुए हैं।

डॉ. सुद्रानियां को चिकित्सा विज्ञान में उल्लेखनीय सेवाओं हेतु राज्यपाल श्री भीष्मनारायण रेड्डी द्वारा "विकास रत्न" की उपाधि से विभूषित किया गया है। डॉ. सुद्रानियां वंशानुगत मधुमेह की पहचान हथेली देखकर बताने में अप्रेमय दक्षता रखते हैं।

आपकी विशेषताओं व गुणों का मुख्य आधार आपकी प्रारम्भ से ही समाज के प्रति गहन रुचि व सोच रही है। आप समाज की सेवा के लिए राजस्थानं की अनेक सामाजिक संस्थाओं जैसे मानव कल्याण समिति, अग्रोहा विकास ट्रस्ट, अग्रवाल सेवा योजना इत्यादि में अध्यक्ष, संरक्षक इत्यादि सर्वोच्च पदों को सुशोभित करते हुए इन संस्थाओं के द्वारा सम्पादित कार्यक्रमों को सफलता पूर्वक पूरे करवाने में तन-मन-धन से योगदान देते हैं। आप अति विनम्र, मृदुभाषी, सेवा-भावी व्यक्तित्व के धनी हैं। आपके व्यक्तित्व व कृतित्व से अग्रवाल समाज अत्यन्त गौरवान्वित है।

—*—

अग्रविभूति न्यायमूर्ति श्री नवरंग लाल टिबरेवाल

पूर्व राज्यपाल, राजस्थान सरकार

जिस प्रकार धमनियाँ रक्त संचार के माध्यम से शरीर को जीवंत रखती हैं उसी प्रकार अग्रवाल समाज अपने व्यवसाय, उद्योग धंधों के माध्यम से समाज को जीवंत रखता है। राजस्थान के राज्यपाल रहे न्यायमूर्ति नवरंग लाल टिबरेवाल का कहना है कि यदि अग्रवाल समाज की तमाम गतिविधियाँ किसी तरह बंद हो जाएँ तो शरीर में रक्त संचालन के अभाव की भाँति समाज की तमाम गतिविधियाँ बंद हो जाएगीं।

17 जनवरी, 1937 को झुंझुनूं में जन्में श्री टिबरेवाल ने बारहवीं कक्षा तक की शिक्षा झुंझुनूं में ही प्राप्त की। हमेशा कक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त करने वाले श्री टिबरेवाल ने 1957 में महाराजा कॉलेज से स्नातक डिग्री प्राप्त की और 1959 में राजस्थान विश्वविद्यालय से एल.एल.बी. की डिग्री प्राप्त की।

वकील के रूप में प्रथम बार आपको वकालत करने का अवसर झुंझुनूं की जिला अदालत में मिला। आपने 1960 से 1965 तक वहाँ वकालत की। तत्पश्चात् जोधपुर उच्च न्यायालय में वकालत करने जोधपुर पहुँचे। जब राजस्थान हाईकोर्ट की एक ब्राँच जयपुर में स्थापित की गई तो टिबरेवाल भी जयपुर आ गए और तब से आज तक जयपुर में ही हैं। जयपुर में आपने क्रिमिनल, सिविल एवं संवैधानिक मुकदमें की पैरवी

विद्वता से करके अपनी प्रतिभा, योग्यता का परिचय दिया। श्री टिबरेवाल 1978 से 1986 तक स्टेट बार काउंसिल के सदस्य एवं तत्पश्चात् अध्यक्ष भी चुने गए। जब आप बार काउंसिल के चैयरमैन चुने गए तब आपने वकीलों के वेलफेयर फंड सम्बन्धी एक बिल तैयार कर तत्कालीन राज्य सरकार को सौंपा, जिसमें से सरकार ने कुछ सुझावों को स्वीकार किया। 25 मार्च 1998 को आपकी नियुक्ति राजस्थान उच्च न्यायालय में प्रशासनिक पदाधिकारी के रूप में हुई और इसी वर्ष आपको राजस्थान उच्च न्यायालय का कार्यवाहक मुख्य न्यायाधीश नियुक्त किया गया, उस दौरान आप प्रदेश के राज्यपाल भी रहे।

न्यायमूर्ति टिबरेवाल का मानना है कि समाज मूलतः व्यापारी होने के कारण अभी भी व्यक्तिगत संकुचित विचारधारा, व्यक्तिगत लाभ तथा भय बोध से पीड़ित है। आज भी समाज में बहुत सी कुरीतियाँ व्याप्त हैं। समाज का बड़ा तबका आर्थिक रूप से पिछड़ा हुआ है। आर्थिक रूप से सम्पन्न वर्ग में समाज के पिछड़े वर्ग को जीवन की मुख्य धारा में लाने का अभाव है।

श्री टिबरेवाल इस बात को स्वीकार करते हैं कि विभिन्न संस्थाओं के माध्यम से अग्रवाल समाज के आपसी बन्धुत्व मेलजोल से एक नई जाग्रति एवं उमंग पूरे वैश्य समाज में देखने को मिली है, जहाँ नवयुवक-युवतियों के मन में आरक्षण व आर्थिक असमानताओं के कारण कुंठा भाव तथा भय व्याप्त है, वहीं उनमें संगठित होकर कुछ करने की लालसा प्रबल होती जा रही है। यदि हमारी युवा पीढ़ी को सही मार्ग दर्शन तथा संरक्षण मिले तो इसका रचनात्मक एवं सकारात्मक कार्यों में बेहतर उपयोग किया जा सकता है।

श्री टिबरेवाल कहते हैं कि समाज में यह भी भावना व्याप्त हो रही है कि बिना राजनीतिक शक्ति प्राप्त किए सामाजिक क्षेत्र में यह समाज उचित स्थान प्राप्त नहीं कर सकता। अतः आज के संदर्भ में सामाजिक चेतना के साथ राजनीतिक चेतना व संगठित शक्ति होना आवश्यक है।

समाज में यह भावना निरंतर व्याप्त भी हो रही है। आने वाले समय में यदि युवा शक्ति का सदुपयोग किया जाए तो मेरा मानना है कि समाज का भविष्य बहुत उज्जवल होगा।

समाज के एक महत्त्वपूर्ण सद्गुण की चर्चा करते हुए न्यायमूर्ति टिबरेवाल कहते हैं कि इस समाज का कोई भी व्यक्ति नकारात्मक या संकीर्ण विचारधारा से पीड़ित नहीं है और न ही अन्य समाज के प्रति भेदभाव तथा द्वेषतापूर्ण भावनाएँ मन में रखता है। समाज में चलने वाली समस्त गतिविधियों के पीछे समाज को जातीय आधार पर बाँटने के बजाय सबको जोड़कर मिलकर चलना सिखाया जाता है। एक प्रश्न के उत्तर में श्री टिबरेवाल ने बताया कि समाज में क्षमता व शक्ति की कमी नहीं है। आर्थिक सम्पन्नता के साथ मानसिक चेतना व इटरलिजेंस का अभाव भी नहीं है, उसी के परिणाम स्वरूप समाज के बंधु व्यवसाय, उद्योग, प्रशासन, चिकित्सा, शिक्षा, न्याय आदि सभी क्षेत्रों में अपनी मेहनत लगन एवं कुशाग्रता के बल पर आगे हैं। व्यक्तिगत रूप से हमारे समाज के पास क्षमता की कमी नहीं है। यदि इस शक्ति तथा क्षमता का उपयोग समाज के संगठन तथा बन्धुत्व भाव को बढ़ाने में लगाएँ तो न केवल अग्रवाल समाज का बल्कि पूरे देश का भला होगा। उम्र के इस पड़ाव पर भी सामाजिक गतिविधियों में निरन्तर सक्रिय रहने से सम्बन्धित एक प्रश्न के उत्तर में श्री टिबरेवाल ने बताया कि जीवन पर्यन्त संघर्षों से गुजरने के कारण कार्य करते रहना मेरी एक आदत बन गई है। इसी में मैं अपने को सहज व मानसिक रूप से संतुष्ट महसूस करता हूँ। मेरी सदैव यह अभिलाषा रही है कि जो क्षमता, योग्यता व शक्ति प्रभु ने मुझे दी है उसका अधिक से अधिक उपयोग लोगों की भलाई के लिए हो। इससे मुझे मानसिक शांति तथा प्रसन्नता महसूस होती है।

न्यायमूर्ति टिबरेवाल का मत है कि समाज में कुछ बुराईयाँ घर कर रही हैं, जिनका निदान आवश्यक है। आपका मानना है कि समाज में न्यूरीच (नये अमीर यानी कर्णधार) जब से बन रहे हैं तो वह व्यक्ति अपने

आपको समाज से ऊपर मानते हुए समाज द्वारा बनाई लक्ष्मण रेखाओं को लाँघ रहे हैं। इस वर्ग के लिए पाश्चात्य सभ्यता, आधुनिकीकरण, स्वयं की सुख सुविधा एक मात्र लक्ष्य रह गया है। इस वर्ग के लिए समाज में लाखों करोडों व्यक्ति जो तंगी की हालत में जीवन बिता रहे हैं उसकी दशा सुधारने में रुचि कम देखने को मिलती है। इस वर्ग के लिए यह सोचने की आवश्यकता है कि जिस समाज में वह रह कर आगे बढ़े हैं, जिस समाज ने सक्षम बनाया है उस समाज के नीचे तबके की सेवाएँ करनी चाहिए। अपने जीवन में स्वर्णिम सफलता के सोपानों की चर्चा करते हुए श्री टिबरेवाल बताते हैं कि ईमानदारी, मेहनत तथा सच्चाई से कोई व्यक्ति जिए अथवा जीना सीख लें तो सफलता निश्चित रूप से प्राप्त होगी क्योंकि ऐसे व्यक्तियों के लिए भगवान के घर में देर हो सकती है अंधेर नहीं। मेरे जीवन का यही मूल सत्य रहा है। साधारण जीवन प्रारंभ करने के पश्चात् राज्य के राज्यपाल पद तक पहुंच सकूं यह मेरे जैसे व्यक्ति ने जीवन में कभी कल्पना भी नहीं की थी। मुझे जीवन में हर व्यक्ति का स्नेह तथा सहयोग मिला है। मैंने जीवन में कभी कथनी तथा करनी में अंतर रखने का प्रयास नहीं किया। मैं अब भी साधारण जीवन जीने में विश्वास रखता हूँ। जो सुख तथा आनन्द साधारण जीवन जीने में है, वह कृत्रिम जीवन जीने में कोई महसूस नहीं कर सकता।

श्री टिबरेवाल वर्ष 1999 से अग्रोहा विकास ट्रस्ट, राजस्थान प्रदेश के अध्यक्ष हैं। राजस्थान में सन् 1991 से संचालित अग्रवाल सेवा योजना के आप संरक्षक हैं। आपके प्रयासों से भरतपुर, अलवर, झुंझुनूं, जयपुर, सीकर, चुरू, कोटा, श्री गंगानगर इत्यादि स्थानों में ट्रस्ट की जिला इकाइयों का गठन किया गया। ट्रस्ट की इकाईयों की ओर से मेधावी छात्र सम्मान समारोह, परिचय सम्मेलनों, विचार गोष्ठियों, जरूरत मंद समाज बन्धुओं को सहायता, अग्रोहाधाम के दर्शनार्थ यात्राओं का आयोजन, महाराजा अग्रसेन के चित्र व अग्र साहित्य का घर-घर तक पहुँचाना व अग्रोहा धाम पत्रिका के 1100 आजीवन सदस्य बनाने का लक्ष्य रखा

गया है। इसके अतिरिक्त रक्तदान शिविर, रोगी जांच शिविर, नेत्रदान शिविर, वृक्षारोपण इत्यादि जनोपयोगी विभिन्न कार्यक्रमों को हाथ में लेकर सेवाकार्य की ओर कदम बढ़ाये हैं। समाज में व्याप्त कुरीतियों व संगठन की महत्ता पर विचार-विमर्श कर समाज को संगठित रूप देने का प्रयास किया गया है।

अग्रवाल सेवा योजना राजस्थान के संरक्षक के रूप में आपने समाज सुधार के अनेक कार्यक्रम, महापुरुषों की जयन्तियाँ व पुण्यतिथियों के विशाल आयोजन तथा वैवाहिक परिचय सम्मेलन सफलतापूर्वक आयोजित कराये हैं। मानव कल्याण के कार्यों के लिए आप जयपुर के सभी समाजों में सक्रिय रूप से भागीदारी निभाते हैं और सर्वप्रिय हैं। आप समय के पूर्ण पाबंद हैं। छोटों को उठाने के प्रति विशेष लगाव है।

आप जैसे कर्मठ, ईमानदार व्यक्तित्व के लिए सर्वत्र वंदनीय हैं। अग्रवाल समाज को आप पर सदैव नाज है।

—*—

अग्रसेन है इसीलिए

आगे सबसे रहे सदा जो, अग्रसेन कहलाता है।
अग्रसेन है इसीलिए युग-युग से पूजा जाता है॥
वह अपने युग का निर्माता, निर्माणों में व्यस्त रहा।
संघर्षों से तूफानों से लड़ने का अभ्यस्त रहा॥
सामाजिक चेतना जगाकर जीना सिखा दिया उसने।
फटे दर्द को स्नेह सूत्र से, सीना सिखा दिया उसने॥
कमजोरों को मिला सहारा, आसूं को मुस्कान मिली।
भटके हुए पथिक को मंजिल, की सच्ची पहचान मिली॥
महापफरुष वह उसकी महिमा, को कवि नित दोहराता है।
अग्रसेन है इसीलिए युग-युग से पूजा जाता है॥

श्री रमेशचन्द्र अग्रवाल

श्री रमेशचन्द्र अग्रवाल उस हिंदी दैनिक समाचार पत्र के स्वामी हैं, जो मध्य एवं उत्तर भारत के पाठकों में "दैनिक भाष्कर" के नाम से लोकप्रिय है। जनता की भाषा में जनता के संवाद के घोष वाक्य की धुरी पर लगातार गतिमान दैनिक भाष्कर ने बहुत जल्दी ही अपनी अलग पहचान बना ली है।

दैनिक भाष्कर की विषयगत विविधता और आकर्षक छपाई के पीछे पूरे संगठन की कार्यकुशलता एवं मेहनत है किन्तु इसके भी पीछे जो व्यक्ति हैं, उनका नाम श्री रमेश अग्रवाल है। सम्पूर्ण वैश्य समाज तथा विशेषतः अग्रवाल समाज के उत्थान के लिए भी आपका योगदान अप्रतिम है।

आप अग्रवाल समुदाय के राष्ट्रीय संगठनों से प्रत्यक्ष रूप से जुड़े रहकर उन्हें मुखरता प्रदान करते रहे हैं।

श्री रमेश चन्द्र अग्रवाल का जन्म झाँसी (उत्तरप्रदेश) में श्री द्वारका प्रसाद जी अग्रवाल के यहाँ हुआ। आप मूलरूप से राजस्थान के ही निवासी हैं। आप मृदु भाषी, सरल स्वभाव के व्यक्ति हैं एवं आपकी शुरु से ही समाज सेवा व देश के प्रति रुचि रही है। आपने राजनीति शास्त्र में एम.ए. करके पारिवारिक व्यवसाय समाचार पत्र के प्रकाशन में सन् 1965 से ही प्रवेश ले लिया। आपने 1980 से स्वतंत्र रूप से दैनिक भाष्कर का प्रकाशन आरम्भ किया और इसका विस्तार इंदौर, रायपुर, विलासपुर, जबलपुर, राजस्थान इत्यादि प्रान्तों व नगरों से हिन्दी के

संस्करण प्रकाशित कर बढ़ा रहे हैं इसके अलावा आपने अंग्रेजी में भी "नेशनल मेल" संस्करण का प्रकाशन किया।

श्री अग्रवाल ने इस दौरान पूर्व प्रधानमंत्री स्व. श्री राजीव गांधी, श्री चन्द्रशेखर जी, श्री वी.पी.सिंह तथा श्री नरसिंह राव जी जैसे देश के बड़े राजनेताओं के साथ विश्व के अनेक देशों की यात्रायें की है। आपने व्यवसाय के सम्बन्ध में भी अमेरिका, यूरोप तथा कई ऐशियाई देशों की यात्रायें की हैं।

नवम्बर, 1996 से आपने दैनिक भाष्कर का संस्करण जयपुर से भी निकालना आरम्भ किया। इसकी प्रसार संख्या आज एक करोड़ 57 लाख से ऊपर है। आपकी सामाजिक, धार्मिक तथा सांस्कृतिक कार्यों में विशेष रुचि है।

आप भोपाल चैम्बर आफ कामर्स के अध्यक्ष, मध्यप्रदेश, अग्रवाल समाज सामूहिक विवाह सम्मेलन के अध्यक्ष, एवं अग्रवाल समाज केन्द्रीय समिति इंदौर के प्रमुख संरक्षक, जवाहरलाल नेहरू केंसर संस्थान भोपाल के उपाध्यक्ष, अग्रोहा विकास ट्रस्ट हिसार के पूर्व उपाध्यक्ष, अखिल भारतीय अग्रवाल सम्मेलन के अध्यक्ष इत्यादि अनेक संस्थाओं के विविध पदों को सुशोभित कर रहे हैं। आप इनके अलावा विभिन्न सामाजिक, शैक्षणिक एवं सांस्कृतिक संस्थाओं में संरक्षक, अध्यक्ष एवं सदस्य के रूप में समाज को पूर्ण सहयोग प्रदान कर रहे हैं।

आपके व्यक्तित्व एवं कृतित्व से सारा समाज अभिभूत है और आपकी ओर आकर्षित हो जाता है। आप छोटे-बड़े में कोई भेद नहीं रखते। समाज सुधार के आप पोषक है। संगठन को आप बहुत महत्व देते हैं। अपने पत्र के माध्यम से समाज को दिशा निर्देश प्रदान करते हैं। समाज की गतिविधियों के प्रचार-प्रसार का माध्यम बनते हैं।

आप अपने पत्र के माध्यम से समाज की अप्रमेय सेवा कर रहे हैं जो अकथनीय हैं। समाज को आपसे बहुत कुछ आशायें हैं। इस युग के आप समाज गौरव हैं।

—*—

अग्र-गौरव श्री रामदास अग्रवाल

पूर्व सांसद राज्यसभा, राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष– भाजपा

श्री रामदास अग्रवाल राज्यसभा में पहली बार 1990 में 6 वर्ष के लिए चुनकर आये। 1996 में दूसरी बार पुनः राजस्थान विधानसभा से राज्यसभा के लिए निर्विरोध चुने गये। श्री अग्रवाल का कार्यकाल राज्यसभा में 9 अप्रैल, 2002 तक रहा। मई 1990 में भारतीय जनता पार्टी से राजस्थान के प्रदेश अध्यक्ष मनोनीत किये गये, तत्पश्चात् दो बार निर्विरोध निर्वाचित होते हुए लगभग साढ़े सात वर्षों तक राजस्थान में भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष के रूप में भाजपा के कार्य को ऊँचाईयों तक पहुँचाया तथा अनेक संघर्षपूर्ण अवसरों पर शानदार सफलता प्राप्त की।

प्रारम्भ से ही श्री अग्रवाल राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ, विद्यार्थी परिषद, विश्व हिन्दू परिषद तथा चैम्बर ऑफ कॉमर्स जैसी व्यावसायिक संस्थाओं से जुड़े रहे तथा उनमें सक्रियता से कार्य करते हुए उच्च पदों पर आसीन रहे।

श्री अग्रवाल का जन्म सन् 1937 में जयपुर में हुआ। इन्होंने बी.कॉम. तक शिक्षा प्राप्त की व हिन्दी साहित्य में विशारद की डिग्री भी ली। खेलकूद, वाद-विवाद प्रतियोगिताओं में कई बार अपने स्कूल एवं कॉलेज की तरफ से भाग लेते रहे। प्रारम्भ से ही अच्छे वक्ता और कुशल संगठक के रूप में आपकी छवि रही है। श्री अग्रवाल एक सफल उद्योगपति हैं और खदानों के क्षेत्र में सुपरिचित हैं। विशेष रूप से माइनिंग, ज्वैलरी एवं ट्रेडिंग में आप जानी मानी हस्ती हैं। श्री अग्रवाल ने 20 वर्षों तक उड़ीसा में माइनिंग के काम में अपनी प्रसिद्धि अर्जित की है।

श्री अग्रवाल रोटरी क्लब में 1972 में शामिल हुए तथा भद्रक (उड़ीसा) में क्लब के तीन बार अध्यक्ष निर्वाचित हुए।

श्री अग्रवाल 9 नवम्बर, 1997 को अखिल भारतीय वैश्य महासम्मेलन के सर्वसम्मति से राष्ट्रीय अध्यक्ष निर्वाचित हुए। 24 दिसम्बर 1999 को भारतीय जनता पार्टी के केन्द्रीय नेतृत्व ने इन्हें राष्ट्रीय उपाध्यक्ष के पद पर मनोनीत किया, यह इस बात का परिचायक है कि श्री अग्रवाल अब राजनीति में आगे आ रहे हैं। 1999 के लोकसभा चुनावों में केन्द्रीय नेतृत्व ने राजस्थान के चुनावों का भार आप पर छोड़ा। प्रधानमंत्री श्री वाजपेयी जी के मार्गदर्शन में भाजपा के चुनाव का संचालन करते हुए आपने राजस्थान में भारी सफलता प्राप्त की। श्री अग्रवाल को 17 अप्रेल 2000 को भारत के उपराष्ट्रपति श्री कृष्णकांत जी ने उद्योग मंत्रालय से संबद्ध संसद की स्थायी समिति का सभापति (चेयरमैन) नियुक्त किया। यह समिति उद्योग मंत्रालय के अलावा इस्पात, खान व कोयला मंत्रालय, लघु उद्योग, खादीग्राम उद्योग मंत्रालयों से जुड़े लगभग 100 सरकारी प्रतिष्ठानों की निगरानी रखती थी। इस समिति के श्री अग्रवाल 9 अप्रैल, 2002 तक अध्यक्ष रहे और इस बीच इस समिति ने अब तक के संसदीय इतिहास में महत्त्वपूर्ण रिपोर्ट संसद में प्रस्तुत की जो कि एक रिकार्ड है। श्री अग्रवाल को 6 जून, 2001 को भाजपा के राष्ट्रीय माननीय श्री जैनाकृष्णामूर्ति जी ने राष्ट्रीय उपाध्यक्ष का दुबारा दायित्व दिया। आपने सांसद कोष से श्री अग्रवाल शिक्षा समिति द्वारा संचालित अग्रवाल महाविद्यालय में "आठ क्लास रूम्स" के निर्माण हेतु 21 लाख रुपये स्वीकृत किये तथा महाविद्यालय परिसर में प्रगति कराई। आपने श्री अग्रसेन मेडिकल रिलीफ एण्ड रिसर्च सोसायटी, जयपुर के निर्माण में भी सांसद निधि में से 21 लाख की राशि उपलब्ध कराकर कार्य को आगे बढ़ाने में सहायता प्रदान की। अभी ब्रह्मपुरी स्थित मंगोड़ीवालों की बगीची में आपने एक बृहत सामुदायिक भवन का निर्माण कराया है जो जयपुर के सामाजिक क्षेत्र के लिए अत्यन्त उपयोगी सिद्ध होगा।

आपका कहना है कि 16.5 करोड़ के विशाल वैश्य समाज में भी

अन्य समाजों की भांति अत्यधिक मात्रा में विपन्न तथा पिछड़ी अवस्था में लोग हैं, उन्हें नौकरी एवं जीवन-यापन की अन्य सुविधाओं के लिए संघर्ष करना पड़ रहा है। आरक्षण का प्रभाव वैश्य समाज पर सबसे अधिक पड़ा है। वैश्य समाज के सामर्थ्यवान लोगों को अपने उद्योगों, प्रतिष्ठानों में स्वजातीय बंधुओं को रोजगार देकर उनकी मदद करनी होगी।

श्री रामदास जी कहते हैं कि भारत को आजाद हुए एक लम्बा अरसा हो गया और वैश्य वर्ग अपने आप में सिमटकर एक व्यापारी और उद्योगपति तथा समाज पालक ही बनकर रह गया। आज के राजनीतिक दौर में व्यवस्थायें बदलती जा रही हैं। वैश्य समाज का शोषण होने लगा है। ऐसे में वैश्य वर्ग को जागरूक होकर अपने अधिकारों की रक्षा के लिए प्रयत्न करना पड़ेगा और इसके लिए वैश्य वर्ग को भी राजनीति की प्रथम पंक्ति में खड़ा होकर आगे बढ़ना होगा। वैश्य समाज के प्रतिनिधि को आगे लाना होगा। उसे जन-बल और धन-बल तथा मन-बल से मजबूत करना पड़ेगा। इनके कथनों का सभी मंचों से भरपूर समर्थन भी मिलने लगा है। वह दिन दूर नहीं जब श्रीरामर्दास जी की भावना मूर्त रूप अवश्य लेगी। इसका प्रमाण तो वर्ष 2003 में हुए विधानसभा चुनावों के परिणाम ही हैं। श्री रामदास जी अग्रवाल वैश्य समाज में आपसी भ्रातृत्व भाव कायम कर आपस में विवाह सम्बन्ध स्थापित करने के पक्ष में हैं इससे समाज अधिक शिक्षित, सुदृढ़ और समृद्धिशाली बन सकेगा। सम्मेलनों में आपने इस प्रकार के अनेक प्रस्ताव व आयाम निर्धारित कर उनके क्रियान्वयन के प्रति प्रयत्नशील हैं।

11 जुलाई 2002 को भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष माननीय श्री वैंकया नायडू ने आपको भाजपा का राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष मनोनीत किया। 21 जुलाई, 2002 को भाजपा के केन्द्रीय नेतृत्व ने आपको राजस्थान एवं गुजरात का प्रभारी नियुक्त किया। श्री अग्रवाल अपने 12 वर्ष के संसदीय कार्यकाल के दौरान भारत के राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति, लोकसभा अध्यक्ष के साथ अनेकों बार संसदीय प्रतिनिधि मंडल के सदस्य होने पर विभिन्न देशों की यात्राओं पर गये। आप समाज के सुदृढ़ीकरण के लिए जानी मानी हस्ती हैं। आप पर समाज को अनेक आशाऐं हैं।

—✻—

अग्रकेसरी डॉ. गिरिराज प्रसाद मित्तल

अखिल भारतीय अग्रवाल सम्मेलन के मानद संरक्षक, राजस्थान प्रदेश वैश्य महा सम्मेलन के संस्थापक-महामंत्री, पूर्वी राजस्थान प्रदेश अग्रवाल सम्मेलन के महामंत्री तथा अग्रवाल समाज समिति, मानसरोवर के अध्यक्ष पदों को सुशोभित कर रहे "अग्रकेशरी" डॉ. गिरिराज प्रसाद मित्तल का जन्म हिण्डौन निवासी श्री मोतीलाल जी के यहाँ दि. 8 मई, 1937 को हुआ। श्री मित्तल ने मैट्रिक परीक्षा सन् 1955 में उत्तीर्ण कर 1967 व 1971 में आयुर्वेद तथा फार्मासिस्ट में डाक्टरेट प्राप्त की तथा 1967 में साहित्य सुधाकर की परीक्षा पास की। आप प्रारम्भ से ही कुशाग्र बुद्धि, इतिहास-प्रिय, अध्ययनशील रहे हैं। सन् 1948 से ही राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ से जुड़े हैं। 1980 से आपने अग्रवाल समाज की सेवाओं में अपने आपको समर्पित कर दिया। आपने महाराजा अग्रसेन जीवन चरित्र लिखा जिसके पाँच संस्करण प्रकाशित हो चुके हैं।

आप अनेक बार विविध-सम्मेलनों में सम्मानित किये गये हैं। सामाजिक सेवाओं के लिए अग्रवाल सम्मेलन कोटा में आपको "अग्र-केशरी पद" से सम्मानित किया गया। अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी सम्मेलन, साहित्य संस्था गाजियाबाद द्वारा साहित्य लेखन व सेवा के लिए पुरस्कृत किये गये।

आप एक कुशल पत्रकार हैं। सन् 1995 से अग्रोहा से जुड़े हैं और "अग्रोदक मासिक" के प्रधान सम्पादक के रूप में प्रकाशन कर रहे हैं। आप कुशल प्रवक्ता भी हैं। आपके कृतित्व एवं व्यक्तित्व से श्रोता आपके उद्‌बोधन के लिए प्रतीक्षारत रहते हैं। आपके प्रति सभी का स्नेह है। समाज ऐसे कार्यकर्त्ता मनीषियों के कारण ही सजग और संगठित बनता जा रहा है।

—*—

अग्र विभूति श्री सी. एल. सिंगला

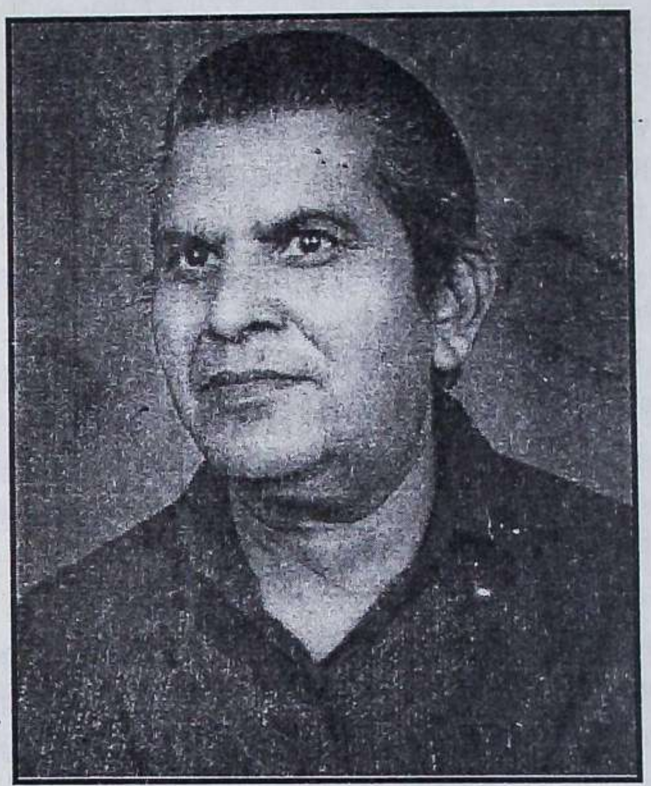

कुशल प्रशासन, मृदुल व्यवहार और आत्मीयता से परिपूर्ण जीवन-शैली, सामाजिक कार्यों के प्रति असीम रुचि, ये मुख्य विशेषताएं रही हैं श्री चमनलाल सिंगला में। आप मूलतः पंजाब के जैतो-मण्डी के रहने वाले थे। श्री चमनलाल सिंगला का जन्म एक सद्भ्रान्त अग्रवाल परिवार में दिनांक 13 जून, 1939 को हुआ। बहुआयामी प्रतिभा के धनी सिंगला

साहब व्यावसायिक तौर पर एक बैंकर थे। स्टेट बैंक आफ बीकानेर एण्ड जयपुर में आपने विभिन्न पदों को सुशोभित किया। बैंक सेवा के दौरान जयपुर और कोटा उनकी मुख्य कार्यस्थली रही। भीलवाड़ा, अलवर, मथुरा, आगरा आदि स्थानों पर लम्बे समय तक बैंक के मुख्य प्रबंधक के पद पर कार्यरत रहे। प्रधान कार्यालय जयपुर में एकमात्र मुख्य प्रबन्धक जन-सम्पर्क के रूप में आपकी कार्यशैली आज भी याद की जाती है।

कोटा में एस.बी.बी.जे के क्षेत्रीय प्रबंधक रहते हुए आपका जुड़ाव समाज सेवा से हो गया व मानव कल्याण समिति के संरक्षक, अग्रवाल सेवा योजना के वरिष्ठ उपाध्यक्ष, एड्स इन्टरनेशनल के प्रदेश अध्यक्ष आदि संस्थाओं का संचालन किया। अग्रवाल समाज के प्रति तो आपका रुझान सदैव से ही था। तथा समाज के प्रति पूर्ण समर्पण भी। अग्रवाल नाम आते ही वे तुरन्त उसकी सहायता के लिए तत्पर हो उठते थे।

जून 2000 में बैंक सेवा से मुक्त होने के पश्चात् आप पूरी तरह समाज सेवा को समर्पित हो गये। जयपुर में मालवीय अरबन कौपरेटिव बैंक की स्थापना व इसके कुशल संचालन में भागीदारी एवं मार्गदर्शन सदैव याद किया जाता रहेगा।

आपके परिवार में दो पुत्र, दो पुत्रियाँ व सेवाभावी धर्मपत्नी हैं। बड़े पुत्र डॉ. सुमनकान्त सिंहल, स्टेट बैंक आफ बीकानेर एण्ड जयपुर में ही प्रबन्धक है और अपने पिता की भांति समाज के कार्यों में पूर्ण रुचि रखते हैं। छोटे पुत्र डॉ. संजय सिंघल जयपुर के महात्मा गांधी अस्पताल में सर्जन है।

अपने मित्रों, बन्धुओं और परिचितों के बीच श्री सिंगला साहब के नाम से जाने वाले श्री चिमनलाल सिंगला का अचानक दि. 6.8.2003 को हृदयाघात से परलोक गमन हो गया। इनके स्थान की पूर्ति करना असम्भव है। समाज ने एक कर्मठ समाज सेवी खो दिया। अग्रवाल समाज को इन पर सदैव गर्व रहेगा।

—*—

विश्व के महान् पर्यावरणविद्, वैज्ञानिक
पद्मभूषण श्री अनिल अग्रवाल

भारत के ही नहीं, विश्व के जाने माने अग्रणी पर्यावरणविद अनिल अग्रवाल अब हमारे बीच नहीं हैं, लेकिन पर्यावरण को बचाने और समान न्याय के लिए उन्होंने जो भी कार्य किया था, वह सदैव उनकी उपस्थिति का भान कराता रहेगा।

डॉ. के.आर.नारायण ने उन्हें पर्यावरणीय हितों के अनथक योद्धा बताते हुए कहा कि उनकी कार्यप्रणाली विश्वव्यापी थी और वे तीसरे विश्व के हितों में सबसे अग्रणी थे। भारत में तो उन जैसा अन्य कोई पर्यावरणीय विज्ञानी नेता हुआ ही नहीं, जिसकी पर्यावरण के क्षेत्र में इतनी व्यापक तथा असाधारण सूझ-बूझ रही हो। इसलिए 22 अप्रैल 2000 को आपको सर्वाधिक प्रतिष्ठित "ग्लोबल एन्वायरमेंट लीडरशिप पुरस्कार" तथा भारत सरकार द्वारा देश के प्रतिष्ठित अलंकरण "पद्मविभूषण" से सम्मानित किया गया। आप दिल्ली स्थित "सेंटर फॉर साइंस एंड इन्वायरमेंट" के निदेशक थे।

श्री अनिल अग्रवाल ने अपने प्रारंभिक जीवन की शुरुआत पत्रकार के रूप में की, किंतु वे शीघ्र ही पर्यावरण की ओर आकर्षित हो गए और उन्होंने "सेंटर फॉर साइंस एंड इन्वायरमेंट" नामक एक गैर सरकारी संगठन की स्थापना की। इससे पूर्व वे सन् 1992 में "डाउन टू अर्थ" नाम से पर्यावरण पर एक पाक्षिक पत्रिका का प्रारम्भ कर चुके थे। उनकी सबसे बड़ी देन यह थी कि उन्होंने गरीब और विकासशील देशों को बताया कि

उनके लिए पर्यावरण का कितना महत्त्व है। उनका मानना था कि गरीब का जीवन सकल घरेलू उत्पाद के बजाय सकल प्राकृतिक उत्पाद पर निर्भर करता है। उनका मानना था कि गरीब पूरी तरह से अपने पर्यावरण पर ही आश्रित होते हैं और उनके पर्यावरण के साथ की गई जरा सी छेड़छाड़ उनके जीवन को नष्ट करने की सामर्थ्य रखती है। उनकी स्थिति में पर्यावरण को नुकसान पहुंचाना और सामाजिक अन्याय एक ही सिक्के के दो पहलू हैं।

प्राकृतिक संसाधनों के विकास में जन भागीदारी सुनिश्चित करने पर बल–

अनिल अग्रवाल ही पहले पर्यावरणविद् थे, जिन्होंने प्राकृतिक संसाधनों के प्रबन्ध में जन भागीदारी सुनिश्चित करने पर बल दिया था और यह आपके विचारों का ही प्रभाव था कि उनके आधारों पर ही विकसित और विकासशील देशों में पर्यावरण की नीतियों को रूप दिया गया था। विश्व जल आयोग के आयुक्त द्वारा भी उनके वाक्य 'सबके लिए जल' को सूत्र वाक्य के रूप में अपनाना उनके सर्वोपरि महत्त्व का प्रतिपादन है।

वे प्रकृति और पर्यावरण के सबसे बड़े अध्येता थे। उन्होंने एक सम्पादकीय में लिखा था कि प्रकृति जीवन है या मृत्यु, यह इस तथ्य पर निर्भर करता है कि उसका स्तर कैसा है। प्रगति जहाँ एक ओर हमारे जीवन की गुणवत्ता और रोगों से लड़ने की क्षमता बढ़ाती है, वहाँ दूसरी ओर यह प्रकृति का विनाश कर रोगों को बढ़ावा भी देती है। मिट्टी की गुणवता में कमी खाद्य पदार्थों की गुणवत्ता को कम करती है, वनों की कटाई भविष्य में दवा निर्माण के लिए आवश्यक पेड़ों की उपलब्धता कम करती है। शहरीकरण, औद्योगीकरण और कृषि का आधुनिकीकरण भूमि, जल, वायु और खाने को दूषित करता है। इनके प्रदूषित होने के कारण मानव जीवन भी गंभीर खतरे में पड़ सकता है। अगर प्रदूषण के कारण ज्यादा मात्रा में रोगाणु हमारे शरीर में पहुंचेंगे तो अतिसार, मलेरिया, डेंगू

जैसी बीमारियां भी बढ़ेंगी। अगर प्रदूषण के कारण अधिक मात्रा में रसायन हमारे शरीर में जाएंगे तो यह पता करना कठिन हो जाएगा कि हमें कब कौन सी बीमारी चपेट में ले रही है। अनेक ऐसी बीमारियाँ भी आ जायेंगी, जिनके बारे में हमने पहले से कभी नाम भी न सुना होगा और शनैः शनैः आगे आने वाली पीढ़ियों में फैलेंगी। कई रसायन तो ऐसे हैं, जो शरीर में जाकर वसा के साथ एकत्र होते रहते हैं, क्योंकि शरीर भी उन्हें तोड़ना नहीं जानता। उदाहरण के रूप में यदि हम कीटनाशक डी.डी.टी. को ही लें तो यह माँ से उसके बच्चे के शरीर में पहुँचाती है और छिड़काव के बाद वह हवा के सहारे दूरस्थ ध्रुवों पर रहने वालें स्कीमों के शरीर में भी प्रवेश कर सकती है, जबकि वे उसके विषय में जानते तक नहीं। इन हानिकारक रसायनों से कैंसर और दिल की बीमारियों जैसे रोग ही नहीं होते अपितु दिमागी गड़बड़ियाँ, हार्मोंस में असमानता, प्रजनन सम्बन्धी समस्याएँ और अनेक व्याधियाँ मुँह उठाने लगती हैं।

अनिल अग्रवाल भारतीय पर्यावरण से भी गहन रूप से सम्बद्ध थे। उन्होंने ही भारतीय पर्यावरण पर प्रकाशित पहली रिपोर्ट का आकलन और संपादन किया था। अपनी दूसरी रिपोर्ट में भी उन्होंने ग्रामीण महिलाओं पर पर्यावरण से होने वाले प्रभावों को दर्शाया था। उनकी पुस्तक 'ग्लोबल वार्मिंग इन एन अनइक्वल वर्ल्ड' ने तो पूरे विश्व में तहलका मचा दिया था। बाद में आबोहवा के परिवर्तन में जो खाका तैयार किया, उसमें इसी पुस्तक के सिद्धांतों को ही प्रमुख रूप से समाविष्ट किया गया था। उनका मत था कि यदि लोकतन्त्र, न्याय और समानता गुण पूरे विश्व के नागरिकों में हो तो उससे बड़ा अच्छा शासन अन्य नहीं हो सकता।

वे विश्व के जाने माने पर्यावरण विशेषज्ञ थे। 1992 में रियोडिजेनेरियों में पृथ्वी सम्मेलन में भारत और तंजानिया का एजेंडा उन्होंने ही तैयार किया था। उन्होंने पर्यावरण को पुनर्जीवित कर सूखा ग्रस्त क्षेत्रों से सूखा एवं गरीबी दूर करने का एजेंडा भी बनाया था। ये पर्यावरण के सर्वतोमुखी दुष्प्रभावों से चिंतित थे और उन्हें वे आने वाले पीढ़ियों के

लिए अभिशाप मानते थे। जब सर्वेक्षण में पाया गया कि पुरुषों के वीर्य में शुक्राणुओं की संख्या में कमी आ रही है और उनके वीर्य की सामान्य विशेषताएं कम हो रही हैं तो उन्होंने अपनी खोजों के बाद पाया कि यह सब पर्यावरण प्रदूषण, दूषित खान-पान और रहन-सहन के कारण हो रहा है। उन्होंने इन इस तथ्य का भी प्रतिपादन किया कि यह पर्यावरण के प्रदूषण का प्रभाव है कि दिल्ली, मुम्बई, कोलकाता, चेन्नई और बेंगलौर जैसे शहरों में हर 10 से 12 वाँ व्यक्ति कैंसर से पीड़ित देखा गया है, जबकि छोटे गाँवों व शहरों में उनकी संख्या बहुत कम है। इनका मानना था कि चिकित्सा कार्य भी पर्यावरण प्रदूषित होने से प्रभावित हुए बिना नहीं रहता और उस पर उनके स्पष्ट प्रभाव देखे जा सकते हैं। कारण दवाओं से अनेक बीमारियों का उपचार हो जाता है किन्तु पर्यावरण प्रदूषण के कारण उनकी गुणवत्ता काफी कम हो जाती है और उसके कारण बहुत से लोगों को काफी छोटी उम्र में कैंसर जैसी बीमारियों के कारण अपना जीवन खोना पड़ता है। इतना ही नहीं, इसका प्रभाव अजन्मे बच्चे पर भी पड़ता है। आपका मानना था कि निर्धनता भी पर्यावरण पर प्रतिकूल प्रभाव डाल स्वांस्थ्य को प्रभावित कर सकती है। गरीब परिवार की महिलाएँ अपने चूल्हे से जितना धुआं रोज सांस के माध्यम से खींचती हैं, उतना शहर की महिलाएँ नहीं। अतः वे चाहते थे कि प्रदूषण के दुष्प्रभावों को रोकने के लिए सर्वतोमुखी प्रयास किए जाएं। हम विज्ञान के क्षेत्र में नित नई उपलब्धियों के स्थान पर इस प्रकार की योजना पर प्राथमिकता से कार्य करें, जिससे संसार में प्रत्येक क्षेत्र में बढ़ने वाले प्रदूषण को नियन्त्रित किया जा सके। यह तभी संभव होगा, जब वैज्ञानिक लगातार पर्यावरण में होने वाले परिवर्तनों पर नजर रखें और उनके खतरों तथा प्रभावों से जनता को निरंतर परिचित कराएं। तभी जनता अपने शरीर को हानी पहुँचाने वाले तत्वों और जीवों से छुटकारा पा सकेगी और यदि उसका कोई हल उपलब्ध नहीं हो तो फिर हमें कमर कस कर अपनी जरूरतों को कम करना होगा। जब गाँधीजी सरलता, सादगी से अपना जीवन सौ वर्षों तक

व्यतीत कर सकते हैं तो आवश्यकता पड़ने पर हमें भी उनके जीवन और पद्धति को ग्रहण करना होगा, अन्यथा यह बदलती हुई भौतिकता और पर्यावरण-प्रदूषण हमारे जीवन को नरक बना देंगे।

श्री अनिल अग्रवाल ने पर्यावरण को बचाने तथा संरक्षण के लिए जो महान कार्य किया, वह सदैव उनकी उपस्थिति का भान दिलाता रहेगा। वे ब्लड कैंसर से पीड़ित थे और लगभग सात वर्षों तक उससे जूझते रहे किंतु अन्ततः प्रकृति के इस पुजारी को देहरादून के अस्पताल में 2 जनवरी, 2002 को मृत्यु से हार माननी ही पड़ी।

विश्व के महानतम अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त पर्यावरणविद् एवं वैज्ञानिक श्री अनिल अग्रवाल को मानव समाज सदैव याद करता रहेगा।

—*—

* मन का चोर *

कहा जाता है कि ज्ञान का कोई विकल्प नहीं होता और यही कारण है कि ज्ञानवान व्यक्ति के ज्ञान के तेज के सामने उसकी बहुत-सी कमियां देखी नहीं जाती हैं। इंग्लैंड के विख्यात कवि वायरन अपने स्वास्थ्य सुधार के लिए जेनेवा में निवास कर रहे थे। एक दिन उनका बचपन का दोस्त उनसे मिलने पहुँचा तो वे बहुत प्रसन्न हुए। मित्र का जी-खोलकर आतिथ्य किया। शाम को अपने मित्र को वहां का प्रमुख पार्क दिखाने भी ले गए। जब मित्र का ध्यान पार्क की कोमल घास पर गया तो वायरन यकायक ठिठक कर रुक गए और बोले, 'मित्र, तुम बचपन में भी मेरी लंगड़ी टांग की तरफ ही देखा करते थे और आज भी देख रहे हो।' मित्र ठहाका लगाकर हंसते हुए बोला, 'मेरे प्यारे मित्र! तब की बात छोड़िए, तब तो तुम्हारा आकर्षण केवल तुम्हारी लंगड़ी टांग ही थी, किंतु अब तो तुम जबर्दस्त प्रतिभा के धनी हो। अब भला ऐसा कौन होगा जो तुम्हारे विशाल मस्तिष्क को छोड़कर टांगे देखने की जहमत उठाएगा? यह तुम्हारे मन का चोर है, मैं तो इस सुंदर उद्यान की कोमल घास को देख रहा था।'

महान् वैज्ञानिक एवं इंजीनियर
डॉ. रामनारायण अग्रवाल

जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में जो अग्रणी रहे, वह होता है– अग्रवाल और अग्रवाल समाज ने जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में अग्रणी रहकर अपने नाम की सार्थकता को प्रकट किया है। यहाँ तक कि विज्ञान के क्षेत्र भी उससे अछूता नहीं रहा है। इस समाज ने भाखड़ा नांगल बाँध के निर्माता डॉ. कॅवरसेन, पंजाब के हरित क्रान्ति के जनक सर गंगाराम, पर्यावरण के क्षेत्र में सम्पूर्ण विश्व में क्रांति मचा देने वाले श्री अनिल अग्रवाल जैसे वैज्ञानिक, पर्यावरणविद् देश को प्रदान किये हैं। अग्रवाल समाज के इन्हीं महान् वैज्ञानिकों में डॉ. रामनारायण अग्रवाल का नाम भी अग्रणी है, जिन्होंने अग्नि प्रक्षेपणास्त्र निर्माण कर भारत को विश्व के 6 परमाणु प्रधान अग्रिम राष्ट्रों में पहुंचाने का श्रेय प्राप्त किया है। इस प्रक्षेपणास्त्र के निर्माता ने भारत की सुरक्षा प्रणाली को आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में उल्लेखनीय कार्य किया है। जबकि देश की सीमाओं पर युद्ध के बादल मंडरा रहे थे, आपका यह योगदान अत्यंत ही राष्ट्रीय महत्त्व का रहा। सम्पूर्ण अग्रवाल समाज को, आप जैसे महान् वैज्ञानिक सपूत पर गौरव है। प्रस्तुत है, आपके जीवन का संक्षिप्त परिचय।

राजस्थान की वीरप्रसूता भूमि ने न केवल वीरों को पैदा किया है वरन् इस भूमि ने अपने ऐसी वैज्ञानिक प्रतिभाओं को भी जन्म दिया है, जिन्होंने अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर अपना नाम रोशन किया है। इसी श्रृंखला

में एक वैज्ञानिक हैं इंजीनियर रामनारायण अग्रवाल, जिन्होंने अग्नि प्रक्षेपणास्त्र के निर्माण एवं विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।

आपका जन्म 24 जुलाई 1941 को राजस्थान की राजधानी जयपुर के एक मध्यमवर्गीय अग्रवाल परिवार में हुआ। आपके पिता स्व. रामचरण अग्रवाल एक साधारण कर्मचारी थे तथा माता का नाम श्रीमती दुर्गा देवी अग्रवाल था। आपकी प्रारम्भिक शिक्षा जयपुर में हुई तथा सन् 1960 में महाराजा कालेज से बी.एस.सी. की परीक्षा उत्तीर्ण की। सन् 1960 में वैमानिकी विद्या में अभियांत्रिकी शिक्षा प्राप्त करने के लिए आप मद्रास चले गए एवं सन् 1963 में मद्रास अभियांत्रिकी संस्थान से वैमानिकी अभियांत्रिकी में डी.एम.आई.टी परीक्षा तथा बाद में वर्ष 1970 में भारतीय विज्ञान संस्थान, बैंगलोर से एम.ई. की परीक्षा उत्तीर्ण की।

आप दिसम्बर 1963 में भारत सरकार की सेवा में प्रविष्ट हुए। छः माह की अल्प अवधि तक दिल्ली में प्रतिरक्षा अनुसंधान के फैलो रहे तथा उस दौरान उन्होंने मिसाइल माडल के वायुगतिक परीक्षण, जो कि ध्वनि की गति से चार गुना अधिक होते हैं, के लिए पराध्वनिक हवाई सुरंग डिजाइन की परियोजना को पूरा किया। इसके बाद जून 1964 में वे प्रतिरक्षा, अनुसंधान एवं विकास प्रयोगशाला, हैदराबाद चले गये। इस प्रयोगशाला में वे वरिष्ठ वैज्ञानिक अधिकारी के पद पर नियुक्त हुए।

जनवरी 1968 में आपका विवाह हैदराबाद की विदुषी एवं कर्मठ महिला रेणु अग्रवाल से हुआ। उनकी पत्नी भी इलेक्ट्रानिक्स एवं कम्प्यूटर इंजीनियर हैं। विवाह पश्चात् श्री अग्रवाल के जीवन में एक नया मोड़ आया। उनकी धर्मपत्नी उनके हर कार्य में सहयोग कर एक सच्ची जीवनसंगिनी बनी। श्री अग्रवाल की कार्यदक्षता को देखते हुए उन्हें लम्बी रेंज सिस्टम की डिजाइन का कार्य सौंपा गया। वर्ष 1972 में उन्हें नवीन कौशल के स्थान जैसे प्रज्वाल परीक्षण सुरंग वायु प्राक्षेपिक रेंज एवं पराध्वनिक सुरंग का दायित्व भी दिया गया।

श्री अग्रवाल ध्वनि की गति से भी तेज हवाई तोप से हवा में मारक

अस्त्रों, सम्पूर्ण दीवार गिराने वाले जेट की जांच सुविधा, पृथ्वी से आकाश तक मार करने वाली प्रक्षेपाणास्त्रों के डिजाइन, निर्माण एवं विकास तथा लम्बी दूरी तक मार करने वाले प्रक्षेपणास्त्र प्रणालियों जैसी उच्चगतीय शस्त्र सुविधाओं के निर्माण और विकास के एक समूह के प्रमुख के रूप में रहे।

वर्ष 1982 के जून माह में भारत रत्न डॉ. अब्दुल कलाम ने रक्षा अनुसंधान एवं विकास प्रयोगशाला के निदेशक के रूप में कार्यभार संभाला, जिसके फलस्वरूप इस अग्नि प्रक्षेपणास्त्र की जांच 22 मई, 1989 को उड़ीसा राज्य में चान्दीपुर गांव में प्रक्षेपण द्वारा की गई। इस प्रक्षेपण परीक्षण ने उद्देश्य की सम्पूर्ण आवश्यकताओं को पूरा किया एवं सफलता पर खरा उतरा। अग्नि के इस सफल परीक्षण से भारत विश्व के उन देशों की श्रृंखला में आ खड़ा हुआ, जिनके पास हवा में मार करने वाले बाह्य प्रक्षेपास्त्र हैं।

श्री अग्रवाल की एक परियोजना के वृहद् स्वरूप एवं डिजाइन का फिर विस्तार किया गया। वर्ष 1992 एवं 1994 में उसमें नवीनतम तकनीक का प्रयोग किया गया तथा 11 अप्रैल 1999 को उड़ीसा के व्हीलर द्वीप से अग्नि द्वितीय का सफल प्रक्षेपण किया गया। श्री अग्रवाल की कार्य दक्षता, कुशलता एवं निष्ठा की डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम ने बहुत प्रशंसा की। इस महान् उपलब्धि से सम्पूर्ण अग्रवाल समाज गौरवान्वित हुआ।

इंजीनियर अग्रवाल जी के अब तक प्रक्षेपणास्त्र प्रणालियों की रूपरेखा, निर्माण एवं विकास सम्बन्धी पचास से भी अधिक शोध-पत्र एवं प्रतिवेदन प्रकाशित हो चुके हैं। छोटा कद, पक्का रंग एवं गठे शरीर वाले श्री अग्रवाल शर्मीले स्वभाव के हैं। वे जितना बड़ा काम करते हैं, उतना ही कम बोलते हैं। छोटे बच्चों के साथ खेलने की उनकी अभिरुचि है। उन्होंने एक पुत्र एवं एक पुत्री को गोद ले रखा है। श्री अग्रवाल वर्तमान में प्रतिरक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन में कार्य निदेशक (अग्नि) के पद पर हैं और अग्नि तृतीय योजना में कार्यरत हैं। आपको अपने जीवन

में कई पुरस्कार एवं सम्मान प्राप्त हुए हैं। सन् 1989 में उन्हें विज्ञान मणि पुरस्कार और 1990 में उन्हें पद्मश्री से सम्मानित किया गया। वर्ष 1993 में सर्वश्रेष्ठ वैज्ञानिक पुरस्कार दिया गया और 1997 में राजस्थान सरकार की ओर से "राजस्थान-श्री" सम्मान से विभूषित किया गया। वर्ष 1998 में उन्हें "मैन आफ दी ईयर 1998" का सम्मान प्रदान किया गया। आप "स्पेस साईंस अवार्ड" से भी सम्मानित हो चुके हैं। विज्ञान के क्षेत्र में उनकी उपलब्धियों को देखते हुए सन् 2000 में आपको काँचीकोटि के जगद्गुरू शंकराचार्य जयेन्द्र सरस्वती द्वारा सुरक्षा प्रणाली के क्षेत्र में श्रेष्ठतम वैज्ञानिक योगदान के लिए "चन्द्रशेखर सरस्वती राष्ट्रीय गौरव पुरस्कार" से सम्मानित किया गया। उन्हें सन् 2000 में ही "पद्मभूषण अलंकरण" से भी सम्मानित किया गया। डॉ. रामनारायण अग्रवाल को अखिल भारतीय वैश्य महासम्मेलन इन्दौर द्वारा भी गत दिनों म.प्र. के राज्यपाल भाई महावीर द्वारा 1,00,000 रु. के पुरस्कार एवं "वैश्य रत्न" की उपाधि से सम्मानित किया गया। उनके अग्नि प्रक्षेपणास्त्र प्रणाली के आविष्कार ने भारत की सुरक्षा प्रणाली को आत्मनिर्भर बनाने में उल्लेखनीय योगदान दिया है। आपका यह योगदान अन्तरराष्ट्रीय महत्त्व का है और सम्पूर्ण अग्रवाल समाज देश के इस महान् सपूत पर गौरव का अनुभव कर सकता है। आपने इस सफलता को अर्जित करके यह दिखा दिया है कि भारत बिना किसी विदेशी तकनीकी सहायता के बड़े से बड़ा महाद्वीपीय प्रक्षेपणास्त्र बनाने में विश्व के किसी विकसित देश से कम नहीं है।

श्री रामनारायण अग्रवाल एक सामान्य परिवार में जन्म लेने पर भी सफलता की इतनी ऊँचाइयों पर पहुँचे यह गौरव की बात है। अग्नि प्रक्षेपणास्त्र पर कार्य करते समय उन्हें देश के महान् वैज्ञानिक डॉ. अब्दुल कलाम के साथ निकटता से कार्य करने का अवसर मिला है, जो वर्तमान में भारत के राष्ट्रपति पद पर हैं। इतने महान् वैज्ञानिक होने पर भी गर्व आपको छू तक नहीं गया है। आप अत्यन्त धार्मिक प्रवृत्ति के हैं और

अपना काफी समय पूजा पाठ में व्यतीत करते हैं। इसके अलावा आप निराश्रित बच्चों को पारम्परिक वैदिक शिक्षा प्रदान करने में भी गहरी भूमिका निभा रहे हैं और उन्हें इस कार्य के लिए काँची- कोटि के जगद्गुरु शंकराचार्य जयेन्द्र सरस्वती जी का आशीर्वाद प्राप्त है। विभिन्न मंदिरों के निर्माण हेतु भी आप योगदान देते रहते हैं। अग्रोहा विकास ट्रस्ट द्वारा आप जैसी महान् विभूति को सेठ द्वारिकाप्रसाद सर्राफ राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित करने पर निःसंदेह सम्पूर्ण अग्रवाल समाज गौर्वान्वित हुआ है। प्रो. गणेशीलाल ने आपके अभिनन्दन के अवसर पर भारत सरकार से आपको भारत रत्न से सम्मानित करने की मांग कर वास्तव में सम्पूर्ण अग्रवाल समाज की भावना को व्यक्त किया है।

—*—

कर्तव्य निष्ठा

संधि का प्रस्ताव असफल होने पर जब श्रीकृष्ण हस्तिनापुर से लौट चले, तब महारथी कर्ण उन्हें सीमा तक विदा करने आए। कर्ण को समझाते हुए श्रीकृष्ण ने कहा– 'कर्ण, तुम सूतपुत्र नहीं हो, तुम तो महाराजा पांडु और देवी कुंती के सबसे बड़े पुत्र हो। यदि तुम दुर्योधन का साथ छोड़कर पांडवों के पक्ष में आ जाओ, तो तत्काल तुम्हारा राज्याभिषेक कर दिया जाएगा।' कर्ण ने उत्तर दिया– 'वासुदेव मैं जानता हूं कि मैं माता कुंती का पुत्र हूं, किन्तु जब सभी लोग सूतपुत्र कहकर मेरा तिरस्कार कर रहे थे, दुर्योधन ने मुझे सम्मान दिया। मेरे भरोसे ही उसने पांडवों को चुनौती दी है। क्या अब उसके उपकारों को भूलकर मैं उसके साथ विश्वासघात करूं? ऐसा करके क्या मैं अधर्म का भागी नहीं बनूंगा? मैं यह जानता हूं कि युद्ध में विजय पांडवों की होगी, लेकिन आप मुझे अपने कर्तव्य से क्यों विमुख करना चाहते हैं?' कर्तव्य के प्रति कर्ण की निष्ठा ने श्रीकृष्ण को निरुत्तर कर दिया। कर्तव्य के प्रति निष्ठा व्यक्ति के चरित्र को दृढ़ता प्रदान करती है और उस दृढ़ता को बड़े से बड़ा प्रलोभन भी शिथिल नहीं कर पाता।

महान लेखक एवं शोध-कर्त्ता
डॉ. चम्पालाल गुप्ता

डॉ. चम्पालाल गुप्त अग्रवाल वैश्य समुदाय के इतिहास एवं योगदान से सम्बन्धित विगत तींन दशकों से शोहरत समर्पित व्यक्तित्व के समाजसेवी एवं लेखक हैं, जिन्होंने देश के कोने-कोने में जाकर अग्र/वैश्य समुदाय के सम्बन्ध में ज्ञात-अज्ञात, दुर्लभ सामग्री का संकलन किया है और अपने विभिन्न लेखों, पुस्तकों एवं साहित्य के माध्यम से अग्र वैश्य समुदाय के गौरव को उसकी पूर्ण आभा एवं गरिमा के साथ उद्‌घाटित करने में संलग्न है।

आपका जन्म महाराजा अग्रसेन की पावन स्थली हरियाणा के एक कस्बे एलनाबाद में 25 अगस्त 1942 को वैद्य लक्ष्मीनारायण गुप्त के यहाँ हुआ और वर्तमान में आप श्रीगंगानगर में निवास कर रहे हैं।

आप राजस्थान विश्वविद्यालय से एम.ए., पी.एच.डी हैं और आपने सुमित्रानन्दन पंत के काव्य में युगबोध तथा भारतीय समाज की प्रगति में वैश्य समुदाय के योगदान पर गहन शोध कार्य किया है।

आप विगत 30 वर्षों से महर्षि दयानन्द स्नातकोत्तर महाविद्यालय, श्रीगंगानगर में हिन्दी विभागाध्यक्ष पद पर आसीन हैं।

आप अग्र वैश्य साहित्य के महान् अध्येता एवं लेखक हैं। आपके सैकड़ों लेख विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुके हैं।

आपने अग्रोहाधाम पत्रिका का अनेक वर्षों तक मानद संपादन कर

अग्रसेन, अग्रोहा, अग्रवाल के प्रचार-प्रसार में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। आपने इस अवधि में अग्रवाल समाज से सम्बन्धित अज्ञात महत्त्वपूर्ण सामग्री को प्रकाशन में लाकर अग्रवाल समाज में एक नये आत्म-स्वाभिमान को जाग्रत किया और उच्च कोटि के सम्पादकों द्वारा देश के अग्रवालों में एक नई चेतना का संचार किया, जिससे सम्पूर्ण देश के वैश्य समाज में एक अभूतपूर्व जाग्रति आई। आपके प्रयत्नों से अग्रोहाधाम की प्रसार संख्या 2000 से बढ़कर लगभग 22000 पहुँच गई और पत्रिका ने सामाजिक पत्र-पत्रिकाओं में एक नया प्रतिमान स्थापित किया। आपका संपादन काल-अग्रोहा निर्माण का भी स्वर्णिम काल रहा और अग्रोहा ने विकास की नई-नई मंजिलें बनाईं।

आपने अग्रोहाधाम के अग्रविभूति विशेषांक, लाला लाजपतराय अंक, डॉ. राममनोहर लोहिया अंक, हनुमान प्रसाद पोद्दार अंक, समसामयिक अग्रवाल उपलब्धि अंक, राजस्थान अंक, 1942 अग्र स्वतंत्रता सेनानी अंक, राष्ट्रीय निर्माण में अग्रवाल समाज का योगदान अंक, अग्र महिमा विशेषांक, समसामयिक अग्रवाल उपलब्धि अंक जैसे अनेकानेक विशेषांकों का सृजन कर अग्रवाल साहित्य को प्रकाश में लाने का सतत् प्रयत्न किया। आप वैश्य साहित्य के विश्व कोष समझे जाते हैं।

आपने अग्र/वैश्य समुदाय के इतिहास पर अनुसंधान की दृष्टि से महाराजा अग्रसेन अध्ययन केन्द्र की स्थापना की है और इसमें अग्र/वैश्य समुदाय से सम्बन्धित दुर्लभ ग्रंथों, पत्र-पत्रिकाओं, साहित्य, इतिहास ग्रंथों का अद्भुत संकलन है। आपने लगभग दस हजार पृष्ठों की अग्रवाल/वैश्य समाज के विविध पक्षों की हस्तलिखित सामग्री भी एकत्र की है, जिससे अग्र/वैश्य इतिहास पर कई शोधग्रंथ तैयार हो सकते हैं। आपका यह संग्रह वैश्य साहित्य की दृष्टि से भारत का ही नहीं, विश्व का सबसे बड़ा संग्रह है और मनीषियों ने इस संग्रह की विशालता को देखकर मुक्त कण्ठ से प्रशंसा की है।

आप अनेक पुस्तकों के लेखक हैं और आपकी अग्रोहा की कहानी, अग्रवाल जाति का ऐतिहासिक परिचय, अग्रोहा एक ऐतिहासिक धरोहर, शेरे पंजाब लाला लाजपत राय, शिष्ट बनो सभ्य कहलाओ, नये निबन्ध आदि अनेक पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं।

आप एक अच्छे सामाजिक कार्यकर्ता हैं और अखिल भारतीय अग्रवाल सम्मेलन, अग्रोहा विकास ट्रस्ट, अ.भा. वैश्य महासम्मेलन, अ.भा. धर्म संघ, राजस्थान वनवासी कल्याण परिषद् आदि विविध संस्थाओं से जुड़े हैं। अग्रोहा विकास ट्रस्ट के विशिष्ट ट्रस्टी एवं महाराजा अग्रसेन चेरिटेबल समिति के ट्रस्टी हैं। आप अखिल भारतीय वैश्य महासम्मेलन की वैश्य इतिहास समिति के अध्यक्ष हैं। राजस्थान प्रांतीय अग्रवाल सम्मेलन के स्वागत मंत्री रहे हैं। सामाजिक कार्यों में आपकी गहन रुचि है। आप आकाशवाणी के वार्ताकार हैं और आपकी अनेक वार्ताएँ आकाशवाणी से प्रसारित हो चुकी हैं।

आपने नवआलोक, आलोक मंजरी, मधुलिका, नवभारती, विवेक दर्शन आदि अनेक पत्र-पत्रिकाओं का सम्पादन किया है। आप द्वारा सम्पादित अनेक पत्रिकाएं राज्य स्तर पर पुरस्कृत हुई हैं। लाला लाजपतराय पुस्तक पर आपको 5100/- का पुरस्कार मिला है।

आपको विभिन्न सामाजिक, साहित्यिक एवं शैक्षणिक सेवाओं के लिए अग्रोहा विकास ट्रस्ट, अखिल भारतीय अग्रवाल सम्मेलन, अग्रवाल निदेशिका समिति, दिल्ली, अग्रोहा विकास समिति, अ.भा. धर्म संघ साहित्य परिषद्, विवेक आश्रम आदि द्वारा सम्मानित किया जा चुका है। 1995 में आपको गुजरात के राज्यपाल डॉ. स्वरूप सिंह द्वारा अहमदाबाद में शाल, प्रशस्ति-पत्र आदि से सम्मानित किया गया। लायन्स क्लब एवं लियो क्लब द्वारा आप दो बार आदर्श शिक्षक के रूप में सम्मानित हो चुके हैं।

आपका द्वार विभूतियों के लिए सदैव खुला रहता है और आपको अधिकांश अग्रविभूतियों के आतिथ्य का श्रेय प्राप्त है।

श्री बनारसीदास गुप्त ने आपके साहित्य का अवलोकन करने के पश्चात् जो टिप्पणी की है, वह इस प्रकार है–

'डॉ. गुप्त ने अत्यंत ही महत्त्वपूर्ण एवं कष्टसाध्य कार्य सम्पन्न किया है। समस्त देश के विभिन्न प्रदेशों का भ्रमण कर चुके डॉ. गुप्त ने व्यक्तिगत रूप से कठिन प्रयास कर जो जानकारी उपलब्ध की है, वह आश्चर्य चकित कर देने वाली है। वैश्य समुदाय से सम्बन्ध रखने वाला ऐसा कोई पक्ष नहीं है, जिस पर डाक्टर साहब की लेखनी न चली हो।' यह सामग्री डॉ. गुप्त की विलक्षण लेखन शैली एवं महान् विद्वता का प्रत्यक्ष प्रमाण है। जब उनके द्वारा तैयार की गई सामग्री प्रकाशित होकर जनता के सामने आएगी तो भारतवर्ष के साहित्य की अनमोल निधि होगी।

अग्रवाल स्वाधीनता सेनानी अंक का आपने अत्यंत अल्प समय में ही सम्पादन कर भारतीय स्वाधीनता संग्राम में अग्रवाल समाज के योगदान को समक्ष लाने का जो प्रयत्न किया है, वह स्तुतनीय है। इसमें राजस्थान के स्वतंत्रता सेनानियों पर भी पर्याप्त सामग्री दी गई है। आशा है, पाठकों का इससे पर्याप्त ज्ञानवर्द्धन होगा। ऐसे महान् लेखक एवं अग्र-इतिहासकार व शोधकर्त्ता पर अग्रवाल समाज को सदैव गर्व रहेगा।

—*—

'जड़' यदि शक्तिशाली है, तो विचार सर्व शक्तिमान है। इस विचार को अपने जीवन में उतारो और अपने आपको सर्व शक्तिमान और गौरवसम्पन्न अनुभव करो।

* * *

यह एक सच्चाई है, शक्ति ही जीवन और कमजोरी ही मृत्यु है। शक्ति परम सुख है, अजर-अमर जीवन है और कमजोरी कभी न हटने वाला बोझ और यंत्रणा है।

— स्वामी विवेकानन्द

"राष्ट्रीय हिन्दी सेवी- सहस्त्राब्दी सम्मान" से अलंकृत कथाकार

सुधा गोयल

सहस्त्राब्दी विश्व हिन्दीं सम्मेलन अन्तर्राष्ट्रीय विश्व शान्ति प्रबोधक महासंघ (संयुक्त राष्ट्र संघ के यूनेस्को, यूनी संघ, यू एन डी पी आई एवं इको संघ से सम्बद्ध) के शासी एवं शैक्षिक परिषद की ओर से बुलन्दशहर निवासी जानीमानी हिंन्दी कथाकार सुधा गोयल को भारतवर्ष में हिन्दी भाषा के विकास एवं सम्बन्धित कार्यक्रमों के सुदृढ़ीकरण में सफल योगदान के लिए "राष्ट्रीय हिन्दी सेवी सहस्त्राब्दी सम्मान" नई दिल्ली में प्रदान किया गया । विगत बीस वर्षों से निरन्तर लेखन करते हुए उन्होंने हिन्दी साहित्य को अनेकों रचनाएं देकर हिन्दी साहित्य जगत में अपना एक विशिष्ट स्थान बना लिया है।

वे सन् 1996 में उत्तर प्रदेशीय महिला मंच मेरठ द्वारा 'दिव्या सम्मान' श्रीमती लक्ष्मी पार्वती (पत्नी स्व. एन.टी. रामाराव) द्वारा ग्रहण कर चुकी हैं। 8 अप्रैल 1948 को अनूपशहर के सद्भ्रान्त मध्यम वर्गीय अग्रवाल परिवार में जन्मी श्रीमती सुधा गोयल ने रीतिकालीन महाकवि सेनापति की कर्मस्थली को एक बार फिर अपनी लेखनी के माध्यम से गौरव प्रदान किया है।

सन् 1986 में उन्हें काव्य पर 'राजकुमार स्मृति पुरस्कार' हीरोज

क्लब इलाहाबाद से मिला है। 'आर्य विशारद', 'शिक्षा विशारद' की मानद उपाधियाँ उन्हें मिली हैं।

समाज सेवा में सक्रिय भूमिका निभाते हुए इस समय वे जिला महिला समिति बुलन्दशहर की उपाध्यक्षा हैं। हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग-अखिल भारतीय लेखिका संघ दिल्ली तथा उत्तर प्रदेशीय महिला मंच की सदस्या हैं। उन्होंने 'दृष्टिकोंण' तथा 'आनन्द' पत्रिका का अतिथि सम्पादन, 'युगप्रवर्त्तक' तेरी डगर का सहायक सम्पादन तथा स्मारिका आंचल 1987 एवं 2000 का सम्पादन किया है। बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय से सुधा गोयल के कथा साहित्य में नारी सम वेदना पर शोध कार्य जारी है तथा कई लघु शोध पत्र लिखे जा चुके हैं।

उनके कथा साहित्य पर पी.एच.डी. भी की जा रही है। विभिन्न पत्र पत्रिकाओं में छः सौ रचनाएँ (कहानी, कविता, व्यंग्य, लेख, समीक्षाएं तथा रिपोर्टिंग) प्रकाशित हो चुकी हैं। सात उपन्यास, तीन कहानी संग्रह तथा पांच काव्य संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। उनकी कहानियों के नेपाली, गुजराती तथा पंजाबी में अनुवाद हुए हैं। दिल्ली आकाशवाणी से कहानी प्रसारणं होती रहती है। दो उपन्यास टी.वी. सीरियल के लिए अनुबंधित हैं। कहानी संग्रह 'वनवासिनी' की ओडियो कैसेट्स ब्लाइण्ड ऐसोसिएशन बम्बई द्वारा बनाई जा चुकी हैं। वे आज भी अपने लेखन में संलग्न हैं। हिन्दी साहित्य को उनसे ढेरों आशाएं हैं।

—*—

> सफलता प्राप्त करने के लिए जबर्दस्त सतत प्रयत्न और इच्छा रखो। कड़ा परिश्रम करो, इस शक्ति से तुम अपने उद्देश्य को निश्चित पा जाओगे।

अग्रोहा निर्माण के अग्रणी सूत्रधार

सुप्रसिद्ध उद्योगपति श्री सुभाषचन्द्र गोयल

अग्रोहा, अग्रवालों की आदिस्थली एवं पितृभूमि है। इसके पुनर्निर्माण को लेकर पिछले सौ वर्षों में अनेक प्रयत्न हुए, योजनाएँ बनीं। जो कार्य हुए वह अभूतपूर्व है, उसके कारण आज अग्रोहा विश्व के सुंदर दर्शनीय स्थलों के साथ-साथ पाँचवें तीर्थ धाम के रूप में प्रतिष्ठित हुआ है।

इसका प्रमुख श्रेय अग्रोहा विकास ट्रस्ट के पूर्व अध्यक्ष श्री सुभाष चन्द्र गोयल एवं उनके पिता श्री नंदकिशोर गोयन्का को है। 18 वर्ष की अवस्था में श्री सुभाषचन्द्र इलैक्ट्रिकल इंजिनियरिंग करके व्यवसाय में आ गये और हिसार में वनस्पति चावल और तिलहन प्रोसेसिंग इकाई से जुड़े। 1976 में पोलीथिन थैली का उत्पादन किया। मुम्बई में "एस्सेल वर्ल्ड पार्क" की स्थापना की जो एशिया का सर्वश्रेष्ठ मनोरंजन पार्क है।

आप मनोरंजन एवं संचार के क्षेत्र में अग्रणी, जी-न्यूज, जी-टेलीफिल्मस् आदि के प्रवर्तक, अग्रोहा विकास ट्रस्ट के पूर्व अध्यक्ष संचार क्षेत्र में अग्रणी सैटेलाइट सर्विस लिमिटेड के प्रवर्तनकर्त्ता हैं। यह संस्था दूरभाष सेवाओं के साथ-साथ सैटेलाइट के माध्यम से डाटा संप्रेषण के क्षेत्र में भी उल्लेखनीय भूमिका निभा रही है। इस हेतु भारतीय औद्योगिक विकास बैंक ने अग्रणीय सैटेलाइट को 300 करोड़ रुपये का ऋण भी दिया है। इस योजना पर लगभग 1200 करोड़ रुपये की लागत आई है। श्री गोयल की सैटेलाइट क्षेत्र में यह महत्त्वपूर्ण उपलब्धि है। आप

"जी.टी.वी." एवं "जी टेलीफिल्मस्" के चेयरमैन हैं। आप "प्राइड आफ नेशन" पुरस्कार से सम्मानित हैं।

उद्योग एवं व्यवसाय क्षेत्र में असीम सफलता प्राप्त करने के साथ-साथ आपको समाज सेवा से भी लगाव रहा है और दिसम्बर 1985 में आप अग्रोहा विकास ट्रस्ट के अध्यक्ष चुने गये। अपनी क्रियाशीलता के कारण अक्टूबर 1997 तक इस पद पर आसीन रहकर अग्रोहा निर्माण को गति दी। आज अग्रोहा, अग्रवालों की आशा, इच्छा-आकांक्षाओं का केन्द्र है। इन उपलब्धियों में आपके पिता श्री नंदकिशोर गोयन्का का भी ट्रष्ट की निर्माण समिति के अध्यक्ष के रूप में महत्त्वपूर्ण योगदान रहा, जिसके लिए पिता-पुत्र की यह यशस्वी जोड़ी बधाई का पात्र है।

अग्रोहा परिसर में आपने शक्ति सरोवर, यात्री निवास, वानप्रस्थ आश्रम, धर्मशाला, अतिथिशाला, डाकघर, रसोईघर, प्रतिक्षालय, महाराजा अग्रसेन भंडार का निर्माण कराया।

"महाराजा अग्रसेन टैक्निकल इंस्टीट्यूट" की स्थापना की। 1987 में "डी. फार्मेसी कालेज" का शुभारंभ कर छात्रों एवं स्टाफ के लिए क्वाटर्स, छात्रावास आदि का निर्माण कराया।

परिसर में बाग, फूल-पौधे, वृक्ष, लाइट्स, सड़क, पक्का नाला, तालाब, अग्रोहा मंदिर के आगे 180'×120' का विशाल हाल का निर्माण कराया। मंदिर में कुलदेवी महालक्ष्मी, सरस्वती, महाराजा अग्रसेन की प्रतिमा की स्थापना की। 90 फीट ऊँची मारुति भगवान की विशाल प्रतिमा समुद्रमंथन की झांकी प्रतिष्ठापित कराई। मंदिर में विद्युत चालित झांकियाँ, अप्पूघर, झुलों आदि का निर्माण कराया।

अग्रोहा मेडिकल कॉलेज एवं अस्पताल के निर्माण हेतु 2 करोड़ की राशि का संचय कर निर्माण कराया है।

"अग्रसेन, अग्रोहा, अग्रवाल" के प्रचार-प्रसार की दृष्टि से साहित्य का प्रकाशन कर तथा महाराजा अग्रसेन के चित्र, बैच, सिक्के आदि तैयार करा उन्हें घर-घर पहुँचाया।

संगठन की दृष्टि से अग्रोहा विकास ट्रस्ट की प्रदेश तथा जिलास्तर की शाखाएँ खोलीं तथा संस्थाओं को सम्बद्धता प्रदान की।

संक्षेप में श्री सुभाष ज़ी का कार्यकाल अग्रोहा निर्माण के इतिहास में स्वर्णिम काल रहा है। आप अत्यंत विनम्र स्वभाव के हैं।

श्री सुभाष जी राष्ट्रीय आपदा के समय भी सहयोग करना अपना परम कर्तव्य समझते हैं। लातूर में आये भूकंप, उड़ीसा में आये तूफान या बाढ़ अथवा कारगिल में पाक का आक्रमण, आपने प्रत्येक अवसर पर महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। आपका योगदान चिरस्मरणीय रहेगा।

—*—

* विकलांग *

उन वीरों को शत-शत नमन,
कारगिल में जिन्होंने किया गमन।
जिनकी सांसों ने बख्शा अमन,
उन वीरों को हजारों नमन।
कुर्बान हुआ जिनका यौवन,
गोली खाकर, दुश्मन का किया दमन।
प्राण गंवाये देश पर,
उन वीरों को शत-शत नमन्।
सूनी हैं पत्नी की माँग,
बहन हुई कटी पतंग,
उजड़ी माँ की गोद,
बच्चों की खोई उमंग।
शहीद के नीचे थी धरा,
ऊपर था रहा गगन।

चाँद तारों ने भी उसे,
किया झुक के नमन।
उन वीरों को सभी करते नमन,
जिनका युद्ध ने किया दमन।
लेकिन जो लौट आये,
लुटा अपना चमन,
बन कर रह गये वो अपंग।
कैसे जीएंगे वो जिन्दगी,
जो खो चुके अपने अंग।
दर्द उन्हें मिला,
जख्मों से बहता रक्त मिला।
और साथ में नया नाम मिला
''विकलांग, विकलांग,विकलांग''

अग्र-प्रतिभा – श्री प्रदीप मित्तल

अखिल भारतीय अग्रवाल सम्मेलन के अध्यक्ष श्री प्रदीप मित्तल से सम्पूर्ण अग्रवाल समाज परिचित है। अग्रवाल युवा सम्मेलन के माध्यम से समाज सेवा से जुड़े श्री प्रदीप मित्तल सन् 1980 से समर्पित कर्मठ कार्यकर्त्ता रहे हैं। आपका जन्म एक सद्भ्रान्त अग्रवाल परिवार में दि. 26 दिसम्बर, 1954 को अलवर में श्री राम अवतार मित्तल के घर हुआ। आपने उच्च शिक्षा प्राप्त कर अपने पुस्तैनी व्यवसाय ठेकेदारी को अपनाया।

श्री मित्तल अखिल भारतीय अग्रवाल सम्मेलन के श्री रामेश्वर दास गुप्ता के त्याग-पत्र के बाद महामंत्री बने, इसके बाद उपाध्यक्ष 2001 तक रहे।

आपकी सफलता पर श्री किशन मोदी संस्थापक अध्यक्ष ने उद्गार प्रकट करते हुए कहा था कि अग्रवाल सम्मेलन श्री प्रदीप के नेतृत्व में सफलतापूर्वक गौरव यात्रा पर चल रहा है। अखिल भारतीय वैश्य महासम्मेलन के 2001 तक महामंत्री एवं वरिष्ठ उपाध्यक्ष रहे हैं। बाद में राष्ट्रीय अध्यक्ष बने। अखिल भारतीय अग्रवाल महासभा, राजस्थान रत्नाकर, इस्कान, मंगलम्, लखनऊ, महाराज अग्रसेन हॉस्पिटल ट्रस्ट दिल्ली अखिल भारतीय वैश्य महा सम्मेलन, अग्रोहा विकास ट्रस्ट इत्यादि अनेकों संस्थाओं से जुड़े हैं। सम्पूर्ण देश के उत्तर से दक्षिण तक निरंतर समाज कार्यों से प्रवास करते रहते हैं। प्रातः 5 बजे से रात्रि 12 बजे तक

निरंतर सक्रियता की प्रतिमूर्ति, व्यवसाय की दृष्टि से प्रथम श्रेणी के ठेकेदार हैं, परन्तु किसी ने आपको धंधे की चिंता करते नहीं देखा। बाबू बनारसी दास गुप्ता अग्रवाल सम्मेलन की सफलता का राज श्री प्रदीप की सक्रियता को देते हैं। काश्मीर से कन्या कुमारी, राजस्थान से सिक्किम तक अग्रवाल सम्मेलन का विस्तार हुआ है। श्री प्रदीप मित्तल के नेतृत्व में एक देव दुर्लभ कार्यकर्ताओं का दल सभी जगह सक्रिय है। सामूहिक विवाह, दहेज उन्मूलन, अग्रसेन मूर्ति स्थापना के क्षेत्र में अद्वितीय कार्य किया गया है। आपकी पत्नी भी समाज सेवा में आपके साथ पूर्ण भागीदारी निभा रही है। आपको दि. 23 अक्टूबर, 2002 को "अग्र केशरी" अलंकार से सुशोभित किया गया।

कार्यकर्ताओं से आत्मीयता आपकी पूंजी है। संगठन के प्रति निष्ठा आपका ध्येय है। अग्रवाल सम्मेलन के लिए समर्पित श्री प्रदीप अब वैश्य समाज को संगठित कर राजतंत्र में भागीदारी बनाये रखने के लिए अथक परिश्रम शील है। आप नेतृत्व में विश्वास रखते हैं। युवा-पीढ़ी के लिए मार्ग-दर्शक व प्रेरणा स्रोत है। आपका भविष्य में कार्यक्षेत्र और उत्तरदायित्व और भी अधिक विस्तृत बनता जा रहा है। समाज को आपसे काफी अपेक्षायें हैं। समाज में व्याप्त कुरीतियों और आडम्बरों के आप विरोधी हैं। एकता व समाज संगठन के प्रति अग्रवाल समाज को आपसे बहुत आशायें हैं।

—*—

* पढ़ने योग्य लिखा जाय, इससे लाख गुना बेहतर है कि लिखने योग्य किया जाय।
* प्यार और सहकार से भरापूरा परिवार ही धरती का स्वर्ग होता है।

अग्र-केसरी श्री राधेश्याम गोयल

लेखक : कमल नानूवाला

अग्र-केसरी श्री राधेश्याम गोयल अग्रवाल समाज की ऐसी दिव्य विभूति हैं जिन्होंने राजस्थान में अग्रवाल समाज के उत्थान के इतिहास में एक स्वर्णिम अध्याय जोड़ने में अप्रमेय योगदान दिया है।

राजस्थान के हिण्डौन कस्बे के ग्राम सूरोठ में सेठ श्री जगन प्रसाद जी के घर में जन्मे 74 वर्षीय श्री राधेश्याम आज भी युवाओं के समान कर्मठ, जागरूक रहकर समाज सेवा में जुटे हुए हैं। आप प्रारम्भ से ही हिन्दू संस्कृति के पालन हेतु संघ और भाजपा के सक्रिय कार्यकर्त्ता रहे हैं। वर्तमान में भाजपा के उद्योग-प्रकोष्ठ के प्रान्तीय अध्यक्ष हैं। वर्ष 1955 में नगर पालिका द्वारा लगाये टैक्सों के विरोध में 16 दिन भूख हड़ताल पर रहे। आप अपने ग्राम-कस्बे की समस्याओं के लिए सदैव संघर्षशील रहे। अग्रवाल समाज के सक्रिय कार्यकर्ता एवं पदाधिकारी के रूप में समाज में व्याप्त विषमताओं और कुरीतियों के लिए डटकर मुकाबला करते रहते हैं। आपने अपने प्रयासों से हजारों युवक-युवतियों के संबंध कराये हैं। 256 जोड़ों के सामूहिक विवाह जैसे अनेक छोटे-बड़े आयोजन सफलता पूर्वक किये हैं।

आपको दिन. 31.12.1994 में इन्दोर के अधिवेशन में राष्ट्रीय अध्यक्ष बाबू बनारसीदास जी द्वारा अग्र-जन के रूप में सम्मानित किया गया। आप जिला सवाई माधोपुर इकाई के अखिल भारतीय अग्रवाल

सम्मेलन के अध्यक्ष रहे। वर्तमान में केन्द्रीय सम्मेलन के उपाध्यक्ष एवं राजस्थान प्रदेश के प्रान्तीय अध्यक्ष है।

आप राष्ट्रीय स्तर पर दो समितियों के संयोजक हैं। जिनमें एक "सामाजिक उत्पीड़न निवारण समिति" एवं दूसरी "अग्र-चेतना एवं सद्भावना रथ यात्रा समिति"। आपने समाज के उत्पीड़न के विरोध में सवाई माधोपुर में 'रेल रोको आन्दोलन" कर समाज की शक्ति का सफल बोध कराया। "अग्र-चेतना एवं सद्भावना यात्रा" रथ रैली को दिल्ली से दि. 16-2-2003 को प्रारम्भ कर दि. 28-9-2003 तक लगातार साढ़े सात माह तक भ्रमण करते हुए हरियाणा, पंजाब, पूर्वी एवं पश्चिमी राजस्थान, छत्तीसगढ़ आदि प्रान्तों में लगभग एक हजार पड़ाव किये, जिसमें अग्र-समाज के लगभग एक लाख बन्धुओं को सम्मिलित कर उनमें समाज के प्रति लगन व जागृति पैदा की।

प्रदेश के अध्यक्ष होने के नाते विगत 10 वर्षों में समस्त जिलों में अनेक कार्यक्रमों के माध्यम से प्रदेश की धाक भारत के अन्य प्रान्तों में जमाई हैं। राष्ट्रीय एवं प्रान्तीय स्तर पर आपको अनेक बार उच्च सम्मान एवं पदकों से सम्मानित किया गया है। दि. 23-10-2002 को जिला कोटा में आयोजित अखिल भारतीय अग्रवाल सम्मेलन ने आपको "अग्र-केसरी" की उपाधि से सम्मानित किया है। दि. 24 अगस्त 2003 को जयपुर में अग्रवाल वैश्य महा सम्मेलन की विशाल रैली एवं आम सभा आपके नेतृत्व में आयोजित हुई।

आप एक कुशल नेतृत्व, उज्ज्वल व्यक्तित्व तथा निर्भीक विचारों से युक्त प्रबुद्ध प्रवक्ता हैं। आपका स्नेहिल स्वभाव व जीवन की कार्यशैली के प्रति सभी आकृष्ट हैं। आप तन-मन-धन से समाज की सेवा में समर्पित है। ऐसे मनीषियों, कर्मयोगियों के बलिदान से ही अग्रसमाज आज कुछ संगठित होने लगा है और अपनी अस्मिता को प्राप्त करने में अग्रसर है।

—※—

चहुँमुखी चेतना के प्रेरक
श्री मोहनदास अग्रवाल

लेखक : राजेश गोयल (C.A.)

भारतीय प्राचीन संस्कृति के पोषक वैश्य समाज के विशाल संगठन अखिल भारतीय वैश्य महासम्मेलन की राजस्थान प्रदेश इकाई के अध्यक्ष, भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश-कोषाध्यक्ष, धन्वन्तरी सेवा समिति के अध्यक्ष एवं अन्य अनेक संस्थाओं में उच्च पदों को सुशोभित कर रहे श्री मोहनदास अग्रवाल का जयपुर के धनाढ्य परिवार में सेठ श्री रामेश्वर दास अग्रवाल मगोड़ीवालों के यहाँ दि. 11 फरवरी सन् 1943 को जन्म हुआ। समाज और राष्ट्र की सेवा करना इन्हें अपने पिता व बड़े भ्राता श्री रामदास अग्रवाल से शिक्षा प्राप्ति के दिनों से ही विरासत के रूप में मिला है। 1963 में अग्रवाल कालेज के संयुक्त सचिव चुने जाने के बाद से सार्वजनिक जीवन को ही अपना कार्यक्षेत्र बना लिया। जयपुर की अनेक जानी-मानी संस्थाओं से जुड़े रहकर जनता की सेवा में योगदान देने लगे। अग्रवाल युवा समाज, अग्रसेन पब्लिक स्कूल, लायन्स क्लब, अग्रवाल समाज समिति, धन्वन्तरी सेवा समिति में सर्वोच्च पदों पर पदासीन रहते हुए विभिन्न सेवा प्रकल्पों को पूरा करते रहे हैं। वर्ष 1977-1980 में भारतीय जनता युवा मोर्चा के प्रदेश कोषाध्यक्ष, 1980-1982 में प्रदेश मंत्री तत्पश्चात् 1984-1990 में भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश कोषाध्यक्ष, 1996-1998 में जिलाध्यक्ष,

1998-99 में प्रदेश मंत्री के राजनैतिक पदों पर आसीन हुए। आप 2003 से निरन्तर भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश कोषाध्यक्ष हैं।

वर्ष 1993-1999 तक आप अग्रवाल समाज समिति जयपुर के अध्यक्ष रहे हैं। 2001 से निरन्तर राजस्थान प्रदेश वैश्य महासम्मेलन के अध्यक्ष हैं। आपका कथन है कि संगठित वैश्य समाज ही राष्ट्र को सही दिशा दे सकता है। वैश्य समाज को यथोचित सम्मान तथा शासन व्यवस्था में भागीदारी की नितान्त आवश्यकता है।

आप श्री गोकणेश्वर महादेव धार्मिक ट्रष्ट, मगोड़ीवालों की बगीची, बृह्मपुरी के मुख्य प्रबन्ध ट्रष्टी, श्री रामेश्वरदास धर्मार्थ ट्रष्ट के महामंत्री, सट्टेवालों की धर्मशाला के कोषाध्यक्ष एवं विश्व हिन्दू परिषद के आजीवन सक्रिय सदस्य हैं।

वर्ष 1980-1990 में फोर्टी के उपाध्यक्ष और अब 2003 से निरन्तर मुख्य संरक्षक फोर्टी हैं। हनुमंत शोभा यात्रा समिति के आप संस्थापक हैं।

श्री अग्रवाल एक प्रमुख व्यवसायी एवं उद्योगपति हैं। आप अपने पारिवारिक व्यवसाय माइनिंग, ज्वैलरी एवं ट्रैडिंग के व्यापार में एक जानी मानी हस्ती हैं।

विश्व प्रसिद्ध गुलाबी नगरी जयपुर के राजनैतिक, सामाजिक, व्यावसायिक तथा धार्मिक क्षेत्र में मोहनदास का नाम है। श्री अग्रवाल कहते हैं कि राजनीति वास्तव में सेवा कार्य है, यह कोई व्यवसाय अथवा व्यापार नहीं है। राजनीति कार्य के माध्यम से जनता की सेवा में बेहतर योगदान दिया जा सकता है। राजनैतिक क्षेत्र में निरन्तर पतन घोर चिंताजनक है। निजी स्वार्थ के लिए नेता कुछ भी करने में तत्पर हैं। श्री अग्रवाल का मानना है कि कुरीतियों के निवारण के लिए जातीय स्तर पर कदम उठाये जाने चाहिए। सामूहिक भोजों में धनाढ्य वर्ग 50 से 70 व्यंजन बनाकर अपने वैभव को दिखाकर, मध्यम वर्गीय परिवारों को

पशोपेश में डाल देते हैं। 15 से 18 व्यंजन तक की सीमा को सभी समाजों ने स्वीकार किया है लेकिन इसकी पालना नहीं हो पा रही है। सामूहिक विवाह मध्यम वर्गीय परिवारों के लिए संजीवनी का काम है। वैश्य समाज जैसे प्रबुद्ध समाज में अनेक कुरीतियाँ आज की गरिमा को ठेस पहुँचा रही हैं जैसे रात को सड़कों पर नाचना, बहु-बेटियों का नृत्य करना प्रतिष्ठा के अनुरूप नहीं है। इन पर प्रतिबन्ध आवश्यक है। बारात की शान-शौकत में तीन-चार घंटों के लिए लाखों रुपयों का अपव्यय विवाह मण्डपों में करना कदापि प्रशंसनीय नहीं कहा जा सकता। इन पर नियंत्रण करने के लिए गंभीरता पूर्वक प्रयास करने चाहिए। होड़ा-होड़ी में मध्यम वर्गीय परिवार गरीबी की चक्की में पिसकर कर्जे के बोझ तले दब जाता है। आप इस प्रकार की अनेक सामाजिक कुरीतियों के उन्मूलन के लिए संगठनों के माध्यम से प्रयत्नशील हैं। इसके लिए समाज में चहुँमुखी चेतना की परम आवश्यकता है। आप का अनेक शिक्षण संस्थाओं, अस्पतालों, अनाथालयों व समाज सुधार के कार्यों में भरपूर सहयोग रहता है। आपका मानना है कि बुजुर्गों, विधवाओं, असहायों की सेवा ही सच्ची राष्ट्र सेवा है उनके आशीर्वाद से ही समाज सुदृढ़ और समृद्धिशाली बना रह सकता है। आप अपने आप में एक संस्था हैं। उदार हृदय, आत्मीय विचार, कुशल संगठन, कर्तव्य परायण तथा सबको साथ लेकर चलने की कला में सिद्धहस्त श्री अग्रवाल समाज के गौरव हैं। समाज को इनसे अभी काफी आशाएें हैं।

—*—

कोई बुरा करे तो बदले में
उसका बुरा न चाहकर यह समझो कि अपने ही
दाँतो से अपनी जीभ कट गयी!।।

शृंगारी बाबा श्री राधेश्याम फाटक

लेखक – अशोक आमेरिया

जयपुर के अग्रवाल मित्तल गौत्रीय सेठ श्री भँवरलाल सब्जी वालों के सुपुत्र श्री राधेश्याम फाटक का जन्म 22 अगस्त 1934 को हुआ। आपने प्रारम्भिक शिक्षा प्राप्त कर अपने पारिवारिक व्यवसाय फल-सब्जी के थोक व्यापार में लग गये। आप बचपन से ही शिव भक्त रहे हैं। शृंगार करने में आप न्रिपुण हैं। जयपुर के सभी प्रमुख शिव मंदिरों में प्रतिवर्ष आप द्वारा फल-सब्जी तथा फूलों का अनूठा आकर्षक शृंगार किया जाता है। 40 वर्ष पूर्व ही महाराजा मानसिंहजी ने आपकी शृंगार-कला से प्रभावित होकर आपको "शृंगारी बाबा" के नाम से विभूषित किया था। सभी आयोजनों में अपनी पूर्ण भागीदारी निभाते हैं। बल्लभ पुष्टी मार्गीय वैष्णव मण्डल के 7 वर्षों से अध्यक्ष पर, पहाड़ी बाबा धार्मिक ट्रष्ट। (सत्यायतन आश्रम) आमेर रोड के 15 वर्षों से मुख्य ट्रस्टी, गलता घाटी ट्रस्ट के ट्रस्टी, पिंजरापोल गौशाला के कार्यकारिणी सदस्य पिछले 45 वर्षों से निरन्तर है। सांगानेरी गेट स्थित मंगलेश्वर महादेव के मंदिर को हटाने की समस्या पर सन् 1952-53 में आपने ही संघर्ष कर उसे रोका था। आप धार्मिक प्रवृत्ति से युक्त अपने व्यवसाय के प्रति भी पूर्ण निष्ठावान हैं। जयपुर की फल-सब्जी आपूर्ती के लिए सदैव जागरूक व प्रयत्नशील रहते हैं। किसानों को फल-सब्जी के उत्पादन व रख-रखाव के लिए अपने अनुभवों से परामर्श व सहयोग देकर उत्पादन

बढ़ाते हैं। क़िसानों को खाद-बीज-ऋण आदि मुहैया कराने की समस्याओं का निराकरण कराते हैं। किसानों, विक्रेता व्यापारियों तथा उपभोक्ताओं के मध्य भावों और उसकी गुणवत्ता आदि का समन्वय रखकर सरकार व जनता की मांग पूरी रखने करते हैं। यही वजह है कि आप पिछले 15 वर्षों से फल-सब्जी-आलू आढ़तिया महासंघ के अध्यक्ष तथा राजस्थान फल-सब्जी आलू थोक व्यापार महासंघ के संस्थापक के रूप में 7 वर्ष से अध्यक्ष पदों को सुशोभित करते आ रहे हैं।

सामाजिक क्षेत्र में समाज सेवा के रूप में भी आप पूरी भागीदारी रखते हैं। अनेक अग्रवाल समाज समितियों के आप सक्रिय सदस्य व कार्यकर्त्ता हैं। समाज में व्याप्त कुरीतियों के उन्मूलन के आप पक्षधर हैं। समय-समय पर आपकी सेवाओं के उपलक्ष में आपको सरकारी व गैर सरकारी अनेक स्तरों पर सम्मानित किया गया है।

धन्वन्तरी औषधालय के औषध प्रकोष्ठ में आपकी सेवा जारी है। जय जवान कालौनी के विकास के लिए आप समर्पित हैं। भीलवाड़ा में हुए विशाल किसान सम्मेलन में आपकी सेवाओं, योग्यताओं से आपको सम्मानित किया गया है। आप एक कुशल व्यवसायी, उज्वल व्यक्तित्व, धार्मिक प्रवृत्ति युक्त मृदुल स्वभाव के धनी हैं।

—*—

भलाई करने की उतनी आवश्यकता नहीं है, जितनी बुराई का त्याग करने की आवश्यकता है। बुराई का त्याग करने से भलाई अपने-आप होगी, करनी नहीं पड़ेगी॥

* * *

जो सुखदायी परिस्थिति में दूसरों की सेवा करता है तथा दुःखदायी परिस्थिति में दुःखी नहीं होता अर्थात् सुख की इच्छा नहीं करता, वह संसार-बन्धन से सुगमतापूर्वक मुक्त हो जाता है॥

अग्रवालों की आदि स्थली एवं पितृभूमि

अग्रोहा की ऐतिहासिकता

(प्राचीन वैभव, पराभव एवं पुनरोत्थान)

अग्रोहा का इतिहास, महाराज अग्रसेन के शासन काल का इतिहास है। अग्रोहा महाराजा अग्रसेन की कर्मभूमि थी। अग्रोहा की प्रसिद्धि उन्हीं के नाम से जुड़ी हुई है। महाराजा अग्रसेन का काल महाभारत का अन्तिम चरण रहा है। उन्होंने अपने पिता सूर्यवंशी महाराजा बल्लभसेन से राज्य प्राप्त होने के पश्चात् 25 वर्ष की आयु में ही अग्रगण्य राज्य की स्थापना कर दी थी और अग्रोहा (अग्रोदक) नगर को बसाया था और उसे अपनी राजधानी बनाया था।

महाराजा अग्रसेन ने राज्य-भार सम्हालने के साथ ही अपनी दूरदर्शिता, न्याय व समानता की दृष्टि से अपने अनुज भ्राता शूरसेन जी को अपने राज्य को दो भागों में बांटकर एक प्रथक राज्य का शासक बना दिया, जिसकी राजधानी आगरा (अग्रनगर) थी।

उस समय महाभारत युद्ध की तत्कालीन त्रासदी का पूर्ण प्रभाव था। महाराजा अग्रसेन ने अपने शासन व्यवस्था के सुदृढ़, सु-संचालन के लिए अपनी पूर्व राजधानी प्रतापनगर के स्थान पर एक सुरक्षित और समुचित स्थान का चयन कर अग्रोहा (अग्रोदक नगर) को मार्गशीर्ष कृष्ण पंचमी को बसाया और उसे राजधानी बनाया। समय गणना के अनुसार आज से 5160 वर्ष पूर्व प्रथम गणराज्य की स्थापना की थी।

अग्रोहा नगर बीस सहस्र बीघा क्षेत्रफल भूमि में फैला था। उसके चारों ओर पक्का परकोटा और खाई खुदी हुई थी। यह खाई उस समय नगर की सुरक्षा के लिए बनी थी। नगर में प्रवेश के लिए एक मुख्य द्वार था। उसके साथ साथ अनेक गुप्तद्वार भी थे, जो कि शत्रु के आक्रमण के

समय विशेष रूप से उपयोगी थे। नगर में शुद्ध जल की पर्याप्त व्यवस्था थी और अनेक बाग-बगीचे, कुंज बने हुए थे। नगर अत्यन्त विशाल था और चार मुख्य सड़कों द्वारा विभक्त था। प्रत्येक सड़क के दोनों ओर आकाश को छूती भव्य अट्टालिकाएं और राजमहल थे। फलदार वृक्षों और रंग-बिरंगे सुरभित पुष्पों से आच्छादित उपवन और मनोरंजन स्थलों का प्रावधान था। नगर के मध्य कुलदेवी माता महालक्ष्मी जी, शिव-पार्वती तथा इष्टदेव भगवान विष्णु के भव्य और विशाल मंदिर का निर्माण कराया गया था, जहाँ अहर्निश पूजा-आराधना चलती थी।

अग्रोहा नगर में सवालक्ष भवनों का निर्माण कराया गया। उनमें लगभग साढ़े तीन लाख जनसंख्या निवास करती थी। सम्पूर्ण नगर अपनी सुन्दरता, वैभव तथा शिल्प की दृष्टि से अद्भुत और अनुपम था तथा देवपुरी से समानता करता था। ऐसा वैभवशाली था अग्रोहा! इस नगर में बसने वाले सभी लोग महाराजा अग्रसेन के अनुसार उदार, समृद्धिशाली व संगठन प्रेमी थे। महाराजा की नीति के अनुसार जब भी कोई नागरिक यहाँ बसने आता था तो अग्रोहा निवासी उसे एक मुद्रा और एक ईंट भेंट करते थे, जिससे वह तत्काल एक लाख मुद्राओं का स्वामी बन जाता था और एक लाख ईंटों से उसका मकान बन जाता था। वर्षा, बाढ़, अकाल या व्यापार में घाटा लगने या किसी प्राकृतिक आपदा के आने पर यह समाजवाद की प्रक्रिया पुनः दोहराई जाती थी। यह सहायता एक परम्परा थी। अतः उसे स्वीकार करने में किसी के भी आत्म-सम्मान को आघात नहीं पहुँचता था।

अग्रगण-राज्य में क्षत्रियों के उपनिवेश, ब्राह्मण, वैश्य और शूद्रों के जनपद, आमीर, दरद, काश्मीर, पशुपति आदि अनेक जातियों के जनपद थे किन्तु इस राज्य की प्रशासन व्यवस्था लोकतन्त्र एवं पंचायती राज्य शासन की पद्धति पर आधारित समाजवाद व समन्वयवाद की भावना से अठारह क्षेत्रों में विभक्त गणराज्य के रूप में संचालित थी। इस राज्य की संचालन व्यवस्था के लिए वैश्य समाज को एक अखण्ड इकाई के रूप

में प्रतिष्ठित कर वैश्य वर्ण (अग्रवाल) नाम को प्रतिष्ठा दिलाई। इन वैश्यों के प्रतिनिधि 18 कुल थे जो शासन व्यवस्था को सम्हालते थे। 18 प्रमुख कुटुम्बों में से चुने हुए सदस्य ही प्रतिनिधि होते थे। इन 18 कुटुम्बों को 18 गोत्र नाम दिया गया। यही अग्रवालों के 18 गोत्र आज भी प्रचलित हैं। उस समय वैश्य जाति ही व्यापार संचालन में लगी हुई थी, अन्यजाति के लोग व्यापार कर्म के अतिरिक्त अन्य कार्य कर, जीवन की जरूरते पूरी करते थे। वैश्य वर्ग के लोग नाना प्रकार के काल-चित्र, पारस मुद्रक, चन्दन-काष्ठ, सुगन्धित द्रव्यों, औषधियों, दुकूलवस्त्रों, सोने-चांदी के आभूषण आदि का व्यापार सम्पूर्ण पश्चिमी ऐशिया, अफ्रीका, ग्रीक, स्पेन, चीन आदि देशों के साथ करते थे। वैश्य वर्ग का शासन एवं विदेशों के साथ व्यापार आज से लगभग 2500 वर्ष पूर्व तक चलता रहा। इस प्रकार अग्रोहा व्यापारिक दृष्टि से वैभवशाली और देश-देशान्तरों में इसकी प्रसिद्धि थी। आवश्यकता पर वैश्य जाति के लोग अपनी रक्षा-सुरक्षा हेतु अस्त्र-शस्त्र धारण कर क्षत्रिय धर्म का अनुसरण करते हुए युद्धों में भाग लेते थे।

अग्रोहा गणराज्य की सीमा उत्तर में हिमालय पर्वत और पश्चिम में पंजाब की नदियाँ (व्यास नदी), पूर्व में गंगा, यमुना नदियाँ तथा दक्षिण में मारवाड़ क्षेत्र का समूचा प्रान्त था, इस अग्रजनपद की राजधानी अग्रोहा (अग्रोदक) हरियाणा प्रदेश में हिसार से 20 कि.मी. की दूरी पर स्थित है। इस राज्य के अन्तर्गत महाराष्ट्र (मेरठ), रोहिताश्व (रोहतक), हांसी, हिसार, पुण्यपतन (पानीपत), करनाल, नगरकोट (कोटकांगड़ा), लवकोट (लाहौर मण्डी), विलासपुर, गढ़वाल, जींद, सपीदम, नाभा, नारनीवल (नारनौल) आदि नगर मुख्य रहे हैं।

महाराजा अग्रसेन ने 18 यज्ञों के माध्यम से विश्व में अपना प्रभुत्व स्थापित किया तथा उस समय के नागवंशी, यदुवंशी, सूर्यवंशी, चन्द्रवंशी इत्यादि राजाओं से सम्बन्ध स्थापित कर अपने राज्य को पूर्ण सुरक्षित, वैभवशाली और सुदृढ़ बनाया।

महाराजा अग्रसेन ने अग्रोहा गणराज्य का 108 वर्ष राज्य किया और कुलदेवी महालक्ष्मी की आज्ञा से अपने ज्येष्ठ पुत्र युवराज विभु को राज्य सौंपकर वन में तपस्या करने चले गये तथा 60 वर्ष तपस्या कर 193 वर्ष की आयु में ब्रह्मलीन हुए।

अग्रोहा का पराभव

महालक्ष्मी व्रत कथा के अनुसार महाराजा अग्रसेन के पश्चात् इनके वंश की अनेक पीढ़ियों ने इस गणराज्य के शासन का गौरवपूर्ण संचालन किया। उनके पुत्र-पौत्रों तथा वंशजों से नगर सदा सुखी रहा। महाराज विभु ने 100 वर्ष राज्य कर अपने पुत्र नेमिरथ को राज्य भार सौंपा। इसके बाद क्रमशः इनके वंशज विमल, शुकदेव, धनंजय, श्रीनाथ, दिवाकर, महादेव, यमाधार, शुभांग, मलय और बसु हुए। इनमें दिवाकर जैनमुनी लोहाचार्य की प्रेरणा से जैन हो गये। वसु के दस पुत्र थे जो विरागी हो गये। वसु के बाद इनके छोटे भाई नन्द हुए। आज से 2400 वर्ष पूर्व महाराज नन्द विदेशी आक्रान्तक सिकन्दर के काल में अग्रोहा गणराज्य के शासक थे। विदेशी आक्रान्तक सिकन्दर के द्वारा अग्रोहा नगर के विनाश की पीडा से इन्हें भी विराग (वैराग्य) हो गया और वंशज अग्रचन्द (उत्तमचन्द) को राज्य देकर चले गये, जो इस वंश के अंतिम राजा हुए। कालान्तर में इस नगर का नाम भी परिवर्तन हुआ जो ''अग्लसोई'' नगर कहलाया।

काल की गति कभी स्थिर नहीं रहती। यूनान, मिश्र और रोम की सभ्यता नष्ट हो गई। यहाँ तक की सिकन्दर के काल की अनेक जातियाँ और नगरों का नामोनिशान तक नहीं रहा। लेकिन महाराजा अग्रसेन जी के आदर्शों पर आधारित अग्रवाल वैश्य समाज आज भी 5000 वर्ष की दीर्घ कालावधि के बाद भी अक्षुण्य ही नहीं, उन्नति के चरम शिखर पर है। अग्रवाल जाति और उसकी जन्मभूमि अग्रोहा का अस्तित्व आज भी बना हुआ है।

प्रथम आक्रमण– ईशा से 326 वर्ष पूर्व भारत की भूमि पर यूनानी शासक सिकन्दर महान का उत्तर की ओर हिन्दुकुश से आक्रमण हुआ।

सीमा पर स्थित राज्य के शासक पौरुष से युद्ध हुआ। पौरुष पराजित हो गया। सिकन्दर ने उसका राज्य अपने सेनापति सैल्यूकस को देकर अपने देश स्थल मार्ग से वापिस लौट गया। लौटते समय सिकन्दर ने अपने मार्ग में अग्रोहा (अग्लसोई) नगर को आक्रमण द्वारा विध्वंस कर लूट लिया। इस नगर के अन्तिम राजा उत्तमचन्द (अग्रचन्द), अन्य सेनानायक नंद कुमार, इन्द्रसेन, रतनसेन आदि ने अपनी चालीस हजार पैदल, 30000 घुड़सवार व 1000 हाथियों से युक्त सेना लेकर डटकर मुकाबला किया। लेकिन इस परिवार के दो राजकुमार गोकुल चन्द्र और रतनचन्द्र ने राज-परिवार की आपसी फूट के कारण् आक्रमण-कारियों के साथ दिया और अपनों के साथ धोखा किया। उधर सेना लड़ रही थी, इधर शहर में इन दोनों ने अग्रसेना के गोला-बारूद में आग लगाकर शहर को तबाह कर दिया। अग्रोहा हार गया, उसे लूट लिया गया। सिकन्दर के सेनापति नियाकर्स ने विजयी होकर अत्याचार किये। इसमें मुकाबला करते नगर वासी हजारों अग्रवंशी मारे गये। स्त्रियों ने अपने सतीत्व की रक्षा के लिए जौहर कर अपने आपको आग की ज्वाला में समाप्त कर लिया। बहुत से अग्रवंशी अग्रोहा पतन के पश्चात् अपने जीवन यापन के लिए आस-पास के अन्य राज्यों में जाकर बस गये। देश-द्रोही गोकुलचन्द्र को अग्रसेना ने पकड़कर मार डाला।

अग्रसेन के अंतिम वंशज महाराज नंद के वंश में केवल रतनचन्द बचा। नंद वंश के एक मंत्री विष्णुगुप्त (चाणक्य) ने अपनी कूटनीति से रतनचन्द को सिंहासन पर बैठाया। नंदवंश के राजाओं-राजकुमारों के विवाह मत्स्य (विराट नगर) राज्य की कन्याओं से हुए थे। रतनचन्द्र की पत्नी भी मत्स्य कन्या थी। अतः चाणक्य ने रतनचन्द का नाम चन्द्रगुप्त मौर्य रखा, रतनचन्द्र से चन्द्र, विष्णु गुप्त से गुप्त और मत्स्य से मौर्य नाम लिया गया। चन्द्रगुप्त मौर्य ने अपनी शक्ति बढ़ाकर सेल्यूकश से मुकाबला किया। सेल्यूकस ने अपनी पुत्री हेलन का विवाह चन्द्रगुप्त से करके मैत्री कर ली। चन्द्रगुप्त ने अपने राज्य में वृद्धि कर अपने राज्य की राजधानी

पाटली पुत्र को बनाया और मौर्य वंश की स्थापना की। चन्द्रगुप्त के बाद इस मौर्यवंश में बिन्दुसार एवं महाराज अशोक महान हुए। इनके द्वारा अग्रोहा पुनः निर्माण और उन्नति की ओर अग्रसर हुआ।

महाराज अशोक ने साम्राज्य वृद्धि के अन्तर्गत अनेक राज्यों सहित कलिंग विजय की, लेकिन इन महायुद्धों में लाखों लोग मारे गये। इससे अशोक को आत्मबोध हुआ और नर हिंसा बंद कर बौद्ध धर्म का अनुयायी बन गया। इस मौर्य वंश में अंतिम राजा बृहद्रथ हुआ। इसके शासन काल तक बौद्ध धर्मानुयायी भिक्षुक आदि ऐश्वर्य पूर्ण-भोग-विलासी और स्वेच्छाचारी हो गये और राज्य पर हावी होकर प्रजा को पीड़ित करने लगे। राजा बृहद्रथ भी बौद्ध आचार्यों के हाथों कठपुतली बनकर रह गया। इन्हीं दिनों यवन-आक्रान्ता डेमेट्रियस (राजा दत्तमित्र) बौद्धों के साथ मिलकर वैदिक संस्कृति के प्रतीक हिन्दू धर्म स्थलों मथुरा, काशी, अयोध्यापुरी पर आक्रमण कर इन्हें नष्ट करने की तैयारी में था। वैदिक संस्कृति के प्रतिपालक अवंति (अयोध्या) निवासी आचार्य पातंजलि ने विदिशा के शुंगवंशीय सेनापति पुष्यमित्र और कलिंग नरेश मेघवाहन खारवेल (जैन मतावलम्बी) के साथ मिलकर मौर्य राजा बृहद्रथ और यवन राजा दत्तमित्र के विरुद्ध जंग छेड़ दिया। संग्राम में दत्तमित्र अपने हाथी सहित सरयू में डूब मरा और मौर्य राजा बृहद्रथ का वध कर दिया गया इस प्रकार पाटलीपुत्र को बौद्धों के चंगुल से मुक्त कराया तथा वैदिक धर्म की पुनः स्थापना हुई। इस दौरान अग्रोहा पुनः अपने वैभव को प्राप्त करता रहा। लेकिन अग्रोहा की समृद्धि विदेशी आततायियों को पुनः आकर्षित करने लगी।

अग्रोहा पर दूसरा आक्रमण– अग्रोहा जैसे सामाजिक, सांस्कृतिक, वैभवशाली नगर को आधिपत्य में लेने के लिए सन् 120 ईस्वी में कुशान राज्य के राजा कनिष्क ने आक्रमण किया। अग्रोहा नगर कुशान राज्य का अंश बनकर रह गया, लेकिन इस नगर के अग्रवंशी व्यापार-व्यवसाय के लिए चारों ओर देश-देशान्तरों तक फैल गये। अग्रोहा पुनः वीरान हो गया।

इसी काल में अग्रोहा के पूर्व-निवासी सेठ हरभज शाह जो अग्रोहा शहर के नजदीक ही महमनगर में बस गये थे, ने अग्रोहा को पुनः आबाद करने में पहल की। सेठ हरभजशाह इतने सम्पन्न व्यापारी थे कि श्रीचन्द नामक साहूकार व्यापारी द्वारा ग्यारह सौ ऊँटों पर लादकर भेजी गई केसर को अकेले खरीदकर अपने भवन की लिपाई के काम में ले लिया। साहूकार श्री चन्द ने इससे प्रभावित होकर सेठ हरभज शाह को उनकी वीरान पड़ी जन्म भूमि अग्रोहा नगरी को बसाने की याद दिलाकर प्रेरणा दी। हरभजशाह ने अग्रोहा में अपनी दुकान (मण्डी) खोली और घोषणा की, कि जो व्यक्ति अग्रोहा में आबाद होना चाहे, उसे लोक या परलोक में भुगतान की शर्त पर रकम या माल उससे उधार ले सकेगा। सेठ हरभजशाह के परम मित्र सियालकोट के राजा रिसालू ने अपनी सेना द्वारा इस नगर के वासिन्दों की रक्षा का प्रबन्ध कर दिया। घोषणा सुनकर लोग अग्रोहा आने और बसने लगे।

इन बसने वालों में एक लक्खी सिंह बनजारा भी था, जिसने परलोक की शर्त पर एक लाख रुपया ऋण लिया। बनजारा ऋण लेकर हर्षित हुआ, लेकिन ऋण चुकाने की शर्त के परिणाम की सोचकर अत्यन्त दुःखी हुआ। ऋण को लौटाने के लिए सेठ हरभजशाह से सम्पर्क किया। सेठ ने शर्त के मुताबिक ऋण वापिस लेने से इन्कार कर दिया। इससे लक्खी बनजारा बड़ी चिंता में पड़ गया। उसे एक विद्वान योगीराज ने इस ऋण से मुक्ति का उपाय बता दिया कि वह इस ऋण की राशि से एक भव्य तालाब का निर्माण सेठ हरभजशाह के नाम से करवा दे। उसमें जल भरवा दे और बिना सेठ की अनुमति के किसी को उस जल का उपयोग नहीं करने दे। बनजारे ने यही किया। शनैः शनैः यह बात सेठ तक पहुँची। उसे अपने नाम की निंदा बुरी लगी कि उसके नाम का तालाब हो और उसका पानी कोई काम में नहीं ले सके। सेठ हरभजशाह ने लक्खीसिंह से जानकारी की और ऋण लौटाने के इस उपाय की प्रशंसा की तथा ऋण दिया रुपया सेठ ने जमा कर, तालाब के पानी को लोगों के काम के लिए खोल दिया। इस तालाब का नाम "लक्खी तालाब" पड़ गया।

लक्खी तालाब के पास ही अग्रोहा पराभव की शिकार सतियों के जौहर की यादगार मढ़ियाँ हैं। इनमें एक शीलमाता की मढ़ी (मंदिर) भी है जो अग्रवालों की कुलदेवी की है। भाद्रपद अमावश्या को प्रतिवर्ष यहाँ भारी मेला जुटता है। अग्रवाल बन्धु व आस-पास के लोग अपने बच्चों के मुण्डन करने आते हैं। शील, सेठ हरभजशाह की पुत्री थी, अत्यन्त रूपवती और गुणवन्ती। इसका विवाह सियालकोट के राजा रिसालू के दीवान मेहताशाह से हुआ था। शील सदाचारिणी और पतिव्रता थी। राजा रिसालू शील के रूप-गुणों से मोहित उसे पाना चाहता था। एक बार जब दीवान मेहताशाह राज्य से बाहर गये हुए थे, राजा रिसालू ने शील को अपनाने का प्रयत्न किया, लेकिन शील ने राजा का विरोध किया और उसे मौका नहीं दिया। अपमानित राजा रिसालू ने शील से बदला लेने के लिए और उसे बदनाम करने के उद्देश्य से एक दासी के हाथों अपनी अंगूठी शील के शयनागार में छुपा दी। अंगूठी देखकर मेहताशाह को शील के आचरण पर शंका हुई और शील को त्याग दिया। शील दुःखी होकर अपने पितृगृह अग्रोहा आ गई। कुछ दिनों बाद दासी ने असली बात मेहताशाह को बतादी। सच्चाई जानकर मेहताशाह विधाता की मारी शील के विरह में अत्यन्त दुःखी होकर पागल जैसे हो गये और शील को लेने अग्रोहा पैदल ही चल पड़े। मार्ग के कष्टों से पीड़ित होकर अग्रोहा पहुँचने से पहले मेहताशाह का प्राणान्त हो गया। अग्रोहावासियों ने उन्हें पहचानकर शील को सूचना दी। शील ने पति को मृत देखकर स्वयं भी मूर्छित हो गई और प्राण त्याग दिये। पति-पत्नी, दो-प्रेमी एकाकार हो गये। ज्योति में ज्योति मिल गई। दोनों का एक ही चिता में संस्कार हुआ। पवित्र पतिव्रत धर्म और निश्छल प्रेम की प्रतीक शीला अमर हो गई और अग्र-कुलवंशी इसे माता के रूप में पूजकर अपनी मनोकामनाऐं पूर्ण करते आ रहे हैं। यह शील मंदिर आज भी अग्रोहा में अंपने वैभव के साथ विद्यमान है।

इस प्रकार, अग्रोहानगर पुनः अपने वैभव को प्राप्त कर बस गया। लेकिन इस नगर पर आधिपत्य अन्य राज्यों के शासकों का बना रहा।

अग्रोहा के वैभव पराभव की कहानी यहीं समाप्त नहीं हुई। अग्रोहा पर सन् 701 ईस्वी में तीसरी बार भीषण आक्रमण हुआ। इस समय अग्रोहा में धर्मसेन नामक राजा राज्य करता था। उज्जैन के राजा तोमरवंशी समरजीत राजपूत ने दिल्ली विजयकर फिर अग्रोहा पर हमला कर दिया। इसमें अग्रोहा अपनी रक्षा नहीं कर सका और नगर को फिर हानि उठानी पड़ी। इस बार 1400 स्त्रियों ने पुनः जौहर कर आत्मबलिदान किया। अग्रोहा से अनेक परिवार अन्यत्र बसने चले गये। अग्रोहा तोमरवंशियों के अधीनस्थ हो गया।

दसवीं शताब्दी में विदेशी मुग़लों-आतताईयों के हमले भारत पर फिर से शुरु हो गए। सन् 1037 ईस्वी में गजनी देश के शासक महमूद गजनवी के पुत्र मसूद गजनवी ने भारत में हांसी नगर पर आक्रमण किया। अग्रोहा हांसी से बिल्कुल पास है। जो इस आक्रमण के प्रभाव से अछूता नहीं रहा, किन्तु अग्रोहा में किले के कारण अग्रोहा गजनवी के हमले से नष्ट होने से बच गया।

अग्रोहा पर चौथा आक्रमण– सन् 1191 ई. में मुलतान के सुलतान शाहबुद्दीन मुहम्मद गौरी के द्वारा भारत पर आक्रमण हुआ। इस बार गौरी के प्रबल आक्रमण से अग्रोहा पुनः उजड़ गया और एक छोटी सी आबादी के रूप में रह गया। अनेक अग्रोहावासी एक साधू बाबा ध्रुंगनाथ की भविष्यवाणी से अग्रोहा छोड़कर अन्यत्र सुरक्षित स्थानों को चले गये। बाबा ध्रुंगनाथ ने अपने शिष्य कीर्तिनाथ के साथ अग्रोहा नगर को सुरम्य और शांत देखकर वहाँ तपस्या हेतु पड़ाव डाला। अग्रोहा विदेशी आक्रमणकारियों के भारत पर आक्रमण के लिए मार्ग में पड़ता था, फलस्वरूप अग्रोहा नगर सर्वप्रथम उनके हमलों का शिकार बन जाता था। महात्मा ध्रुंगनाथ को अपनी दूरदृष्टि से भावी घटनाओं का आभास हो जाता था। अतः आक्रमण से पूर्व ही उन्होंने नगर में घोषणा करवा दी कि इस नगर का शीघ्र ही विनाश होने वाला है। इस नगर में आग बरसेगी, जिसको सुरक्षित बचना हो, इस नगर को छोड़कर यहाँ से निकल जाये।

अग्रोहा में एक कुम्हारिन सहित अनेक परिवारों ने भविष्यवाणी पर विश्वास कर अग्रोहा छोड़कर चले गये। साधू की भविष्यवाणी के अनुसार मुहम्मद गौरी का तोपों से आक्रमण हुआ और अग्रोहा में भयंकर विनाश हुआ और अग्रोहा देखते ही देखते राख का ढेर हो गया। आज भी अग्रोहा के थेह (खण्डहरों) में मिलने वाली राख और अंगारों के अवशेष इस प्रकार की विनाश-गाथा के साक्षी हैं। बाबा की चमत्कारिक सूचना से कुम्हारिन ने भी अग्रोहा से 3 मील दूर अपना डेरा बनाया जो उसके नाम से "कुम्हारिया चक" गाँव पड़ गया।

बार बार के आक्रमणों से व्यथित अग्रोहा के कुछ अग्रवंशी निवासी तत्कालिक बिजनौर जिले के मण्डावर नामक स्थान पर जाकर बस गये। सन् 1134 ई. के लगभग मण्डावर में अग्रवंशी उत्तराधिकारियों ने अपनी सुरक्षा व्यवस्था हेतु एक किला बनवाया जो आज भी विद्यमान है। इस अग्र वंश का अन्तिम प्रतापी शासक अमीचन्द हुआ है जिसने अपने पराक्रम से विक्रमादित्य की उपाधि धारण की थी। जिसने गुप्त साम्राज्य की स्थापना की। इनके काल में अग्रोहा नगर पुनः आबाद हुआ।

सन् 1351 से 1388 ई. के मध्य बादशाह फिरोजशाह तुगलक के काल में अग्रोहा नगर का अस्तित्व विद्यमान था। बादशाह तुगलक द्वारा हिसार-ए-फिरोजा नगर के निर्माण में अग्रोहा के अवशेषों की सामग्री का उपयोग किया था।

सन् 1556 से 1605 के मध्य सम्राट अकबर के समय मुगल सेना का मुख्यालय भी अग्रोहा नगर रखा गया था।

कालान्तर में सन् 1765-1781 में पटियाला राजा के यशस्वी दीवान नन्नूमल अग्रवाल ने अग्रोहा को पुनः बसाने और उसका पुनर्निर्माण करने का एक ओर प्रयत्न किया। वे बड़े ही कुशल प्रशासक एवं सैन्य संचालक थे। उन्होंने अपने सैन्य बल से दिल्ली के मुगल सम्राट के अधीनस्थ रहे फतेहाबाद, सिरसा, हांसी और हिसार जैसे महत्वपूर्ण नगरों को जीतकर पटियाला राज्य में सम्मिलित कर लिया। जब हिसार उनके

आधिपत्य में आ गया तो उन्होंने अग्रोहा में किले का पुनर्निर्माण कराया, जिसके अवशेष आज भी हैं उसे "दीवान का किला" कहते हैं।

अट्ठारहवीं शताब्दी में अग्रोहा का अस्तित्व कुछ अंश में मौजूद था। परन्तु इस नगर पर फिरंगियों द्वारा किये गये आधिपत्य का विरोध करने के फलस्वरूप अग्रोहा को पुनः अपना नामोनिशान खोना पड़ा। सन् 1857 ई. में अंग्रेजों ने युद्ध कर इस शहर को तोपों से उड़ाकर नेस्तनाबूद कर दिया। अग्रोहा पूर्णतया खंडहर मात्र रह गया। आज अग्रोहा के किले की पूरी दीवार और 650 एकड़ में फैले पुराने खण्डहर तथा सतियों की छतरियाँ प्रमाण-स्वरूप देखी जा सकती हैं।

अग्रोहानगर का पुनरोत्थान– अग्रोहा, अग्रवालों की वह पुण्य भूमि है जो प्रत्येक अग्रवाल के हृदय में भगवान राम की अयोध्या की याद की तरह युगों से उनके श्वासों में स्थित है। अग्रवाल जाति के पूर्व पुरुष महाराज अग्रसेन जी थे, जिन्होंने अग्रोहा बसाया और क्षत्रिय कुल को वैश्य वर्ण प्रदान कर अग्रकुल की स्थापना की। अग्रवालों की पितृ भूमि अग्रोहा एक ऐसा पुण्य तीर्थ, पूर्वजों की समाधि स्थल है जहाँ की पावन वायु आज भी वीरों की गाथा गुनगुना रही है। अग्रोहा, अग्रवालों का विशिष्ट उद्गम स्त्रोत है जहाँ से अग्रजन निश्रान्त होकर सम्पूर्ण भारत में तथा विदेशों तक में फैलकर अपनी दान-दया-धर्म की पताका फहरा रहे हैं।

अग्रोहा हरियाणा राज्य के जिला हिसार के राष्ट्रीय राजमार्ग सं. 10, महाराजा अग्रसेन मार्ग पर हिसार से 20 कि.मी. तथा फतेहाबाद से 25 कि.मी., दिल्ली से 187 कि.मी. दूरी पर है। अग्रोहानगर के भग्नावशेष थेह 650 एकड़ भूमि में 87 फीट तक ऊँचे टीलों के रूप में विद्यमान है। टीलों के पश्चिम की ओर 310 एकड़ भूमि में विशाल अग्रोदक जलाशय (बांध) के चिन्ह विद्यमान हैं जिसे लक्खी तालाब कहते हैं। इसमें अब बहुत अच्छी खेती होती है। पास ही एक छोटा अग्रोहा गांव आबाद है।

इस अग्रोहा गांव में लगभग 600 जाट, 250 राजपूत, 500

हरिजन, 400 पंजाबी, 100 अग्रवाल मित्तल गौत्रीय लोगों की आबादी हैं गाँव में एक हाईस्कूल है जिसमें अग्रोहा के आसपास के गाँव कुलेरी, नदेड़ी, खासा और भोंडा गांवों से आने वाले बालक-बालिकाएँ शिक्षा प्राप्त करते हैं। अग्रवालों की मुख्य आजीविका के साधन खेती-बाड़ी, दुकानदारी और नेपाल, सिक्किम, श्री गंगानगर, दार्जिलिंग और कलकत्ता में नौकरी तथा व्यापार है।

वर्तमान अग्रोहा के पुनरुद्धार के प्रेरणा स्रोत स्वामी ब्रह्मानंद जी हिसार निवासी थे। इन्होंने अग्रोहा व अग्रवाल जाति के बारे में शोध कर अपनी खोज को "ज्ञानोदय" पत्र के माध्यम से प्रकाशित करते रहे हैं। इन्होंने महाराजा अग्रसेन जी की स्मृति में जयंती मनाने का शुभारम्भ संवत् 1964 आसोज सुदी एकम् से कराया। सन् 1908 ई. में आपने श्री विश्वनाथ लाल मोतीलाल हलवासिया ट्रस्ट के सहयोग से अग्रोहा में एक पक्का कुआँ बनवाकर व प्याऊ द्वारा शुद्ध पीने के जल की व्यवस्था कराई। सन् 1915 में सेठ भोलाराम डालमिया तथा लाला सांवलराम के सौजन्य से गौशाला का निर्माण कराया। तत्पश्चात् सन् 1939में कलकत्ता निवासी सेठ रामजी दास बाजोरिया के सद्प्रयत्नों से महाराज अग्रसेन जी का एक मन्दिर तथा धर्मशाला का निर्माण कराया। मंदिर में अग्रसेन जी की संगमरमर की प्रतिमा की स्थापना कराई।

इसी काल में सन् 1918 में सेठ जमनादास बजाज ने अखिल भारतीय अग्रवाल महासभा की स्थापना दिल्ली में कराई और अग्रोहा के विकास का संकल्प लिया। सन् 1950 में अ. भा. अग्रवाल महासभा का अधिवेशन अग्रोहा में कमलनयन बजाज की अध्यक्षता में हुआ। इस अवसर पर देश के अनेक उद्योगपति श्री गूजरमल मोदी जैसी विभूतियाँ अग्रोहा निर्माण के पक्षधर बने। अग्रोहा निर्माण के लिए जल, विद्युत अनाजमण्डी, अन्न-उत्पादन चिकित्सा आदि सुविधाओं की योजनाऐं बनने लगी।

सन् 1965 में यहाँ श्री अग्रसेन इंजीनियरिंग एण्ड टैक्नीकल कॉलेज

सोसायटी की स्थापना हुई। इसी नाम से 400 बीघा भूमि खरीदी गई, जिसमें मास्टर लक्ष्मीनारायण व सेठ तिलकराज अग्रवाल आदि का विशेष योगदान रहा। उक्त भूमि पर कालेज की आधारशिला पंजाब के तत्कालीन मुख्यमंत्री कामरेड श्री रामकिशन के द्वारा रक्खी गई। किन्तु नवम्बर 1966 में हरियाणा का अलग राज्य बनने और अग्रोहा का हरियाणा में चले जाने से योजना में आशातीत प्रगति नहीं हो पाई।

दिल्ली की अग्रविभूति रामेश्वर दास गुप्त ने अखिल भारतीय अग्रवाल सम्मेलन के दि. 5 अप्रेल 1975 को हुए सम्मेलन में प्रस्ताव पारित कराये कि अग्रोहा के खण्डहरों की खुदाई केन्द्र व हरियाणा सरकार के पुरातत्व विभाग द्वारा कराई जावे तथा अग्रोहा को अग्रवालों का तीर्थस्थल घोषित किया जाय। अतः अग्रोहा विकास के लिए "अग्रोहा विकास ट्रस्ट" की स्थापना कर दि. 9 मई, 1976 को इसका विधान लागू किया गया। अग्रोहा निर्माण का शुभारम्भ 29.9.1976 को श्री बनारसीदास गुप्त, श्री श्री किशन मोदी आदि ने शिलान्यास कर किया। ट्रस्ट के श्री रामेश्वरदास गुप्त महामंत्री थे तथा श्री चाननमल बंसल अध्यक्ष।

श्री अग्रसेन इंजीनियरिंग एण्ड टैक्नीकल कॉलेज सोसायटी, अग्रोहा के द्वारा क्रय की गई भूमि में से 23 एकड़ भूमि अग्रोहा विकास ट्रस्ट को अग्रोहा धाम निर्माण हेतु दिनांक 5.10.1976 को निःशुल्क उपलब्ध कराई गई। हरियाणा सरकार के सौजन्य से अग्रोहा में पानी की समुचित व्यवस्था कराई गई। अग्रोहा निर्माण के लिए धन-संग्रह के लिए संरक्षक-ट्रष्टी, आजीवन ट्रष्टी, विशिष्ट ट्रष्टी, वार्षिक ट्रष्टी तथा अन्य दानदाता सदस्य बनाये गये, जिनसे प्रचुर धन राशि एकत्रित हुई। निर्माण कार्यों के लिए 1977 में एक निर्माण समिति का गठन किया गया। मई 1977 में तिलक राज अग्रवाल के संयोजन में सर्वप्रथम एक धर्मशाला 22 कमरों वाली का निर्माण कार्य शुरु हुआ जो सन् 1979 में बनकर तैयार हो गये। दिनांक 31.10.1982 को **महाराजा अग्रसेन का मंदिर** तैयार हुआ। उद्घाटन् के अवसर पर राजीव गांधी, श्री सीताराम केसरी, चौधरी

भजनलाल आदि अनेक केन्द्रीय एवं राज्य मंत्री व लाखों की संख्या में जन समूह उपस्थित हुआ।

अग्रसेन मंदिर के बाद **महालक्ष्मी जी का मंदिर** बनाया जाने लगा जो 28.10.1985 को तैयार हो गया। इसका उद्‌घाटन हरियाणा के वित्तमंत्री श्री रामशरण चन्द मित्तल ने किया।

अग्रोहा में हरियाली का नितान्त अभाव था। भूमि को समतल कर पार्क, वाटिकाऐं बनवाई। पेड़-पौधे-फुलवारी लगवाई। मुख्य द्वार से मंदिर व धर्मशाला तक जाने के लिए सड़कों का निर्माण 1980 में हुआ।

धर्मशाला– 12 मई 1985 को अग्रोहा निर्माण समिति के अध्यक्ष श्री नंदकिशोर गोयन्का और 22.12.1985 को इनके पुत्र सुभाष गोयल को ट्रष्ट का अध्यक्ष बनाया गया। इन्होंने धर्मशाला की पहली मंजिल पूरी करवाई। शक्ति सरोवर तक नहर से पानी लाने के लिए तीन कि.मी. लम्बे नाले का पक्का निर्माण कराया। दिनांक 18.10.1986 को शक्ति सरोवर का शुभारंभ हुआ।

शक्ति सरोवर– शक्ति सरोवर के चारों ओर 136 कमरों का तिमंजिलां अतिथि भवन तैयार कराया। तीर्थरूप प्रदान करने के लिए चौथी मंजिल पर 26 नयनाभिराम छत्रियाँ बनाई गई। सरोवर में समुद्र-मंथन की भव्य एवं अद्‌भुत झांकियों का निर्माण हुआ। 1992 में माँ सरस्वती के मंदिर के निर्माण की नींव रखी गई और 1993 को इसे दर्शनार्थ खोल दिया गया। 1998 में प्रवेश स्थान पर सिंह द्वार का निर्माण कराया गया है। जो आकर्षण का केन्द्र है। मंदिर की छत 165 फुट ऊँचे विशाल गुंबद से आच्छादित बनाई गई।

अस्पताल– श्री बनारसीदास गुप्त के प्रयत्नों से हरियाणा सरकार ने "अग्रोहा विकास बोर्ड" का गठन 1987 में किया और 8.4.1988 को महाराजा अग्रसेन मेडिकल एजुकेशन एण्ड साइंस्टिफिक रिसर्च सोसायटी का गठन कर 267 एकड़ भूमि संस्थान को आवंटित की। 21.5.1989 को डी-फार्मेसी कॉलेज का उद्‌घाटन हरियाणा के मुख्यमंत्री चौधरी

देवीलाल ने किया और मेडिकल कक्षायें प्रारम्भ कर दी गई। 16.7.1998 को ओ.पी.डी. अस्पताल भी आरम्भ कर दिया गया।

शक्ति शीला मंदिर– अग्रोहा में हुई अनेकों सतियों की पुरानी मढ़ियाँ हैं। इनका ऐतिहासिक महत्व है। इन्हीं मंदिरों में शक्ति शीला माता की मढ़ी है। इस मंदिर का निर्माण श्री तिलकराज अग्रवाल एवं उनके सुपुत्र श्री शीतलकुमार अग्रवाल द्वारा धोलपुरी एवं लाल पत्थरों से कराया गया। इस मंदिर के निर्माण में 7-8 वर्ष की अवधि लगी और 16 फरवरी 1992 को इस मंदिर में देवी देवताओं की प्राण प्रतिष्ठा की गई। मंदिर अध्यात्म एवं कला का सुंदर रूप प्रस्तुत करता है।

मंदिरों के सामने विशाल सत्संग-भवन का निर्माण–

महाराज अग्रसेन, कुलदेवी महालक्ष्मी तथा सरस्वती के तीनों मंदिरों के सामने विशाल एवं भव्य सत्संग भवन का निर्माण हुआ। इस आधुनिकतम भवन में पांच हजार व्यक्ति एक साथ बैठकर सत्संग कर सकते हैं। सत्संग भवन की सीढ़ियों के दोनों ओर बने हाथी और थोड़ा ऊपर चढ़कर दोनों ओर बनी नयनाभिराम मां गंगा एवं मां यमुना की प्रतिमाएं तथा हाल की छत पर बने वैष्णों देवी के मंदिर में जाने के लिए दोनों तरफ बने रैम्प आदि को निहारते हुए यात्रीगण मंत्र मुग्ध हो जाते हैं। सत्संग भवन के द्वार पर गीतासंदेश की मनोहारी कलाकृति देखते ही बनती है। सत्संग भवन के अंदर, तीनों मंदिरों के दोनों तरफ विभिन्न प्रकार की बनी झांकियाँ भी दर्शकों के आकर्षण का विशेष केन्द्र हैं।

धर्मशाला की दूसरी मंजिल का निर्माण–

धर्मशाला के पिछले भाग की दूसरी मंजिल पर 22 कमरों के ऊपर दूसरी मंजिल बनाने के लिए कलकत्ते की क्षेत्रीय समिति ने 11 लाख रुपये एकत्र करके निर्माणार्थ भेजे। इस राशि से 22 कमरों के ऊपर की मंजिल का निर्माण कर 1991 की शरद्-पूर्णिमा पर आयोजित मेले में उन कमरों का उद्घाटन हुआ। कलकत्ता क्षेत्रीय समिति ने महाराजा अग्रसेन की

अग्रोहा-धाम

विद्यादायिणी माँ सरस्वती

राम-सीता मन्दिर

भगवान मारूति

माता वैष्णो देवी

प्रतिमा पर स्वर्णिम छत्र चढ़ाने के लिए एक लाख का अनुदान भी सन् 1993 में उपलब्ध कराया।

7 दिसंबर 1997 को श्री नंदकिशोर गोईन्का ट्रस्ट के अध्यक्ष और श्री देवराज एडवोकेट महामंत्री बने। श्री नंदकिशोर गोईन्का जब से निर्माण समिति के अध्यक्ष बने तब से उन्होंने अग्रोहा निर्माण के प्रति अपने आपको पूरी तरह समर्पित किया हुआ है।

अग्रोहा-धाम में डाकघर का निर्माण करवाकर चालू करवाया गया। अब अग्रोहा-धाम का अपना डाकघर है। मजदूरों के लिए उनके क्वार्टरों का भी निर्माण किया गया है।

वाटर-वर्क्स का निर्माण– अग्रोहा-धाम में अपने स्वतंत्र वाटरवर्क्स का निर्माण करवाया गया। पानी को एकत्रित करके, उसे साफ करने और लिफ्ट करके टंकियों में भेजने की व्यवस्था करवाई गई। अब इन टंकियों द्वारा ही सारे परिसर में पानी सप्लाई होता है।

रसोईघर आदि का निर्माण (महाराजा अग्रसेन सेवा सदन भोजन कक्ष)– धर्मशाला के सामने बड़े-बड़े डाइनिंग-हालों का निर्माण भी आगरा के अग्रबंधुओं के सहयोग से हो चुका है। इसमें सैकड़ों बंधु एक साथ बैठकर भोजन कर सकते हैं।

विद्युत-व्यवस्था– संपूर्ण परिसर में प्रकाश एवं अन्य उपयोगों के लिए विद्युत-व्यवस्था की गई है, जिससे विद्युत की अनिश्चितता समाप्त हो गई है और सभी कार्य सुचारू रूप से चलने लगे हैं। इस हेतु मुंबई के श्री शिवचरण गुप्ता ने सवा पांच लाख रुपये वाला एक बड़ा जेनरेटर ट्रस्ट को प्रदान किया है।

प्याऊ एवं कैंटीन– अग्रोहा-धाम के मुख्य द्वार के अंदर बाई ओर एक भव्य प्याऊ तथा दाई ओर कैंटीन का निर्माण भी पूरा हो गया है। कैंटीन से यात्रियों को पर्याप्त सुविधा हो गई है। इस समय चार प्याऊओं में वाटर कूलर की मशीनें लगवाकर ठंडे पानी की समुचित व्यवस्था की गई है।

हनुमान जी की दर्शनीय प्रतिमा– अग्रोहा धाम में पश्चिमी किनारे पर हनुमान जी की 90 फुट ऊंची भव्य दर्शनीय प्रतिमा है। विश्व भर में लगी हनुमान जी की प्रतिमाओं में यह सबसे ऊंची प्रतिमाओं में से एक है।

अग्रोहा-धाम के पश्चिमी किनारे पर हनुमान जी के मंदिर का निर्माण श्री चेतराम अग्रवाल दिल्लीवालों ने करवाया। इस मंदिर में हनुमान जी की प्रतिमा की प्राण-प्रतिष्ठा भी हनुमान-जयंती के अवसर पर 5-6 अप्रैल 1993 को उन्हीं के द्वारा कराई गई।

बृजवासी अतिथि भवन का निर्माण– अग्रोहा-धाम में अग्रोहा विकास ट्रस्ट की जिला मथुरा समिति द्वारा श्री रमेशचंद सर्राफ के संयोजन में लगभग 30 लाख रुपए की लागत से बृजवासी अतिथि भवन का निर्माण करवाया गया। इस बृजवासी अतिथि भवन का उद्घाटन हनुमान जयंती के अवसर पर 22 अप्रैल 1997 को हजारों नर-नारियों की उपस्थिति में बृज की महान विभूति श्री श्री 108 गुरु शरणानंद जी महाराज ने किया। यह अतिथि भवन लगभग एक वर्ष में बनकर पूरा हो गया। इसमें 30 कमरे एवं एक विशाल सत्संग हाल है और द्वार पर **अग्रेश्वर महादेव का मंदिर** बनाया गया है। अब इस पर प्रथम मंजिल का निर्माण कराया जा रहा है।

बालक्रीडा-केंद्र (अप्पू घर)– अप्पूघर के निर्माण हेतु श्री डी.डी.मित्तल, भटिण्डा द्वारा 15 लाख रुपये की राशि प्रदान की गई। इसमें बच्चों और किशोरों के मनोरंजन के लिए बहुत से झूलों, हिंडोलों, रेलों के अतिरिक्त, मनोरंजन के अति आधुनिक अनेक साधन जुटाए गए हैं।

नौका विहार का निर्माण– नौका विहार के लिए गोलाकार नहर का निर्माण करवाया और चौतरफा नहर के बीच एक अति आधुनिक रेस्टोरेंट और फुलवारी आदि लगवाकर सुंदर और रमणीक वातावरण तैयार किया। अब यहाँ चार-पांच नौकाएं चलती हैं। यात्री और पर्यटक नौका विहार का आनंद उठाते हैं।

वैष्णो देवी मंदिर का निर्माण– वैष्णो देवी की मान्यता को देखते हुए श्री नंदकिशोर गोईन्का के मन में प्रेरणा पैदा हुई कि क्यों न अग्रोहा में मां वैष्णो देवी के मंदिर की स्थापना की जाए, इससे पंजाब, हरियाणा, हिमांचल प्रदेश तथा पूरे देश के भक्तजनों को महालक्ष्मी, सरस्वती, शक्ति शीला आदि देवियों के साथ माँ वैष्णों देवी के दर्शन भी हो सकेंगे और अग्रोहा पांचवे तीर्थ धाम के साथ शक्तिपीठ का रूप भी धारण कर सकेगा। इसके लिए अग्रोहा में कुलदेवी महालक्ष्मी मंदिर के गुंबद के ऊपर लगभग 400 मीटर लंबी गुफा का निर्माण करा, उनमें मां वैष्णों देवी की पिंडियां स्थापित की गई। इस प्रकार अग्रोहा के मंदिरों में वैष्णों देवी का एक और मंदिर जुड़ गया। इस मंदिर का उद्घाटन 24 अक्टूबर 1999 को श्री नंदकिशोर गोईन्का के कर कमलों द्वारा ही संपन्न हुआ।

रोपवे तथा बाबा भैरों मंदिर– वैष्णो देवी के मंदिर की मान्यता है कि जब तक भैरों बाबा के दर्शन नहीं कर लिये जाते, तब तक वैष्णों देवी की यात्रा सफल नहीं मानी जाती। इसे देखते हुए श्री गोईन्का जी की अध्यक्षता में वैष्णों देवी मंदिर के समीप सरस्वती मंदिर के गुंबद पर कृत्रिम गुफाएं नुमा बाबा भैरवनाथ के मंदिर का निर्माण कराया गया तथा उसे वैष्णों देवी के मंदिर से जोड़ने के लिए रोपवे का निर्माण कराया गया। इस भैरों मंदिर का उद्घाटन अक्टूबर 2000 को शरद पूर्णिमा मेले पर पूज्य स्वामी कार्ष्णि गुरुशरणानंद जी महाराज द्वारा संपन्न हुआ।

श्री सत्यप्रकाश आर्य अध्यक्ष बने– 14 अक्टूबर 2000 को श्री सत्यप्रकाश आर्य ट्रस्ट के अध्यक्ष निर्वाचित हुए और श्री नंदकिशोर गोईन्का पुनः निर्माण समिति के अध्यक्ष दोहराये गये। आपने अग्रोहा में चलने वाले निर्माण कार्यों को पूरा करवाने का अभियान जारी रखा।

भगवान श्री कृष्ण की विद्युत चालित झांकियों का निर्माण– अग्रोहा के बढ़ते महत्व एवं तीर्थ यात्रियों के आकर्षण को देखते हुए महालक्ष्मी मंदिर के नीचे भगवान श्री कृष्ण की विभिन्न जीवन लीलाओं पर आधारित 17 विद्युत चालित झांकियों का निर्माण किया गया। इन

झांकियों का उद्घाटन 3 जून 2001 को सुप्रसिद्ध उद्योगपति एवं महाराजा अग्रसेन मेडिकल कॉलेज सोसायटी के अध्यक्ष श्री ओमप्रकाश जिंदल ने किया।

तिरुपति बालाजी के मंदिर तथा पांच मंजिली लिफ्ट का निर्माण– दक्षिण में तिरुपति बालाजी के महत्व को देखते हुए अग्रोहा धाम में तिरुपति के समान ही बालाजी का भव्य मंदिर बना, दर्शनार्थियों की सुविधार्थ पांच मंजिली लिफ्ट का निर्माण प्रारंभ किया गया और भगवान तिरुपति बालाजी की प्रतिमा के निर्माण का दायित्व दक्षिणी भारत के कुशल शिल्पियों को सौंपा गया। यह निमार्ण कार्य तेजी से चालू है।

श्री अमरनाथ गुफा एवं पवित्र हिमानी शिवलिंग– महाराजा अग्रसेन मंदिर के गुंबद के ऊपर पावन अमरनाथ की गुफा एवं बर्फानी शिवलिंग का निर्माण कराया गया, जहाँ निरंतर बर्फ से शिवलिंग बनता रहता है और उसके दर्शन होते रहते हैं। इस मंदिर का उद्घाटन गुजरात के समाजसेवी श्री राधेश्याम बसंल गांधीधाम द्वारा 25 अगस्त 2001 को किया गया।

इस प्रकार अग्रोहा अपने गौरवपूर्ण निर्माण के 25 वर्षों की अवधी पूर्ण कर आज अग्रोहाधाम पांचवे तीर्थधाम के रूप में विकसित और पूरे देश के पर्यटन मानचित्र पर अपना विशिष्ट स्थान बना चुका है, इसके लिए अग्रोहा विकास ट्रस्ट असंख्य निष्ठावान कार्यकताओं, दानदाताओं, समर्पित समाजसेवियों के साथ श्री नंदकिशोर गोईन्का का विशेष रूप से आभारी है, जिन्होंने विगत 15-16 वर्षों से निर्माण हेतु अपने आपको तन-मन-धन से पूर्ण रूप से समर्पित कर रखा है। आशा है, आप सबके प्रयत्नों से अग्रोहा पाँचवे तीर्थ धाम के रूप में आने वाले समय में और भी बुलंदियों को छूएगा।

जय अग्रोहा धाम।

—*—

पांचवा तीर्थ धाम
अग्रोहा – हम सबका गौरव

अग्रोहा– अग्रवालों की आदि भूमि ही नहीं, युगप्रवर्त्तक महाराजा अग्रसेन की पावन कर्म स्थली भी है, जहां से उनका एक ईंट-एक रुपये का प्रेम, सहयोग, समता, भाई-चारे, अहिंसा का महान संदेश विश्व के मानवमात्र में गुंजित हुआ, जो बेजोड़ है।

अग्रोहा– अग्रवालों की पितृभूमि, तीर्थस्थान और पांचवाधाम है, जिसके कण-कण से शौर्य, त्याग, बलिदान, अध्यात्म, मानवमात्र के प्रति प्रेम की सहस्र-सहस्र धाराएं फूटीं, जिनके कारण इस मिट्टी का कण-कण पावन और मस्तक पर धारण करने योग्य है।

अग्रोहा– महाराजा अग्रसेन, कुलदेवी महालक्ष्मी, माता वैष्णो देवी, पवित्र अमरनाथ गुफा, विद्यादायिनी सरस्वती, शक्ति शीला, भगवान मारुति, भैंरो बाबा, तिरुपति बाला जी, शक्ति सरोवर जैसे बड़े-बड़े भव्य मंदिरों एवं दर्शनीय स्थलों की नगरी है, जिनके दर्शन मात्र से व्यक्ति की मनोकामनाएं पूर्ण और अद्भूत शान्ति की अनुभूति होती है।

अग्रोहा– का अग्रवालों के इतिहास में वही स्थान है, जो इसाईयों के लिए वेटिकन सीटी, मुसलमानों के लिए मक्का मदीना, यहूदियों के लिए यूरुसलम और सिक्खों के लिए ननकाना साहब का है और जिसकी यात्रा तथा दर्शन करना प्रत्येक अग्रवाल का धर्म है। जो व्यक्ति अपनी जन्मभूमि का वर्ष में एक बाद दर्शन नहीं कर लेता, उसका जीवन अपूर्ण है।

अग्रोहा– अग्रवालों के लिए संगठन, एकता और जागरण का प्रेरणा स्रोत ही नहीं, पूरे अग्रवाल समाज का गौरव और शान है।

इसलिए आओ ! रजत जयंती वर्ष में संकल्प लें

- शरदपूर्णिमा मेले पर अग्रोहा कुम्भ में सपरिवार अवश्य पधारेंगे।
- अपने-अपने घरों, प्रतिष्ठानों में महाराजा अग्रसेन और कुलदेवी महालक्ष्मी के चित्र लगायेंगे।
- अग्रोहाधाम पत्रिका के स्वयं सदस्य बनेंगे और अपने सभी बंधु-बांधवों, मित्रों, परिचितों को इसका सदस्य बना अग्रोहा के संदेश को घर-घर पहुंचायेंगे।
- हम अपने परिवार में बच्चों के नामकरण, विवाह, गृह-प्रवेश, बच्चों के मुण्डन, व्यापारिक प्रतिष्ठानों के मुहुर्त तथा अपने परिवार में होने वाले प्रत्येक शुभ एवं मंगलकार्यों, वर्षगांठ आदि पर अग्रोहा को याद रखें और कुछ न कुछ राशि अग्रोहा के लिए निकालेंगे तथा प्रतिमाह या वर्ष में दानस्वरूप भेजेंगे।
- अपने-अपनें स्थानों, जिलों, प्रांत में महाराजा अग्रसेन एवं अन्य अग्रविभूतियों की प्रतिमाएं स्थापित करेंगे तथा सार्वजनिक स्थलों वाटिकाओं, उपनगरों आदि का नामकरण उनके नाम पर करवाने हेतू प्रयत्नशील रहेंगे।
- अपने नगर-जिले में अग्रोहा विकास ट्रस्ट की ईकाई का संगठन कर अग्रवाल समाज एवं राष्ट्र को और मजबूत बनायेंगे।

अग्रोहा का गौरव – हम सबका गौरव

आओ ! हम सब मिल एक महान अग्रोहा तीर्थ का निर्माण करें।

—*—

महाराजा अग्रसेन उद्यान एवं अग्रसेन प्रतिमा, जयपुर

राजस्थान प्रदेश की राजधानी जयपुर में कंवरनगर, चाँदी की टकसाल में नव निर्मित विशाल उद्यान का लोकार्पण "महाराजा अग्रसेन उद्यान" के नाम से दिनांक 18 मई 1997 को तत्कालीन स्वायत शासन मंत्री श्री भँवरलाल शर्मा के द्वारा, जयपुर नगर निगम के तत्कालीन महापौर श्री मोहनलाल गुप्ता की अध्यक्षता में हुआ। इस उद्यान का लोकार्पण श्री अग्रवाल समाज समिति उत्तरी क्षेत्र जयपुर की प्रबन्ध-कारिणी को सौंपा गया। समाजवाद के प्रथम प्रणेता, अहिंसाधर्मी, अग्रकुल प्रवर्तक महाराजा अग्रसेन जी के नाम पर राजस्थान प्रान्त में स्थापित यह प्रथम उद्यान है।

श्री अग्रवाल समाज समिति उत्तरी क्षेत्र के अध्यक्ष श्री चाँदबिहारी लाल गोयल के प्रयासों से श्री अग्रसेन उद्यान में उसी समय महाराज श्री अग्रसेन जी की एक सुन्दर व आकर्षक प्रतिमा की स्थापना विधि-विधान पूर्वक कराई गई। इस प्रतिमा का निर्माण स्व. श्री हरिनारायण जी बुकसेलर (मेसर्स ईश्वरलाल बुकसेलर) के सौजन्य से हुआ।

इस अग्रसेन उद्यान में महाराजा अग्रसेन की प्रतिमा स्थापना के बाद से अग्रवाल समाज समिति उत्तरी क्षेत्र के द्वारा आयोजित समस्त कार्यक्रम व समारोह इसी उद्यान में महाराजा अग्रसेन के समक्ष किये जा रहे हैं। प्रतिवर्ष अग्रसेन जयन्ती पर्व पर पूजा-अर्चना, ध्वजारोहण, खेलकूद प्रतियोगिताएँ, सांस्कृतिक प्रोग्राम, स्नेह सम्मेलन, गोष्ठियाँ तथा वैवाह्कि युवक-युवती परिचय सम्मेलन जैसे वृहद् आयोजन सफलतापूर्वक इसी पार्क-उद्यान में होने लगे हैं। इस उद्यान व प्रतिमा की महत्वाकांक्षा इतनी बढ़ी है कि अग्रवाल समाज में एकता और संगठन का अप्रमेय उत्थान हो रहा है। यह एक प्रशंसनीय स्मृति का द्योतक है एवं प्रासंगिक है। जय अग्रसेन। जय अग्रोहा।

स्मारक-महाराजा अग्रसेन चौराहा
कोटा (राजस्थान)

राजस्थान प्रांत के कोटा शहर में महारांजा अग्रसेन चौराहा का निर्माण दिसम्बर 1990 में अग्रसेन युवा समिति के अध्यक्ष डॉ. लोकमणि गुप्ता की अध्यक्षता में तत्कालीन सार्वजनिक निर्माण मंत्री श्री ललितकिशोर चतुर्वेदी के सहयोग से हुआ। इसका उद्घाटन अखिल भारतीय अग्रवाल सम्मेलन के तत्कालीन राष्ट्रीय अध्यक्ष बाबू बनारसीदास गुप्ता ने किया। कोटा में नयापुरा क्षेत्र में प्रतिष्ठापित इस अप्रमेय मूर्ति का निर्माण लाड़पुरा निवासी शंकरजी ने किया जो सम्पूर्ण देश में अपने स्तर की सर्वोत्तम है। मूर्ति स्थापना के बाद सन् 1993 में अग्रवाल सेवा योजना के अध्यक्ष श्री राजमल टाटीवाला, महामंत्री श्री कन्हैयालाल मित्तल, कोषाध्यक्ष श्री विष्णु गर्ग व डॉ. लोकमणि गुप्ता, श्री मन्नालाल जी मैदावालों के सतत् प्रयासों से इस अग्रसेन चौराहे से महाराजा अग्रसेन जी की जयन्ती को भव्य शोभायात्रा की शुरुआत हुई जो आज तक बदस्तूर भव्य रूप से निकाली जा रही है। जय अग्रसेन।

अग्रवाल विभूतियाँ जिनके सम्मान में भारत सरकार ने डाक टिकट जारी किए :

अग्रकुल प्रवर्तक महाराजा अग्रसेन
जन्म : आश्विन शुक्ला (प्रथम नौरात्रि)
25 पैसे के डाक टिकट
दिनांक 24-9-1976 को जारी किए गये।

संख्या 80 लाख

भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र
जन्म : 9-9-1850 अवसान 5-1-1885
25 पैसे के (30 लाख) डाक टिकट
दिनांक 9-9-1976 को जारी किए गये।

सर गंगाराम
जन्म : 13-4-1851 अवसान 10-7-1927
25 पैसे के डाक टिकट
दिनांक 4-9-1977 को जारी किए गये।

लाला लाजपतराय
जन्म : 28-1-1865 अवसान 16-11-1928
15 पैसे के डाक टिकट
दिनांक 28-1-1965 को जारी किए गये।

डॉ. भगवान दास
जन्म : 12-1-1869 अवसान 18-9-1958
20 पैसे के डाक टिकट (तीस लाख)
दिनांक 12-1-1969 को जारी किए गये।

राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी
जन्म : 2-10-1869 अवसान 30-1-1948
1रुपये के डाक टिकट
दिनांक 12-1-1969 को जारी किए गये।

शिव प्रसाद गुप्त

जन्म : 28-6-1883 अवसान 24-4-1944

60 पैसे के (दस लाख) डाक टिकट

दिनांक 28-6-1988 को जारी किए गये।

राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त

जन्म : 3-8-1886 अवसान 12-12-1964

25 पैसे के डाक टिकट

दिनांक 3-8-1974 को जारी किए गये।

सेठ जमनालाल बजाज

जन्म : 4-11-1889 अवसान 11-2-1942

20 पैसे के डाक टिकट

दिनांक 4-11-1970 को जारी किए गये।

श्री श्रीप्रकाश

जन्म : 3-8-1890 अवसान 23-6-1971

2 रुपये का डाक टिकट

1991 को जारी किए गये।

श्री हनुमान प्रसाद पौद्दार

जन्म : 23-9-1892 अवसान 22-3-1971

1 रुपये के डाक टिकट

1992 को जारी किए गये।

डॉ. राममनोहर लोहिया

जन्म : 23-3-1910 अवसान 12-10-1967

25 पैसे के डाक टिकट

दिनांक 12-10-1977 को जारी किए गए।

"महान अग्र-विभूतियाँ" ग्रन्थ के प्रकाशन पर सहयोगियों की ओर से हार्दिक शुभकामनाऐं :

श्री रामप्रसाद अग्रवाल (एफ.सी.ए.)

(सौंथली वाले)

आपका जन्म स्व. श्री रतन लाल जी अग्रवाल के यहाँ हुआ। आपका निवास लवकुशनगर, टोंक फाटक, जयपुर है। आपने बी.कॉम., एफ.सी.ए. तथा एफ.सी.एस. की योग्यताऐं अर्जित करके सन् 1983 से चार्टेड एकाउन्टेन्ट की प्रेक्टिस प्रोजैक्ट फाइनेन्सिंग और फंड मैनेजमैन्ट की विशेषताओं के साथ कर रहे हैं। आप जनवरी, 2000 से मालविया अर्बन कॉपरेटिव बैंक लि. की स्थापना कर चेयरमैन के रूप में सफलता से उसको संचालित कर रहे हैं। आप कई सामाजिक संस्थाओं से जुडे हुये हैं। अनुकम्पा मेंन्शन विकास सौसायटी के आप मंत्री हैं। अग्रवाल सेवा योजना के संरक्षक है। आप सामाजिक गतिविधियों में सदैव भागीदार रहकर तन-मन-धन से समर्पण भाव रखते हैं।

श्री रघुवीर शरण अग्रवाल

(मुन्ना जी मारबल वाले)

(पुत्र सेठ श्री रामशरणदास जी अग्रवाल)

मारबल व्यवसायी

आप समूचे विश्व में दूसरे स्थान पर सबसे बड़े मार्बल व्यवसायी हैं। आपमें अगाध मातृ-पितृ भक्ति है। आपकी मारबल खानें सानकोटड़ा, आंधी, झिरी, जगन्नाथपुरा तक फैली हैं। आप धार्मिक स्थलों, सार्वजनिक संस्थानों के निर्माण हेतु मार्बल सेवा निःशुल्क करते हैं। आप अनेक धार्मिक व सामाजिक संस्थाओं से जुड़े हुये हैं। जिन्हें आपका तन-मन-धन से पूर्ण सहयोग मिलता रहता है।

श्री ताराचन्द बंसल

(लोसल वाले)
(पुत्र स्व. श्री मोहनलाल जी कोठ्यारी)

श्री बंसल, जगदम्बा मोटर्स, ट्रांसपोर्ट नगर, जयपुर के मालिक हैं। आपका आटोमोटिव पार्टस का हौलसैल का व्यवसाय पूर्ण राजस्थान में फैला हुआ है। आप कर्मठ समाज सेवी और धर्मावलम्बी है। आपका निवास वैशाली और सी-स्कीम जयपुर में है। आप जीन-माता मंदिर के पुनरुद्धार के जनक हैं। सामाजिक कार्यों में आपकी गहन रुचि है जिसमें आप पूरा सहयोग देते रहते हैं। इनके पूज्य पिताश्री समाज के सच्चे सेवक और सफल राजनीतिज्ञ एवं स्वतंत्रता सेनानी थे।

श्री राधेश्याम अग्रवाल

(फुलेरा वाले)
ट्रान्सपोर्ट व्यवसायी

आपने उच्च शिक्षा ग्रहण कर ट्रांसपोर्ट व्यवसाय में प्रवेश किया। आप ग्लोब ट्रांसपोर्ट कारपोरेशन के प्रबंध-निदेशक व मालिक हैं। जिसका प्रधान कार्यालय चांदी की टकसाल, शिकार-खाना बिल्डिंग, जयपुर में संचालित है। ट्रांसपोर्ट की नियमित सेवाऐं मुम्बई, फगवाड़ा, अलीगढ, लुधियाना, अमृतसर, कानपुर, दिल्ली, मेरठ इत्यादि सभी स्थानों पर उपलब्ध रहती है। आप कर्मठ, ईमानदार और मृदुभाषी व्यवसायी हैं। आप अनेकों संस्थाओं से जुड़ें हैं। सभी को आपका सहयोग प्राप्त है। आपने फुलेरा में स्कूल और अस्पताल व धर्मशालाओं का जनउपयोग हेतु निर्माण कराया है। समाज सुधार के आप समर्थक हैं। आपकी योग्यताओं व गुणों के कारण समाज गौरवान्वित हैं।

श्री रामगोपाल अग्रवाल

आपका जन्म 6 जनवरी, 1948 को जमुआ रामगढ़ में हुआ था। आरम्भ में आप अपने पुश्तैनी व्यवसाय सर्राफि में लगे रहे और 1975 से जवाहरात व सोना-चांदी की ज्वैलरी, कारपेट, टैक्सटाइल, एन्टीक्यूरेट कलाकृतियों, पेन्टिंग्स आदि के निर्माण व निर्यात के व्यवसाय में जुट गये। पिंकसिटी में आपका एन्टीक्यूरेट व्यवसाय केन्द्र दशहरा कोठी, आमेर रोड़, जयपुर पर विशाल भवन में संचालित है। जहाँ विदेशी पर्यटक स्वयं आकर्षित होकर आते हैं। आप एक बुद्धिजीवी और समर्पित सीधे-सच्चे व्यवसायी हैं। आप समाज में व्याप्त कुरीतियों, दिखावा प्रचलन आदि के विरोधी हैं। दानशीलता को भी गोपनीय रखने में विश्वास करते हैं। अग्रवाल समाज की सेवा के लिए हर वक्त हर स्थान पर आप सदैव तत्पर हैं।

श्री रामचन्द्र अग्रवाल

पुत्र श्री तेजराज जी (सिंघल) अग्रवाल

आपका जन्म दिनांक 16-12-1934 को जोधपुर में हुआ। आप अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशन संघ के उपाध्यक्ष, उप नगरीय अग्रवाल समाज समिति, बापूनगर, लालकोठी, जयपुर के संरक्षक एवं राजस्थान पुँस्तक व्यवसायी संघ के अध्यक्ष हैं। आपने बडी सूझ-बूझ और सफलता से क्षेत्र की परिवार परिचय पंजिका का प्रकाशन कर समाज को एक सूत्र में पिरोया है। समाज सुधार के आप पूर्ण समर्थक हैं। सभी संस्थाओं को आप अपने परामर्श और अर्थ से भरपूर सहयोग देते रहते हैं। आप धर्मावलम्बी है। आप उच्च कोटि के पुस्तक प्रकाशक है। विशेष रूप से शैक्षणिक व पाठ्यक्रम पुस्तकें इंजिनियरिंग, मैथैमेटिक्स, जियोलोजी इत्यादि से संबंधित विषयों का प्रकाशन करते हैं। आपका प्रमुख व्यवसाय केन्द्र जयपुर पब्लिशिंग हाउस, चौड़ा रास्ता, जयपुर के नाम से प्रख्यात है। आपके मृदु स्वभाव से आप सभी को अपना बना लेते हैं।

श्री नारायणलाल अग्रवाल

(पुत्र स्व. श्री पन्नालाल जी अग्रवाल)
बी.कॉम., साहित्य रत्न, साहित्याचार्य
व्यवसाय : बिल्डर्स एण्ड प्रमोटर्स

निवास : 1012, मिश्रराजा जी का रास्ता, चाँदपोल बाजार, जयपुर
फोन : 3102367, 98290-15791, 2315791, 2326233, 2338837

1. अग्रवाल मार्केट, 1013-1014, मिश्रराजाजी का रास्ता, जयपुर
2. अग्रसेन टावर, 13, सेन्ट्रल स्पाईन, विद्याधर नगर, जयपुर।
3. उन्नती टावर, 11 सेन्ट्रल स्पाईन, विद्याधर नगर, जयपुर
4. त्रिवेणी काम्पलैक्स, ट्रांसपोर्ट नगर, जयपुर
5. सोना अपार्टमेन्ट, 4/7, विद्याधर नगर, जयपुर

श्री दामोदर दास मोदी

श्री मोदी का जन्म जयपुर के श्री सूरजमल मोदी के यहाँ नवम्बर 1937 को हुआ। आपने इन्टरमीडिएट एवं विशारद तक शिक्षा ग्रहण की। आपने अपना जीवन राज्य सेवा से आरम्भ किया। 1982 में लेखाकार पद से स्वेच्छा से सेवा निवृत्ति प्राप्तकर व्यवसाय एवं सामाजिक, राष्ट्रीय कार्यों में रुचि लेने लगे। आप अखिल भारतीय वैश्य महासम्मेलन के राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष, विश्व हिन्दू परिषद के प्रान्तीय कार्यकारी अध्यक्ष, गोसंवर्धन परिषद के प्रदेश कोषाध्यक्ष, धन्वन्तरि सेवा समिति के मंत्री जैसे पदों के महत्वपूर्ण दायित्वों को वहन कर रहे हैं। आप राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ से बचपन से जुड़े हैं। विभिन्न सामाजिक, धार्मिक सेवा कार्यों के लिए आर्थिक सहयोग जुटाते रहते हैं।

वैश्य रामावतार सिंघल

आपका जन्म दौसा जिले के ग्राम ठीकरिया में श्री लक्ष्मीनारायण जी अग्रवाल के घर में हुआ। व्यवसायिक प्रवृत्ति के कारण राज्य सेवा छोडकर निजी व्यवसाय सीमेंन्ट उद्योग से जुड़ गये। आप अनेक सामाजिक संस्थाओं से जुडे हुए हैं। आप पूर्वी राजस्थान अग्रवाल सम्मेलन के वरिष्ठ उपाध्यक्ष हैं। अखिल भारतीय वैश्य सम्मेलन राजस्थान के व. उपाध्यक्ष, जयपुर जिला अग्रवाल सम्मेलन, फोर्टी राजस्थान तथा मानव कल्याण समिति के संरक्षक हैं। आप पूर्ण समर्पित समाज के कार्यकर्ता हैं। गायत्री शक्तिपीठ में होम्योपैथिक अस्पताल शुरू करवाया है। वर्ष 98 में आपको मुरैना में अग्रवाल समाज का राष्ट्रीय पुरस्कार दिया गया है।

श्री नरेश गोयल

(पुत्र श्री चानणमल गोयल)

आपका जन्म 2 अप्रेल 1957 को हुआ। आप राजस्थान आटोमोबाइल डीलर्स के अध्यक्ष, सचिव आदि पदों पर रह चुके हैं। आप गोयल मोटर स्टोर्स ट्रान्सपोर्ट नगर, जयपुर के ज्वाइन्ट मैनेजिंग डायरेक्टर हैं। आपने राजस्थान आटोमोबाइल डीलर्स एसोसियेशन में अध्यक्ष, सचिव, कोषाध्यक्ष आदि विभिन्न पदों पर रहकर सेवा की तथा अग्रवाल समाज समिति, जयपुर, श्री धन्वन्तरी औषधालय, जयपुर, श्री सरस्वती बाल विद्यालय, श्री अर्जुनलाल सेठी कॉलोनी विकास समिति आदि में विभिन्न पदों पर रहकर सहयोग प्रदान करते रहे हैं।

श्री निर्मल गोयल

आपका जन्म 22 मार्च 1960 को भादरा निवासी श्री दीपचन्द जी के यहां हुआ। आपका पैतृक व्यवसाय मेघालय की राजधानी शिलांग तथा आसाम के गोहाटी में हार्डवेयर तथा ट्रेक्टर एण्ड मशीनरी आटो एन्टरप्राइजेज आदि विभिन्न फर्मों के नाम से रहा है। आपने सेठी कॉलोनी में सेठ श्रवणलाल सेटेलाइट हॉस्पिटल की स्थापना की है। ट्रांसपोर्ट नगर में गोयल टावर, गोयल भवन नामक दो व्यापारिक प्रतिष्ठान बनाये हैं। गोनेर में विशाल भोम्याजी का मंदिर बनाया है। जयपुर में मोटर पार्टस बनाने के व आवासीय परिसर बनाने के कार्य में आप संलग्न हैं। आपको राज्यपाल द्वारा गुणीजन के सम्मान से सम्मानित किया गया है।

श्री नवरतन लाल अग्रवाल

आपका जन्म 26-8-1944 को श्री स्वरूपनारायण जी सर्राफ के यहाँ हुआ। आपने अपने पैतृक सर्राफ व्यवसाय में आशातीत प्रगति की है और आगे रत्न-व्यवसाय में मैसर्स सिल्वर एण्ड आर्ट पेलैस, सर्राफ कारपेट व टैक्सटाइल्स, स्पेस सिनेमाज, सर्राफ पैलेस इत्यादि व्यावसायिक समूह के प्रबन्ध-निदेशक रहे हैं। आपको रत्न-आभूषण बिक्री से सर्वाधिक विदेशी मुद्रा अर्जित करने के उपलक्ष में ग्यारह बार देश में प्रथम स्थान प्राप्त हुआ है और आप सम्मानित हुये हैं। आप अग्रसेन मेडिकल रिलीफ सोसायटी, जयपुर, अग्रवाल समाज, जयपुर के सक्रिय पदाधिकारी और सच्चे सामाजिक कार्यकर्त्ता हैं।

श्री विष्णु कुमार सांवड़िया

आपका जन्म 15 अगस्त, 1957 को श्री रामकुमार जी अग्रवाल के यहां हुआ। आप नवभारत ट्यूब्स लि., एम.जी.डी. मार्केट, जयपुर के संस्थापक व प्रबन्ध निदेशक हैं। औद्योगिक क्षेत्र में स्टील ट्यूब पाइप्स को गेलवनाइज करने की फैक्ट्री झोटवाड़ा में स्थापित की है। निर्यात क्षेत्र में श्रेष्ठ सेवाओं के लिए भारत के प्रधानमंत्री ने आपको पुरस्कृत किया है। आप स्टील ट्यूब्स एण्ड डीलर्स एसोसियेशन के अध्यक्ष, फोर्टी के महामंत्री हैं। अग्रवाल समाज शास्त्रीनगर के संरक्षक हैं। आप युवाओं के प्रेरणा-स्रोत हैं। आप समाज में व्याप्त कुरीतियों के विरोधी हैं। वैवाहिक परिचय संगठनों की स्थापना के समर्थक हैं। आपका व्यक्तित्व बहु-आयामी है।

केसरीचन्द मंगल

अग्रोहा विकास ट्रस्ट के संरक्षक तथा अग्रवाल समाज शास्त्रीनगर के पूर्व अध्यक्ष हैं। ये समाज सेवा में सदैव अग्रणीय हैं। अग्रवाल सेवा योजना के परामर्शदाता हैं।

बंगाल टी कम्पनी

1013, मिश्रराजाजी का रास्ता, चांदपोल बाजार, जयपुर

फोन : (का.) 2313659 (नि.) 2300042 मो. 98290-08316

श्री राजमल टाटीवाला
(अध्यक्ष)

पुत्र श्री बालाबक्श जी गर्ग (कोटा), अध्यक्ष, अग्रवाल सेवा योजना। संरक्षक, मानव कल्याण समिति। संयोजक, अग्रसेन शोभा-यात्रा, कोटा, संस्थापक सदस्य जनसंघ तथा अनेक संस्थाओं के मार्गदर्शक। अग्रवाल समाज सेवा में पूर्ण रूप से समर्पित। आपके सानिध्य में अग्रवाल सेवा योजना द्वारा अग्रवाल ज्योति मैरिज ब्यूरो का प्रकाशन 12 वर्षों से लगातार किया जा रहा है।

डॉ. सुमनकान्त सिंघल
(संरक्षक)

आप वरिष्ठ समाज सेवी श्री सी.एल. सिंगला जी के ज्येष्ठ पुत्र हैं। आपका निवास शक्तिनगर, देवनगर विस्तार, टोंक रोड़ पर है। जयपुर स्टेट बैंक ऑफ बीकानेर एण्ड जयपुर के प्रबन्धक हैं। आप पंजाबी अग्रवाल सेवा समिति के महामंत्री, अग्रवाल सेवा योजना, राजस्थान के संरक्षक, मानव कल्याण समिति राजस्थान के परामर्शदाता व अग्रवाल समाज की सेवा के लिए समर्पित हैं।

श्री कन्हैयालाल मित्तल (महामंत्री)

अग्रवाल सेवा योजना के संस्थापक महामंत्री श्री कन्हैयालाल मित्तल पुत्र श्री राधाकृष्ण जी मित्तल जुझारू समाज सेवक हैं। आप सांगानेर एयरपोर्ट, जयपुर में सहायक मौसम विशेषज्ञ हैं। मानव कल्याण समिति, राजस्थान के अध्यक्ष, अग्रवाल ज्योति (मैरिज ब्यूरो) पत्रिका के संस्थापक सम्पादक हैं। 1974 में देश के प्रथम सामूहिक विवाह में प्रथम जोडे के रूप में आपका विवाह हुआ। 1994 में कोटा में अपने संयोजन में विशाल अश्वमेघ यज्ञ सम्पन्न कराया। वर्ष 1995 में अहमदाबाद में आपको सेवा हेतु अग्रवाल समाज का राष्ट्रीय पुरस्कार दिया गया। आप ऐसी अग्र-विभूति है कि पूरे समाज व संस्थाओं को वर्ष भर अनेकों आयोजन कर समाज सेवा में लगाये रहते हैं।

श्री राजेश गोयल (एफ.सी.ए.)
(उपाध्यक्ष एवं संयोजक-ग्रन्थ)

श्री राजेश गोयल आत्मज श्री ब्रजमोहन जी गुप्ता (बाड़ीजोड़ी वाले) अग्रवाल सेवा योजना के उपाध्यक्ष, मानव कल्याण समिति के जिला संयोजक है। अग्रवाल समाज के वरिष्ठ कार्यकर्ता, अग्रोहा विकास ट्रस्ट, जयपुर जिला के मंत्री हैं। आप एक कर्मठ, जुझारू युवा कार्यकर्ता हैं। श्री पातालेश्वर महादेव मंदिर सेवा समिति, जयपुर के सचिव हैं। राष्ट्रीय युवा वैश्य परिषद के कार्यकारिणी सदस्य हैं।

श्री अशोक आमेरिया
(संयुक्त मंत्री, प्रबन्ध सम्पादक-ग्रन्थ)

श्री अशोक पुत्र श्री सत्यनारायण जी अग्रवाल एक सफल रत्न व्यवसायी हैं। मानव कल्याण समिति में चिकित्सा प्रकोष्ठ के संयोजक है। अग्र महापुरुष ग्रन्थ के पठन व सृजन में लेखक के साथ आपका पूर्ण सहयोग रहा है। आप एक युवा पुरुषार्थी हैं। आपका ध्येन सदैव व्यक्ति विकास के प्रति रहा है। जिसके लिए आप विविध संस्थाओं या पाठशालाओं में अनेक कार्यक्रम समय-समय पर आयोजित कराते रहते हैं। आपने अनेक युवाओं को व्यवसाय मुहैया कराने का कार्य किया है। आपका अग्रवाल साहित्य सृजन पर विशेष लगाव है।आप समाज सुधार संबंधी विचारों के समर्थक हैं। राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के प्रमुख कार्यकर्ता हैं।

श्री कमल किशोर नानूवाला
(संगठन मंत्री एवं उप सम्पादक-ग्रन्थ)

श्री कमल नानूवाला पुत्र श्री दुर्गालाल जी गोयल अग्रवाल सेवा योजना के संगठन मंत्री है तथा अग्र- ग्रंथ प्रकाशन समिति में उप सम्पादक हैं। आप अग्रवाल समाज समिति, जयपुर के सह मंत्री हैं एवं अग्रवाल समाज, मालवीय नगर के संरक्षक सदस्य हैं। मानव कल्याण समिति, राजस्थान के प्रवक्ता हैं। आप एक जुझारू, युवा समाज सेवी है। जयपुर स्थित समस्त संस्थाओं में आपकी सक्रियता व सेवा कार्य चर्चित है। राज.प्रदेश वैश्य महासम्मेलन के वरिष्ठ कार्यकर्ता हैं। जयपुर देहात जिला युवा अग्रवाल सम्मेलन के अध्यक्ष है।

श्री हुकमचन्द जैन

आप कोटा निवासी अग्रवाल सेवा योजना व अग्रवाल जयंति शोभा यात्रा समिति के संरक्षक हैं। आप धर्मशाला, स्कूल, अस्पताल जैसे निर्माण कार्यों पर विश्वास करते और सहयोग देते हैं। कोटा में वर्ष 2004 में सम्पन्न सामूहिक विवाह में आपका पूर्ण सहयोग रहा है।

श्री रामभरोसे गुप्ता

(वरिष्ठ उपाध्यक्ष)

श्री आर.बी. गुप्ता पुत्र श्री भगवत प्रसाद जी (बयाना) सेवानिवृत्त उच्चाधिकारी हैं। आप अध्यक्ष-अग्रवाल महिला कॉलेज बयाना। वरिष्ठ उपाध्यक्ष, अग्रवाल सेवा योजना राजस्थान तथा मानव कल्याण समिति सहित अनेक सामाजिक संस्थाओं में समर्पित सक्रिय कार्यकर्ता हैं।

श्री रामविलास जैन

(उपाध्यक्ष)

ग्राम देई, जिला बूंदी निवासी श्री रामविलास जैन, अग्रवाल सेवा योजना के उपाध्यक्ष, नगर विकास न्यास कोटा के पूर्व ट्रस्टी, अग्रवाल धर्मशाला समिति रंगबाडी-कोटा के अध्यक्ष हैं। आपकी पाटनपोल कोटा में मेडिकल स्टोर है। आप अग्रवाल समाज की सेवा में सदैव तत्पर रहते हैं।

श्री विष्णु गर्ग

(प्रदेश कोषाध्यक्ष)

श्री विष्णु जी पुत्र श्री मदनलाल गर्ग (कोटा) अग्रवाल सेवा योजना राजस्थान के प्रदेश कोषाध्यक्ष है। समाज सेवा के प्रति पूर्ण समर्पित है। अग्रसेन शोभा यात्रा के संस्थापक-सदस्य तथा मानव कल्याण समिति के रक्तदान प्रकोष्ठ के संयोजक हैं।

श्री प्रभुदयाल बंसल (जालसू निवासी)

(कोषाध्यक्ष)

श्री प्रभुदयाल जी पुत्र श्री भगवान सहाय जी अग्रवाल सेवा योजना के जयपुर स्थित कार्यालय में कोषाध्यक्ष है। आप पूर्वी राजस्थान अग्रवाल सम्मेलन के मंत्री, मानव कल्याण समिति राजस्थान के परामर्शदाता है। जयपुर शहर जिला कांगेस (ई) के संचिव है। आप सक्रिय सामाजिक कार्यकर्त्ता है। आप प्रजापति ईश्वरीय ब्रह्मकुमारी संस्थान से जुड़े हुये हैं। प्रदेश वैश्य युवा परिषद के प्रदेश प्रभारी हैं।

श्री उमेश अग्रवाल

(संगठन मंत्री)

श्री उमेश जी अग्रवाल पुत्र श्री मूलचन्द जी अग्रवाल, अग्रवाल सेवा योजना में संगठन मंत्री हैं। मालवीय अर्बन कौपरेटिव बैंक, टोंक रोड़, जयपुर में मैनेजर हैं। अग्रोहा विकास ट्रस्ट, मानव कल्याण समिति के सक्रिय सदस्य हैं एवं अग्रवाल समाज समिति मानसरोवर के महामंत्री है। आपके संयोजन में मालवीय नगर में आयोजित वैवाहिक परिचय सम्मेलन पूर्ण सफलता के साथ सम्पन्न हुआ है। आप समाज के प्रति समर्पित कार्यकर्ता हैं।

श्री सत्यनारायण अग्रवाल

(कार्यालय सचिव)

श्री सत्यनारायण अग्रवाल, अग्रवाल सेवा योजना के कोटा में कार्यालय सचिव हैं। आप परिश्रमी, सेवा-भावी कार्यकर्त्ता हैं। अग्रवाल ज्योति (मैरिज ब्यूरो) पत्रिका के प्रबन्धक व सम्पादक हैं तथा स्काउट गाइड के रूप में राष्ट्रपति से पुरस्कृत हैं। जिला अग्रवाल सम्मेलन कोटा के उप कोषाध्यक्ष हैं।

श्री रामावतार गोयल

(परामर्शदाता)

श्री रामावतार गोयल पुत्र श्री बंशीधर जी निवासी हुणतपुरा (सीकर जिला) अखिल भारतीय युवा अग्रवाल सम्मेलन के वरिष्ठ उपाध्यक्ष हैं तथा अग्रवाल सेवा योजना तथा मानव कल्याण समिति में परामर्शदाता पद पर क्रियाशील हैं। आप एक ओजस्वी, जुझारू युवा, समाज-सुधारक व्यक्तित्व के धनी हैं। आप समाज संगठन के विस्तार के लिए जिलास्तरीय, प्रदेशस्तरीय अनेक आयोजन करते रहते हैं।

श्री अरूण जैन सर्राफ

(युवा-अध्यक्ष)

श्री अरूण सर्राफ अग्रवाल सेवा योजना के कार्यों के प्रचार-प्रसार में संलग्न युवा कर्मठ समाज सेवी हैं। आप सैंकडों युवाओं का संगठन लेकर समाज के कार्यों में गति प्रदान करते हैं। आप प्रदेश अग्रवाल महा सम्मेलन (युवा प्रकोष्ठ) के महामंत्री हैं।

श्री परमेश्वर देव अग्रवाल

श्री परमेश्वर देव अग्रवाल समाज सेवी और धर्मावलम्बी है। आप पुस्तकों और कार्ड के प्रमुख व्यवसायी हैं। आपमें समाज की सेवा भावना कूट-कूटकर भरी है। अग्रवाल सेवा योजना, मानव कल्याण समिति या अन्य कोई भी सामाजिक संगठन हो आपका पूर्ण सहयोग मिलता है। अग्रवाल महापुरुष जीवन ग्रन्थ के प्रकाशन में आपका सहयोग है।

श्री पवन अग्रवाल

(बूंदी)

श्री पवन अग्रवाल पुत्र श्री ओंकारलाल जी कोपरेटिव बैंक, बूंदी में मैनेजर हैं तथा पूर्वी राजस्थान अग्रवाल सम्मेलन के प्रदेश मंत्री है। अग्रवाल सेवा योजना से जुड़कर आप परामर्शदाता के रूप में समाज सेवा में सक्रिय भागीदारी निभाते हैं। मानव कल्याण समिति के चिकित्सा प्रकोष्ठ को बूंदी जिले में देखते हैं।

श्री केशव मित्तल

(प्रवक्ता एवं सम्पादक)

श्री मित्तल पुत्र श्री कन्हैयालाल मित्तल कोटा में अग्रवाल सेवा योजना का समस्त कार्य देखते हैं। अग्रवाल ज्योति (मैरिज ब्यूरो) त्रैमासिक पत्रिका के सम्पादक है। इसका सफल प्रकाशन कर अग्रवाल समाज के युवक-युवतियों के वैवाहिक संबंधों के तय कराने की सेवा में समर्पित हैं। मानव कल्याण समिति के आप जन-सम्पर्क सचिव हैं।

श्री बालमुकुन्द गुप्ता

श्री बालमुकुन्द जी गुप्ता, गौत्र बंसल का जन्म 8-8-1935 को बारां के श्री छीतरमल जी अग्रवाल के यहाँ हुआ था। आप उप निदेशक राज. राज्य भंडारण निगम जयपुर के पद से 1993 में सेवा निवृत्त हुये। आप अग्रवाल समाज बारां के 1995 से 2001 तक अध्यक्ष तथा अब जिला अग्रवाल सम्मेलन, बांरा के जिला अध्यक्ष है।

श्री प्रमोद कुमार अग्रवाल

श्री पी.के. अग्रवाल कोटा निवासी, विद्युत अभियन्ता पद पर कार्यरत हैं। अग्रवाल सेवा योजना के उपाध्यक्ष और पूर्वी राजस्थान अग्रवाल सम्मेलन के प्रदेश मंत्री है। हाड़ौती संभाग के वैश्य सम्मेलन के अध्यक्ष है। मानव कल्याण समिति के पर्यावरण प्रकोष्ठ के संयोजक हैं।

श्री गोपाल कन्दोई

ए-420, मालवीय नगर, जयपुर के निवासी हैं और विनीत टायर्स, 2 ट्रांसपोर्ट नगर, जयपुर में अपोलो, बिरला, ब्राइडस्टोन, सिएट, विक्रान्त आदि टायरों के विक्रेता हैं। अग्रवाल समाज समिति, मालवीय नगर के पूर्व अध्यक्ष, ट्रांसपोर्ट नगर औद्योगिक संस्थानों में सक्रिय पदाधिकारी है। आप अग्रवाल समाज में सुधार और संगठन के लिए प्रयत्नशील है। आपने मालवीय नगर में अग्रवाल भवन के निर्माण में अभूतपूर्व सहयोग दिया है।

फोन : (नि.) 2520406, (का.) 5116156

श्री गोकुल प्रसाद गुप्ता

पुत्र श्री गंगासहाय गुप्ता (चंदवाजी वाले) जवाहरात उद्योग से संबंधित हैं। आपका प्रतिष्ठान 60, राजामल का तालाब, चांदी की टकसाल, जयपुर में है। आप धार्मिक और सामाजिक कार्यों में गहन रूचि रखते हैं। श्री राधागोविन्द मानव सेवा प्रन्यास संस्थान, जयपुर के संस्थापक और संचालक हैं। जिसके अन्तर्गत अनेक महत्वपूर्ण सामाजिक उत्थान के कार्य आप सम्पन्न करते रहते हैं।

फोन : (नि.) 2605507, 2610958

श्री सुशील कुमार गर्ग

पुत्र श्री हुकमचन्द गर्ग का जन्म 16-7-1970 को हरियाणा (हिसार) के प्रभुवाला ग्राम में हुआ था। आप श्री हरि ट्रेडिंग कारपोरेशन, लोहा मण्डी, संसार चन्द्र रोड़, जयपुर के मैनेजिंग पार्टनर है। आप उत्साही युवा कार्यकर्ता हैं। धार्मिक क्षेत्र में अधिक रुचि रखते हैं। सामाजिक संस्थाओं के प्रति आपका अतिशय लगाव है। आप उनके कार्यक्रमों में पूर्ण सहयोग करते हैं।

फोन : (का.) 2366386 (नि.) 2339028

मोबाइल : 9414056887 फैक्स : 0141-2362162

श्री जुगलकिशोर अग्रवाल (फतेहपुरिया)

आत्मज सेठ श्री गुलाबचन्द जी फतेहपुरिया एक युवा उद्यमी व समाज सेवक हैं। आपकी फर्म रामचन्द्र मोतीलाल एन्टरप्राईजेज, आटोमोबाइल नगर, दिल्ली हाइवे, जयपुर पर संचालित है। जिसके आप मैनेजिंग डाइरेक्टर है। जिसमें हस्तनिर्मित कारपेट्स और दरियाँ विदेशों में एक्सपोर्ट की जाती है। आप धन्वन्तरी औषधालय, जयपुर, अग्रवाल समाज समिति, जयपुर के पदाधिकारी, संरक्षक हैं। समाज की गतिविधियों में आप सदैव भाग लेने में अग्रणी रहते हैं।

फोन : (का.) 2642288, 3114211 (नि.) 2708951

श्री भोलाराम अग्रवाल (कोयले वाले)

श्री भोलाराम पुत्र श्री रघुनाथदास जी अग्रवाल कपडे के थोक व्यापारी हैं। आप धार्मिक विचारों से ओत-प्रोत हैं। दानशीलता आप में कूट-कूटकर भरी पड़ी है। गौ-सेवा को अत्यधिक महत्व देते हैं। आपने समाज की सेवा भावना से प्रेरित होकर लक्ष्मीनारायणपुरी, जयपुर में अपने पिता श्री रघुनाथदास कोयले वाले के नाम से आयुर्वेदिक औषधालय के लिए भूमि खरीदकर भवन बनवाया राज्य सरकार के माध्यम से उसका संचालन पिछले 30 वर्षों से अनवरत हो रहा है।

श्री हुकमचन्द अग्रवाल

दौसा-बांदीकुई के निवासी एक उच्च कोटि के व्यवसायी है। सामाजिक कार्यों में आपकी गहन रुचि है। आपकी फर्म पूरनचन्द हुकमचन्द अग्रवाल तथा अग्रवाल ब्रादर्स, सूरजपोल मण्डी, जयपुर में गुड-खांड आदि का थोक व्यापार करती है। आपने अपने पैतृक गांव तथा वृन्दावन धाम-गिर्राजजी के यहाँ आश्रम बनवाये है, स्कूल, धर्मशाला का निर्माण कराया है। पीने के लिए प्याऊ घर बनवाये हैं। आप दानशील समाज सेवक हैं।

फोन (का.)2641050, 2642010 (नि.) 2608179

श्रीमती सज़्जन मित्तल

(महिला संयोजिका, कोटा)

श्रीमती सज्जन मित्तल अग्रवाल सेवा योजना के महिला प्रकोष्ठ की संयोजिका के रूप में समाज के विविध आयामों में सक्रियता से भागीदारी निभाती है। अग्रोहा विकास ट्रस्ट कोटा शाखा की महिला-अध्यक्ष हैं।

श्री रामलाल गर्ग

श्री गर्ग अग्रवाल सम्मेलन, जिला बूंदी के अध्यक्ष, मानव कल्याण समिति के परामर्शदाता, बूंदी चिकित्सा सेवा के अध्यक्ष, रोटेरी क्लब व इण्डियन रेडक्रोस सोसायटी में सक्रिय रूप से जुड़े हैं।

श्री राजेन्द्र गर्ग

(झालावाड)

श्री राजेन्द्र गर्ग, अग्रवाल सम्मेलन झालावाड़ जिले के महामंत्री व सामाजिक कार्यकर्ता तथा अग्रवाल सेवा योजना से जुड़े हुये हैं। प्रत्येक आयोजनों में आप सम्मिलित होकर संगठन को सुदृढ़ करने का प्रयास-करते हैं। आप द्वारा इकलेरा में वर्ष 1996 में परिचय सम्मेलन व सामूहिक विवाह सफलतापूर्वक किया गया।

श्री जुगलकिशोर अग्रवाल

श्री जे.के अग्रवाल पुत्र श्री रामनिवास गुप्ता अग्रवाल सेवा योजना के संयुक्त मंत्री है। समाज के कार्यों में अपना योगदान देते रहते हैं।

श्री महेश मित्तल

श्री मित्तल पुत्र श्री कल्याणमल मित्तल निवासी कोटा व्याख्याता है तथा गायत्री प्रज्ञा मंडल के संयोजक, अग्रवाल सेवा योजना के संगठन मंत्री हैं। अश्वमेघ यज्ञ कोटा के आयोजन में उप संयोजक रहे हैं।

* अग्रोहा-चित्रावली *

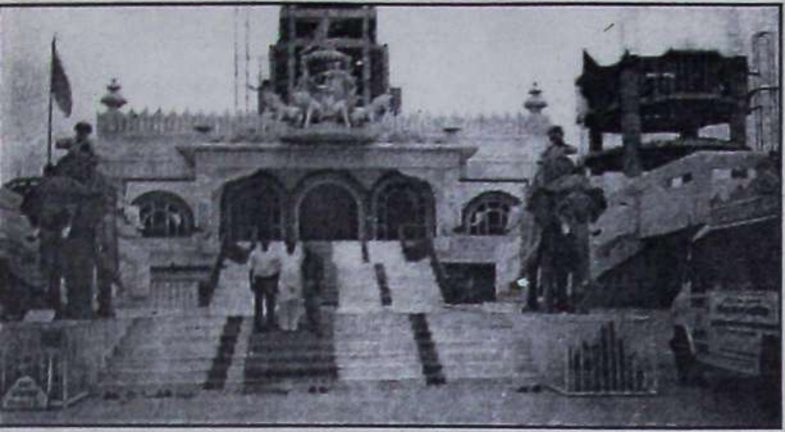

↑ अग्रोहा धाम मुख्य द्वार

↑ यमुना मैया

↑ पतित पावनी माँ गंगा

विशाल अप्पू घर →

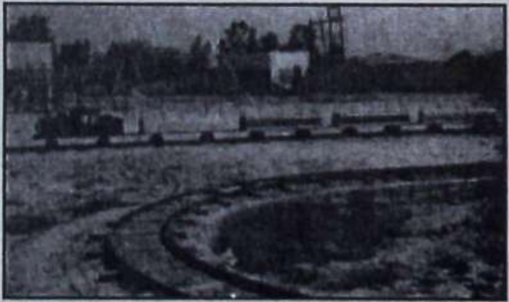

↑ शक्ति सरोवर एवं अतिथिशाला

↓ शक्ति शीला मंदिर

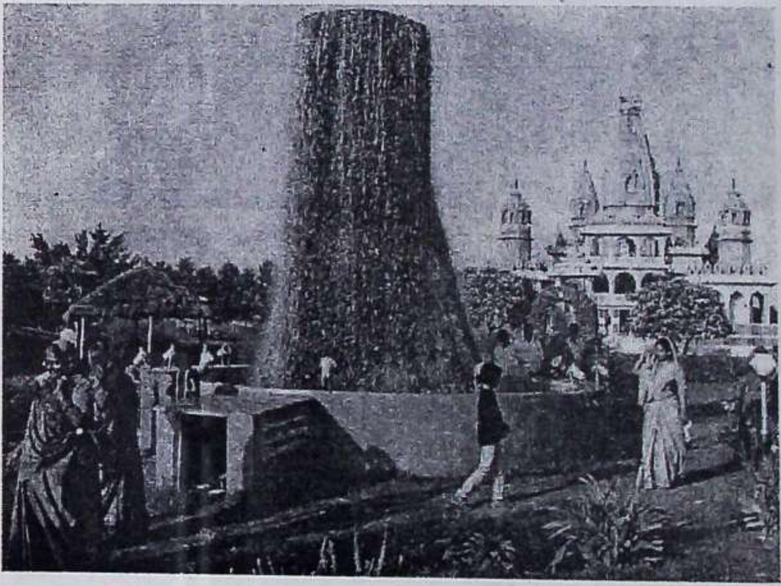

↑ नौका विहार

↓ डायनासोर

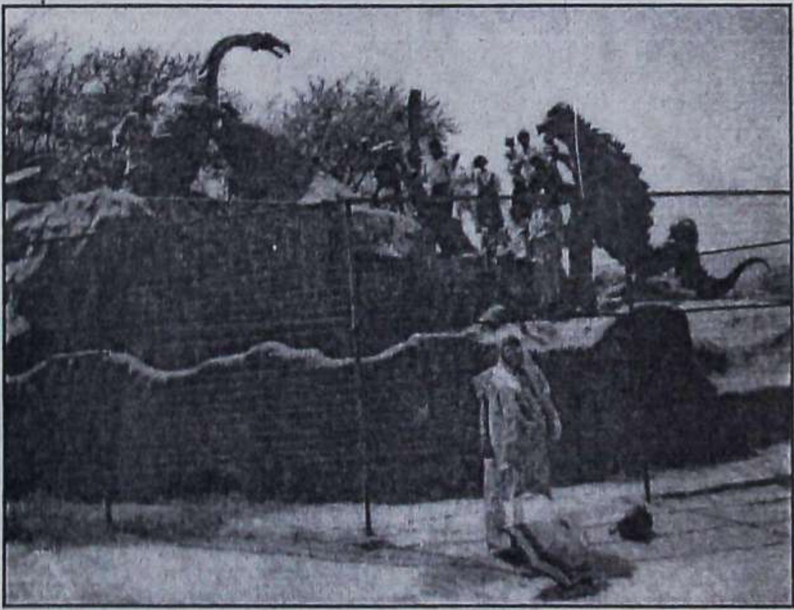

↑ मैडिकल अस्पताल

↓ मंदिर मढियां

↑ प्राचीन थैह

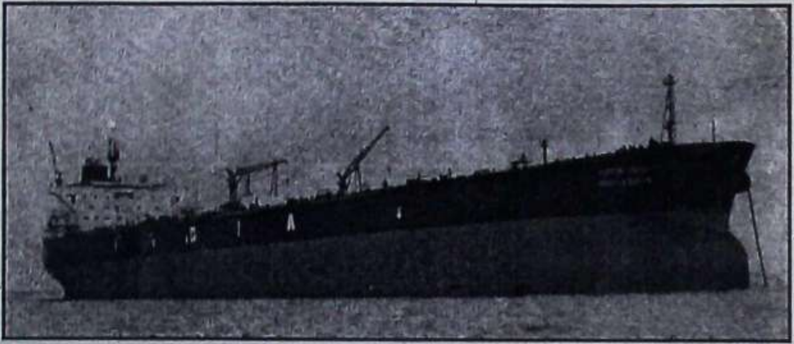

↑ अग्रसेन जलपोत

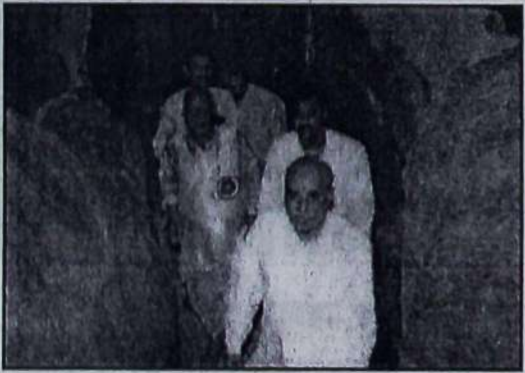

← अग्रोहा स्थित अमरनाथ गुफा

अग्रकुल प्रवर्तक

✻ महाराजा श्री अग्रसेन एवं महारानी माधवी ✻

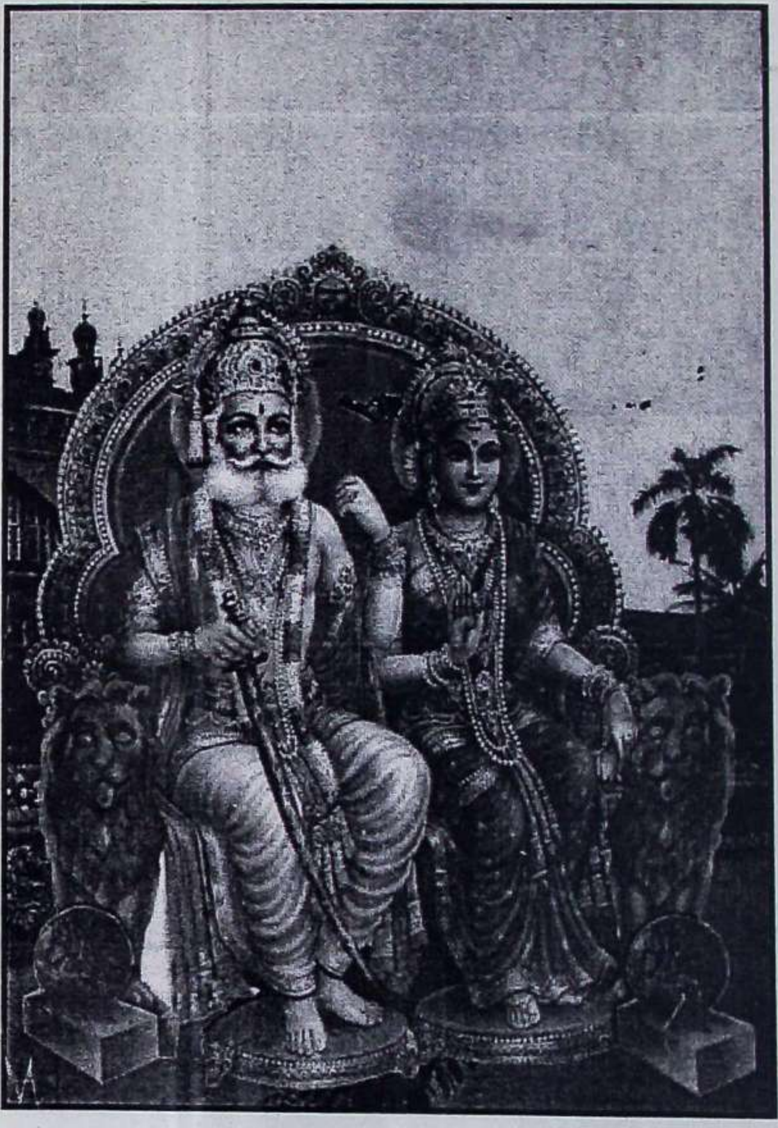

शत-शत नमन।

Ideal Computer Centre Ph. 2567005